नालयिरा दिव्य प्रबंधम्

मुदल आयिरम (सहस्रगीति प्रथम)

संकलन

श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी

समर्पण

श्रीमद्भगवतो प्राकुंशाचार्यजी महाराज

श्रीमते रामानुजाय नमः

परिचय

शान्तानन्तमहाविभूति परमं यद्ब्रह्मरूपं हरेः
मूर्तं ब्रह्म ततोऽपि तत्प्रियतरं रूपं यदत्यद्भुतम् ।

श्री वैष्णव दिव्य देश की कुल संख्या **108** मानी गयी है। दिव्य देश के मन्दिरों में नारायण हरि के भिन्न भिन्न अर्चारूप हैं। इन अर्चा विग्रहों की प्रशस्ति **12** आळवार संतों द्वारा स्वतः स्फूर्त हृदयोद्गार से की गयी है और इन सबों के संकलन को दिव्य प्रबंधम् कहते हैं। इसमें कुल चार हजार पाशुर या छंद हैं इसलिये इसे नालयिरा दिव्य प्रबंधम् कहते हैं। मूल पाशुर तमिल में हैं। कालक्रम में इनका लोप हो गया था परंतु श्री नाथमुनि के अथक परिश्रम से नम्माळवार की कृपा हुई और ये पुनः प्राप्त हुए। बोलचाल की भाषा में सुविधा के लिये इस संकलन को चार भागों में बांटा गया है एवं हर भाग को सहस्रगीति कहते हैं।हालांकि नम्माळवार का तिरूवाय्मोळि को भी केवल सहस्रगीति से संबोधित किया जाता है क्योंकि सारे **24** प्रवंधमों में यह सर्वोत्तम महत्व वाला प्रवंध है। दिव्य प्रबंधम् में संकलित सारे **24** प्रवंधमों का एक विहंगम अवलोकन नीचे के वर्णिका से किया जा सकता है।

संकलन	आळवार	प्रबंधम	पाशुरों की संख्या
प्रथम सहस्रगीति मुदल आयिरम	पेरियाळवार (विष्णुचित्त स्वामी)	**1** पेरियाळवार तिरूमोळी	**1 से 473**
	आंडाल	**2** तिरूप्पावै	**474 से 503**
		3 नाच्चियार तिरूमोळी	**504 से 646**
	कुलशेखराळवार	**4** पेरूमाल तिरूमोळी	**647 से 751**
	तिरूमळिशैयाळवार (भक्तिसार स्वामी)	**5** तिरूच्चन्दविरूत्तम	**752 से 871**
	तोंडरादिप्पोडियाळवार (भक्ताङ्घ्रिरेणु स्वामी)	**6** तिरूमालै	**872 से 916**
		7 तिरूप्पळ्ळियळुच्चि	**917 से 926**
	तिरूप्पाणाळवार	**8** अमलनादिपिरान्	**927 से 936**
	मधुरकवियाळ्वार	**9** कण्णिनुण् शिरूत्ताम्बु	**937 से 947**
द्वितीय सहस्रगीति	तिरूमङ्गैयाळवार	**10** पेरिया तिरूमोळि	**948 से 2031**

इरान्दाम आयिरम		11 तिरूक्कुरून्दाण्डगम्	2032 से 2051
		12 तिरूनेडुन्दाण्डगम्	2052 से 2081
तृतीय सहस्रगीति मून्राम आयिरम (इयर्पा)	पोय्गैयाळवार	13 मुदल् तिरूवन्दादि	2082 से 2181
	भूदत्ताळवार	14 इराण्डाम् तिरूवन्दादि	2182 से 2281
	पेयाळवार	15 मून्राम तिरूवन्दादि	2282 से 2381
	तिरूमळिशैयाळवार (भक्तिसार स्वामी)	16 नान्मूगन तिरूवन्दादि	2382 से 2477
	नम्माळवार	17 तिरूविरूत्तम	2478 से 2577
		18 तिरूवाशिरियम	2578 से 2584
		19 पेरिया तिरूवन्दादि	2585 से 2671
	तिरूमङ्गैयाळवार	20 तिरूवेळुकूट्रिरूक्कै	2672
		21 शिरिय तिरूमडल	2673 से 2710
		22 पेरिय तिरूमडल	2711 से 2790
	तिरूवरङ्गत्तमुदनार	23 इरामानुश नुट्रन्दादि	2791 से 2898
चतुर्थ सहस्रगीति नान्गाम आयिरम	नम्माळवार	24 तिरूवाय्मोळि	2899 से 4000

ऊपर के वर्णिका में एक और ध्यान देने योग्य बात है कि प्रवंध संख्या **23** जो रामानुज नुट्रन्दादि है यह आळवारों की रचना नहीं है और यह रामानुज स्वामी के शिष्य मुदनार की कृति है जिसे सुनकर रामानुज ने अपने जीवनकाल में इसकी स्वीकृति दे दी थी। नित्यानुसंधानम में प्रायः इसका पाठ तिरूवाय्मोळि के बाद किया जाता है।

दिव्य प्रवंधम के प्रथम सहस्रगीति का हिन्दी में सरल भावार्थ श्रीमान् सुन्दर कीदम्बी द्वारा तैयार किया हुआ देवनागरी लिपि के पाशुरों को उपयोग में लाते हुए किया गया है। इसके लिये श्रीमान् के सदा आभारी हैं जिनकी अनुमति इस तरह के कैंकर्य के लिये दास को मिल चुकी है। देवनागरी में उपलब्ध पाशुरों को श्रीमान् के www.prapatti.com से लिया गया है। एक बार फिर अपना आभार श्रीमान् द्वारा किये गये महान कैंकर्य के लिये प्रकट करते हैं कि देवनागरी में पाशुरों को न उपलब्ध रहने पर इस तरह के कैंकर्य की कल्पना करने का

साहस नहीं किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त श्रीमान् से अन्य महत्वपूर्ण वेब साईट का लिंक भी प्राप्त हुआ जिससे दास का मनोबल बहुत ऊंचा हुआ। श्रीबरदराज स्वामी से श्रीमान् के ऊत्तरोत्तर प्रगति के लिये प्रार्थना है।

तिरूमला तिरूपति देवस्थान द्वारा अंग्रेजी में सात खंडों में प्रकाशित '**108** वैष्णव दिव्य देशम' जो डा॰ सुश्री एम एस रमेश आई ए एस की कृति है को दिव्य देशम के वर्णन के लिये उपयोग में लाया गया है । उपयुक्त जगहों पर इसके खंड एवं पेज का संदर्भ ब्रैकेट में दिया गया है। सुश्री रमेश एवं ति ति देवस्थानम को विनम्र आभार प्रकट करते हैं।

डा॰ एस जगतरक्षण का 'नालयिरा दिव्यप्रबंधम' जिसकी अंग्रेजी टीका श्री राम भारती द्वारा की गयी है हिन्दी के इस कैंकर्य में बड़ा ही सहायक हुआ है। डा॰ एस जगतरक्षण का हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

भगवान देवराज वरदराज स्वामी की कृपा से कांचीपुरम में परम विद्वान श्री कोईल अन्नन स्वामी से बड़ा मनोबल बढ़ा और दास आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है। पेरूमाल कोईल कांचीपुरम के श्रीनम्माळवार सन्निधि के स्वामी टी ए भास्यम् ने दिव्य देशम का सद्यः स्वानुभूत ज्ञान से लाभ करा कर इस कैंकर्य को बड़ा सुगम बना दिया। हृदय से आपका आभार प्रकट करते हैं।

विनीत दास

श्रीकृष्ण प्रपन्नाचारी
कांचीपुरम
17 जून **2011**

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ पॆरियाऴ्वार् तिरुमॊऴि त्तनियन्गळ् ॥

गुरुमुखमनधीत्य प्राह वेदान् अशेषान्
नरपतिपरिक्लृप्तं शुल्कमादातुकामः।
श्वशुरं अमरवन्द्यं रङ्गनाथस्य साक्षात्
द्विजकुलतिलकं तं विष्णुचित्तं नमामि॥

मिन्नार् तडमदिळ्शूऴ् विल्लिपुत्तूरॆन्ऱॊरुकाल्
शॊन्नार् कऴर्कमलम् शूडिनोम् – मुन्नाळ्
किऴियरुत्तान् ऎन्ऱुरैत्तोम् कीऴ्मैयिनिल् शेरुम्
वऴियरुत्तोम् नॆञ्जमे! वन्दु

पाण्डियन् कॊण्डाड प्पट्टर्पिरान् वन्दानॆन्ऱु
ईण्डिय शङ्गम् ऎडुत्तूदवेण्डिय
वेदङ्गळोदि विरैन्दु किऴियरुत्तान्
पादङ्गळ् यामुडैय पट्ट

॥ पॆरियाऴ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥

1 तिरूप्पल्लान्डु (1-12) **काप्पु** ‡पल्लाण्डु पल्लाण्डु पल्लायिरत्ताण्डु* पल कोडि नूरायिरम्* मल्लाण्ड तिण्तोळ् मणिवण्णा!* उन्– शेवडि शॆव्वि तिरुक्काप्पु॥१॥	बहुतों वर्षों, बहुतों सैकड़ों हजारों वर्षों, यानि अनंत काल तक, विशाल शक्तिशालि वक्षस्थल, एवं श्याम मणि के रंग के समान सुन्दर वदन वाले प्रभु के श्रीचरणकमल सर्व तया द्दष्टि दोष से सुरक्षत रहे और दास का आश्रय बना रहे।1।

मदुरै शहर में अवस्थित तिरूकुडल आळगर का मंदिर है जहां भगवान थल खंड में बैठे हुए मुद्रा में हैं और 108 दिव्य देशों मे से यह एक है। यहां के अन्य दो तलों पर भगवान खड़े एवं शयनावस्था में हैं। मूल विग्रह को "आहूय वरदान" विग्रह भी कहा जाता है क्योंकि भगवान नीचे के दाहिने हाथ से आशीर्वाद देते हैं तथा बायें हाथ से अपने पास शरणागति के लिए आह्वान करते हैं।ऊपर के दोनों हाथ दायें में चक्र एवं बायें में शंख धारण किये हुए हैं। यहीं पर श्रीविष्णुचित्त स्वामी को भगवान का साक्षात्कार हुआ था और भगवान की प्रशंसा में उन्होंने तिरूप्पलांडु (vol. 4, pp 156) की रचना की। प्रसंग इसतरह है कि तत्कालीन राजा वल्लभ देव ने मोक्ष प्राप्ति के उत्तम उपाय की जानकारी के लिए एक बार विद्वत सभा का आयोजन किया। राजा के आध्यात्मिक गुरूओं में एक सल्व नांबि थे, और भगवान कुदल आलगर ने सल्व नांबि को उत्प्ररित कर राजा से पेरियाळवार को भी विवेचन के लिए आमंत्रित करवाया। उधर भगवान कुदल आळगर ने स्वप्न में पेरियाळवार को भी मदुरै पहुंचने के लिए प्रेरित किया। उस सभा में पेरियाळवार नारायण की महत्ता को प्रतिपादित कर राजा से बहुसम्मानित एवं पुरस्कृत हुए। राजा ने पेरियाळवार का शिष्यत्व स्वीकार कर स्वयं चंवर सेवा करते हुए सारे मदुरै नगर में पेरियाळवार को अलंकृत हाथी से उत्सव यात्रा में ले गये। इस महती शोभा यात्रा को देखने के लिए अन्य

देवताओं के अतिरिक्त भगवान कुदल आळगर भी भूदेवी एवं श्रीदेवी के साथ गरूड़ पर सवार होकर आये। पेरियाळवार (श्री विष्णुचित्त स्वामी) ने शोभा यात्रा में भगवान को एक दर्शक के रूप में देखकर उनकी छवि से मुग्ध हो गये। साथ ही उनको यह संदेह हुआ कि भगवान की इस मनोहारी छवि को कहीं अन्यों की नजर न लग जाए, अतः हाथी के अलंकरण से रत्नों को झाल के रूप में उपयोग करते हुए प्पल्लाण्डु गीत से भगवान को सम्मानित करने लगे। इसतरह से पल्लाण्डु का गायन स्वतः श्री विष्णुचित्त स्वामी जी के मुखारविन्द से उस शोभा यात्रा में भगवान की रक्षा हेतु फूट पड़ा था।
कुदल आळगर कोईल वर्त्तमान में वेगवती के पास है परन्तु पुराकाल में यह वेगवती की दूसरी धारा कृतमाला के किनारे था। इसी कृतमाला नदीकी कथा श्रीमद्भागवत में मत्सयावतार के लिए प्रसिद्ध है।

‡अडियोमोडुम् निन्नोडुम्⋆ पिरिविन्रि आयिरम् पल्लाण्डु⋆ वडिवाय् निन्वल मार्बिनिल्⋆ वाळिान्र मङ्गैयुम् पल्लाण्डु⋆ वडिवार् शोदि वलत्तुरैयुम्⋆ शुडराळियुम् पल्लाण्डु⋆ पडैपोर् पुक्कु मुळङ्गुम्⋆ अप्पाञ्चशन्नियमुम् पल्लाण्डे॥ २ ॥	बहुतों वर्षों, बहुतों सैकड़ों हजारों वर्षों, यानि अनंत काल तक, दास का अटूट संबंध बना रहे। आपके वक्षस्थल पर लक्ष्मी का नित्य स्थान, दायें भुजा में प्रभासंपन्न चक्र तथा बायें हाथ में रणक्षेत्र में ऊच्च घोष से आतंक फैलाने वाले पाञ्चजन्य, बहुतों वर्षों, बहुतों सैकड़ों हजारों वर्षों, यानि अनंत काल तक स्थित रहे।**2**।
वाळाट् पट्टु निन्रीरुळ्ळीरेल्⋆ वन्दु मण्णुम् मणमुम् कोंण्मिन्⋆ कूळाट् पट्टु निन्रीर्कळै⋆ एङ्गळ् कुळुविनिल् पुगुदलोंट्टोम्⋆ एळाट् कालुम् पळिप्पिलोम् नाङ्गळ्⋆ इराक्कदर्वाळ्⋆ इलङ्गै– पाळाळाक प्पडै पोरुदानुक्कु⋆ प्पल्लाण्डु कूरुदुमे॥ ३ ॥	हम सभी एकत्रित जन, आयें, प्रभु को सुगंधित चंदन समर्पित करें।ऐसा कोई यहाँ न रहे जो प्रभु के अतिरिक्त अन्य सांसारिक चीजों में आनन्द लेता हो।हम भगवान कोदंड राम का, जिनसे लंका के राक्षसों का नाश हुआ, सात पीढ़ी से निरन्तर यशोगान में रत हैं। **3**।
एडुनिलत्तिल् इडुवदन् मुन्नम् वन्दु⋆ एङ्गळ् कुळाम् पुगुन्दु⋆ कूडु मनमुडैयीर्कळ् वरम्पोळि⋆ वन्दोल्लै क्कूडुमिनो⋆ नाडु नगरमुम् नन्गारिय⋆ नमो नारायणायवेन्रु⋆ पाडु मनमुडै प्पत्तरुळ्ळीर्!⋆ वन्दु पल्लाण्डु कूरुमिने॥ ४ ॥	भक्तगण आइये, इसके पहले कि संसार के नश्वर चीजों में लिप्त हों, शीघ मिलकर, चतुर्दिक देश के साथ इस नगर को "नमो नारायणाय" के उद्घोष से भर दें। आपलोग स्वतः आयें, और पल्लाण्डु का गान करें।**4**।
अण्डक्कुलत्तुक्कदिपति आगि⋆ अशुरर् इराक्कदरै⋆ इण्डै क्कुलत्तै एडुत्तु क्कळैन्द⋆ इरुडीकेशन् तनक्कु⋆ तोंण्ड क्कुलत्तिलुळ्ळीर्! वन्दडिदोंळुदु⋆ आयिर नामम्शोंल्लि⋆ पण्डै क्कुलत्तै त्तविर्न्दु⋆ पल्लाण्डु पल्लायिरत्ताण्डेन्मिने॥ ५ ॥	संपूर्ण सृष्टि के एकमात्र नाथ हृषिकेश भगवान ने असुरों एवं राक्षसों का नाश किया।आइये, हजारों नामों से इनकी चरण वंदना करें और अपने पुराने वासनाओं का त्याग कर बहुतों सैकड़ों हजारों वर्षों तक पल्लाण्डु का गान करें।**5**।

ऎन्दै तन्दै तन्दैतम् मूत्तप्पन्⋆ एऴ्पडि काल्तॊडङ्गि⋆ वन्दु वऴिवऴि आट्चॅय्गिन्ऱोम्⋆ तिरुवोण त्तिरुविऴविल् अन्दियम्पोदिल् अरियुरुवागि⋆ अरियै अऴित्तवनै⋆ पन्दनै तीर प्पल्लाण्डु⋆ पल्लायिरत्ताण्डॆन्ऱु पाडुदुमे॥६॥	हमारे पिता एवं सात पीढ़ी के भी आगे सभी पितामह गन आपकी सेवा में रत रहे हैं। सायंकालीन, श्रवण नक्षत्र में, नृसिंह अवतार लेकर आपने हिरण्यकशिपु राक्षस का अंत किया । आइये अपना दुःख करें और बहुतों सैकड़ों हजारों वर्षो तक पल्लाण्डु का गान करें।**6**।
तीयिर् पॊलिगिन्ऱ शॅञ्चुडराऴि⋆ तिगऴ् तिरुच्चक्करत्तिन्⋆ कोयिऱ्पॊऱियाले ऒट्टुण्डु निन्ऱु⋆ कुडिकुडि आट्शॅय्गिन्ऱोम्⋆ माय प्पॊरुपडै वाणनै⋆ आयिरन्दोळुम् पॊऴिकुरुदि– पाय⋆ शुऴट्रिय आऴि वल्लानुक्कु⋆ प्पल्लाण्डु कूऱुदुमे॥७॥	प्रज्वलित अग्नि तुल्य प्रभा से परिपूर्ण सुदर्शन चक्र से विभूषित आपकी सेवा हम पीढ़ी दर पीढ़ी करते रहे हैं। आपने मायावी बाणासुर के हजार कंधों को अपने चक्र से क्षत विक्षत कर रक्त रंजित कर दिया। ऐसे प्रभु का हम पल्लाण्डु गान करते हैं।**7**।
नॅय्यिडै नल्लदोर् शोऱुम्⋆ नियतमुम् अत्ताणि च्चेवकमुम्⋆ कैयडै क्कायुम् कऴुत्तुक्कु प्पूणॊडु⋆ कादुक्कु क्कुण्डलमुम्⋆ मॅय्यिड नल्लदोर् शान्दमुम् तन्दु⋆ ऎन्नै वॆळ्ळुयिराक्क वल्ल⋆ पैयुडै नाग प्पगैक्कॊडियानुक्कु⋆ प्पल्लाण्डु कूऱुवने॥८॥	घी मिश्रित सुन्दर भोजन की सुलभता, पान सुपारी, गले और कान का आभूषण, शरीर पर चन्दन, उस प्रभु के अनुग्रह से मिला है जिनके ध्वज पर नागारि गरूड़ अंकित हैं।आइये इनका पल्लाण्डु गान करें।**8**।
उडुत्तु क्कळैन्द निन् पीदगवाडै उडुत्तु⋆ क्कलत्तदुण्डु⋆ तॊडुत्त तुऴाय्मलर् शूडि क्कळैन्दन⋆ शूडुमित्तॊण्डर्गळोम्⋆ विडुत्त तिशैक्करुमम् तिरुत्ति⋆ त्तिरुवोण त्तिरुविऴविल्⋆ पडुत्त पैन्नागणै प्पळ्ळिकॊण्डानुक्कु⋆ प्पल्लाण्डु कूऱुदुमे॥९॥	शेषशायी प्रभु का धारण किया हुआ, पीतांबर, भोग लगा हुआ प्रसाद, और तुलसी माला, दास को आशीष स्वरूप मिलते रहता है। आपका अवतार श्रवण (तिरूवोनम) नक्षत्र में हुआ है, हम आपका पल्लाण्डु गान करते हैं।**9**।
ऎन्नाळ् ऎम्पॆरुमान्⋆ उन्ऱनक्कडियोम् ऎन्ऱॆऴुत्तुप्पट्ट– अन्नाळे⋆ अडियोङ्गळ् अडिक्कुडिल्⋆ वीडुपॆट्रुय्न्ददुगाण्⋆ शॅन्नाळ् तोट्रि⋆ त्तिरुमदुरैयुळ् शिलैकुनित्तु⋆ ऐन्दलैय– पैन्नाग त्तलै पायन्दवने !⋆ उन्नै प्पल्लाण्डु कूऱुदुमे॥	आपके नाम मंत्र से जुड़कर पूरी तरह आपका दास हो गया। मथुरा में अवतार लेकर आपने कंश का नाश किया उसके शस्त्रागारों को विध्वंस किया। कालिय नाग के फन पर नृत्य करने वाले प्रभु का हम पल्लाण्डु गान करते हैं। **10**।

‡अल्वळ क्कॊन्ऱुमिल्ला⋆ अणिकोट्टियर्कोन्⋆ अबिमानतुङ्गन्- शॆल्वनैप्पोल⋆ त्तिरुमाले ! नानुम् उनक्कु प्पळवडियेन्⋆ नल्वगैयाल् नमो नारायणावॆन्ऱु⋆ नामम् पलपरवि⋆ पल्वगैयालुम् पवित्तिरने !⋆ उन्नै प्पल्लाण्डु कूऱुवने॥११॥	हमारे तिरूमल प्रभु! आप परमआदरणीय सेल्व नांबी हैं। आपका विश्वासभाजन दास, विश्वासपूर्वक "नमो नारायणाय" के साथ आपके अनेकों नामों का गान करते हुये पल्लाण्डु गान करते हैं। **11** ।
‡पल्लाण्डॆन्ऱु पवित्तिरनै⋆ प्परमेट्टियै⋆ शार्ङ्गम् ऎन्नुम् विल्लाण्डान् तन्नै⋆ विल्लिपुत्तूर् विट्टुशित्तन् विरुम्बियशॊल्⋆ नल्लाण्डॆन्ऱु नविन्ऱुरैप्पार्⋆ नमो नारायणायवॆन्ऱु⋆ पल्लाण्डुम् परमात्मनै⋆ च्चूऴ्न्दिरुन्देत्तुवर् पल्लाण्डे॥१२॥	इन शब्दों के साथ सारंग धनुष धारण करने वाले परम शुद्ध एवं सह्यदय प्रभु का पल्लाण्डूगान प्रेम से श्रीविल्लीपुत्तुर के विष्णुचित्त ने किया। उन सबों का पल्लाण्डु जिन्होंने "नमो नारायणाय" के साथ प्रभु के पल्लाण्डु में सम्मिलित हुए। **12** ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

2 वण्णमाड ङगळ (13-22)

कण्णन तिरूववतार च्चिरप्पु (भगवान कृष्ण के जन्म की गाथा)

वण्ण माडङ्गळ् शूळ्⋆ तिरुक्कोट्टियूर्⋆ कण्णन् केशवन्⋆ नम्बि पिरन्दिनिल्⋆ एण्णॆय् शुण्णम्⋆ एदिर् एदिर् तूविड⋆ कण्णन् मुट्रम्⋆ कलन्दळरायिट्रे॥१॥	तिरूकोट्टियूर के सुन्दर महलों में जब भगवान कृष्ण केशव का जन्म हुआ तब खुशी में एक दूसरे के ऊपर तेल एवं हल्दी के चूर्ण उड़ेल कर कृष्ण के महल को कीचड़ मय कर दिया गया। **13**।
ओडुवार् विळुवार्⋆ उगन्दालिप्पार्⋆ नाडुवार् नम्पिरान्⋆ एङ्गुट्रान् एन्बार्⋆ पाडुवार्गळुम्⋆ पल्परै कॊट्टनिन्रु⋆ आडुवार्गळुम्⋆ आयिट्राय् प्पाडियॆ॥२॥	सभी उमंग में दौड़ते, गिरते और पुनः उठ कर एक दूसरे का स्वागत करते हुये पूछते "हमारे प्रभु कहाँ हैं"। नर्त्तकों, गायकों, तथा ढ़ोलवालों से गोपराजा का महल भर गया। **14**।
पेणि च्चीरुडै⋆ प्पिळ्ळै पिरन्दिनिल्⋆ काण त्ताम् पुगुवार्⋆ पुक्कु प्पोदुवार्⋆ आणॊप्पार्⋆ इवन् नेरिल्लैकाण्⋆ तिरु– वोण त्तान्⋆ उलगाळुम् एन्बार्गळे॥३॥	शीघ्र ही अलौकिक शिशु के अवतार के बाद जन्म गृह में देखने के लिये भीड़ हो गयी। दर्शन के बाद बाहर आकर सभी कहते " ये अद्वितीय हैं, पृथ्वी पर इनका शासन होगा, इनका जन्म नक्षत्र श्रवण (तिरूवोनम) है"।**15**।
उरियै मुट्रत्तु⋆ उरुट्टि निन्राडुवार्⋆ नरुनॆय् पाल् तयिर्⋆ नन्राग त्तूवुवार्⋆ शॆरिमॆन् कून्दल्⋆ अविळ त्तिळैत्तु⋆ एङ्गुम् अरिवळिन्दनर्⋆ आय्प्पाडि आयरे॥४॥	गोपजन अपने घर के छींके से सुस्वादु दूध दही घी पूरे उत्साह से एक दूसरे के ऊपर डालकर खाली वर्त्तनों को फेंककर अपना सुध बुध खोकर खुले बाल के साथ नृत्य करते।**16**।
कॊण्ड ताळुरि⋆ कोल क्कॊडुमळु⋆ तण्डिनर्⋆ परियोलै च्चयनत्तर्⋆ विण्डमुल्लै⋆ अरुम्बन्न पल्लिनर्⋆ अण्डर् मिण्डि⋆ प्पुगुन्दु नॆय् आडिनार्॥५॥	जंगल से आदिवासी लोगों की भीड़ आई जिनके दांत खिले हुए मुलै के फूल की तरह सफेद चमक रहे थे। पेड़ की छाल का वस्त्र पहने वे हाथ में डंडा, कुल्हाड़ी एवं खजूर के पत्ते से बने सोने की चटाई लिये थे।देह पर घी लगाकर वे नृत्य कर रहे थे।**17**।

कैयुम् कालुम् निमिर्त्तु⋆ क्कडार नीर्⋆ पैय आट्टि⋆ प्पशुञ्जिरु मञ्जळाल्⋆ ऐयनावळि⋆ ताळुक्कङ्गान्दिड⋆ वैयम् एळुम्⋆ कण्डाळ् पिळ्ळै वायुळे॥६॥	उनके हाथ पैर को सीधा कर मां ने पानी के कठौते में स्नान कराया। मुंह खोलकर जब मुलायम हल्दी से जीभ साफ करने लगी तब मुंह में सातों लोको की झांकी मिली।**18**।
वायुळ् वैयगम्⋆ कण्ड मड नल्लार्⋆ आयर् पुत्तिरन्⋆ अल्लन् अरुन्देय्वम्⋆ पाय शीरुडै⋆ प्पण्बुडै प्पालगन्⋆ मायन् एन्रु⋆ मगिळ्न्दनर् मादरे॥७॥	अन्य संभ्रांत महिलाओं ने ब्रह्मांड का दृश्य देखकर बोला, "यह गोपबालक साधारण मनुष्य न होकर स्वयं नारायण हैं। इनमें सारे दैविक शुभ लक्षण भरे पड़े हैं"।**19**।
पत्तु नाळुम् कडन्द⋆ इरण्डानाळ्⋆ एत्तिशैयुम्⋆ शयमरम् कोडित्तु⋆ मत्त मामलै⋆ ताङ्गिय मैन्दनै⋆ उत्तानम् शॆय्दु⋆ उगन्दनर् आयरे॥८॥	बारह दिनों के बाद गोपजन झूला को चारोतरफ से बंदनवार से सजाकर बच्चे को ऊपर गोद में लेकर गीत गाते हैं "यह राजकुमार तूफान से वचाने के लिये मदमत्त हाथी की तरह पर्वत को उठा लेने वाले हैं"।**20**।
किडक्किल् तॊट्टिल्⋆ किळिय उदैत्तिडुम्⋆ एडुत्तु क्कॊळ्ळिल्⋆ मरुङ्ग इरुत्तिडुम्⋆ ऒडुक्कि प्पुल्गिल्⋆ उदरत्ते पाय्न्दिडुम्⋆ मिडुक्किलामैयाल्⋆ नान् मॆलिन्देन् नङ्गाय्॥९॥	उनको जब झूला में रखते हैं, तब वे पैर ऐसा फेंकते हैं जैसे झूला ही टूट जायेगा। उन्हें उठाकर कमर के सहारे लेते हैं,तब वे कमर में लिपट जाते हैं। जब सामने गोद में रखते हैं,तब वे पेट को ही मरोड़ देते हैं। गोपजन यह कहते हुए गापबधूओं को बताते हैं, "इनको अब नहीं संभाल सकते, हम तो थक गये।" **21**।
‡शॆन्नॆल्लार् वयल्शूळ्⋆ तिरुक्कोट्टियूर्⋆ मन्न नारणन्⋆ नम्बि पिरन्दमै⋆ मिन्नु नूल्⋆ विट्टुशित्तन् विरित्त⋆ इ प्पन्नु पाडल् वल्लार्क्कु⋆ इल्लै पावमे॥१०॥	वैदिक जनेऊ से सुशोभित, श्री विष्णुचित्त स्वामी का यह मधुर गीत, हरे भरे धान की फसल से घिरे कोट्टियूर में, नारायण के अवतार को चित्रित करता है। जो इसका मनन करेंगे उनको पाप का मल नहीं रहेगा। **22**।

श्रीमते रामानुजाय नमः

3 शीदक्कडल् (23-43)

तिरूप्पादादिकेश वण्णम् (भगवान कृष्ण के दिव्य शरीर का चरण कमल से केश तक का आनन्दप्रदायी गाथा)

‡शीदक्कडलुळ्⋆ अमुदन्न देवकि⋆ कोदै क्कुळलाळ्⋆ अशोदैक्कु प्पोत्तन्द⋆ पेदै क्कुळवि⋆ पिडित्तु च्चुवैत्तुण्णुम्⋆ पाद क्कमलङ्गळ् काणीरे⋆ पवळ वायीर्! वन्दु काणीरे! ॥१॥	मोती अधर वाली नारियां ! अमृत तुल्य मधुर देवकी के सलोने बालक को यहां आकर देखो, जिसे देवकी ने सुसज्जित केशवाली यशोदा को दिया है। देखो ! किसतरह बालक सरलता से अपने पैर के अंगूठे को पकड़ कर मुंह में चूस रहा है। **23**

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तं।

मुत्तुम् मणियुम्⋆ वयिरमुम् नन्पोन्नुम्⋆ तत्ति प्पदित्तु⋆ त्तलै प्पेय्दार्पोल् एङ्गुम्⋆ पत्तु विरलुम्⋆ मणिवण्णन् पादङ्गळ्⋆ ऒत्तिट्टिरुन्दवा काणीरे⋆ ऒण्णुदलीर्! वन्दु काणीरे! ॥२॥	आभापूर्ण ललाटवाली नारियां ! यहां आकर देखो, प्रभु के श्याम मणि की कांतिवाले युगल चरण की दस अंगुलियां सोने में पिरोये हुए हीरे मोती और पन्ना की तरह चमक रहीं हैं। **24**
पणैत्तोळ् इळ आय्च्चि⋆ पाल् पायन्द कोङ्गै⋆ अणैत्तार उण्डु⋆ किडन्द इ प्पिळ्ळै⋆ इणैक्कालिल् वेळ्ळि त्तळै⋆ निन्रिलङ्गुम्⋆ कणैक्कालिरुन्दवा काणीरे⋆ कारिगैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥३॥	सलोनी नारियां ! यहां आकर देखो, दोनो पैरों में चांदी के वलय धारण किये हुए प्रभु, किस तरह तरूण वांस की तरह आकर्षक हाथ वाली नवयुवती गोपी के दुग्धपूर्ण स्तन पान कर सोये हैं। **25**

उऴन्दाऴ् नऱ्नॆय्⋆ ओरोर् तडा उण्ण⋆ इऴन्दाऴ् एरिविनाल्⋆ ईर्त्तॆऴिल् मत्तिन्⋆ पऴन् ताम्पाल् ओच्च⋆ प्पयत्ताल् तवऴ्न्दान्⋆ ⁊ मुऴन्दाऴ् इरुन्दवा काणीरे⋆ मुगिऴ्मुलैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥ ४ ॥	पूर्ण उरोज वाली नारियां ! यहां आकर इस बालक के सुन्दर घुटनों को देखो। मां यशोदा से बनाये गये सारे मक्खन को सभी पात्रों से खाने के बाद उनके कोपभाजन हुए। मां ने डांटते हुए जब दही मथने वाली रस्सी दिखाकर धमकाया तब डरकर मस्तक नीचा कर वहां से दूर हट गये। **26**
पिऱङ्गिय पेय्च्चि⋆ मुलै शुवैत्तुण्डिट्टु⋆ उऱङ्गुवान् पोले⋆ किडन्द इ प्पिळ्ळै⋆ मऱङ्गॊळ् इरणियन्⋆ मार्बै मुन् कीण्डान्⋆ कुऱङ्गुगळै वन्दु काणीरे⋆ कुविमुलैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥ ५ ॥	ऊन्नत उरोज वाली नारियां ! यहां आकर इस बालक के सुन्दर जांघों को देखो जिन्होंने पूतना राक्षसी के स्तन पान करते करते उसके प्राण खींचकर सोये हुए बालक की तरह उसके वक्षस्थल पर पड़े रहे। पूर्व में इन्होंने द्वेष से पूर्ण हिरण्यकशिपु के हृदय को चीर डाला था। **27**
मत्त क्कळिऱ्ऱु⋆ वशुदेवर् तम्मुडै⋆ शित्तम् पिरियाद⋆ देवकि तन् वयिऱ्ऱिल्⋆ अत्तत्तिन् पत्ताम् आळ्⋆ तोन्रिय अच्चुतन्⋆ मुत्तम् इरुन्दवा काणीरे⋆ मुगिऴ्नगैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥ ६ ॥	मृदुमुस्कान वाली नारियां ! यहां आकर अच्युत के गेंद को देखो, जिनका जन्म हस्ता से दसवें दिन, ताकतवर हाथियों के स्वामी, वसुदेव की प्रिय भार्या देवकी के गर्भ से हुआ है। **28**
इरुङ्गै मदगळिऱु⋆ ईर्क्किन्रवनै⋆ परुङ्गि प्परित्तु क्कॊण्डु⋆ ओडुम् परमन् तन्⋆ नॆरुङ्गु पवळमुम्⋆ नेर्नाणुम् मुत्तुम्⋆ मरुङ्गुम् इरुन्दवा काणीरे⋆ वाणुदलीर्! वन्दु काणीरे! ॥ ७ ॥	आभापूर्ण ललाटवाली नारियां ! यहां आकर देखो, प्रभु के हीरे और मोती से जड़े हुए कमरबन्द को। ये जब दौड़ते हैं तब लगता है मदमत्त हाथी किसी अन्य मारे गये हाथी को सूंढ़ से खींच रहा हो। **29**

वन्द मदलै⋆ क्कुळात्तै वलिशैय्दु⋆ तन्द क्कळिरु पोल्⋆ ताने विळैयाडुम्⋆ नन्दन् मदलैक्कु⋆ नन्ऱुम् अळगिय⋆ उन्दि इरुन्दवा काणीरे⋆ ऑळियिळैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥८॥	सुन्दर आभूषणों से सजी नारियां ! यहां आकर देखो, नंदगोप के दुलारे के गंभीर नाभि को । अन्य बच्चों की उपस्थिति को भुलाते हुए ये मतवाले हाथी की तरह स्वयं अकेले खेलते रहते हैं। **30**
अदिरुम् कडल्निऱ वण्णनै⋆ आयच्चि मदुर मुलै ऊट्टि⋆ वञ्जित्तु वैत्त⋆ पदऱ प्पडामे⋆ पळन् ताम्पाल् आर्त्त⋆ उदरम् इरुन्दवा काणीरे⋆ ऑळिवळैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥९॥	सुन्दर कंगनों से सजी नारियां ! यहां आकर देखो, सांवले सलोने प्रभु के उदर को। मां ने मृदु स्तन पाान करा चुपके से इन्हे जगाये विना एक पुरानी रस्सी से बांध दिया। **31**
पॆरुमा उरलिल्⋆ पिणिप्पुण्डिरुन्दु⋆ अङ्गु इरुमा मरुदम्⋆ इऱुत्त इ प्पिळ्ळै⋆ कुरुमा मणिप्पूण्⋆ कुलावि त्तिगळुम्⋆ तिरुमार् बिरुन्दवा काणीरे⋆ शेयिळैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥१०॥	सुन्दर आभूषणों से सजी नारियां ! यहां आकर देखो, मणि से चमकते इनके सुन्दर जाज्वल्यमान वक्षस्थल को।ओखल में रस्सी से बंधने पर दो अर्जुन वृक्षों के बीच से भारी ओखल के साथ सरकते हुए उन वृक्षों को उखाड़ डाले। **32**
ताळै निमिर्त्तु⋆ च्चगडत्तै च्चाडि प्पोय्⋆ वाळ् कॊळ् वळै एयिट्रु⋆ आरुयिर् वव्विनान्⋆ तोळ्गाळ् इरुन्दवा काणीरे⋆ शुरिगुळलीर्! वन्दु काणीरे! ॥११॥	सुन्दर घुंघराले बाल वाली नारियां ! यहां आकर देखो, इनके सुन्दर बाहों को।चार पांच महीने की अवस्था में इन्होंने शकटासुर दुष्ट राक्षस को जो छद्म वेष से गाड़ी का रूप धारण कर रखा था नष्ट कर दिया। छद्म मुस्कान वाली पूतना का स्तन पान के बहाने प्राण हर लिया। **33**
मै तडङ्कणि⋆ यशोदै वळर्क्किन्ऱ⋆ शॆय्त्तलै नील निऱत्तु⋆ च्चिऱु प्पिळ्ळै⋆ नॆय्त्तलै नेमियुम्⋆ शङ्गुम् निलाविय⋆ कैत्तलङ्गळ् वन्दु काणीरे⋆ कनङ्गुळैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥१२॥	सुन्दर कान की आभूषण से सज्जित नारियां ! यहां आकर देखो, विस्तृत कजरारी नयनों वाली यशोदा के बगीचे के सुन्दर श्यामल सलोने खिले हुए पुष्प को। इनके ही ये सुन्दर बांहें शंख और चक्र धारण करते हैं। **34**

वण्डमर् पूङ्गुळल्⋆ आय्च्चि मगनाग⋆ कॊण्डु वळर्क्किन्र⋆ कोवल क्कुट्टर्कु⋆ अण्डमुम् नाडुम्⋆ अडङ्ग विळुङ्गिय⋆ कण्डम् इरुन्दवा काणीरे⋆ कारिगैयीर् ! वन्दु काणीरे ! ॥१३॥	सुन्दर वारांगनाओं ! यहां आकर देखो मधुमक्खी को लुभाने वाले सुन्दर फूलों की जूड़ा वाली यशोदा ने इन्हें अपने पुत्र की तरह पाला पोसा। संपूर्ण जगत को निगल कर अपने मुंह में रखने वाले इनके सुन्दर गले को तो देखो।**35**
एम् तॊण्डै वाय् च्चिङ्गम्⋆ वा एन्रॆडुत्तु क्कॊण्डु⋆ अन्दॊण्डै वाय्⋆ अमुदादरित्ताय्च्चियर्⋆ तम् तॊण्डै वायाल्⋆ तरुक्कि प्परुगुम्⋆ इ– च्चॆन् तॊण्डै वाय् वन्दु काणीरे⋆ शेयिळैयीर् ! वन्दु काणीरे ! ॥१४॥	सुन्दर आभूषणों से सजी नारियां ! यहां आकर देखो, नवेली गोपियां इन्हें उठाते हुए बोलतीं "आओ मेरे प्रिय मृगशावक" । पूनः इनका मुख चूमकर सुधा रसपान का लाभ उठातीं। **36**
नोक्कि यशोदै⋆ नुणुक्किय मञ्जळाल्⋆ नाक्कु वळित्तु⋆ नीराट्टुम् इन्नम्बिक्कु⋆ वाक्कुम् नयनमुम्⋆ वायुम् मुरुवलुम्⋆ मूक्कुम् इरुन्दवा काणीरे⋆ मॊय्गुळलीर् ! वन्दु काणीरे ! ॥१५॥	सुन्दर घने बालों वाली नारियां ! यहां आकर देखो, नये हल्दी के चूर्ण से यशोदा स्नान करा इनका जीभ साफ करतीं। देखो, इनके आंख, नाक और मुस्कान भरे मुंह कितने आकर्षक हैं। **37**
विण्गॊळ् अमरर्गळ्⋆ वेदनै तीर⋆ मुन् मण्गॊळ् वशुदेवर्⋆ तम् मगनाय् वन्दु⋆ तिण्गॊळ् अशुररै⋆ त्तेय वळर्किन्रान्⋆ कण्गळ् इरुन्दवा काणीरे⋆ कनवळैयीर् ! वन्दु काणीरे ! ॥१६॥	सुन्दर स्वर्ण कंगनों से सजी नारियां ! यहां आकर देखो, देवताओं के दुःख मिटाने के लिए ये पृथ्वी पर वसुदेव के पुत्र के रूप में अवतार लिये और बढ़ती उम्र के साथ असुरों का नाश करत रहे। इनके सुन्दर आंख को तो देखो। **38**

परुवम् निरम्बामे⋆ पारॆल्लाम् उय्य⋆ तिरुविन् वडिवॊक्कुम्⋆ देवकि पॆट्र⋆ उरुवु करिय⋆ ऒळि मणिवण्णन्⋆ पुरुवम् इरुन्दवा काणीरे⋆ पूण्मुलैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥१७॥	आभूषित उरोज वाली नारियां ! यहां आकर देखो। सुन्दर श्याम मणि के वर्ण वाले बालक लक्ष्मी तुल्य देवकी के पुत्र हैं। वचपनावस्था में भी ये संसार से मुक्ति दिला रहे हैं। इनके सुन्दर भुवाअंक को तो देखो। **39**
मण्णुम् मलैयुम्⋆ कडलुम् उलगेळुम्⋆ उण्णुन् तिरत्तु⋆ मगिळ्न्दुण्णुम् पिळ्ळैक्कु⋆ वण्णम् एळिल्गॊळ्⋆ मगरक्कुळै इवै⋆ तिण्णम् इरुन्दवा काणीरे⋆ शेयिळैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥१८॥	आभूषित सुन्दर नारियां ! यहां आकर देखो इस बालक के सोने के सुन्दर मकराकृत कुण्डल को।प्रलयकाल में ये आनन्दपूर्वक सात लोक, सात पृथ्वी, सात पर्वतसमूह, एवं सात समुद्र को आत्मसात कर लेते हैं। **40**
मुट्रिलुम् तूदैयुम्⋆ मुन्गैम्मेल् पूवैयुम्⋆ शिट्रिल् इळैत्तु⋆ त्तिरिदरुवोर्गळै⋆ पट्रि प्परित्तु क्कॊण्डु⋆ ओडुम् परमन् तन्⋆ नॆट्रि इरुन्दवा काणीरे⋆ नेरिळैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥१९॥	सुन्दर आभूषणें वाली नारियां ! यहां आकर प्रभु के सुन्दर ललाट को देखो। बालु से घरौंदा का खेल खेलने वाली गोपियों के हाथ से चवंर, पात्र, और तालपत्र के खिलौनों को छीनकर भाग जाते हैं। **41**
अळगिय पैम् पॊन्निन्⋆ कोल् अङ्गै क्कॊण्डु⋆ कळल्गाळ् शदङ्गै⋆ कलन्देङ्गुम् आर्प्प⋆ मळ कन्रिनङ्गळ्⋆ मरित्तु त्तिरिवान्⋆ कुळल्गाळ् इरुन्दवा काणीरे⋆ कुविमुलैयीर्! वन्दु काणीरे! ॥२०॥	पूर्ण उरोज वाली नारियां ! यहां आकर इनके घुंघराले सुन्दर केश को देखो। कैसे ये सलोने हाथ में स्वर्ण छड़ी लिये छोटे बछड़ों के समूह को चराते हैं। इनके पाजेब और पादुका से कैसी मनोहर संगीतमय ध्वनि निकलती है। **42**

‡शुरुप्पार् कुळत्ति⋆ यशोदै मुन् शॊन्न⋆ तिरु प्पादकेशत्तै⋆ त्तॆन्पुदुवै प्पट्टन्⋆ विरुप्पाल् उरैत्त⋆ इरुपदोडॊन्ऱुम् उरैप्पार् पोय्⋆ वैगुन्दत्तॊन्ऱि इरुप्परे ! ॥ २१ ॥	पुदुवै (श्रीविल्लीपुत्तुर) के पत्तारबिरन के ये इक्कीश पद यशोदा द्वारा कृष्ण के चिर प्रसिद्ध पादकेशान्तक अलंकार का वर्णन करते हैं। इसका गान वैकुंठ लोक की प्राप्ति कराता है। **43**

श्रीमते रामानुजाय नमः

4 मणिक्कङ्कट्टि (44-53)

तिरूत्तालाट्टू (भगवान कृष्ण को झूला एवं पालने में प्रसन्न रखने के लिए भिन्न प्रकार के लोरी गीत सुनानाा)

‡माणिक्कम् कट्टि⋆ वयिरम् इडै कट्टि⋆ आणि प्पॊन्नाल् शॆय्द⋆ वण्ण च्चिऱु तॊट्टिल्⋆ पेणि उनक्कु⋆ प्पिरमन् विडुतन्दान्⋆ माणि क्कुऱळने ! तालेलो ! ⋆ वैयम् अळन्दाने ! तालेलो ! ॥१॥	नंगा मणिक्कन ! ब्रह्मा ने आपके लिए रत्नजटित स्वर्ण का झूला भेजा है। आपने पृथ्वी को मापा ! तालेलो ! 44
उडैयार् कनमणियोडु⋆ ऒण् मादुळम्पू⋆ इडै विरवि क्कोत्त⋆ ऎऴिल् तॆऴ्गिनोडु⋆ विडै एऱु कापालि⋆ ईशन् विडुतन्दान्⋆ उडैयाय् ! अऴेल् अऴेल् तालेलो ! ⋆ उलगम् अळन्दाने ! तालेलो ! ॥२॥	भैंसा वाहक शिव ने आपके लिए सोने का कमरधनि भेजा है जिसमे सोने एवं मणि के दाने एक के बाद एक गुंथे हैं। मेरे प्रभु, आप रोना बंद कीजिये। रोईये मत, तालेलो ! आपने पृथ्वी को मापा ! तालेलो ! 45
ऎन् तम्बिरानार्⋆ ऎऴिल् तिरुमार्वर्क्कु⋆ शन्दम् अऴगिय⋆ तामरै त्ताळर्क्कु⋆ इन्दिरन् तानुम्⋆ ऎऴिल् उडै क्किण्किणि⋆ तन्दुवनाय् निन्ऱान् तालेलो ! ⋆ तामरै क्कण्णने ! तालेलो ! ॥३॥	प्रभापूर्ण वक्षस्थल एवं सुन्दर चरण कमल वाले प्रभु के दोनों पैरों में बंधे घुंघुरू इन्द्र ने दिये। तालेलो ! कमलनयन ! तालेलो ! 46

शङ्गिन् वलम्बुरियुम्⋆ शेवडि क्किण्किणियुम्⋆ अङ्गै च्चरिवळैयुम्⋆ नाणुम् अरैत्तॊडरुम्⋆ अङ्गण् विशुम्बिल्⋆ अमरर्गळ् पोत्तन्दार्⋆ शॆङ्गण् करुमुगिले ! तालेलो !⋆ देवकि शिङ्गमे ! तालेलो ! ॥ ४ ॥	उन्मुक्त आकाश से देवताओं ने दक्षिणावर्त शंख, पाजेव, कंगन, गले का हार एवं कमरबन्द भेजा है। लोहितनयन श्यामवदन ! तालेलो ! देवकी के मृग शावक ! तालेलो ! **47**
एळिल् आर् तिरुमार्वुक्कु⋆ एर्कुम् इवै एन्रु⋆ अळगिय ऐम्बडैयुम्⋆ आरमुम् कॊण्डु⋆ वळुविल् कॊडैयान्⋆ वयिच्चिर रावणन्⋆ तॊळुदुवनाय् निन्रान् तालेलो !⋆ तूमणि वण्णने ! तालेलो ! ॥ ५ ॥	ऊत्तर दिशा के देवता वशिरावना, हस्त अंजलि खड़े होकर, आपके प्रभापूर्ण वक्षस्थल के सुन्दरता एवं आकार के समरूप, आकर्षक गले का हार समर्पित कर रहे हैं जो विष्णु के पांचो आयुधों के आकार के दानों से बने हैं। तालेलो ! निष्पाप श्याम वदन प्रभु ! तालेलो ! **48**
ओद क्कडलिन्⋆ ऑळिमुत्तिन् आरमुम्⋆ शादि प्पवळमुम्⋆ शन्द च्चरिवळैयुम्⋆ मा तक्क एन्रु⋆ वरुणन् विडुतन्दान्⋆ शोदि च्चुडर् मुडियाय् ! तालेलो !⋆ शुन्दर त्तोळने ! तालेलो ! ॥ ६ ॥	वरूण ने आपके समरूप कंगण एवं मूंगे का हार तथा गहरे समुद्र से प्राप्त होने वाले मोती का माला भेजा है। प्रदीप्त मुकुट वाले ! तालेलो ! सुन्दरवाहु ! तालेलो ! **49**
कान् आर् नरुन्दुळाय्⋆ कैशॆय्द कण्णियुम्⋆ वान् आर् शॆळुञ्जोलै⋆ क्कर्पगत्तिन् वाशिगैयुम्⋆ तेन् आर् मलर्मेल्⋆ तिरुमङ्गै पोत्तन्दाळ्⋆ कोने ! अळेल् अळेल् तालेलो !⋆ कुडन्दै क्किडन्दाने ! तालेलो ! ॥ ७ ॥	अमृतमयी कमल पर आसीन लक्ष्मी ने ताजी तुलसी का हार तथा ऊंचे आकाश से धनुषधारियों द्वारा प्राप्त होने वाले करपक्कम के फूल का माला भेजा है। मेरे प्रभु रोइये मत ! तालेलो ! क्षीरसागरशायी प्रभु ! तालेलो ! **50**

कच्चॊडु पॊर्शुरिगै⋆ काम्बु कनगवळै⋆ उच्चि मणिच्चुट्टि⋆ ऑण् ताळ् निरै प्पॊर्पू⋆ अच्चुतनुक्कॆन्ऱु⋆ अवनियाळ् पोत्तन्दाळ्⋆ नच्चुमुलै उण्डाय् ! तालेलो ! ⋆ नारायणा ! अळेल् तालेलो ! ॥८॥	पृथ्वी ने कपड़े को बांधने वाला सोने का डंडल, सोने का कंगन, रत्नजटित ललाट का आभूषण और सुन्दर फूल जैसा सोने का केशपाश भेजा है। अच्युत ! जिसने जहरीला स्तन का पान किया, तालेलो ! नारायण, रोइये मत !! तालेलो ! **51**
मॆय् तिमिरुम् नान⋆ पॊडियोडु मञ्जळुम्⋆ शॆय्य तडङ्गण्णुक्कु⋆ अञ्जनमुम् शिन्दुरमुम्⋆ वॆय्य कलैप्पागि⋆ कॊण्डु वळाय् निन्ऱाळ्⋆ ऐया ! अळेल् अळेल् तालेलो ! ⋆ अरङ्गत्तणैयाने ! तालेलो ! ॥९॥	हिरण पर सवार पार्वती स्नान के लिये सुगन्धित इत्र, हल्दी चूर्ण, राजीव नयन के लिए काजल और रोड़ी श्री लिये खड़ी हैं। प्रभु रोइये मत ! तालेलो ! क्षीरसमुद्र में शेषशायी ! तालेलो ! **52**
‡ वञ्जनैयाल् वन्द⋆ पेय्च्चि मुलै उण्ड⋆ अञ्जन वण्णनै⋆ आय्च्चि तालाट्टिय⋆ शॆञ्जॊल् मऱैयवर् शेर्⋆ पुदुवै प्पट्टन् शॊल्⋆ एञ्जामै वल्लवर्क्कु⋆ इल्लै इडर्ताने ॥१०॥	वेदपाठी भक्तों वाले पुदुवै (श्रीविल्लीपुत्तुर) के पत्तारबिरन के ये दस पद, श्याम वदन प्रभु जिन्होने पूतना का जहरीला स्तन पिया, के मनोरंजन के लिए यशोदा के लोरी गीत को दुहराते हैं। जो इसका श्रद्धा से पाठ करेगा उसे कोइ दुःख नहीं होगा। **53**

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

5 तन्मुगत्तु (54-63)

अम्बुलि प्परूवम् (भगवान कृष्ण के मनोरंजन के लिए आकाश से चांद को उनके पास बुलाना)

</td></tr>
<tr><td>तन्मुगत्तु च्चुट्टि⋆ तूङ्ग तूङ्ग त्तवळन्दु पोय्⋆
पॉन्मुग क्किण्किणि आर्प्प⋆ प्पुळुदि अळैगिन्ऱान्⋆
एन् मगन् गोविन्दन्⋆ कूत्तिनै इळ मा मदी !⋆
निन्मुगम् कण्णुळ आगिल्⋆ नी इङ्गे नोक्कि प्पो॥१॥</td><td>हे चांद ! अगर आपके पास आंखें हैं, तो हमारे नटखट गोविन्द को आकर देखिये।जब वे रेंगते हैं, तब धूल उठते हैं, उनके ललाट का आभूषण हिलता है, तथा पाजेब बजता रहता है।54</td></tr>
<tr><td>एन् शिरुक्कुट्टन्⋆ एनक्कोर् इन्नमुदेम् पिरान्⋆
तन् शिरु क्कैगळाल्⋆ काट्टि क्काट्टि अळैक्किन्ऱान्⋆
अञ्जन वण्णनोडु⋆ आडल् आड उऱुदियेल्⋆
मञ्जिल् मऱैयादे⋆ मा मदी ! मगिळ्न्दोडिवा॥२॥</td><td>हे महान चांद ! मेरे श्यामल सलोने बालक, मेरे अमृततुल्य प्रभु, आपको अपने सुन्दर छोटे हाथों से अपने पास बुलाते हैं। अगर आप इनके साथ खेलना चाहते हैं, तब बादलों के पीछे न छिपकर खुशी पूर्वक दौड़ते हुये आइये।55</td></tr>
<tr><td>शुट्टुम् ऑळिवट्टम्⋆ शूळ्न्दु जोदि परन्देङ्गुम्⋆
एत्तनै शॅय्यिनुम्⋆ एन्मगन् मुगम् नेरॉव्वाय्⋆
वित्तगन् वेङ्गड वाणन्⋆ उन्नै विळिक्किन्ऱ⋆
कैत्तलम् नोवामे⋆ अम्बुली ! कडिदोडिवा॥३॥</td><td>हे चमकते चांद ! मेरे श्यामल सलोने बालक के मुख सौंदर्य की अपेक्षा आपकी चांदनी फीकी है।वेंकटम के निवासी हमारे प्रभु, आपको बुला रहे हैं। शीघ्र आइये, ऐसा न हो कि आपके बुलाते बुलाते उनके हाथ दुखने लगें। 56</td></tr>
<tr><td>शक्कर क्कैयन्⋆ तडङ्कण्णाल् मलर विळित्तु⋆
ऑक्कलैमेल् इरुन्दु⋆ उन्नैये शुट्टि क्काट्टुम्काण्⋆
तक्कदऱिदियेल्⋆ चन्दिरा ! शलम् शॅय्यादे⋆
मक्कळ् पॅऱाद⋆ मलडन् अल्लैयेल् वा कण्डाय्॥४॥</td><td>हे पूर्णिमा के चांद ! मेरे चक्रधारी प्रभु, हमारे कमर पर बैठे हैं और अपनी चमकती आंखों से आपकी ओर देखकर संकेत कर रहे हैं। आपको जैसा उचित लगे कीजिए। हां, अगर आप संतान वाले हैं, तो इनके संकेत पर शीघ्र इनके पास आइए। 57</td></tr>
</table>

अळगिय वायिल्⋆ अमुद ऊरल् तॆळिवुरा⋆ मळलै मुट्राद इळञ्जॊल्लाल्⋆ उन्नै क्कूवुगिन्ऱान्⋆ कुळगन् शिरीदरन्⋆ कूवक्कूव नी पोदियेल्⋆ पुळैयिल आगादे⋆ निन्शॆवि पुगर् मा मदी ! ॥५॥	हे बड़े आकार वाले चमकते चांद ! हमारे श्रीधर, अपने मुंह से लार टपकाते हुए न समझने लायक शब्दों से बहुत बात कर रहें हैं। साथ ही मधुर किलकारियों से आपको बुलाते हैं। अगर आप इनकी उपेक्षा करते रहे तो इसका यह अर्थ होगा कि आपके कान बिना श्रवण छिद्र के हैं।**58**
तण्डॊडु चक्करम्⋆ शारङ्गम् एन्दुम् तडक्कैयन्⋆ कण् तुयिल् कॊळ्ळ क्करुदि⋆ क्कॊट्टावि कॊळ्गिन्ऱान्⋆ उण्ड मुलैप्पाल् अऱा कण्डाय्⋆ उरङ्गाविडिल्⋆ विण्तनिल् मन्निय⋆ मा मदी ! विरैन्दोडिवा॥६॥	हे विस्तृत आकाश वाले चमकते चांद ! हमारे प्रभु के वे शक्तिशाली हाथ जो चक्र, गदा, एवं धनुष धारण करते हैं,सोने के लिये अंगड़ाई भर रहे हैं। अगर नहीं सोयेंगे, तब जो स्तन पान से इन्होंने दूध पिया है वह पचेगा नही। अतः शीघ्र आप इनके पास आइए।**59**
बालकन् एन्ऱु⋆ परिबवम् शॆय्येल्⋆ पण्डॊरु नाळ् आलिन् इलै वळर्न्द⋆ शिऱुक्कन् अवन् इवन्⋆ मेल् एळ प्पायन्दु⋆ पिडित्तुक्कॊळ्ळुम् वॆगुळुमेल्⋆ मालै मदियादे⋆ मा मदी ! मगिळ्न्दोडिवा॥७॥	हे वृहत चांद ! ऐसा नहीं सोचिये कि ये एक छोटे बालक हैं। आप जानते होंगे कि पूर्व में ये संपूर्ण संसार को निगल कर आनंद से बट के बड़े पत्ते पर चित्त सोये थे। अगर इनको क्रोध आया तो उछल कर आपको पकड़ लेंगे। आप अपना मान सम्मान छोड़कर स्वयं यहां आइये। **60**
शिऱियन् एन्ऱॆन् इळञ्जिङ्गत्तै⋆ इगळेल् कण्डाय्⋆ शिऱुमैयिन् वार्त्तैयै⋆ मावलियिडै च्चॆन्ऱु केळ्⋆ शिऱुमै प्पिळै कॊळ्ळिल्⋆ नीयुम् उन् तेवैक्कुरियै काण्⋆ निऱैमदी ! नॆडुमाल्⋆ विरैन्दुन्नै क्कूवुगिन्ऱान्॥८॥	हे पूर्ण चंद्र ! हमारे मृगशावक को छोटा समझ उपहास नहीं कीजिये। इनके लघु आकार का अर्थ महाबली से समझिये। अगर आप इनके प्रति उपेक्षा कि गलती को स्वीकार कर लेंगे तो इनके दया के पात्र हो जायेंगे। समस्त संसार के नाथ आपको बुला रहे हैं। शीघ्रता कीजिये। **61**

तालियिल् वॆण्णॆय् तडङ्गै आर विळुङ्गिय पेळै वयिट्रॆम् पिरान् कण्डाय् उन्नै क्कूवुगिन्ऱान् आलि कॊण्डुन्नै एरियुम् ऐयुरवु इल्लै काण् वाळ उरुदियेल् मा मदी ! मगिळ्न्दोडिवा॥९॥	हे वृहत चांद ! हमारे प्रभु अपने लंबे हाथ द्वारा स्वयं वर्त्तनों से मक्खन निकालकर अपना पेट भरकर खाये और आपको बुलाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये अपना चक्र आप पर चला सकते हैं। अगर आप जीवित रहना चाहते हैं तो स्वेक्षा से दौड़ते हुए आइये। **62**
मैत्तडङ्गण्णि यशोदै तन् मगनुक्कु इवै ऒत्तन शॊल्लि उरैत्त माट्रम् ऒळिपुत्तूर् वित्तगन् विट्टुशित्तन् विरित्त तमिळ् इवै एत्तनैयुम् शॊल्ल वल्लवरक्कु इडर् इल्लैये॥१०॥	प्रसिद्ध पुदुवै (श्रीविल्लीपुत्तुर) के श्रीविष्णुचित्त स्वामी ने इन दस पदों में कजरारे नयन यशोदा के अपने लाड़ले के लिए कहे हुए मधुर शब्दों को दोहराया है। जो इसका किसी तरह भी पाठ करेगा उसे कभी कोई दुःख नहीं होगा। **63**

श्रीमते रामानुजाय नमः

6 उय्यवुलगु (64-74)

शङ्गीरै प्परूवम् (भगवान कृष्ण सिर उठाकर रेंगने का उपक्रम करते हैं) अगर अभी रेंगना है तो नाचेंगे कैसे जो कि बाद के 64 ‑74 के पदों में वर्णित है।

उय्य उलगु पडैत्तुण्ड मणिवयिरा !★ ऊळिदोऱुळि पल आलिन् इलै अदन्मेल्★ पैय उयोगु तुयिल् कॊण्ड परम्परने !★ पङ्कय नीळ् नयनत्तञ्जन मेनियने !★ शॆय्यवळ् निन् अगलम् शेमम् एन क्करुदि★ शॆल्वु पॊलि मकर क्कादु तिगळ्न्दिलग★ ऐय ! एनक्कॊरु काल् आडुग शॆङ्गीरै★ आयर्गळ् पोरेरे ! आडुग आडुगवे॥१॥	आभूषण जड़ित देवाधिदेव ! आप सृष्टि की रचना करते हैं, और पुनः उसे अपने आप में आत्मसात् कर बहुत बहुत लंबे समय के लिए बट पत्र पर योग निद्रागामी हो जाते हैं। श्यामल गात, राजीव नयन ! लक्ष्मी माता आपके विशाल वक्षस्थल में निरंतर निवास करती हैं। गोपवंश वृषभ ! नाचिए। आपके नृत्य से कान के स्वर्ण मकराकृत कुण्डल मुग्धकारी रूप से हिलते हैं। शङ्गीरै नाचिए।**64**
कोळरियिन् उरुवङ्कॊण्डवुणन् उडलम्★ कुरुदि कुळम्बि एळ क्कुरुगिराल् कुडैवाय् !★ मीळ अवन् मगनै मॆय्म्मै कॊळ क्करुदि★ मेलै अमरर्पति मिक्कु वॆगुण्डु वर★ काळ नन् मेगमवै कल्लॊडु काल् पॊळिय★ करुदि वरै क्कुडैया क्कालिगळ् काप्पवने !★ आळ ! एनक्कॊरु काल् आडुग शॆङ्गीरै★ आयर्गळ् पोरेरे ! आडुग आडुगवे॥२॥	अति भयकारी नृसिंह रूप में हिरण्यकशिपु का पेट फाड़कर उसके खून से होली खेली और परम भक्त (उसके पुत्र प्रेहलाद) की रक्षा की। देवताओं के राजा इन्द्र ने कोध में काले बादल भेजकर तूफानमयी वर्षा की, तब आपने पर्वत (गोवर्धन) हाथ मे छत्रवत लेकर गायों की प्राणरक्षा की। गोपवंश के शक्तिशाली वृषभ ! हमारे प्रभु ! हमारे हेतु एक बार नाचकर दिखा दीजिए। शङ्गीरै नाचिए।**65**
नम्मुडै नायकने ! नान्मऱैयिन् पॊरुळे !★ नावियुळ् नर्कमल नान्मुगनुक्कु★ ऑरु काल् तम्मनै आनवने ! दरणि तलमुळुदुम्★ तारगैयिन् उलगुम् तडवि अदन् पुऱमुम्★ विम्म वळर्न्दवने ! वेळमुम् एळ् विडैयुम्★ विरविय वेलैदनुळ् वॆन्ऱु वरुबवने !★ अम्म ! एनक्कॊरु काल् आडुग शॆङ्गीरै★ आयर्गळ् पोरेरे ! आडुग आडुगवे॥३॥	आप चारों वेद के परम तत्व हैं। आपके नाभिकमल पर आसीन ब्रह्मा को मधु कैटभ से बचाया। त्रिविकम का रूप धारण कर, पृथ्वी, आकाश गंगा और उससे भी ऊपर अपने पैरों से नापा। कुवलयपीड़ हाथी को पराजित किया, तथा सात साढ़ों को हराकर नप्पिनाय (नीला देवी) को वरण किया। प्रभु ! नाचिए । शङ्गीरै नाचिए।**66**

<table>
<tr>
<td>वानवर्ताम् मगिऴ वन् शकटम् उरुळ⋆
वञ्ज मुलैप्पेयिन् नञ्जम् अदुण्डवने ! ⋆
कानग वल् विळविन् काय् उदिर क्करुदि⋆
कन्ऱ्दु कॊण्डॆरियुम् करुनिऱ् एन् कन्ऱे ! ⋆
तेनुगनुम् मुरनुम् तिण्तिऱल् वॆन्नरकन्⋆
एन्बवर् ताम् मडिय च्चॆरुवदिर च्चॆल्लुम्⋆
आनै ! एनक्कुऒरु काल् आडुग शॆङ्गीरै⋆
आयर्गळ् पोऱेऱे ! आडुग आडुगवे ॥ ४ ॥</td>
<td>जब आपने शकटासुर का नाश किया, और पूतना राक्षसी के प्राण खींचे, तब देवताओं ने उत्सव मनाया। हमारे श्यामल वत्स ! जब आपने वत्सासुर को ताड़ वृक्ष पर पटक मारा तो सारे वृक्षों के फल जमीन पर आ गिरे। आपने भयंकर धेनुकासुर, मुर, तथा नरकासुर को, पृथ्वी को कंपाने वाले युद्ध में नाश किया।हमारे गजेन्द्र ! नाचिए। शङ्गीरै नाचिए।67</td>
</tr>
<tr>
<td>मत्तळवुम् तयिरुम् वार्कुळल् नन्मडवार्⋆
वैत्तन नॆय् कळवाल् वारि विळुङ्गि⋆ ऒरुङ्गु
ऒत्त इणैमरुदम् उन्निय वन्दवरै⋆
ऊरु करत्तिनॊडुम् उन्दिय वॆन्दिऱल्लोय् ! ⋆
मुत्तिन् इळ मुऱुवल् मुढ़ वरुवदन्मुन्⋆
मुन्न मुगत्तणि आर् मॊय्कुळल्गळ् अलैय⋆
अत्त ! एनक्कॊरु काल् आडुग शॆङ्गीरै⋆
आयर्गळ् पोऱेऱे ! आडुग आडुगवे ॥ ५ ॥</td>
<td>शक्तिशाली प्रभु ! आपने सुन्दर लंबे केशवाली गोपियों द्वारा श्रम से एकत्रित दही, मक्खन, एवं घी चोरी से खा गये। मारूडु के युगल पेड़ ने जब आपको क्षति पहुचाने का सोचा तो अपने मजबूत हाथों से आपने उनका नाश किया। अर्द्धविकशित दातों को दर्शाते हुए मुस्कारिये , और घुंघराले बालों को नचाते हुए नाचिए। शङ्गीरै नाचिए।68</td>
</tr>
<tr>
<td>काय मलर्निऱवा ! करुमुगिल् पोल् उरुवा ! ⋆
कानग मा मडुविल् काळियन् उच्चियिले⋆
तूय नडम् पयिल्लुम् शुन्दर एन् शिऱुवा ! ⋆
तुङ्ग मदक्करियिन् कॊम्बु परित्तवने ! ⋆
आयम् अरिन्दु पॊरुवान् एदिर्वन्द मल्लै⋆
अन्दरम् इन्रि अऴित्ताडिय ताळिणैयाय् ! ⋆
आय ! एनक्कॊरु काल् आडुग शॆङ्गीरै⋆
आयर्गळ् पोऱेऱे ! आडुग आडुगवे ॥ ६ ॥</td>
<td>श्यामवदन घनश्याम प्रभु ! हमारे सलोने संताान ! आपने जंगल की गहरी खाड़ी में कालिय नाग के शिरों पर अपने विशुद्ध चपल पैरों से सुन्दर नृत्य किया।कुवलयापीड़ हाथी के सूढ़ को उखाड़ फेंका। आसानी भयंकर पहलवानों को मल्ल युद्ध में परास्त किया। नाचिए हमारे प्रभु। शङ्गीरै नाचिए।69</td>
</tr>
</table>

तुप्पुडै आयर्गळ् तम् शॊल् वळुवादॊरु काल्★ तूय करुङ्गुळल् नल् तोगैमयिल् अनैय★ नप्पिनै तन् तिरमा नल् विडै एळ् अविय★ नल्ल तिरल् उडैय नातनुम् आनवने !★ तप्पिन पिळ्ळैगळै त्तनमिगु शोदिपुग★ तनि ऒरु तेर् कडवि त्तायॊडु कूट्टिय★ एन् अप्प ! एनक्कॊरु काल् आडुग शॆङ्गीरै★ आयर्गळ् पोरेरे ! आडुग आडुगवे॥७॥	गोपजनों की प्रतियोगिता में सात वृषभों को परास्त कर आपने सुन्दर एवं काले केशोंवाली जंगल की अप्रतिम सुन्दर मोरनी, नप्पिनाय से पाणि ग्रहण किया। स्वर्ण रथ पर सवार हो शाश्वत प्रकाशमय लोक में जाकर आपने ब्राहण के खोये बच्चों को वहां से लाकर उनके मां को सुपुर्त किया। नाचिए शङ्गीरै नाचिए।**70**
‡उन्नैयुम् ऒक्कलैयिल् कॊण्डु तम् इल् मरुवि★ उन्नॊडु तङ्गळ् करुत्तायिन शॆय्दुवरुम्★ कन्नियरुम् मगिळ क्कण्डवर् कण् कुळिर★ कट्ववर् तॆट्टिवर् प्पॆट्ट एनक्करुळि★ मन्नु कुरुङ्गुडियाय् ! वॆळ्ळरैयाय् !★ मदिळ्शूळ् शोलै मलैक्करशे ! कण्णपुरत्तमुदे !★ एन् अवलम् कळैवाय् ! आडुग शॆङ्गीरै★ एळ् उलगुम् उडैयाय् ! आडुग आडुगवे॥८॥	कुरूंगुडी, वेल्लारायै एवं ऊंचे सोलिया पहाड़ों के प्रभु ! कन्नापुरम के सुमधुर अमृत ! मेरे रक्षक ! गोपियां अपने कमर पर बैठाकर आपको अपने घर ले जाकर पुनः वापस पहुंचाती हैं। उनगोपियों को प्रसन्न करने के लिये, विद्वान जनों एवं अपनी मां मेरे ऊपर कृपा करके एक बार नाचिए। सातों लोकों के प्रभु ! नाचिए । शङ्गीरै नाचिए।**71**
पालॊडु नॆय् तयिर् ऒण् शान्दॊडु शण्बगमुम्★ पङ्गयम् नल्ल करुप्पूरमुम् नारि वर★ कोल नरुम्पवळ च्चॆन्दुवर् वायिनिडै★ कोमळ वॆळ्ळि मुळै प्पोल् शिलवल् इलग★ नील निरत्तळगार् ऐम्पडैयिन् नडुवे★ निन् कनिवाय् अमुदम् इट्टु मुरिन्दु विळ★ एलु मरै प्पॊरुळे ! आडुग शॆङ्गीरै★ एळ् उलगुम् उडैयाय् ! आडुग आडुगवे॥९॥	दूध, दही एवं घी, चन्दन, कपूर, सेनपाकम, एवं कमल के मधुर सुगंध से लुभाकर, आधे आधे दंतावली से सुसज्जित मूंगावत होठ, श्याम मुखारविन्द के साथ प्रभु ! नाचिए । शङ्गीरै नाचिए।**72**

<table>
<tr>
<td>शॆङ्कमल क्कळल्लिल् शिट्रिदळ् पोल् विरल्लिल्★
शेर् तिगळ् आळिगळुम् किण्किणियुम्★ अरैयिल्
तङ्गिय पॊन्वडमुम् ताळ नन् मादुळैयिन्★
पूवॊडु पॊन्मणियुम् मोदिरमुम् किरियुम्★
मङ्गल ऐम्पडैयुम् तोळ्वळैयुम् कुळैयुम्★
मगरमुम् वाळिगळुम् शुट्टियुम् ऑत्तिलग★
एङ्गळ् कुडिक्करशे! आडुग शॆङ्गीरै★
एळ् उलगुम् उडैयाय्! आडुग आडुगवे॥१०॥</td>
<td>चरण कमल के सुन्दर पंखुड़ियों जैसी अंगुलियों में अगूंठी, पाजेब, मोती दानों से गुथे सोने के कमरबंद, हाथ की अगुलियों में सोने की अंगूठी, कंगन, पांचो आयुधों से बने गले में माला, कंधा का आभूषण, मकराकृत कुंडल, कानों में लटकता झुमका, एवं ललाट के झुलते गहने से सुसज्जित, हमारे सम्राट एवं प्रभु! नाचिए । शङ्गीरै नाचिए।73</td>
</tr>
<tr>
<td>‡अन्नमुम् मीन् उरुवुम् आळरियुम् कुरळुम्★
आमैयुम् आनवने! आयर्गळ् नायकने!★
एन् अवलम् कळैवाय्! आडुग शॆङ्गीरै★
एळ् उलगुम् उडैयाय्! आडुग आडुग एन्रु★
अन्ननडै मडवाळ् अशोदै उगन्द परिशु★
आन पुगळ् पुदुवै प्पट्टन् उरैत्त तमिळ्★
इन्निशै मालैगळ् इप्पत्तुम् वल्लार्★ उलगिल्
एण् तिशैयुम् पुगळ् मिक्किन्बम् अदॆय्दुवरे॥११॥</td>
<td>पुदुवै (श्रीविल्लीपुत्तूर) के पत्तारबिरन ने इस दस मधुर तमिल पदों में हंसगामिनी यशोदा द्वारा संपूर्ण जगत के प्रभु जिन्होंने हंस, मत्स्य, नृसिंह, मणिकिण (वामन), कच्छप के रूप में अवतार लिया, उस सातों जगत के प्रभु को "नाचिए । शङ्गीरै नाचिए" के लिये उत्प्रेरित करने वाले कथानक को गाया है। इसको कंठस्थ करने से पूर्ण आनन्द के साथ आठों दिशाओं में यश मिलेगा। 74
पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं ।</td>
</tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

7 मणिक्कक्किण्किणि (75-85)

शप्पाणि प्परूवम् (भगवान कृष्ण दोनो करकमलों से तााली बजाते हैं)

माणिक्क क्किण्किणि आरप्प⋆ मरुङ्गिन् मेल्⋆ आणि प्पॊन्नाल् शॆय्द⋆ आय्पॊन् उडै मणि⋆ पेणि प्पवळवाय्⋆ मुत्तिलङ्ग⋆ पण्डु काणि कॊण्ड कैगळाल् शप्पाणि⋆ करुङ्गुळल् कुट्टने ! शप्पाणि॥१॥	लंबे काले केशाभिभूषित श्याम! स्वर्ण कमरबन्द, मधुर ध्वनि पाजेब से सुसज्जित, मूंगामय अधर से मुक्तावलियों की मुस्कान। जिन हाथों ने महावली से पृथ्वी का उपहार लिया उन हाथों से ताली बजाइए, शप्पाणि।आइए, हाथों से तााली बजाइए, शप्पाणि ।**75**
पॊन् अरैनाणॊडु⋆ माणिक्क क्किण्किणि⋆ तन् अरै आड⋆ त्तनि च्चुट्टि ताळन्दाड⋆ एन् अरै मेल् निन्ऱिळिन्दु⋆ उङ्गळ् आयर्तम्⋆ मन्नरै मेल् कॊट्टाय् शप्पाणि⋆ मायवने ! कॊट्टाय् शप्पाणि॥२॥	हमारे स्वर्ण कमरबन्द के रत्नजटित घुंघरूओं की मधुर ध्वनि! ललाट के झूलते आभूषण! हमारा गोद छोड़कर अपने पिता नंदगोपजी के गोद में जाओ। ताली बजाइए, शप्पाणि।हमारे चमत्कारिक प्रभु ! तााली बजाइए, शप्पाणि ।**76**
पन्मणि मुत्तु⋆ इन्बवळम् पदित्तन्न⋆ एन् मणिवण्णन !⋆ इलङ्गु पॊन् तॊट्टिन् मेल्⋆ निन् मणिवाय् मुत्तिलङ्ग⋆ निन् अम्मै तन्⋆ अम्मणि मेल् कॊट्टाय् शप्पाणि⋆ आळियङ्गैयने ! शप्पाणि॥३॥	नीलमणि सा सलोने प्यारे! अनेक रत्नों मोती मूंगा से जटित स्वर्ण कर्णफूल! सुन्दर होठों पर मुक्तावलियों की मुस्कान! अपनी मां की गोद में ताली बजाइए, शप्पाणि।तााली बजाइए, शप्पाणि ।**77**
तू निला मुट्रत्ते⋆ पोन्दु विळैयाड⋆ वानिला अम्बुली !⋆ चन्दिरा ! वा एन्ऱु⋆ नी निला निन् पुगळा⋆ निन्ऱ आयर्तम्⋆ को निलावक्कॊट्टाय् शप्पाणि⋆ कुडन्दै क्किडन्दाने ! शप्पाणि॥४॥	नन्दगोपाल खड़े होकर, विस्तृत आकाश में घूमते हुए चांद को देखते, और अपने पास चांदनी से प्रकाशित वरामदे में खेलने के लिए बुलाते उनके लिए ताली बजाइए, शप्पाणि।कुडन्दै के प्रभु ! तााली बजाइए, शप्पाणि ।**78**
पुट्टियिल् शेरुम्⋆ पुळुदियुम् कॊण्डु वन्दु⋆ अट्टि अमुक्कि⋆ अगम् पुक्कऱियामे⋆ शट्टि त्तयिरुम्⋆ तडाविनिल् वॆण्णॆयुम् उण्⋆ पट्टि क्कन्ऱे ! कॊट्टाय् शप्पाणि⋆ पर्पनाबा ! कॊट्टाय् शप्पाणि॥५॥	हमारे नन्हें वत्स ! धूलधूसरित शरीर से हमारे ऊपर चढ़ते और पुनः चुपके से घर में घुसकर सभी वर्त्तनों से दही और मक्खन खा जाते। ताली बजाइए, शप्पाणि।पद्मनाभ प्रभु ! तााली बजाइए, शप्पाणि ।**79**

तारित्तु नूट्ट्वर्⋆ तन्दै शौल् कौळ्ळादु⋆ पोर् उय्त्तु वन्दु⋆ पुगुन्दवर् मण् आळ⋆ पारित्त मन्नर् पड⋆ प्पञ्जवरक्कु⋆ अन्ऱु तेर् उय्त्त कैगळाल् शप्पाणि⋆ देवकि शिङ्गमे ! शप्पाणि ॥ ६ ॥	ये वही हाथ हैं जिन्होंने पांच पांडवों के रथ को उस युद्ध में चलाया था जिसमें सौ भाई अपने पितृ वचन का उल्लंघन कर पृथ्वी के शासन हथियाने के लोभ से युद्धरत थे। ताली बजाइए, शप्पाणि। देवकी के मृगशावक ! तााली बजाइए, शप्पाणि । **80**
परन्दिट्टु निन्ऱ⋆ पडु कडल् तन्नै⋆ इरन्दिट्ट कैम्मेल्⋆ एरिदिरै मोद⋆ करन्दिट्टु निन्ऱ⋆ कडलै क्कलङ्ग⋆ शरन्दौट्ट कैगळाल् शप्पाणि⋆ शारङ्गविकैयने ! शप्पाणि ॥ ७ ॥	ये वही हाथ हैं जिसके वाण वर्षा ने समुद्र में रास्ता देने से मना कर गहरे समुद्र में छिपे सागर के स्वामी वरूण को आतंकित कर दिया। ताली बजाइए, शप्पाणि। शारंगपाणि प्रभु ! तााली बजाइए, शप्पाणि । **81**
कुरक्किनत्ताले⋆ कुरैगडल् तन्नै⋆ नैरुक्कि अणै कट्टि⋆ नीळ्नीर् इलङ्गै⋆ अरक्कर अविय⋆ अड कणैयाले⋆ नैरुक्किय कैगळाल् शप्पाणि⋆ नेमियङ्गैयने ! शप्पाणि ॥ ८ ॥	ये वही हाथ हैं जिसके वाण वर्षा ने समुद्र पर सेतु बनाकर बानरों के साथ लंका जाकर वहां के राक्षसों का नाश किया। ताली बजाइए, शप्पाणि। चक्रपाणि प्रभु ! तााली बजाइए, शप्पाणि । **82**
अळन्दिट्ट तूणै⋆ अवन् तट्ट⋆ आङ्गे वळरन्दिट्टु⋆ वाळ् उगिर् च्चिङ्ग उरुवाय्⋆ उळन्दौट्टिरणियन्⋆ औण्मार्वगलम्⋆ पिळन्दिट्ट कैगळाल् शप्पाणि⋆ पेय् मुलै उण्डाने ! शप्पाणि ॥ ९ ॥	ये वही हाथ हैं जिसने हिरण्यकशिपु के पेट को फाड़ा जब उसने खंभे पर प्रहार कर आपको चुनौती दी और आप भयंकर नृसिंह रूप में तलवार जैसी पैनी नखों के साथ प्रकट होकर उसके हृदय में डर उत्पन्न कर दिये। ताली बजाइए, शप्पाणि। राक्षसी के स्तनपायी प्रभु ! तााली बजाइए, शप्पाणि । **83**
अडैन्दिट्टमरर्गळ्⋆ आळ् कडल् तन्नै⋆ मिडैन्दिट्टु मन्दरम्⋆ मत्ताग नाट्टि⋆ वडम् शुट्रि⋆ वाशुकि वन्कयिराग⋆ कडैन्दिट्ट कैगळाल् शप्पाणि⋆ कार्मुगिल् वण्णने ! शप्पाणि ॥ १० ॥	ये वही हाथ हैं जिसने मंदराचल को मथानी एवं वासुकी को रस्सी बनाकर देवताओं और असुरों के साथ गहरे समुद्र का मंथन किया। ताली बजाइए, शप्पाणि। घनश्याम प्रभु ! तााली बजाइए, शप्पाणि । **84**
‡आङ्कौळ्ळ त्तोन्ऱिय⋆ आयर्तम् कोविनै⋆ नाङ्कमळ् पूम् पौळिल्⋆ विल्लिपुत्तूर् प्पट्टन्⋆ वेङ्कैयाल् शौन्न⋆ शप्पाणि ईरैन्दुम्⋆ वेङ्कैयिनाल् शौल्लुवार्⋆ विनै पोमे ॥ ११ ॥	सुगंधमय बाग वाले श्रीविल्लीपुत्तूर के पत्तारविरन ने इस दस मधुर तमिल पदों को स्नेह पूर्वक जगत के कल्याण हेतु गोप वंश में प्रकट होनेवाले प्रभु की प्रसन्नता के लिये गाया। इसको प्रमपूर्वक गाने वाले सभी तरह के निराशाओं से मुक्त रहेंगे। **85** पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

8 ताडर्शङ्ङि लिगै (86-96)

तळनडै प्परूवम् (भगवान कृष्ण के चलने की अवस्था)

<table>
<tr><td>तॊडर् शङ्ङिलिगै शलार् पिलार् एन्न⋆ त्तूङ्गु पॊन्मणि ऑलिप्प⋆
पडु मुम्मद प्पुनल् शोर वारणम् पैय⋆ निन्रूर्वदु पोल्⋆
उडन् कूडि क्किण्किणि आरवारिप्प⋆ उडै मणि परै करङ्ग⋆
तडन् ताळिणै कॊण्डु शारङ्गपाणि⋆ तळर्नडै नडवानो॥१॥</td><td>मदमत्त हाथी की चाल में जंजीर तथा चेन की अनवरत आवाज, एवं लटकते घुंघरू की मधुर ध्वनि, तीन जगहों से बहते मत्त, क्या हमारे शारंगपानी प्रभु लड़खड़ाते नहीं आयेंगे ! कमर एवं पैरों के घुंघरू की शोर के साथ लड़खड़ाते वे अभी आ रहे हैं क्या ! **86**</td></tr>
<tr><td>शॆक्करिडै नुनि क्कॊम्बिल् तोन्रुम्⋆ शिरुपिरै मुळै प्पोल्⋆
नक्क शॆन् तुवर्वाय् त्तिण्णै मीदे⋆ नळिर् वॆण्बल् मुळै इलग⋆
अक्कुवडम् उडुत्तामैत्तालि पूण्ड⋆ अनन्तशयनन्⋆
तक्क मा मणिवण्णन् वाशुदेवन्⋆ तळर्नडै नडवानो॥२॥</td><td>दृष्टि दोष से रक्षा के लिये तन्त्र यन्त्र जो कमरबन्द में शंख, एवं गले के हार में कच्छप के रूप में है, सदा निद्रारत नीलमणि सा सलोने हमारे प्रभु वासुदेव, संध्या के लाल आकाश के समान चंद्राकार होठ पर मुक्तावलि की मुस्कान बिखेरते हैं। लड़खड़ाते वे अभी आ रहे हैं क्या ! **87**</td></tr>
<tr><td>मिन्नु क्कॊडियुम् ओर् वॆण् तिङ्गळुम्⋆ शूळ् परिवेडमुमाय्⋆
पिन्नल् तुलङ्गुम् अरशिलैयुम्⋆ पीदग च्चिट्राडै यॊडुम्⋆
मिन्निल् पॊलिन्ददोर् कार्मुगिल् पोल⋆ क्कळुत्तिनिल् कारैयॊडुम्⋆
तन्निल् पॊलिन्द इरुडीकेशन्⋆ तळर्नडै नडवानो॥३॥</td><td>जूड़ा की तरह गुथे हुए चांदी का कमरबंद एवं चांदी का वटपत्र, पीतांबर कटिवस्त्र पर, गोल वृहत आभा के बीच चांद सा चमक रहा है। गले में साने का हार, मानो घनश्याम वदन को, मेघ की दमकती दामिनी सा प्रकाशित कर रहा है। स्वतः प्रकाशित वत्स, हृषिकेश, लड़खड़ाते अभी आ रहे हैं क्या ! **88**</td></tr>
<tr><td>कन्नल् कुडम् तिरन्दाल् ऑत्तूरि⋆ क्कणगण शिरित्तुवन्दु⋆
मुन् वन्दु निन्रु मुत्तम् तरुम्⋆ एन् मुगिल्वण्णन् तिरुमार्वन्⋆
तन्नै प्पॆट्रेर्कु त्तन्वाय् अमुदम् तन्दु⋆ एन्नै त्तळिरप्पिक्किन्रान्⋆
तन् एट्टु माट्रलर् तलैगळ् मीदे⋆ तळर्नडै नडवानो॥४॥</td><td>श्रीसहित वक्षस्थल वाले घनश्याम प्रभु ! धीमीआवाज की खिलखिलाहट एवं मुस्कान के साथ डरते सहमते हमारा मुख चूमते हैं। उनके होठों पर फेनयुक्त स्त्राव मानो गन्ने के रस वाले घड़े का मृदु फेन है।हमारा वदन सिहर उठता है ! अपने शत्रुओं के सिर पर पैर रखकर, लड़खड़ाते, अभी वे आ रहे हैं क्या ! **89**</td></tr>
</table>

मुन्नल् ओर् वॅळ्ळि प्पॅरुमलै क्कुट्टन्⋆ मॉडु मॉडु विरैन्दोड⋆ पिन्नै त्तॉडरन्ददोर् करुमलै क्कुट्टन्⋆ पॅयरन्दडियिडुवदु पोल्⋆ पन्नि उलगम् परवि ओवा प्पुगळ्⋆ बलदेवन् एन्नुम्⋆ तन् नम्बि ओड प्पिन् कूड च्चॅल्वान्⋆ तळर्नडै नडवानो॥५॥	श्वेत पर्वत से तेज गति से आते पत्थर के पीछे काले पर्वत से उसी गति से अनुगमन करने वाले पत्थर की तरह, जगप्रसंशित शीघ्रगामी बड़े भाई बलदेव के पीछे अनुज दौड़ते हुए आते हैं। लड़खड़ाते, अभी वे आ रहे हैं क्या ! **90**
ऑरु कालिल् शङ्गॉरु कालिल् चक्करम्⋆ उळ्ळडि पॉरित्तमैन्द⋆ इरु कालुम् कॉण्डङ्गॅङ्गुळुदिनार् पोल्⋆ इलच्चिनै पड नडन्दु⋆ पॅरुगा निन्र इन्ब वॅळ्ळत्तिन् मेल्⋆ पिन्नैयुम् पॅय्दु पॅय्दु⋆ तरु कार् क्कडल् वण्णन् कामर् तादै⋆ तळर्नडै नडवानो॥६॥	समुद्र के नीले जल सा वदन वाले प्रभु ! एक चरण में शंख, एवं दूसरे में चक के चिन्ह को आप पृथ्वी पर अंकित करते हुए चलते हैं, जिन्हें देखकर हृदय में पुनः पनः उमंग की लहरें उठती रहती हैं। लड़खड़ाते, अभी वे आ रहे हैं क्या ! **91**
पडर् पङ्गय मलर् वाय् नॅगिळ⋆ प्पनि पडु शिरुदुळि पोल्⋆ इडङ्गॉण्ड शॅव्वाय् ऊरि ऊरि⋆ इट्टिटु वीळ निन्रु⋆ कडुञ्जे क्कळुत्तिन् मणिक्कुरल् पोल्⋆ उडै मणि कणकणॅन⋆ तडन् ताळिणै कॉण्डु शारङ्गपाणि⋆ तळर्नडै नडवानो॥७॥	नव विकसित कमल से मोती के अमृतबूंद की तरह आपके लाल होठों से मृदु जल स्त्रवित होते रहते हैं।आपके कमरधनी के घुंघरू वृषभ राज के गले के घंटी के तरह मधुर ध्वनि करते हैं। शारंगपानी प्रभु ! लड़खड़ाते, अभी वे आ रहे हैं क्या ! **92**
पक्कम् करुञ्जिरुप्पारै मीदे⋆ अरुविगळ् पगरन्दनैय⋆ अक्कुवडम् इळिन्देरि त्ताळ⋆ अणि अल्गुल् पुडै पॅयर⋆ मक्कळ् उलगिनिल् पॅय्दरिया⋆ मणि क्कुळवि उरुविन्⋆ तक्क मा मणिवण्णन् वाशुदेवन्⋆ तळर्नडै नडवानो॥८॥	काले पर्वत के मनमानी राहों से चलने वाली पानी की धारा प्रकाश रेखा की तरंगों की तरह जिसतरह दिखती हैं, उसी तरह हमारे नीलमणि सा वासुदेव प्रभु के गतिमान कटिभाग के चांदी का झूलता कमरबंद दिखता है। पृथ्वी पर आजतक आपके समान नहीं देखा जा सकने वाला, बच्चों के सुंदरतम रत्न ! लड़खड़ाते, अभी वे आ रहे हैं क्या ! **93**
वॅण् पुळुदि मेल् पॅय्दु कॉण्डळैन्ददोर्⋆ वेळत्तिन् करुङ्कन्रु पोल्⋆ तॅण् पुळुदियाडि त्तिरिविक्किरमन्⋆ शिरु पुगर्पड वियर्त्तु⋆ ऑण् पोदलर् कमल च्चिरुक्काल्⋆ उरैत्तु ऑन्रुम् नोवामे⋆ तण् पोदु कॉण्ड तविशिन् मीदे⋆ तळर्नडै नडवानो॥९॥	हाथी के छोटे बच्चे का श्वेत मिट्टी में खेलने की तरह हमारे त्रिविकम प्रभु के धूलधूसरित वदन पर पसीने से भींगे हुए छोटे छोटे स्थल दिखते हैं। ऐसा न हो कि इनके कोमल चरण कठिन भूमि पर चलने से चोटग्रस्त हो जायें ! आप लड़खड़ाते, नूतन कोमल गोद में हीं चलें । **94**

तिरै नीर् च्चन्दिर मण्डलम् पोल्⋆ शॆङ्गण्माल् केशवन्⋆ तन् तिरु नीर् मुगत्तु त्तुलङ्गु शुट्टि⋆ तिगऴ्न्दॆङ्गुम् पुडैपॆयर⋆ पॆरु नीर् त्तिरै एऴु गङ्गैयिलुम्⋆ पॆरियदोर् तीर्त्त बलम् तरु नीर्⋆ शिऱुच्चण्णम् तुळ्ळम् शोर⋆ त्तळर्नडै नडवानो॥१०॥	राजीवनयन केशव प्रभु के ललाट का झूलता आभूषण गहरे पानी के पूर्ण चांद के प्रतिविम्ब की तरह शोभा देता है। गंगा जल से भी ज्यादा पवित्र उनके मूत्रांग का स्त्राव है। टपकते बूंदों के साथ लड़खड़ाते, अभी वे आ रहे हैं क्या !। **95**
‡आयर् कुलत्तिनिल् वन्दु तोन्ऱिय⋆ अञ्जन वण्णन् तन्नै⋆ तायर् मगिऴ ऑन्नार् तळर⋆ त्तळर्नडै नडन्ददनै⋆ वेयर् पुगऴ् विट्टुशित्तन्⋆ शीराल् विरित्तन उरैक्क वल्लार्⋆ मायन् मणिवण्णन् ताळ् पणियुम्⋆ मक्कळै प्पॆऱुवर्गळे॥११॥	व्यार कुल के लब्धप्रतिष्ठ विष्णुचित्त स्वामी द्वारा गाये हुए ये पद गोपकुल में उत्पन्न श्यामवदन प्रभु के लड़खड़ाकर चलने से माताओं के हृदय के उमंग एवं शत्रुओं के भय को दर्शाता है। जो इसे कण्ठगत करते हैं उनकी संतान नील मणि सा सलोने प्रभु के चरणकमलों के अनुरागी होते हैं। **96** **पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

9 पोन्निय किंण्किणि (97-107)

अच्चो प्परूवम् (भगवान कृष्ण को लिपटने के लिए आमंत्रण देना)

‡पॊन् इयल् किण्किणि⋆ शुट्टि पुरम् कट्टि⋆ तन् इयल् ओशै⋆ शलन् शलन् ऎन्रिड⋆ मिन् इयल् मेगम्⋆ विरैन्दॆदिर् वन्दार् पोल्⋆ ऎन् इडैक्कोट्टरा अच्चो अच्चो⋆ ऎम्पॆरुमान्! वाराय् अच्चो अच्चो॥१॥	सोने के नूपुर एवं ललाट के आभूषण के मधुर ध्वनि के साथ वे क्या तेजगति वाले मेघ की तरह दौड़कर हमारे कमर से लिपटेंगे ! हमारे प्रभु ! शीघ्र आइए । अच्चो, अच्चो ! 97
शॆङ्गमल प्पूविल्⋆ तेन् उण्णुम् वण्डे पोल्⋆ पङ्गिगळ् वन्दु⋆ उन् पवळ वाय् मॊय्प्प⋆ शङ्गु विल् वाळ् तण्डु⋆ चक्करम् एन्दिय⋆ अङ्गैगळाले वन्दच्चो अच्चो⋆ आर त्तळुवाय् वन्दच्चो अच्चो॥२॥	कमल के फूल की भौंरों की तरह, आपके सुन्दर काले केश रक्तिम अधर पर झूल रहे हैं। जिन सुकोमल हाथों से आपने शंख, चक्र, गदा, धनुष एवं खड्ग धारण किये हैं, उन्हीं हाथों से दौड़कर हमसे लिपटिये। अच्चो, अच्चो ! 98
पञ्जवर् तूदनाय्⋆ प्पारतम् कैशॆय्दु⋆ नञ्जुमिळ् नागम्⋆ किडन्द नल् पॊय्गै पुक्कु⋆ अञ्ज प्पणत्तिन् मेल्⋆ पायन्दिट्टरुळ् शॆय्द⋆ अञ्जन वण्णने! अच्चो अच्चो⋆ आयर् पॆरुमाने! अच्चो अच्चो॥३॥	गोपकुल नाथ घनश्याम प्रभु! पांच पांडवों के दूत का काम किया और तत्पश्चात् भारत के युद्ध में भाग लिया। कालिय नाग के विष से दूषित ताल में प्रवेशकर आपने उसके फनों पर कूदते हुए उसे भयाकांत किया और पुनः उसपर दया दिखायी। आइए, अच्चो, अच्चो ! 99
नारिय शान्दम्⋆ नमक्किरै नल्गॊन्न⋆ तेरि अवळुम्⋆ तिरुवुडम्बिल् पूश⋆ ऊरिय कूनिनै⋆ उळ्ळे ऒडुङ्ग⋆ अन्रु एर उरुविनाय्! अच्चो अच्चो⋆ ऎम्पॆरुमान्! वाराय् अच्चो अच्चो॥४॥	हमारे प्रभु! जब कुब्जे से आपने चन्दन की याचना की तो उसने आपको चंदन अर्पित कर दिया। पुरस्कारस्वरूप आपने उसके कुब्जापना को मिटा कर उसकी रीढ़ को सीधा कर दिया। आइए, अच्चो, अच्चो ! 100

कळल् मन्नर् शूळ⋆ क्कदिर् पोल् विळङ्गि⋆ एळलुट्रु मीण्डे⋆ इरुन्दुन्नै नोक्कुम्⋆ शुळलै प्पॆरिदुडै⋆ त्तुच्चोदननै⋆ अळल विळित्ताने ! अच्चो अच्चो⋆ आलि अङ्गैयने ! अच्चो अच्चो॥५॥	कुटिल दुर्योधन अपने करदाता राजाओं से घिरकर ऐसा बैठा था जैसे सूर्य किरणों से। आपके आगमन पर वह हठात् उठ खड़ा हुआ और घृणा के भाव के साथ बैठ गया। आपकी एक उपेक्षा भरी दृष्टि उसके लिए बहुत थी। हमारे चक्रपाणि प्रभु! आइए, अच्चो, अच्चो ! 101
पोर् ऒक्क प्पणि⋆ इ प्पूमिप्पॊरै तीरप्पान्⋆ तेर् ऒक्क ऊरन्दाय्⋆ शॆळुन्दार् विशयर्काय्⋆ कार् ऒक्कुम् मेनि⋆ क्करुम् पॆरुङ्गण्णने !⋆ आर् त्तळुवाय् वन्दच्चो अच्चो⋆ आयर्गळ् पोरेरे ! अच्चो अच्चो॥६॥	घनश्याम प्रभु! माला से विभूषित अर्जुन का रथ चलाकर भयंकर युद्ध में आपने उसे विजयी बना कर पृथ्वी को दुष्ट राजाओं से त्राण दिलाया। गोपकुल के वृषभराज ! आइए, हमसे प्रेम से मिलिये । अच्चो, अच्चो ! 102
मिक्क पॆरुम् पुगळ्⋆ मावलि वेळ्वियिल्⋆ तक्क इदन्रेन्रु⋆ दानम् विलक्किय⋆ शुक्किरन् कण्णै⋆ त्तुरुम्बाल् किळरिय⋆ चक्कर क्कैयने ! अच्चो अच्चो⋆ शङ्गम् इडत्ताने ! अच्चो अच्चो॥७॥	शंख चक्र धारी ! महावली के यज्ञ में असुरों के गरू शुक्र ने आपको दानस्वरूप तीन कदम भूमि देनें में विरोध कर उसे बाधित करना चाहा तो आपने कुश के अग्रभाग से उनकी आंख को क्षतिग्रस्त कर दिया। आइए, अच्चो, अच्चो ! 103
एन् इदु मायम्⋆ एन् अप्पन् अरिन्दिलन्⋆ मुन्नैय वण्णमे⋆ कॊण्डळवाय् एन्न⋆ मन्नु नमुशियै⋆ वानिल् शुळट्रिय⋆ मिन्नु मुडियने ! अच्चो अच्चो⋆ वेङ्गड वाणने ! अच्चो अच्चो॥८॥	जब बली के पुत्र नमुची ने विरोध किया, "यह क्या धोखा है!" अपने प्रारंभ के स्वरूप में आकर आपको तीन पग भूमि लेने को कहा तब आपने उसे आकाश में उछाल दिया। आभा से विभूषित वेंकटम के नाथ ! आइए, अच्चो, अच्चो ! 104
कण्ड कडलुम्⋆ मलैयुम् उलगेळुम्⋆ मुण्डत्तुक्काट्रा⋆ मुगिल्वण्णा ओ ! एन्रु⋆ इण्डै च्चडैमुडि⋆ ईशन् इरक्कॊळ्ळ⋆ मण्डै निरैत्ताने ! अच्चो अच्चो⋆ मार्विल् मरुवने ! अच्चो अच्चो॥९॥	श्रीविभूषित वक्षस्थल वाले प्रभु ! जब जटाधारी शिव ने आपसे कहा कि खोपड़ी वाला पात्र कहीं भिक्षा में भरता ही नहीं है, तब हे मेघवदन प्रभु !आपने उसे तुरत भर दिया। आइए, अच्चो, अच्चो ! 105
तुन्निय पेरिरुळ्⋆ शूळ्न्दुलगै मूड⋆ मन्निय नान्मरै⋆ मुट्रुम् मरैन्दिड⋆ पिन् इव्वुलगिनिल्⋆ पेरिरुळ् नीङ्ग⋆ अन्रु अन्नमदानाने ! अच्चो अच्चो⋆ अरुमरै तन्दाने ! अच्चो अच्चो॥१०॥	जब संपूर्ण जगत घोर अंधकार से घिर गया और शाश्वत वेद लुप्त हो गये, तब आपने आवन के रूप में वेद को हस्तगत कर पूरे जगत का उद्धार किया। आइए, अच्चो, अच्चो ! 106

‡नच्चुवार् मुन् निर्कुम्⋆ नारायणन् तन्नै⋆ अच्चो वरुग एन्रु⋆ आय्च्चि उरैत्तन⋆ मच्चणि माड⋆ प्पुदुवैकोन् पट्टन् शॊल्⋆ निच्चलुम् पाडुवार्⋆ नीळ् विशुम्बाळ्वरे ॥११॥	ऊंचे भवनों वाले पुदुवै के स्वामी पत्तारबिरन के ये शब्द, यशोदा द्वारा, अपने प्रेमी भक्तों के समक्ष प्रकट होने वाले नारायण के प्रति "अच्वो हमारे पास आईए" गाये हुए गीत का स्मरण कराते हैं। जो इसका निरन्तर गान करेंगे वे विस्तृत आकाश के शासक होंगे। **107** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

10 वट्टुनडुवे **(108-117)**

पुरम्बुल्गल् (भगवान कृष्ण को पृष्ठ भाग के तरफ से लिपटने के लिए आमंत्रण देना)

वट्टु नडुवे⋆ वळर्गिन्ऱ⋆ माणिक्क– मॊट्टु नुनैयिल्⋆ मुळैक्किन्ऱ मुत्ते पोल्⋆ शॊट्टु च्चॊट्टॆन्न⋆ त्तुळिक्क त्तुळिक्क⋆ एन् कुट्टन् वन्दॆन्नै प्पुऱम्बुल्गुवान्⋆ गोविन्दन् एन्नै प्पुऱम्बुल्गुवान्॥१॥	दो गेंदों के ऊपर टिके रत्न पुष्प की तरह प्रभु के मुत्रांग स्त्राव कर रहे हैं। हमारे नन्हे लाल पीछे से आकर लिपटेंगे।हमारे गोवन्द ! पीछे से आकर हमसे लिपटेंगे।108
किङ्किणि कट्टि⋆ क्किऱि कट्टि कैयिनिल्⋆ कङ्कणम् इट्टु⋆ क्कळुत्तिल् तॊडर् कट्टि⋆ तन् कणत्ताले⋆ शदिरा नडन्दु वन्दु⋆ एन् कण्णन् एन्नै प्पुऱम्बुल्गुवान्⋆ एम्पिरान् एन्नै प्पुऱम्बुल्गुवान्॥२॥	पैरों में नूपुर, कलाई में कंगन, हाथ में बलय, गले में हार, और बहुत से जेवरात पहने हमारे प्रिय प्रभु चुपके से पीछे से आकर लिपटेंगे। हमारे प्रभु ! पीछे से आकर हमसे लिपटेंगे।109
कत्त क्कदित्तु⋆ क्किडन्द पॆरुञ्जॆल्वम्⋆ ऒत्तु प्पॊरुन्दि क्कॊण्डु⋆ उण्णादु मण् आळ्वान्⋆ कॊत्तु त्तलैवन्⋆ कुडिगॆड त्तोन्ऱिय⋆ अत्तन् वन्दॆन्नै प्पुऱम्बुल्गुवान्⋆ आयर्गळ् एऱ्ऱॆन् पुऱम्बुल्गुवान्॥३॥	दुर्योधन की अगुआई में दुष्ट राजाओं के वंश के विनाश हेतु प्रभु ने अवतार लिया। दुर्योधन अपार संपत्ति से अपने भाई पांडवों को वंचित रख पृथ्वी पर राज करना चाह रहा था। प्रभु पीछे से आकर हमसे लिपटेंगे ।गोपवंश के अमूल्य वृषभ हमारे प्रभु ! पीछे से आकर हमसे लिपटेंगे।110
नान्दगम् एन्दिय⋆ नम्बि शरण् एन्ऱु⋆ ताळ्न्द दनञ्जयर्कागि⋆ तरणियिल्⋆ वेन्दर्गळ् उक्क⋆ विजयन् मणि त्तिण्तेर्⋆ ऊर्न्दवन् एन्नै प्पुऱम्बुल्गुवान् उम्बर्कोन् एन्नै प्पुऱम्बुल्गुवान्॥४॥	जब अर्जुन ने कहा “नन्दक खड्ग के धारण करने वाले प्रभु आप हीं हमारे आश्रय हैं” तब प्रभु ने अर्जुन के वृहत रथ का युद्धक्षेत्र में चालक बनकर राजाओं को धराशायी करते हुए विजयश्री दिलवायी। प्रभु पीछे से आकर हमसे लिपटेंगे। देवताओं के प्रभु ! पीछे से आकर हमसे लिपटेंगे।111
वॆण् कल्प्पत्तिरम् कट्टि⋆ विळैयाडि⋆ कण् पल् शॆय्द⋆ करुन्दळै क्काविन् कीळ्⋆ पण् पल पाडि⋆ प्पल्लाण्डिशैप्प⋆ पण्डु मण् पल कॊण्डान् पुऱम्बुल्गुवान्⋆ वामनन् एन्नै प्पुऱम्बुल्गुवान्॥५॥	हमारे नन्हे प्रभु ! सिर पर मोरपंख, कमर में चांदी का बटपत्र बांधे पेड़ की छाया में खड़े होकर खेलते हैं।वामन बनकर आपने पृथ्वी का दान लिया। विभिन्न प्रकार से आपका यशगान किया जाता है। पीछे से आकर वे हमसे लिपटेंगे।112

शत्तिरम् एन्दि⋆ त्तनि ऑरु माणियाय्⋆ उत्तर वेदियिल्⋆ निन्ऱ ऑरुवनै⋆ कत्तिरियर् काण⋆ क्काणि मुट्रुम् कॉण्ड⋆ पत्तिरागारन् पुरम्बुल्गुवान्⋆ पार् अळन्दान् एन् पुरम्बुल्गुवान्॥ ६ ॥	प्रभु वामन रूप में हाथ में छाता एवं अन्य उपकरणों के साथ बलि के यज्ञशाला में पहुंचकर सभी एकत्रित राजाओं की उपस्थिति में पृथ्वी के साथ उसके सर्वस्व हस्तगत कर लिया। पीछे से आकर वे हमसे लिपटेंगे। **113**
पॉत्त उरलै क्कविळ्त्तु⋆ अदन् मेल् एरि⋆ तित्तित्त पालुम्⋆ तडाविनिल् वॆण्णॆयुम्⋆ मॆत्त त्तिरुवयिऱु⋆ आर विळुङ्गिय⋆ अत्तन् वन्दॆन्नै प्पुरम्बुल्गुवान्⋆ आळियान् एन्नै प्पुरम्बुल्गुवान्॥ ७ ॥	हमारे प्रभु ! ऊखल उलट कर उस पर खड़े हो, लटकते हुए पात्र तक पहुंचकर, उससे मीठे दूध एवं घी पेटभर खाते हैं। पीछे से आकर वे हमसे लिपटेंगे। चक्रधारी ! पीछे से आकर हमसे लिपटेंगे **114**
मूत्तवै काण⋆ मुदु मणर्कुन्ऱेरि⋆ कूत्तुवन्दाडि⋆ क्कुळलाल् इशै पाडि⋆ वाय्त्त मऱैयोर् वणङ्ग⋆ इमैयवर् एत्त वन्दॆन्नै प्पुरम्बुल्गुवान्⋆ एम्पिरान् एन्नै प्पुरम्बुल्गुवान्॥ ८ ॥	हमारे प्रभु और नाथ को बांसुरी पर संगीत बजाते हुए बालु के टील्हे पर चढ़ कर नृत्य करते, उनके वंश के वयस्कों ने देखा, वैदिक संतों ने पूजा की, और देवताओं ने प्रशंसा की। पीछे से आकर वे हमसे लिपटेंग। **115**
कर्पग क्कावु⋆ करुदिय कादलिक्कु⋆ इप्पॉळुदीवन् एन्ऱु⋆ इन्दिरन् काविनिल्⋆ निर्पन शॅय्दु⋆ निला त्तिगळ् मुट्रत्तुळ्⋆ उय्त्तवन् एन्नै प्पुरम्बुल्गुवान्⋆ उम्बर्कोन् एन्नै प्पुरम्बुल्गुवान्॥ ९ ॥	जब आपकी प्रेयसी सत्यभामा ने इन्द्र के बाग से कल्पवृक्ष लाने की इच्छा प्रकट की तो आपने सद्यः लाकर उनके चांदनी आभासित वाटिका में स्थापित कर दिया। देवताओं के नाथ ! पीछे से आकर वे हमसे लिपटेंग। **116**
आय्च्चि अन्ऱाळि प्पिरान्⋆ पुरम्बुल्गिय⋆ वेय् त्तडन्दोळि शॊल्⋆ विट्टुशित्तन् मगिळ्न्दु⋆ ईत्त तमिळ् इवै⋆ ईरैन्दुम् वल्लवर्⋆ वाय्त्त नन् मक्कळै प्पॆट्रु⋆ मगिळ्वरे॥ १० ॥	श्रीविष्णुचित्त स्वामी ने इन दस पदकों में चक्रधारी के साथ यशोदा के इस "पीछे से लिपटेंगे" खेल में बहुत ही आनन्द लाभ किया है। जो इसको कण्ठ कर लेंगे उनको अच्छी संतान की प्राप्ति होगी। **117** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

11 मच्चूदु **(118-127)**

अप्पूच्चि काट्टुदल् (भगवान कृष्ण के साथ मुख ढककर खेलना)

मॆच्चूदु शङ्गम् इडत्तान्⋆ नल् वेय् ऊदि⋆ पॊय् च्चूदिल् तोट्ट⋆ पॊरै उडै मन्नर्क्काय्⋆ पत्तूर् पॆरादन्रु⋆ बारतम् कैशॆय्द⋆ अत्तूदन् अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्⋆ अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्॥१॥	प्रभु की बायी ओर शंख है और आप एक कुशल बांसुरी वादक हैं।आपने दूत बनकर उन धैर्यशाली राजाओं के हित में भारत युद्ध कराया जो जुआ हार जाने के कारण दस गांव भी नहीं प्राप्त कर सके। वे शिशु बनकर आये हैं और मुझे डराते हैं। हे मेरे ! हे मेरे ! 118
मलै पुरै तोळ् मन्नवरुम्⋆ मारदरुम् मट्रुम्⋆ पलर् कुलैय⋆ नूट्रुवरुम् पट्टळिय⋆ पार्त्तन् शिलै वळैय⋆ त्तिण्तेर्मेल् मुन्निन्र⋆ शॆङ्गण् अलवलै वन्दप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्⋆ अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्॥२॥	राजीवनयन प्रभु ने धनुषधारी अर्जुन का रथ चलाया जो दुर्योधन का उसके सौ भाईयों के साथ बध किया। पर्वत सा विशाल भुजाओं वाले राजागन, पूर्णदृष्टा भीष्मपितामह और अन्य बहुत सारे थर्रा उठे। वे शिशु बनकर आये हैं और मुझे डराते हैं। हे मेरे ! हे मेरे ! 119
कायुम् नीर् पुक्कु⋆ क्कडम्बेरि⋆ काळियन् तीय पणत्तिल्⋆ शिलम्बार्क्क प्पाय्न्दाडि⋆ वेयिन् कुळल् ऊदि⋆ वित्तगनाय् निन्र⋆ आयन् वन्दप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्⋆ अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्॥३॥	गोपशावक ने गर्मपानी के कुण्ड में प्रवेश किया और कदंब के वृक्ष पर चढ़ गये। विषैले सर्प कालीय के फनों पर कूद कर पैंजनियों के मधुर धुन के साथ नृत्य करते हुए चमत्कारिक रूप से बांस की बांसुरी बजाते रहे। वे शिशु बनकर आये हैं और मुझे डराते हैं। हे मेरे ! हे मेरे ! 120
इरुट्टिल् पिरन्दु पोय्⋆ एळै वल् आयर्⋆ मरुट्टै त्तविर्प्पित्तु⋆ वन् कञ्जन् माळ प्पुरट्टि⋆ अन्नाळ् एङ्गळ्⋆ पूम्बट्टु क्कॊण्ड⋆ अरट्टन् वन्दप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्⋆ अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्॥४॥	कारागार के अंधकार में जन्म लेने वाले प्रभु ने गोपवंश के दुःखों का अंत मथुरा जाकर कंश को घसीटते हुए मार कर किया। नटखट किशोर ने हमलोगों का एकदिन शिल्क वस्त्र भी हर लिया। वे शिशु बनकर आये हैं और मुझे डराते हैं। हे मेरे ! हे मेरे ! 121
शेप्पूण्ड⋆ शाडु शिदरि⋆ त्तिरुडि नॆय्– क्काप्पूण्डु⋆ नन्दन् मनैवि कडै ताम्बाल्⋆ शोप्पूण्डु तुळ्ळि⋆ तुडिक्क त्तुडिक्क⋆ अन्रु आप्पूण्डान् अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्⋆ अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्॥५॥	एकबार ये मक्खन चुराते पकड़े गये, और जब नंद की पत्नि ने मथानी की रस्सी से बांधकर इनकी पिटाई की तब ये दर्द से कराहते रहे ! इन्होंने ही सामान से भरे हुए बैलगाड़ी को (पैरों से) मारकर चकनाचूर कर दिया। वे शिशु बनकर आये हैं और मुझे डराते हैं। हे मेरे ! हे मेरे ! 122

शॆप्पिळ मॆन्मुलै⋆ त्तेवकि नङ्गैक्कु⋆ शॊप्पड त्तोन्रि⋆ त्तॊरुप्पाडियोम् वैत्त⋆ तुप्पमुम् पालुम्⋆ तयिरुम् विळुङ्गिय⋆ अप्पन् वन्दप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्⋆ अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्॥६॥	हमारे प्रभु कोमल लाल स्तनवाली किशोरी देवकी से जन्मे और उन्हे अपना सारा वैभव दिखा दिया। हम गोपजनों के बीच रहते हुए ये हमारे सारे दूध, दही और घी खा जाया करते। वे शिशु बनकर आये हैं और मुझे डराते हैं। हे मेरे ! हे मेरे ! **123**
तत्तु क्कॊण्डाळ् कॊल्लो⋆ ताने पॆट्राळ् कॊल्लो⋆ शित्तम् अनैयाळ्⋆ अशोदै इळञ्जिङ्गम्⋆ कॊत्तार् करुङ्कुळल्⋆ गोपाल कोळरि⋆ अत्तन् वन्दप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्⋆ अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्॥७॥	सुशील स्वभाव वाली यशोदा के मृगशावक ! घुंघराले काले बालों में फूल के गुच्छे पहने हुए हैं। आश्चर्य ! यशोदा के ये जाये हैं या गोद लिये गये हैं ! हमारे प्रभु एवं नाथ गोपवंश के बहादुर सिंह है। वे शिशु बनकर आये हैं और मुझे डराते हैं। हे मेरे ! हे मेरे ! **124**
कॊङ्गै वन्⋆ कूनिशॊर् कॊण्डु⋆ कुवलय त्तुङ्ग क्करियुम्⋆ परियुम् इराच्चियमुम्⋆ एङ्गुम् परदर्करुळि⋆ वन्गान् अडै⋆ अङ्गण्णन् अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्⋆ अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्॥८॥	कठोर हृदय वाली कुनी के शब्दों पर कमलनयन प्रभु सारे हाथी घोड़े एवं राजपाट भरत को देकर जंगल में चले गये। वे शिशु बनकर आये हैं और मुझे डराते हैं। हे मेरे ! हे मेरे ! **125**
पदग मुदलै⋆ वाय् प्पट्ट कळिरु⋆ कदरि क्कैकूप्पि⋆ एन् कण्णा ! कण्णा ! एन्न⋆ उदव प्पुळ् ऊरन्दु⋆ अङ्गुरुदुयर् तीरत्त⋆ अदगन् वन्दप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्⋆ अम्मने ! अप्पूच्चि काट्टुगिन्रान्॥९॥	दुर्दांत ग्राह के जबड़ों में पकड़ा गया हाथी करबद्ध हो करूणा से पुकारा "कृष्ण ! हे मेरे कृष्ण ! बचाओ!"। हमारे नाथ गरूड़ पर सवार हो वहां पहुंचे और उसके दुःख का अंत किया। वे शिशु बनकर आये हैं और मुझे डराते हैं। हे मेरे ! हे मेरे ! **126**
वल्लाळि इलङ्गै मलङ्ग⋆ च्चरन् तुरन्द⋆ विल्लाळनै⋆ विट्टुशित्तन् विरित्त⋆ शॊल् आरन्द अप्पूच्चि⋆ पाडल् इवै पत्तुम् वल्लार् पोय्⋆ वैगुन्दम् मन्नि इरुप्परे॥१०॥	अप्पूच्चि के ये दस पद श्री विष्णुचित्त स्वामी ने उन धनुषधारी नाथ की प्रशंसा में गाया है जिन्होंने बाणों की वर्षा से राक्षसों की लंका का नाश कर दिया। जो इसे कंठ करेंगे उन्हें वैकुण्ठ का सदा के लिए वास मिलेगा। **127** पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

12 अरवणैयाय् (128-138)

मुलैयुण्ण अळैत्तल् (भगवान कृष्ण को अपनी मां का दूध पीने के लिए आमंत्रण)

अरवणैयाय् ! आयर् एरे !⋆ अम्मम् उण्ण त्तुयिल् एळाये⋆ इरवुम् उण्णादुरङ्गि नी पोय्⋆ इन्रुम् उच्चि कोण्डदालो⋆ वरवुम् काणेन् वयिरशैन्दाय्⋆ वन मुलैगळ् शोरन्दु पाय⋆ तिरुवुडैय वाय्मडुत्तु⋆ त्तिळैत्तुदैत्तु प्परुगिडाये॥१॥	गोपशिशु ! शेषशायी नाथ ! दूध पीने हेतु जागिये। कल रात आप बिना स्तनपान के सो गये और अब यह दोपहर होने को आया है। आपको आते नहीं देख रहे हैं।आपका पेट पिचका है, हमारे स्तन से स्वतः स्त्राव हो रहा है।अपने मधुर होठ से कीड़ापूर्वक हाथ पैर फेंकते हुए स्तन पान पीजिए।**128**
वैत्त नेय्युम् काय्न्द पालुम्⋆ वडि तयिरुम् नरु वेण्णेयुम्⋆ इत्तनैयुम् पेट्रियेन्⋆ एम्पिरान् ! नी पिरन्द पिन्नै⋆ एत्तनैयुम् शेय्य प्पेट्राय्⋆ एदुम् शेय्येन् कदम् पडादे⋆ मुत्तनैय मुरुवल् शेय्दु⋆ मूक्कुरिञ्जि मुलै उणाये॥२॥	हमारे नाथ ! जब से आपका पदार्पण हुआ है हम यह नहीं जानते हैं कि घी, उबाला हुआ दूध, दही, छांछ, और ताजा मक्खन कहां गये। आपने जैसा चाहा वैसा किया, और हमने यह सोच कर कुछ नहीं किया कि ऐसा न हो कि आप कोधित हो जायें। मुक्तामय मुस्कान के साथ नाक को ऊपर की ओर गतिमान करते हुए स्तन पान कीजिये। **129**
तन्दम् मक्कळ् अळुदु शेन्राल्⋆ ताय्मार् आवार् तरिक्कगिल्लार्⋆ वन्दु निन्मेल् पूशल् शेय्य⋆ वाळ वल्ल वाशुदेवा !⋆ उन्दैयर् उन्दिरत्तर् अल्लर्⋆ उन्नै नान् ओन्रुरप्प माट्टेन्⋆ नन्दगोपन् अणि शिरुवा !⋆ नान् शुरन्द मुलै उणाये॥३॥	जब उनके बच्चे रोते आते हैं तो मातायें सहन नहीं कर सकतीं और वे आपके बारे में शिकायत करने आती हैं।वासुदेव !आप जैसे चाहते हैं वैसे रहिए।न तो आपके पिता आप में सुधार ला सकते हैं और न मैं हीं कुछ करने में सक्षम हूँ। नन्दगोप ! मेरे स्तन दूध से भरे हैं, आइए स्तन पान कीजिए। **130**
कञ्जन् तन्नाल् पुणर्क्कप्पट्ट⋆ कळ्ळ च्चगडु कलक्कळिय⋆ पञ्जि अन्न मेल्लडियाल्⋆ पायन्द पोदु नोन्दिडुम् एन्रु⋆ अञ्जिनेन् काण् अमरर् कोवे !⋆ आयर् कूट्टत्तळवन्रालो⋆ कञ्जनै उन् वञ्जनैयाल्⋆ वलैप्पडुत्ताय् ! मुलै उणाये॥४॥	शाश्वत देवेश ! कंश को आपने चतुराई से पकड़ कर मार डाला।उसके द्वारा उत्प्रेरित दुष्ट गाड़ी को आपने अपने रूई सा कोमल पैर से चकनाचूर कर दिया। सारे गोपवंश से अधिक चिन्ता हमें आपकी थी कि आपको कहीं कुछ हो जाता तो ! आइए स्तन पान कीजिए। **131**
तीय पुन्दि क्कञ्जन् उन्मेल्⋆ शिनम् उडैयन् शोर्वु पार्त्तु⋆ मायन् तन्नाल् वलै प्पडुक्किल्⋆ वाळगिल्लेन् वाशुदेवा !⋆ तायर् वायच्चोल् करुमम् कण्डाय्⋆ शाढि च्चोन्नेन् पोगवेण्डा⋆ आयर् पाडिक्कणि विळक्के !⋆ अमरन्दु वन्देन् मुलै उणाये॥५॥	वासुदेव ! दुष्ट कंश आपसे कोधित है, और आपको अकेले में धोखा से कहीं पकड़ न ले ! मैं तो उसके बाद जीवित नहीं रह सकूंगी।मां की बातों का सदा पालन करना चाहिए। हम पुनः आपको बाहर खेलने जाने से मना करते हैं। गोपवंश के दीपक ! आइए बैठिए, और स्तन पान कीजिए। **132**

मिन् अनैय नुण् इडैयार्⋆ विरि कुऴल् मेल् नुऴैन्द वण्डु⋆ इन् इशैक्कुम् विल्लिपुत्तूर्⋆ इनिदमरन्दाय्! उन्नै क्कण्डार्⋆ एन्न नोन्बु नोढ़ाळ् कॊलो⋆ इवनै प्पॆढ़ वयिऱुडैयाळ्⋆ एन्नुम् वार्त्तै एय्दुवित्त⋆ इरुडीकेशा! मुलै उणाये॥६॥	श्रीविल्लीपुत्तूर के प्रिय नाथ हृषिकेश ! मधुमक्खी आपके केश के फूलों पर मड़राते हुए मधुर ध्वनि कर रहे हैं। जो आपको देखते हैं वे यही सोंचते हैं कि अपनी मां के कौन सी तपस्या के फल हैं आप! आपने मुझे इतना यशलाभ कराया है। आइए स्तन पान कीजिए। **133**
पॆण्डिर् वाऴ्वार् निन् ऑप्पारै⋆ प्पॆऱुदुम् एन्नुम् आशैयाले⋆ कण्डवर्गळ् पोक्कॊऴिन्दार्⋆ कण्णिणैयाल् कलक्क नोक्कि⋆ वण्डुलाम् पूङ्गुऴलिनार्⋆ उन् वायमुदम् उणण वेण्डि⋆ कॊण्डु पोवान् वन्दु निन्ऱार्⋆ गोविन्दा! नी मुलै उणाये॥७॥	रास्ते की महिलाएं आपको देखकर ठहर जाती हैं और आपके जैसे पुत्र की कामना करती हैं। बालों पर मधुमक्खी मंड़रातीं बालायें आपके होठ के मधुर पान के लिये आपको हठात उठा ले जाती हैं। गोविन्द ! आइए स्तन पान कीजिए। **134**
इरु मलै पोल् एदिर्न्द मल्लर्⋆ इरुवर् अङ्गम् एरि शॆय्दाय्!⋆ उन् तिरुमलिन्दु तिगऴ् मार्वु⋆ तेक्क वन्दॆन् अल्गुल् एऱि⋆ ऑरु मुलैयै वाय् मडुत्तु⋆ ऑरु मुलैयै नॆरुडि क्कॊण्डु⋆ इरु मुलैयुम् मुऱै मुऱैया⋆ एङ्गि एङ्गि इरुन्दुणाये॥८॥	पर्वत समान दो पहलवानों को आपने परास्त कर दिया ! मेरे गोद में बैठ कर एक स्तन का पान कीजिए और दूसरे स्तन से खेलिए। नाक और मुंह की लंबी सांसों के साथ दोनों स्तनों से एक के बाद एक, अपने पवित्र वक्षस्थल को भींगाते हुए, पेट भर दूध पीजिए। **135**
अङ्गमल प्पोदगत्तिल्⋆ अणि कॊळ् मुत्तम् शिन्दिनार् पोल्⋆ शॆङ्गमल मुगम् वियर्प्प⋆ त्तीमै शॆय्दिम् मुढ़त्तूडे⋆ अङ्गम् एल्लाम् पुऴुदियाग⋆ अऴैय वेण्डा अम्म! विम्म⋆ अङ्गमरर्क्कमुदळित्त⋆ अमरर् कोवे! मुलै उणाये॥९॥	मेरे नाथ ! नटखट स्वभाव छोडिये और बाहर मैदान में शरीर को धूल धूसरित करने नहीं जाइए।आपके पुष्पवत चेहरे पर पसीना उसी तरह से छा गये हैं जैसे कमल के फूल पर ओसकण।देवेश ! आपने क्षीर सागर में देवताओं को अमृत पान कराया। आईए स्तन पान कीजिए। **136**
ओड ओड क्किङ्किणिगळ्⋆ ऑलिक्कुम् ओशै प्पाणियाले⋆ पाडि प्पाडि वरुगिन्ऱायै⋆ प्पर्पनाबन् एन्ऱिरुन्देन्⋆ आडि आडि अशैन्दशैन्दिट्टु⋆ अदनुक्केढ़ कूत्तै आडि⋆ ओडि ओडि प्पोय्विडादे⋆ उत्तमा! नी मुलै उणाये॥१०॥	स्वयंपूर्ण नाथ ! आप सर्वत्र दौड़ते जाते हैं और अपने पाजेब की ध्वनि की सुर में गाते रहते हैं तथा उन धुनों की ताल में भरपूर नाचते हैं। जब हमने आपको इस तरह से देखा तो सोचा "ये नाथ पद्मनाभ स्वयं हैं "। अब दौड़ते हुए नहीं जाइए, आईए स्तन पान कीजिए। **137**
वार् अणिन्द कॊङ्गै आय्च्चि⋆ मादवा! उण् एन्ऱ माढ़म्⋆ नीर् अणिन्द कुवळै वाशम्⋆ निगऴ नाऱुम् विल्लिपुत्तूर्⋆ पार् अणिन्द तॊल् पुगऴान्⋆ पट्टर्बिरान् पाडल् वल्लार्⋆ शीर् अणिन्द शॆङ्गणमाल् मेल्⋆ शॆन्ऱ शिन्दै पॆऱुवार् तामे॥११॥	तड़ाग के कमल से सर्वत्र सुगंधित श्रीविल्लीपुत्तूर के जग प्रसिद्ध पत्तारविरन के ये मधुर गीत दूध से भरे हुए स्तन वाली यशोदा के माधव को स्तन पान के लिये बुलाने के आमंत्रण का स्मरण दिलाते हैं। इसको प्रेमपूर्वक समझने वाले को मंगलमय राजीवनयन प्रभु पर ध्यान सुस्थिर हो जायेगा।**138** पेरियाऴ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।

<table>
<tr><td colspan="2">श्रीमते रामानुजाय नमः
13 पोय्प्पाडु (139-151)
पन्निरूनाम् प्परूमै कादु कुत्तल् (भगवान कृष्ण का कर्ण छेदन संस्कार)</td></tr>
<tr><td>पोय्प्पाडुडैय निन् तन्दैयुम् ताळ्त्तान्⋆
पॆरु तिरल् कञ्जन् कडियन्⋆
काप्पारुम् इल्लै कडल्वण्णा⋆ उन्नै
त्तनिये पोय् एङ्गुम् तिरिदि⋆
पेय्प्पाल् मुलै उण्ड पित्तने !⋆ केशव–
नम्बी ! उन्नै क्कादु कुत्त⋆
आय् प्पालर् पॆण्डुगळ् एल्लारुम् वन्दार्⋆
अडैक्काय् तिरुत्ति नान् वैत्तेन्॥१॥</td><td>केशव ! आपके पिता बाहर हैं और अभी नहीं लौटेंगे। हाय! निर्दयी एवं दुर्दातं कंश से आपकी रक्षा करने वाला काई नहीं है। नीले सागर सा नाथ ! आप सर्वत्र अकेले घूमते रहते हैं। मनमौजी नाथ ! आपने पूतना का स्तन पान किया। आपके लिये गोपियां यहां एकत्र हो गयी हैं। नाथ ! आपके कर्ण छेदन संस्कार के लिये हम मंगल सूचक पान का पत्ता एवं पूगी फल ले आये हैं। 139</td></tr>
<tr><td>वण्ण प्पवळ मरुङ्गिनिल् शात्ति⋆ मलर्प्पाद क्किङ्किणि आर्प्प⋆
नण्णि त्तॊळुम् अवर् शिन्दै पिरियाद⋆ नारायणा ! इङ्गे वाराय्⋆
एण्णर्करिय पिराने⋆ तिरियै एरियामे कादुक्किडुवन्⋆
कण्णुक्कु नन्रुम् अळगुम् उडैय⋆ कनग क्कडिप्पुम् इवैयाम्॥२॥</td><td>नारायण ! जो आपकी पूजा करते हैं, उनके ख्याल में आप निरंतर ध्यान मग्न रहते हैं। मूंगे की कमरधनी एवं मधुर ध्वनि के पाजेव वाले ! यहां आइए। कल्पनातीत सौंदर्यवाले ! बिना कोई कष्ट दिये आपके कान में सूई एवं धागा पिरोउंगी। ये सोने के कर्णफूल कितने सुन्दर हैं ! हैं न ! 140</td></tr>
<tr><td>वैयम् एल्लाम् पॆरुम् वार्कडल् वाळुम्⋆ मगर क्कुळै कॊण्डु वैत्तेन्⋆
वॆय्यवे कादिल् तिरियै इडुवन्⋆ नी वॆण्डियदॆल्लाम् तरुवन्⋆
उय्य इव्वायर् कुलत्तिनिल् तोन्रिय⋆ ऒण् शुडर् आयर् कॊळुन्दे⋆
मैयन्मै शॆय्दिळ आय्च्चियर् उळ्ळत्तु⋆ मादवने ! इङ्गे वाराय्॥३॥</td><td>माधव ! गोपवंश के उद्धारक प्रभापूर्ण शिशु ! जिसके लिए संसार के लोग उत्सुक रहते हैं उस गहरे समुद्र के मकर मछली के आकार का कर्णाभूषण आपके लिए लाये हैं। नवयुवती गोपियों को कामनाभिभूत कर आप उनके हृदय में छाये रहते हैं। आपके कान हम शीघ्र ही छेद देंगे। आप जो भी मांगेंगे आपको दूंगी। 141</td></tr>
</table>

वण नन्ऱुडैय वयिर क्कडिप्पिट्टु⋆ वार्गादु ताऴ प्पॆरुक्कि⋆ गुण नन्ऱुडैयर् इक्कोपाल पिळ्ळैगळ्⋆ गोविन्दा ! नी शॊल्लु क्कॊळ्ळाय्⋆ इणै नन्ऱऴगिय इक्कडिप्पिट्टाल्⋆ इनिय पला प्पऴम् तन्दु⋆ शुण नन्ऱणि मुलै उण्ण त्तरुवन् नान्⋆ शोत्तम् पिरान् ! इङ्गे वाराय्॥ ४॥	गोविंद ! देखिये, सारे गोपकिशोर अपने लंबे कानों में सुन्दर हीरे के आभूषण पहने हैं। ये सभी अच्छे अनुशासनप्रिय बालक हैं। अगर आप ये कान के सुन्दर आभूषण पहन लेंगे तो मैं आपको कटहल का मधुर फल दूंगी और दूध भरे स्तन का पान कराउंगी। विनय करती हूं नाथ ! आईये। **142**
शोत्तम् पिरान् ! एन्ऱिरन्दालुम् कॊळ्ळाय्⋆ शुरि कुऴलारॊडु नी पोय्⋆ कोत्तु क्कुरवै पिणैन्दिङ्गु वन्दाल्⋆ गुणम् कॊण्डिडुवनो नम्बी⋆ पेत्तुम् पॆरियन अप्पम् तरुवन्⋆ पिराने ! तिरियिड ऒट्टिल्⋆ वेय् त्तडन्दोळार् विरुम्बुम् करुङ्गुऴल्⋆ विट्टुवे ! नी इङ्गे वाराय्॥ ५॥	विष्णु ! नाथ ! जबभी मैं कहती हूं "कृपया आइए" आप नहीं आते हैं। बाहर जाकर घुंघराले बाल वाली बालिकाओं के साथ रास क्रीड़ा के पश्चात् अगर आप आयेंगे, तो क्या मैं इसे आपके सद्‌व्यहार में गिनती करूंगाी ? मैं आपको बड़े से बड़ा अप्पम (पूआ) दूंगी। काले केशवाले नाथ ! जो आपको अपने लंबे बाहों में समेट लेना चाहती हैं, उन गोपियों के प्रिय ! यहां आइये। **143**
विण् एल्लाम् केट्क अऴुदिट्टाय् !⋆ उन्वायिल् विरुम्बि अदनै नान् नोक्कि⋆ मण् एल्लाम् कण्डेन् मनत्तुळ्ळे अञ्जि⋆ मदुशूदने एन्ऱिरुन्देन्⋆ पुण् एदुम् इल्लै उन्गादुम् अऱियुम्⋆ पॊरुत्तिरै प्पोदिरु नम्बी ! कण्णा ! एन् कार्मुगिले ! कडल्वण्णा⋆ कावलने ! मुलै उणाये॥ ६॥	मधुसूदन ! चिंतावश जब मैं आपका मुंह खोलने लगी तो आपका शोरपूर्ण रूदन सारे आकाश में छा गया। आपके मुंह में जब सारा जगत दिखा तो डर से मेरा हृदय सहम गया और समझ गयी कि आप सर्वेश्वर हैं। देखिये यह तनिक भी पीड़ा नहीं देगा और जल्द ही घाव भी भर जायेगा। थोड़ा सहन कीजिये। घनश्याम ! समुद्र के नीले रंग वाले नाथ ! मेरे रक्षक ! मेरे आंखों के तारे ! अपने आप में पूर्ण ! स्तन पान की एक चुस्की ले लीजिये। **144**
मुलै एदुम् वेण्डेन् एन्ऱोडि⋆ निन् कादिल् कडिप्पै प्पऱित्तॆऱिन्दिट्टु⋆ मलैयै एडुत्तु मगिऴ्न्दु कल् मारि कात्तु⋆ प्पशुनिरै मेय्त्ताय्⋆ शिलै ऒन्ऱिऱुत्ताय् ! तिरिविक्किरमा !⋆ तिरुवायर् पाडि प्पिराने !⋆ तलै निला प्पोदे उन् कादै प्पॆरुक्कादे⋆ विट्टिट्टेन् कुट्रमे अन्ऱे॥ ७॥	त्रिविकम ! पथरीले तूफान से गायों को बचाने के लिये आपने पर्वत उठा लिया। सीता के लिये धनुषभंग किया। वामन (मणिकिण) के रूप में पृथ्वी को नाप दिया। गोपवंश के नाथ ! आप यह कहते हुए भाग गये "मुझे कोई स्तन पान नहीं चाहिए"। आपने कर्णफूलों को उठाकर फेंक दिया। यह मेरी गलती है कि जब आपका गला मुलायम था मैंने आपका कान नहीं छेदा। **145**

<table>
<tr><td>एऩ् कुट्रमे एऩ्ऱु शॊल्लवुम् वेण्डा काण्⋆ एऩ्ऩै नाऩ् मण् उण्डेनाग⋆
अऩ्पुट्रु नोक्कि अडित्तुम् पिडित्तुम्⋆ अनैवरक्कुम् काट्टिट्रिलैये⋆
वऩ् पुट्रविऩ् पगै क्कॊडि⋆ वामन नम्बी ! उऩ् कादुगळ् तूरुम्⋆
तुऩ्बुट्रन एल्लाम् तीर्प्पाय् पिराने ! तिरियिट्टु च्चॊल्लुगेऩ् मॆय्ये॥८॥</td><td>वामन ! आपने कहा “अपने गलतियों पर दुःख प्रकट करने का स्वांग न करो। आपने क्या मुझे रस्सी से नहीं बांधा, मेरी पिटाई नहीं की, और मेरा मुंह खोलकर मुझे मिट्टी खाने का दोष नहीं लगाया “ । नाथ ! नागारि गरूड़ चिह्न के ध्वज वाले ! भक्तों के मुक्तिदाता ! अब से मैं पूर्णतया सत्यवादी बनूंगी।अगर छोड़ दिया गया तो किया हुआ छेद भर जायेगा, अतः इसमें धागा पहना लेने दीजिये। 146</td></tr>
<tr><td colspan="2">145 एवं अन्य पूर्व के पदों में यशोदा कृष्ण के कान छेदने में सफल हो जाती है। उनके दुःख को कम करने के मोह से छेदने के साथ छेदों में धागा नहीं पिरोतीं हैं। धागा पिरोने में भी वे आनाकानी कर भाग जा रहे हैं और भिन्न तरह के उलाहनाएं मां को देते हैं। पद 146 से 148 तक यशोदा कृष्ण के उलाहनों को दुहराते हुए उन्हें मनाने का प्रयास करती है जिससे कि उनके छेदे गये कानों में धागा पिरो दिया जाय।धागा पिरोने की सफलता के बाद दो पदों 149 एवं 150 में कर्णफूल पहनाने का प्रयास किया गया है।</td></tr>
<tr><td>मॆय् एऩ्ऱु शॊल्लुवार् शॊल्लै क्करुदि⋆ त्तॊडुप्पुण्डाय् वॆण्णॆयै एऩ्ऱु⋆
कैयै प्पिडित्तु क्करै उरलोडॆन्नै⋆ क्काणवे कट्टिट्रिलैये⋆
शॆय्दन शॊल्लि च्चिरित्तङ्गिरुक्किल्⋆ शिरीदरा ! उऩ् कादु तूरुम्⋆
कैयिल् तिरियै इडुगिडाय् इन्निन्ऱ्⋆ कारिगैयार् शिरियामे॥९॥</td><td>श्रीधर ! आपने कहा “दूसरों की शिकायत पर विश्वास कर आपने क्या मुझे उनके मक्खन चुराने का दोषी नहीं ठहराया, सबों के देखने के लिये पत्थर के ऊखल में मेरे हाथों को नहीं बांधा” । अगर आप खड़े होकर मेरी कार्यकलापों का इस तरह व्यंग भरते रहेंगे तो ये छेद भर जायेंगे। आइये, मुझे इनमें धागा पिरोने दीजिये, जिससे कि ये लड़कियां आपको व्यंग का साधन न बना लें। 147</td></tr>
<tr><td>कारिगैयारक्कुम् उनक्कुम् इळुक्कुट्रॆन्⋆ कादुगळ् वीङ्गि एरियिल्⋆
तारिया तागिल् तलै नॊन्दिडुम् एऩ्ऱु⋆ विट्टिट्टेन् कुट्रमे अन्ऱे⋆
शेरियिर् पिळ्ळैगळ् एल्लारुम् कादु पॆरुक्कि⋆ त्तिरियवुम् काण्ड⋆
एर् विडै शॆट्रिळङ्गन्ऱॆरिन्दिट्ट⋆ इरुडीकेशा ! एऩ्रन् कण्णे ! ॥१०॥</td><td>हृषीकेश ! आपने कहा “अगर मेरे कानों में सूजन आ ही गये तो अन्यों के छेदने में और आपके छेदने में अन्तर ही कहां रहा”।हाय ! मैंने तो आपके सिरदर्द के भय से छेदने के साथ धागा नहीं पिरोया था। नाथ !अरिष्टनेमी वृषभ एवं वत्सासुर के हन्ता ! मेरे नयनों के तारा ! देखिए गांव के सभी बच्चों के कानों में धागा पिरोया हुआ है। 148</td></tr>
</table>

कण्णै क्कुळिर क्कलन्दॅङ्गुम् नोक्कि⋆ क्कडि कमळ् पूङ्गुळलार्गळ्⋆ एण्णत्तुळ् एन्रुम् इरुन्दु⋆ तित्तिक्कुम् पॅरुमाने ! एङ्गळ् अमुदे⋆ उण्ण क्कनिगळ् तरुवन्⋆ कडिप्पॉन्रुम् नोवामे कादुक्किडुवन्⋆ पण्णै क्किळिय च्चगडम् उदैत्तिट्ट⋆ पर्पनाबा ! इङ्ग वाराय्॥११॥	पद्मनाभ ! सुगन्धित फूलों से गूथे हुए सुन्दर बालों वाली बालायें आपका सर्वांग निहारकर आपको अपने मधुर हृदय में रखती हैं। हमारे नाथ ! हमारे संजीवनी ! आपने अपने पैरों से गाड़ी के टुकड़े टुकड़े कर दिये। हम आपको बहुत सारे खाने को फल देंगे। ये कर्णफूल आपको बिना किसी दर्द को पहना दूंगी । आइये इधर ! **149**
वा एन्रु शॉल्लि एन् कैयै प्पिडित्तु⋆ वलियवे कादिल् कडिप्पै⋆ नोव त्तिरिक्किल् उनक्किङ्गिळुक्कुट्टॅन्⋆ कादुगळ् नॉन्दिडुम् किल्लेन्⋆ नावर् पळम् कॉण्डु वैत्तेन्⋆ इवै काणाय् नम्बी⋆ मुन् वञ्ज मगळै च्चाव प्पाल् उण्डु शगडिर् प्पाय्न्दिट्ट⋆ दामोदरा ! इङ्ग वाराय्॥१२॥	दामोदर ! आप कहते हैं "मेरे पास आओ। अगर आप के पास आया तो बलात् हमारा हाथ पकड़कर आप आभूषण कानों में पहना देंगी। इसमें आपका क्या, दर्द तो मुझे बहुत होगा न ! नहीं, मैं नहीं आता।" देखो हम आपके लिए बहुत सारे जामुन के फल रखे हैं। आपने राक्षसी का स्तन पान कर उसके प्राण हर लिये और गाड़ी को चकनाचूर कर दिया। आइये इधर ! **150**
वार् कादु ताळ प्पॅरुक्कि अमैत्तु⋆ मगर क्कुळैयिड वेण्डि⋆ शीराल् अशोदै तिरुमालै च्चॉन्न शॉल्⋆ शिन्दैयुळ् निन्रु तिगळ⋆ पार् आर् तॉल् पुगळान् पुदुवै मन्नन्⋆ पन्निरु नामत्ताल् शॉन्न⋆ आराद अन्दादि पन्निरण्डुम् वल्लार्⋆ अच्चुतनुक्कडियारे॥१३॥ ॥ पॅरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	पुदुवै के विश्वप्रसिद्ध सम्राट विष्णुचित्त ने अन्डाल की शैली में "नाम के इन बारह पदों में" यशोदा द्वारा गाये हुए तिरूमल के स्वामी के मकराकृत कुण्डल पहनाने के प्रेमपूर्ण गीतों को दुहराते हैं। जो इसे स्मरण कर लेंगे वे अच्युत के भक्त हो जायेंगे। **151** **पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं ।**

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

14 वण्णय्य ळैन्द (152-161)

नीराट्टल् (भगवान कृष्ण को स्नान के लिए आमंत्रण देना)

</td></tr>
<tr><td>वॆण्णॆय् अळैन्द कुणुङ्गुम्⋆ विळैयाडु पुळुदियुम् कॊण्डु⋆
तिण्णॆन इव्विरा उन्नै⋆ त्तेय्त्तु क्किडक्क नानॊट्टेन्⋆
एण्णॆय् प्पुळिप्पळम् कॊण्डु⋆ इङ्गॆत्तनै पोदुम् इरुन्देन्⋆
नण्णल् अरिय पिराने !⋆ नारणा ! नीराड वाराय्॥१॥</td><td>पुराने दुर्गन्धभरा दही और खेल मैदान के धूल से आपका सारा शरीर भरा हुआ है। आपको आज की रात इस तरह से खुजलाते हुए सोने की अनुमति हम कदापि नहीं देंगे। तेल और सफाई की फली का चूर्ण लिये कब से हम आपकी प्रतीक्षा में हैं।कठिनाई से मिलने वाले नाथ नारायण ! स्नान के लिये आइए। 152</td></tr>
<tr><td>कन्ऱुगळ् ओड च्चॆवियिल्⋆ कट्टॆऱुम्बु पिडित्तिट्टाल्⋆
तॆन्ऱि क्कॆडुमागिल्⋆ वॆण्णॆय् तिरट्टि विळुङ्गुमा काण्बन्⋆
निन्ऱ मरामरम् शाय्त्ताय् !⋆ नी पिऱन्द तिरुवोणम्⋆
इन्ऱु नी नीराड वेण्डुम्⋆ एम्पिरान् ! ओडादे वाराय्॥२॥</td><td>अगर बछड़ों के कान में आप कीड़ा डालेंगे तो वे इधर उधर भागते रहेंगे। देखते हैं कैसे आपको खाने को मक्खन मिलता है! नाथ ! आपने सात वृक्षों का छेदन किया है। आज आपका जन्म नक्षत्र श्रवण है। आप अवश्य स्नान कीजिए। हमारे नाथ ! भागिये नहीं, आइये यहां। 153</td></tr>
<tr><td>पेय्च्चि मुलै उण्ण क्कण्डु⋆ पिन्नैयुम् निल्लादॆन् नॆञ्जम्⋆
आय्च्चियर् एल्लारुम् कूडि⋆ अळैक्कवुम् नान् मुलै तन्देन्⋆
काय्च्चिन नीरॊडु नॆल्लि⋆ कडारत्तिल् पूरित्तु वैत्तेन्⋆
वाय्त्त पुगळ् मणिवण्णा !⋆ मञ्जनम् आड नी वाराय्॥३॥</td><td>यद्यपि पूतना के स्तन पीते आपको उसके प्राण हरते देखा तथापि अन्य गोपनारियों के मना करने पर भी उनका नहीं सुना और हमने आपको स्तन पान कराया। आपके स्नान के लिये कदंब की लकड़ी से शुद्ध किया हुआ गर्म पानी तैयार है। शाश्वत यश वाले नीलमणि सा सलोने नाथ ! स्नान के लिये आईये। 154</td></tr>
<tr><td>कञ्जन् पुणर्प्पिनिल् वन्द⋆ कडिय शकडम् उदैत्तु⋆
वञ्जग प्पेय्मगळ् तुञ्ज⋆ वाय् मुलै वैत्त पिराने !⋆
मञ्जळुम् शॆङ्गळु नीरिन्⋆ वाशिगैयुम् नाऱु शान्दुम्⋆
अञ्जनमुम् कॊण्डु वैत्तेन्⋆ अळगने ! नीराड वाराय्॥४॥</td><td>कंस से उत्प्रेरित गाड़ी का आपने नाश किया तथा पूतना का प्राण हर लिया। आपके स्नान के लिये हल्दी, कमलफूल का माला, चंदन लेप, तथा काजल हमने एकत्र कर लिये हैं। छवीले नाथ ! स्नान के लिये आईये। 155</td></tr>
</table>

अप्पम् कलन्द शिट्टुण्डि⋆ अक्कारम् पालिल् कलन्दु⋆ शॊप्पड नान् शुट्टु वैत्तेन्⋆ तिन्नल् उरुदियेल् नम्बि !⋆ शॆप्पिळ मॆन्मुलै यार्गळ्⋆ शिरुपुरम् पेशि च्चिरिप्पर्⋆ शॊप्पड नीराड वेण्डुम्⋆ शोत्तम् पिरान् ! इङ्ङे वाराय्॥५॥	दूध और शर्करा से आपके लिये हलवा तैयार कर लिया है।हमारे नाथ ! क्या आप उसे खाने को तैयार हैं, तो आईए।रक्तिम कोमल उरोज वाली गोपियां आपके पीछे आप पर हंसेंगी। आप अवश्य स्नान करें। **156**
एण्णॆय् क्कुडत्तै उरुट्टि⋆ इळम् पिळ्ळै किळ्ळि यॆळुप्पि⋆ कण्णै प्पुरट्टि विळित्तु⋆ क्कळकण्डु शॆय्युम् पिराने !⋆ उण्ण क्कनिगळ् तरुवन्⋆ ऑलिकडल् ओद नीर् पोले⋆ वण्णम् अळकिय नम्बी !⋆ मञ्जनम् आड नी वाराय्॥६॥	नीले सागर सा वदन वाले प्रभु ! तेल का घड़ा उलट देना, बच्चों को चुट्टी काटना और उन्हें सोये से जगाना, आंख के पलक को उलट लेना आदि नटखट कियाकलाप में आप लिप्त रहते हैं। प्रभु आपको खाने को बहुत सा फल देंगे। आईए, आप अवश्य स्नान कीजिये। **157**
करन्द नल् पालुम् तयिरुम्⋆ कडैन्दुरिमेल् वैत्त वॆण्णॆय्⋆ पिरन्ददुवे मुदलाग⋆ प्पॆट्ररियेन् एम्पिराने !⋆ शिरन्द नल् ताय् अलर् तूट्रुम्⋆ एन्बदनाल् पिरर् मुन्ने⋆ मरन्दुम् उरैयाड माट्टेन्⋆ मञ्जनम् आड नी वाराय्॥७॥	जब से आपका प्रार्दुभाव हुआ है हमने ताजा दूध, दही, और घी नहीं देखा है। इतना होते हुए भी जैसे एक अच्छी मां कभी भी बच्चे की गलती पर ध्यान नहीं देती, वैसे ही हमने आपको भूल से भी दूसरों के सामने कभी डांटा तक नहीं। प्रभु ! आईए, आप अवश्य स्नान कीजिये। **158**
कन्रिनै वाल् ओलै कट्टि⋆ क्कनिगळ् उदिर एरिन्दु⋆ पिन् तॊडर्न्दोडि ओर् पाम्बै⋆ प्पिडित्तु क्कॊण्डाट्टिनाय् पोलुम्⋆ निन् तिरत्तेन् अल्लेन् नम्बि !⋆ नी पिरन्द तिरु नन्नाळ्⋆ नन्रु नी नीराड वेण्डुम्⋆ नारणा ! ओडादे वाराय्॥८॥	आपने एक बछड़े की पूंछ में ताड़ का पत्ता बांध दिया। एक दूसरे बछड़े को वृक्ष पर दे मारा और उसके सारे फल नीचे आ गये।एक सांप का पीछा करके पकड़ लिया, उसे पूंछ से नचाया और उसके फन पर नाचे। ओह! हम कभी भी आपके तुलना में नहीं आ सकते हैं। आज आपका पावन जन्मदिन है। हे नारायण ! भागिये नही। आईए, आप अवश्य स्नान कीजिये। **159**
पूणि त्तॊळुविनिल् पुक्कु⋆ प्पुळुदि अळैन्द पॊन्मेनि⋆ काण प्पॆरिदुम् उगप्पन्⋆ आगिलुम् कण्डार् पळिप्पर्⋆ नाण् इत्तनैयुम् इलादाय् !⋆ नप्पिन्नै काणिल् शिरिक्कुम्⋆ माणिक्कमे ! एन् मणिये !⋆ मञ्जनम् आड नी वाराय्॥९॥	गौशाले के सुनहले धूल से आच्छादित आपका मुखमंडल हमें मनोरम दिखता है परन्तु दूसरे खिल्ली उड़ायेंगे। शर्महीन प्यारे ! अगर नप्पिनाय ने आपको देख लिया तो हंसेगी। नीलमणि सा सलोने प्रभु ! आईए, स्नान कीजिये। **160**

कार्मल्लि मेनि निऱत्तु⋆ क्कण्ण पिरानै उगन्दु⋆ वार्मल्लि कोङ्गै यशोदै⋆ मञ्जनम् आट्टिय आऱ्ऱै⋆ पार् मलि तॊल् पुदुवै क्कोन्⋆ पट्टर् पिरान् शॊन्न पाडल्⋆ शीर् मलि शॆन् तमिऴ् वल्लार्⋆ तीविनै यादुम् इलरे॥१०॥ ॥ पॆरियाऴ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	प्राचीन पुदुवै के सम्राट पत्तारविरन के ये तमिल पद अति मधुर हैं । पूर्णउरोजा यशोदा कैसे नील समुद्र से भी सुन्दर कृष्ण को स्नान करातीं हैं ये पद उसका स्मरण कराते हैं। जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे कभी भी दुष्कर्म में लिप्त नहीं होंगे। **161** **पेरियाऴ़वार तिरूवडिगळे शरणं**

श्रीमते रामानुजाय नमः

15 पिन्नै मणाळनै (162-171)

कुळल् वार क्काक्कैयै वावनल् (भगवान कृष्ण के केश संवारने के लिए काग को आमंत्रण देना)

पिन्नै मणाळनै॰ प्पेरिल् किडन्दानै॰ मुन्नै अमरर्॰ मुदल् तनि वित्तिनै॰ एन्नैयुम् एङ्गळ्॰ कुडि मुळुदाट् कॊण्ड॰ मन्ननै वन्दु कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! मादवन् तन् कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! ॥१॥	आप नप्पिनाय के दुलहा हैं, त्तिरूपर के शयनावस्था के प्रभु हैं। सभी प्राचीन देवताओं के प्रार्दुभाव के प्रथम कारण हैं। आप हमारे वंश तथा मेरे राजा हैं जो शासन करने के लिए आये हैं। आप प्रभु माधव हैं। हे काग ! इनके केश का कंघा करो, आओ और कंघा करो। **162**
पेयिन् मुलै उण्ड॰ पिळ्ळै इवन् मुन्नम्॰ माय च्चगडुम्॰ मरुदुम् इऱुत्तवन्॰ कायामलर् वण्णन्॰ कण्णन् करुङ्गुळल्॰ तूय्दाग वन्दु कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! तूमणि वण्णन् कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! ॥२॥	आप पूतना के स्तन पान करने वाले बालक हैं। आप ने गाड़ी को तोड़ा और मरूदु के वृक्ष का नाश किया। नील मणि के रंग के समान सुन्दर वदन वाले आप तो साक्षात् कृष्ण हैं। आप कया फूल की तरह काले धुले हुए लंबे केश वाले हैं। हे काग ! इनके केश का कंघा करो, आओ और कंघा करो। **163**
तिण्ण क्कलत्तिल्॰ तिरै उऱिमेल् वैत्त॰ वॆण्णॆय् विळुङ्गि॰ विरैय उऱङ्गिडुम्॰ अण्णल् अमरर्॰ पॆरुमानै आयर्तम्॰ कण्णनै वन्दु कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! कार्मुगिल् वण्णन् कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! ॥३॥	आप महान हैं जो छत से लटकते हुए कसकर बंद किये हुए पात्र को खोलकर उसका सारा मक्खन खाकर तुरंत सो जाते हैं। श्याम घन सलोने, गोपवंश के प्रिय, देवताओं के प्रभु, आप कृष्ण हैं ! हे काग ! इनके केश का कंघा करो, आओ और कंघा करो। **164**
पळ्ळत्तिल् मेयुम्॰ परवै उरु क्कॊण्डु॰ कळ्ळ अशुरन्॰ वरुवानै त्तान् कण्डु॰ पुळ्ळिदुवॆन्ऱु॰ पॊदुक्को वाय् कीण्डिट्ट॰ पिळ्ळैयै वन्दु कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! पेय्मुलै उण्डान् कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! ॥४॥	बक नामका दुष्ट असुर बगुले के छद्म रूप में पानी में मछली मार रहा था। जैसे कि वह एक साधारण पक्षी है, ऐसा समझ इस बालक ने उसके दोनों चोंच फाड़कर अलग कर दिये। आप वही हैं जिन्होंने पूतना का स्तन पान किया था। हे काग ! इनके केश का कंघा करो, आओ और कंघा करो। **165**

कट्रिनम् मेयत्तु* क्कनिक्कौरु कन्रिनै* पट्रि एरिन्द* परमन् तिरुमुडि* उट्रन पेशि* नी ओडि त्तिरियादे* अट्रैक्कुम् वन्दु कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! आळियान् तन् कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! ॥५॥	बछड़े चराते समय आप ने एक बछड़ा को उसके पैरों से पकड़ कर हवा में घुमाते हुए छोड़ दिया जो ताड़ के पेड़ से जा टकराया। काग ! व्यर्थ चिल्लाते हुए अब सब जगह मत घूमो, और यहां आकर चक्रधारी प्रभु के केश का कंघा करो। उनके केश का कंघा करो, आओ और उनके केश का प्रतिदिन कंघा करो। **166**
किळक्किल् कुडि मन्नर* केडिलादारै* अळिप्पान् निनैन्दिट्टु* अव्वाळि अदनाल्* विळिक्कुम् अळविले* वेर् अरुत्तानै* कुळर्कणियाग क्कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! गोविन्दन् तन् कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! ॥६॥	पलक झपकते आप गोवन्द ने चक्र से नरकासुर का समूल नाश कर दिया । अन्य राजाओं और पूर्वांचल राज्य के भी राजाओं का जो र्निदोष इन्द्र और दूसरे देवताओं को क्षति पहुंचा रहे थे आपने जड़ से नाश कर दिया। काग ! उनके केश का कंघा करो, आओ और उनकी सुन्दरता के निखार के लिए उनके केश का कंघा करो। **167**
पिण्ड त्तिरळैयुम्* पेयक्किट्ट नीर् च्चोरुम्* उण्डर्कु वेण्डि* नी ओडि त्तिरियादे* अण्डत्तमरर्* पैरुमान् अळगमर्* वण्डोत्तिरुण्ड कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! मायवन् तन् कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! ॥७॥	काग ! यत्र तत्र घूमते हुए मृतात्माओं एवं प्रेतात्माओं के निमित्त दिया हुआ भात एवं पानी की चाह में मत रहो। जगत एवं ब्रह्मांड के नायक के काले केश भौंरे के समान हैं तथा ये चमत्कारिक प्रभु दर्शन के योग्य हैं। उनके केश का कंघा करो, आओ और उनके केश का कंघा करो। **168**
उन्दि एळुन्द* उरुव मलर् तन्निल्* शन्द च्चतुमुगन्* तन्नै प्पडैत्तवन्* कौन्द क्कुळलै* क्कुरन्दु पुळि अट्टि* तन्दत्तिन् शीप्पाल् कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! दामोदरन् तन् कुळल्वाराय् अक्काक्काय् ! ॥८॥	काग ! ये दामोदर हैं। आपने ही अपने नाभि से निकले हुए कमल पर ब्रह्मा तथा अन्यों की सृष्टि किया। चूर्ण से साफ किये हुए उनके केश को समेटते हुए कंघा करो। आओ और उनके केश का हस्तिदंत के कंघा से कंघा करो। **169**

मन्नन् तन् देविमार्⋆ कण्डु मगिऴ्वॅय्द⋆ मुन् इव् उलगिनै⋆ मुट्रुम् अळन्दवन्⋆ पॊन्निन् मुडियिनै⋆ प्पूवणै मेल् वैत्तु⋆ पिन्ने इरुन्दु कुऴल्वाराय् अक्काक्काय् ! पेरायिरत्तान् कुऴल्वाराय् अक्काक्काय् ! ॥९॥	बहुत दिन पहले जब आप सुन्दर वामन के रूप में प्रकट हुए तब बलि की पत्नियां आपके सौंदर्य को देख कर बहुत प्रसन्न हुई। तत्पश्चात् अपने स्वरूप का विस्तार कर आपने ब्रह्मांड को नापा।आपके हजारों नाम हैं। काग ! इनके सुनहले बाल को फूलों पर रखकर पीछे से उसका कंघा करो।आओ और उनके केश का कंघा करो। **170**
कण्डार् पऴियामे⋆ अक्काक्काय्⋆ कार्वण्णन् वण्डार् कुऴल्वार⋆ वा एन्र आय्च्चि शॊल्⋆ विण् तोय् मदिऴ⋆ विल्लिपुत्तूर् क्कोन् पट्टन् शॊल्⋆ कॊण्डाडि प्पाड⋆ क्कुरुगा विनै तामे ! ॥१०॥	प्राचीन गगनचुंबी दीवारों वाली पुदुवै के सम्राट पत्तारबिरन के ये पद यशोदा द्वारा काग को बुलाने का है। काग को घनश्याम के मधुमक्खियों से गुंजायमान काले केश को कंघा करने के लिये कहा गया है। यशोदा यह भी कहतीं हैं कि कंघा नहीं करने से ऐसा न हो कि पथिक इनकी शिकायत करें। जो इन पदों का सप्रेम पाठ करेगा उसके दुःकामनाओं का अन्त हो जायेगा ।**171** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं**

श्रीमते रामानुजाय नमः

16 वेलिक्कोल (172-181)

कोल् काण्डुवा एन्नल् (भगवान कृष्ण के लिये छड़ी लाने का काग को आमंत्रण)

वेल्लि क्कोल् वॅट्टि★ विळैयाडु विल् एट्रि★ ताल्लि क्कॉळुन्दै★ त्तडङ्गळुत्तिल् पूण्डु★ पीलि त्तळैयै★ प्पिणैत्तु प्पिऱगिट्टु★ काल्लि प्पिन् पोवाऱ्कोर् कोल् कॉण्डु वा ! कडल्निऱ वण्णऱ्कोर् कोल् कॉण्डु वा॥१॥	प्रभु का नील नीरनिधि सा वदन ! गले में ताजा ताड़ के पत्ते का यन्त्र (नजर लगने से बचने के लिए), पीछे मोर के पंख का पंखा। हे काग ! जाओ उनको चरवाहे वाली छड़ी लाकर दो। **172**
कॉङ्गुम् कुडन्दैयुम्★ कोट्टियूरुम् पेरुम्★ एङ्गुम् तिरिन्दु★ विळैयाडुम् एन् मगन्★ शङ्गम् पिडिक्कुम्★ तडक्कैक्कु त्तक्क★ नल् अङ्गम् उडैयदोर् कोल् कॉण्डु वा ! अरक्कु वळित्तदोर् कोल् कॉण्डु वा॥२॥	हमारे वत्स तिरूकोत्तियूर और तिरूपेर के सुगन्धित कुडन्दै में घूमते और खेलते हैं। शंखधारी प्रभु के हाथ में ठीक लगने वाली एक अच्छी छड़ी चुनो और इसको लाह से चमकीला बना दो। हे काग ! जाओ उनको चरवाहे वाली छड़ी लाकर दो।**173**

108 दिव्य देश में से कुडन्दै या तिरूकुडन्दै एक हैं जहां सारंगपानी का मंदिर है और यह कुंभकोनम स्टेशन से **3** कि मी की दूरी पर अवस्थित है। यहां मूल विग्रह उद्योग या उत्थान शयनावस्था में हैं यानि कि शरीर का ऊपर का भाग "भगवान अब उठना ही चाहते हैं" का संकेत करता है । कहते हैं कि परकाल स्वामी तिरूमंगै आलवार ने भगवान से प्रश्न किया "दंडकारण्य में घूमने के कारण आपके पैर थक गये हैं क्या, कृपया उठकर उत्तर दीजिए। भक्त प्रवण भगवान आलवार को प्रसन्न करने के लिए उठने ही वाले थे और इसी मुद्रा में भगवान यहां दर्शन देते हैं, इसीलिए उत्थान या उद्योग शयनावस्था कहा जाता है। पद **173** एवं **177** यहां के मूल विग्रह की स्तुति है। कुडन्दै से **15** कि मी की परिधि में **9** और दिव्य देश अवस्थित हैं। कुडन्दै के भगवान को अर्वामुदम (यानि अमृत) कहा जाता है।

श्री नाथ मुनि स्वामी सर्व प्रथम एक महिला से यहीं दिव्य प्रवंधम के पद का गान सुनकर मुग्ध हो गये थे। (Miss Ramesh, vol. 2 pp 128) उस गीत के अंत में यह आता था कि उस गीत के दस पद, **1000** पद वालों गीतों की माला, का एक भाग है। उक्त महिला से सभी पदों की उपलब्धि की जिज्ञासा करने पर श्री नाथ मुनि को निराश होना पड़ा था। परन्तु उन्होंने प्रयास छोड़ा नहीं और आलवार तिरू नगरी में मधुराकवि आळवार के **11** पाशुरम् की उपलब्धि हुई। इन्ही **11** पाशुरम् के **12000** बार गायन के पश्चात नम्माळवार प्रसन्न हुए, और अपने तिरूवायमोळी के अतिरिक्त, विभिन्न समय में विरचित भिन्न भिन्न आलवारों के सभी पदों को श्रीनाथ मुनि को चमत्कारिक रहस्योद्घाटन से प्राप्त करा दिया। इसतरह से कुल **4000** पद एकत्रित हुए थे, जिसे "नालयिरा प्रवंधम" की संज्ञा से संवोधित किया गया, और यही दिव्य प्रवंधम् कहा जाता है।

अतः कुडन्दै के भगवान अर्वामुदम के अनुग्रह द्वारा ही श्रीनाथ मुनि को दिव्य प्रवंधम् मिला। इसी कृतज्ञतावश श्रीनाथ मुनि ने यहां कुडन्दै में मारगळि माह के प्रथम दिन को "अध्ययन उत्सवम्" के उपलक्ष में दिव्य प्रवंधम् के विशेष पाठ की परंपरा की स्थापना की जो आजतक कायम है। कुडन्दै के सारंगपानी मंदिर में मारगळि माह के **19** वें दिन एक

<table>
<tr><td colspan="2">अनोखी परंपरा है कि भगवान पेरूमल को लक्ष्मी थाय्यार के श्रृंगार में, तथा लक्ष्मी थाय्यार को भगवान पेरूमल के श्रृंगार में, अलंकृत किया जाता है।</td></tr>
<tr><td>करुत्तिट्टॆदिर् निन्ऱ⋆ कञ्जनै क्कॊन्ऱान्⋆
पॊरुत्तिट्टॆदिर् वन्द⋆ पुळ्ळिन् वाय् कीण्डान्⋆
नॆरित्त कुऴल्गळै⋆ नीङ्ग मुन् ओडि⋆
शिऱुक्कन्ऱु मेय्प्पार्कोर् कोल् कॊण्डु वा !
देव पिरानुक्कोर् कोल् कॊण्डु वा॥३॥</td><td>आपने गुस्सैल विरोधी कंस की हत्या कर दी तथा आकामक घोड़ा केशी को रोककर उसका मुंह फाड़ डाला। अपने घुंघराले बाल को दो भाग में संवार कर आप बछड़ों से भी तेज दौड़ते थे।आप देवाधिदेव हैं। हे काग ! जाओ उनको चरवाहे वाली छड़ी लाकर दो।
174</td></tr>
<tr><td>ऒन्ऱे उरैप्पान्⋆ ऒरु शॊल्ले शॊल्लुवान्⋆
तुन्ऱु मुडियान्⋆ दुरियोदनन् पक्कल्⋆
शॆन्ऱङ्गु प्पारतम्⋆ कैयॆरिन्दानुक्कु⋆
कन्ऱुगळ् मेय्प्पदोर् कोल् कॊण्डु वा⋆
कडल् निऱ वण्णऱ्कोर् कोल् कॊण्डु वा॥४॥</td><td>आप सदा एक ही बात को सम्यक तरीके से कहते हुए किरीट धारी दुर्योधन के पास दूत बनकर गये और तत्पश्चात् भारत का युद्ध हुआ। नील सागर सा बदन वाले प्रभु बछड़ों के पीछे दौड़े। हे काग ! जाओ उनको चरवाहे वाली छड़ी लाकर दो।175</td></tr>
<tr><td>शीर् ऒन्ऱु तूदाय्⋆ त्तुरियोदनन् पक्कल्⋆
ऊर् ऒन्ऱु वेण्डि⋆ प्पॆऱाद उरोडत्ताल्⋆
पार् ऒन्ऱि प्पारतम्⋆ कैशॆय्दु पार्त्तऱ्कु⋆
तेर् ऒन्ऱै ऊर्न्दार्कोर् कोल् कॊण्डु वा
देव पिरानुक्कोर् कोल् कॊण्डु वा॥५॥</td><td>दुर्योधन के पास उत्तम दूत बनकर गये और पांडव के प्रत्येक भाई के लिये जब एक गांव भी दुर्योधन न दे सका तब आप कोध में युद्धक्षेत्र आ गये और आपने अर्जुन का रथ हांका। आप देवाधिदेव हैं। हे काग ! जाओ उनको चरवाहे वाली छड़ी लाकर दो।176</td></tr>
<tr><td>आलत्तिलैयान्⋆ अरविन् अणै मेलान्⋆
नील क्कडलुळ्⋆ नॆडुङ्गालम् कण्वळर्न्दान्⋆
बाल प्पिरायत्ते⋆ पार्त्तर्क्करुळ् शॆय्द⋆
कोल प्पिरानुक्कोर् कोल् कॊण्डु वा !
कुडन्दै क्किडन्दार्कोर् कोल् कॊण्डु वा॥६॥</td><td>नाथ आप बटपत्र पर प्रकट हुए। गहरे समुद्र में आप शेषनाग पर लेटकर बहुत लंबे समय तक सोते हैं।अर्चा रूप में शयनावस्था में कुडन्दै में प्रकट हुए। आपने बचपन में भी अर्जुन पर दया दिखायी। अलौकिक सुन्दर बालक आप यहां हैं। हे काग ! जाओ उनको चरवाहे वाली छड़ी लाकर दो।177</td></tr>
</table>

पॊन् तिगऴ्⋆ चित्तिरकूड प्पॊरुप्पिनिल्⋆ उऱ्‌ऱ वडिविल्⋆ ऒरु कण्णुम् कॊण्ड⋆ अ– क्कट्टै क्कुऴलन्⋆ कडियन् विरैन्दुन्नै⋆ मट्टै क्कण् कॊळ्ळामे कोल् कॊण्डु वा ! मणिवण्ण नम्बिक्कोर् कोल् कॊण्डु वा ॥७॥	हे काग ! चित्रकूट के पर्वतों के मध्यवर्ती सुनहले मैदान में सीता के सुन्दर उरोज के कारण तुमने अपनी एक आंख गंवा दी। सघन बालों के साथ नाथ बड़े ही भयकारी हैं। ऐसा न हो कि प्रभु तुम्हारी दूसरी आंख भी निकाल लें, अतः शीघ्र हमारे नीलमणि के रंग सा वदन वाले नाथ के लिए एक छड़ी ले आओ। जाओ उनको चरवाहे वाली छड़ी लाकर दो।**178**
मिन्निडै च्चीदै पॊरुट्टा⋆ इलङ्गैयर्⋆ मन्नन् मणिमुडि⋆ पत्तुम् उडन् वीऴ⋆ तन् निगर् ऒन्ऱिल्ला⋆ च्चिलै काल् वळैत्तिट्ट⋆ मिन्नु मुडियर्कोर् कोल् कॊण्डु वा ! वेल्लै अडैत्तार्कोर् कोल् कॊण्डु वा ॥८॥	आभापूर्ण किरीट वाले नाथ ने सीता के लिये समुद्र के ऊपर सेतु बनाकर लंका के रावण के दसो मस्तकों को धनुष बाण से गिरा दिया। हे काग ! जाओ उनको चरवाहे वाली छड़ी लाकर दो।**179**
तॆन् इलङ्गै मन्नन्⋆ शिरम् तोळ् तुणिशॆय्दु⋆ मिन् इलङ्गुपूण्⋆ विबीडण नम्बिक्कु⋆ एन् इलङ्गु नामत्तळवुम्⋆ अरशॆन्र⋆ मिन् अलङ्गारर्कोर् कोल् कॊण्डु वा ! वेङ्गड वाणर्क्कोर् कोल् कॊण्डु वा ॥९॥	वेंकटम् पर्वतश्रेणी के नाथ ! आभापूर्ण गले के हारवाले नाथ ने लंका के रावण के मस्तकों एवं भुजाओं को काट गिराया और उत्तम गुण वाले उसके छोटे भाई विभीषण को वचन दिया हुआ लंका का राज्य दे दिया। हे काग ! जाओ उनको चरवाहे वाली छड़ी लाकर दो।**180**
‡अक्काक्काय् नम्पिक्कु⋆ क्कोल् कॊण्डु वा एन्ऱु⋆ मिक्काळ् उरैत्त शॊल्⋆ विल्लिपुत्तूर् प्पट्टन्⋆ ऒक्क उरैत्त⋆ तमिऴ् पत्तुम् वल्लवर्⋆ मक्कळै प्पॆट्रु⋆ मगिऴ्वर् इव्वैयत्ते ॥१०॥	श्रीविल्लीपुत्तूर के पत्तारबिरन के ये दस मधुर तमिल गीत नेक यशोदा द्वारा काग से अपने लाड़ले के लिये चरवाहे वाली छड़ी लाने के आग्रह का स्मरण दिलाते हैं। जो इसे कंठ करेंगे उन्हें वंश विस्तार का सुख मिलेगा। **181** पेरियाऴ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

17 आनिरै (182-191)

पूच्चूट्टल् (भगवान कृष्ण को फूल धारण करने लिए आमंत्रण)

आनिरै मेय्क्क नी पोदि★ अरुमरुन्दावदरियाय्★ कानगम् एल्लाम् तिरिन्दु★ उन् करिय तिरुमेनि वाड★ पानैयिल् पालै प्परुगि★ प्पट्टादार् एल्लाम् शिरिप्प★ तेनिल् इनिय पिराने !★ शॆण्बक प्पू च्चूट्ट वाराय्॥१॥	मधु से मधुरतर प्रभु ! दूसरे के घड़ा से गोरस सेवन करने से आपको दंडित होते देख द्वेषभाव वाले लोग प्रसन्न होते हैं। आप गायों को चराने जंगल जाते हैं और वहां इधर उधर घूम कर अपना आभापूर्ण मुखमंडल को मलिन कर लेते हैं। आप शायद नहीं जानते हैं कि आप हमलोगों के अपरिहार्य औषध हैं। आइए शण्वक के फूलों को अपना जूड़ा में धारण कीजिये। **182**
करुवुडै मेगङ्गळ् कण्डाल्★ उन्नै क्कण्डाल् ऑक्कुम् कण्गळ्★ उरुवुडैयाय् ! उलगेळुम्★ उण्डाग वन्दु पिरन्दाय् !★ तिरुवुडैयाळ् मणवाळा !★ तिरुवरङ्गत्ते किडन्दाय् !★ मरुवि मणम् कमळ्गिन्र★ मल्लिकै प्पू च्चूट्ट वाराय्॥२॥	सौंदर्यनिधि ! आपको देखकर मन ऐसे प्रसन्न होता है जैसे वर्षा के काले मेघ को देखकर। आपका अवतार सातों लोकों के उद्धार के लिये हुआ है। धनलक्ष्मी के नाथ ! श्रीरंगम में शयनावस्था वाले नाथ ! आइए सदा सुगंधित रहने वाले चमेली के इन फूलों को धारण कीजिए। **183**
मच्चॊडु माळिगै एऱि★ मादर्गळ् तम् इडम् पुक्कु★ कच्चॊडु पट्टै क्किळित्तु★ क्काम्बु तुगिल् अवै कीऱि★ निच्चलुम् तीमैगळ् शॆय्वाय् !★ नीळ् तिरुवेङ्गडत्तेन्दाय् !★ पच्चै त्तमनगत्तॊडु★ पादिरि प्पू च्चूट्ट वाराय्॥३॥	वरामदे तथा छत पर चढ़कर आप नारियों के कक्षों मे प्रवेश पा जाते हैं तथा वहां उनके शरीर के कपड़ों को क्षतिग्रस्त कर देते हैं। आपका यह नटखट कार्यक्रम प्रत्येक दिन चलते रहता है। हमारे तिरूवेंकटम पर्वत श्रेणी के नाथ !आइए इन हरे भरे दवनम झरनों वाले पदीरी के फूल को धारण कीजिये। **184**
तॆरुविन्कण् निन्ऱिळ आय्च्चि मार्गळै★ त्तीमै शॆय्यादे★ मरुवुम् तमनगमुम् शीर्★ मालै मणम् कमळ्गिन्र★ पुरुवम् करुङ्गुळल् नॆऱ्ऱि★ पॊलिन्द मुगिल् कन्ऱु पोले★ उरुवम् अळकिय नम्बी !★ उगन्दिवै शूट्ट नी वाराय्॥४॥	घने बादल के शावक जैसा, आभापूर्ण ललाट तथा घुंघराले बाल, सुन्दर भौंहें वाले सलोने नाथ ! रास्ते में खड़ेहोकर गोपियों को मत छेड़िये। ये हार मरूभू एवं दवनम झरनों के सुगंधित पुष्पों से बने हुए हैं। आइए इनको धारण कीजिये। **185**
पुळ्ळिनै वाय् पिळन्दिट्टाय् !★ पॊरु करियिन् कॊम्बॊशित्ताय् !★ कळ्ळ अरक्कियै मूक्कॊडु★ कावलनै त्तलै कॊण्डाय् !★ अळ्ळि नी वॆण्णॆय् विळुङ्ग★ अञ्जादडियेन् अडित्तेन्★ तॆळ्ळिय नीरिल् एळुन्द★ शॆङ्गळुनीर् शूट्ट वाराय्॥५॥	आपने बकासुर के चोंच चीर डाले, मदमत्त कुवलयपीड़ हाथी के सूढ़ उखाड़ डाले, सूर्पनखा के नाक तथा राक्षसराज रावण के सिर काट डाले । जब आप मक्खन खा गये तो हमने अपनी ओछी बुद्धि के कारण निडर हो आपकी पिटाई कर दी। यहां आइए और इस कमल के फूल के माला को धारण कीजिये। **186**

एरुदुगळोडु पॊरुदि⋆ एदुम् उलोपाय् काण् नम्बि !⋆ करुदिय तीमैगळ् शॅय्दु⋆ कञ्जनै क्काल्गॊडु पायन्दाय् !⋆ तॅरुविन् कण् तीमैगळ् शॅय्दु⋆ शिक्कॅन मल्लर्गळोडु⋆ पॊरुदु वरुगिन्र पॊन्ने !⋆ पुन्नै प्पू च्चूट्ट वाराय्॥६॥	आपने नप्पिनाय के लिए वृषभों से युद्ध किया। कंश के निर्दयता के बदले में बिना किसी चिन्ता के आप उस पर छलांग लगाकर उसका विध्वंस कर दिया। रास्ते में दुष्ट व्यवहार करने वाले योद्धाओं को पछाड़ डाला। हमारे सुवर्ण से प्रिय वत्स ! आइए इन पुन्नै के फूलों को धारण कीजिये।187
कुडङ्गळ् एडुत्तेर् विट्टु⋆ क्कूत्ताड वल्ल एम् कोवे !⋆ मडम् कॊळ् मदिमुगत्तारै⋆ माल्शॅय्य वल्ल एन् मैन्दा !⋆ इडन्दिट्टिरणियन् नॅञ्जै⋆ इरु पिळवाग मुन् कीण्डाय् !⋆ कुडन्दै क्किडन्द एम् कोवे !⋆ कुरुक्कत्ति प्पू च्चूट्ट वाराय्॥७॥	पात्रों को हवा में उछालकर आसानी से उन्हें हाथ में पुनः पकड़ लेने में कुशल हमारे राजा ! चंद्रमुखी गोपियों को लुभाते रहने वाले हमारे राजकुमार ! सुदूर पूर्व में हिरण्यकशिपु के छाती को दो भाग में चीरने वाले, कुडन्दै में शयनावस्था में रहने वाले हमारे नाथ ! आइए कुरूकत्तै के इन फूलों को धारण कीजिये।188
शीमालिगन् अवनोडु⋆ तोळमै कॊळ्ळवुम् वल्लाय् !⋆ शामार्वनै नी एण्णि⋆ च्चक्करत्ताल् तलै कॊण्डाय् !⋆ आमाररियुम् पिराने !⋆ अणि अरङ्गत्ते किडन्दाय् !⋆ एमाट्रम् एन्नै त्तविर्त्ताय् !⋆ इरुवाट्चि प्पू च्चूट्ट वाराय्॥८॥	प्रभु !आपने मलिकन असुर को मित्र बनाया और पुनः उसके अंत करने का निर्णय लेकर उसे चक्र चलाने को सिखाया ।अंततः चक्र ने उसका सिर काट डाला। भविष्य को जानने वाले प्रभु ! मनोरम श्रीरंगम के शयनावस्था वाले प्रभु ! हमें हमारे दुःखों से छुटकारा दिलायें। आइए इरूवाट्चि के इन फूलों को धारण कीजिये।189
अण्डत्तमर्गळ् शूळ⋆ अत्ताणियुळ् अङ्गिरुन्दाय् !⋆ तॊण्डर्गळ् नॅञ्जिल् उरैवाय् !⋆ तूमलराळ् मणवाळा !⋆ उण्डिट्टुलगिनै एळुम्⋆ ओर् आलिलैयिल् तुयिल् कॊण्डाय् !⋆ कण्डुनान् उन्नै उगक्क⋆ क्करुमुगै प्पू च्चूट्ट वाराय्॥९॥	वैकुण्ठ में नित्य सूरी से घिरकर बैठे हुए प्रभु ! भक्तों के हृदय में बसने वाले प्रभु ! पद्मालय लक्ष्मी के नाथ ! वटपत्र पर बालक स्वरूप में आप सातों जगत को उदरस्थ कर सो गये। आइए अपने दर्शन से मुझे आनन्दित कीजिए। आइए करूमुगै के इन फूलों को धारण कीजिये।190
‡शॅण्बग मल्लिगैयोडु⋆ शॅङ्गळुनीर् इरुवाट्चि⋆ एण् पगर् पूवुम् कॊणर्न्देन्⋆ इन्रिवै शूट्ट वा एन्रु⋆ मण् पगर् कॊण्डानै⋆ आय्च्चि मगिळ्न्दुरै शॅय्द इम् मालै⋆ पण् पगर् विल्लिपुत्तूर् क्कोन्⋆ पट्टर्बिरान् शॊन्न पत्ते॥१०॥	श्रीविल्लीपुत्तूर के जग प्रसिद्ध पत्तारबिरन के ये मधुर गीत यशोदा के संपूर्ण ब्रह्मांड के नाथ को पास बुलाते हुए शण्वग, मल्लिगैयोडु, शंगळुनीर, एवं इरूवाट्चि आदि अनेकों तरह के फूल को धारण करने के आमंत्रण को दुहराते हैं।क्रमवार से ये पद प्रभु के धारण करने योग्य माला की तरह गुंथे हुए हैं।191 पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

18 इन्दिरनोडु (192-201)

काप्पिडल् (भगवान कृष्ण का दूसरों की कुदृष्टि से निवारण ः इन पदों में भगवान को यशोदा नजर लगने से बचने का उपाय करतीं हैं)

यहां 11 पदों में तिरू वल्लारै के पेरूमल का स्वस्तिगान है। तिरिची श्रीरंगम से करीब 20 कि मी की दूरी पर यह तुरैयूर मार्ग पर अवस्थित है। भगवान खड़े मुद्रा में हैं और ये पुण्डरीकाक्ष के नाम से विख्यात हैं। श्रीनाथ मुनि के दो अन्यतम शिष्य यहीं तिरू वल्लारै से थे ः पुण्डरीकाक्ष एवं कुरूगै कवलाप्पार । पुण्डरीकाक्ष का जीवन दिव्य प्रबंधम के प्रचार प्रसार में बीता था। वेदांत देशिक स्वामी जो भगवान तिरूवेंकटाचल्पति के तिलक के अवतार थे (**vol. 3 pp 180**) ने "हंस संदेशम्" में पांच दिव्यदेशों को बहुत प्रधानता दी है ः (i) तिरूमला तिरूपति, (ii) कांचीपुरम ः जहां उनका जन्म हुआ था, (iii) तिरूवल्लारै ः जहां के उनके परमाचार्य इंगल अलवान थे, (iv) श्रीरंगम, (V) तिरूमलीरूनचोलै । यहां तिरूवल्लारै में रामानुज स्वामी 12 वर्षो तक निवास किये थे। जब रामानुज स्वामी को कुरेश स्वामी की सेवा उपलब्ध नहीं थी, क्योंकि कृमिकुठार की क्रूरता से वे अपनी आंख गंवाचुके थे, रामानुज स्वामी को श्रीरंगम में लिखने की सहायता इंगल अलवान से मिली थी। पहले इनका नाम विष्णुचित्तार था, और इनकी प्रज्ञा की प्रखरता से प्रसन्न होकर रामानुज स्वामी ने इनका नाम इंगल अलवान दिया था।

इन्दिरनोडु पिरमन्⋆ ईशन् इमैयवर् एल्लाम्⋆ मन्दिर मा मलर् कॊण्डु⋆ मऱैन्दुवराय् वन्दु निन्ऱार्⋆ चन्दिरन् माळिगै शेरुम्⋆ शदुरर्गळ् वॆळ्ळऱै निन्ऱाय्!⋆ अन्दियम् पोदिदुवागुम्⋆ अऴगने! काप्पिड वाराय्॥१॥	छबीले नाथ ! आपकी अर्चना हेतु इन्द्र, ब्रह्मा, शिव एवं अन्य देवताओं ने स्वर्ग से पवित्र पुष्प लाये हैं और वे अदृश्य होकर खड़े हैं। चंद्रमा को स्पर्श करते अट्टालिकाओं वाले वेल्लारै में विद्वानों से घिरे आप विराजमान हैं। समुद्र की लहरें अभी नीची हैं, आइए दूसरों की कुदृष्टि से आपका निवारण करूं।**192**
कन्ऱुगळ् इल्लम् पुगुन्दु⋆ कदऱुगिन्ऱ पशुवॆल्लाम्⋆ निन्ऱॊऴिन्देन् उन्नै क्कूवि⋆ नेशमेल् ऒन्ऱुम् इलादाय्!⋆ मन्ऱिल् निल्लेल् अन्दि प्पोदु⋆ मदिळ् तिरुवॆळ्ळऱै निन्ऱाय्!⋆ नन्ऱु कण्डाय् एन्ऱन् शॊल्लु⋆ नान् उन्नै क्काप्पिड वाराय्॥२॥	निष्ठुर नाथ ! जबकि गायें गोशाला में प्रवेश कर आपकी प्रतीक्षा करती हुई हुंकार रहीं हैं, और हम भी यहां खड़े आपको पुकार रहे हैं। गोधूलि बेला में आप चौराहे पर नहीं खड़ा हों।देखिये, नेक नीयत से हमने छड़ी पकड़ रखी है। दीवारों से घिरे वेल्लारै में खड़े नाथ ! आइए दूसरों की कुदृष्टि से आपका निवारण करूं।**193**

शॆप्पोदु मॆन् मुलैयार्गळ्* शिऱुशोऱुम् इल्लुम् शिदैत्तिट्टु* अप्पोदु नान् उरप्प प्पोय्* अडिशिलुम् उण्डिलै आळ्वाय् !* मु प्पोदुम् वानवर् एत्तुम्* मुनिवर्गळ् वॆळ्ळऱै निन्ऱाय् !* इप्पोदु नान् ऒन्ऱुम् शॆय्येन्* एम्बिरान् ! काप्पिड वाराय्॥३॥	वेल्लारै के नाथ ! मेरे नाथ, मेरे शासक ! देवता एवं ऋषिगन प्रतिदिन तीन बार आपकी अर्चना करते हैं।कोमल एवं ताम्ररंग की उरोजवाली बालिकाएं बालू में खेल रहीं थीं। आपने उनके घर नष्ट कर भोजन भी छीन लिया। इसपर मैं क्रोधित होकर आपको डांटा। परिणामतः आपने पायस खाने से मना कर दिया है। नहीं, अब मैं आपको कुछ नहीं कहूंगी। आइए दूसरों की कुदृष्टि से आपका निवारण करूं।**194**
कण्णिल् मणल् कॊडु तूवि* क्कालिनाल् पाय्न्दनै एन्ऱॆन्ऱु* एण् अरुम् पिळ्ळैगळ् वन्दिट्टु* इवर् आर् मुऱैप्पडुगिन्ऱार्* कण्णने ! वॆळ्ळऱै निन्ऱाय् !* कण्डारोडे तीमै शॆय्वाय् ! वण्णमे वेलैयदॊप्पाय् !* वळ्ळले ! काप्पिड वाराय्॥४॥	वेल्लारै के नाथ ! मेरे कृष्ण ! नीले समुद्र सा वदन वाले कृपासागर ! आप सबके साथ छोटी छोटी सी नटखट घटनाएं करते रहते हैं।अनगिनत बच्चों ने शिकायत की है "हमलोगों की आंखों में बालू झोंक दिया है" "हमलोगों की पिटाई की है" आदि आदि। आइए दूसरों की कुदृष्टि से आपका निवारण करूं।**195**
पल्लायिरवर् इव्वूरिल्* पिळ्ळैगळ् तीमैगळ् शॆय्वार्* एल्लाम् उन् मेल् अन्ऱि प्पोगादु* एम्बिरान् ! नी इङ्गे वाराय्* नल्लार्गळ् वॆळ्ळऱै निन्ऱाय् !* ञान च्चुडरे ! उन् मेनि* शॊल् आर वाऴ्त्ति निन्ऱेत्ति* च्चॊप्पड क्काप्पिड वाराय्॥५॥	अच्छे निवासी वाले वेल्लारै के नाथ ! प्रखर प्रज्ञा ! यहां वेल्लारै में दुष्ट बालकों की बहुतायत है। उनके दुष्कर्मों का दोष आप पर गिरेगा। यहां आईए। अच्छे शब्दों से, अपने मुंह से, आपके शरीर की प्रसंसा करके आशीर्वाद दूं तथा अच्छे तरीके से आप पर की सभी कुदृष्टियों का निवारण करूं। **196**
कञ्जन् करुक्कॊण्डु निन्मेल्* करु निऱ च्चॆम् मयिर् प्पेयै* वञ्जिप्पदर्कु विडुत्तान्* एन्बदोर् वार्त्तैयुम् उण्डु* मञ्जु तवऴ् मणि माड* मदिळ् तिरु वॆळ्ळऱै निन्ऱाय् ! अञ्जुवन् नी अङ्गु निर्क* अऴगने ! काप्पिड वाराय्॥६॥	बादलों को छूनेवाले अटारियों एवं दीवालों के वेल्लारै के निवासी नाथ ! ऐसी बातें सुनी जा रही हैं कि कंस आपसे क्रोधित है तथा एक काले वदन तथा लाल रंग के केश वाली राक्षसी को आपके वध हेतु भेजा है। जब वहां आप अकेले खड़े रहते हैं तो मैं डरी रहती हूं। छवीले ! यहां आइए। आप पर की सभी कुदृष्टियों का निवारण करूं। **197**

कळ्ळ च्चकडुम् मरुदुम्⋆ कलक्कळिय उदै शॆय्द⋆ पिळ्ळैयरशे !⋆ नी पेयै प्पिडित्तु मुलै उण्ड पिन्नै⋆ उळ्ळवाऱॆन्ऱुम् अऱियेन्⋆ ऒळिवुडै वॆळ्ळऱै निन्ऱाय् !⋆ पळ्ळिगॊळ् पोदिदुवागुम्⋆ परमने ! काप्पिड वाराय्॥७॥	मनोरम एवं जगमग वेल्लारै के निवासी नाथ ! वत्ससम्राट ! आपने गाड़ी एवं युगल अर्जुन वृक्ष का नाश किया। जब आपने पूतना के स्तन से दूध पिया तब मैं तथ्य को समझ नहीं सकी। अब यह सोने का समय है, आइए दूसरों की कुदृष्टि से आपका निवारण करूं। **198**
इन्बम् अदनै उयर्त्ताय् !⋆ इमै अवर्क्कॆन्ऱुम् अरियाय् !⋆ कुम्ब क्कळिऱट्ट कोवे !⋆ कॊडुङ्ग्ञ्जन् नॆञ्जिनिल् कूट्टे !⋆ शॆम् पॊन् मदिळ् वॆळ्ळऱैयाय् !⋆ शॆल्वत्तिनाल् वळर् पिळ्ळाय् ! कम्ब क्कपालि काण् अङ्गु⋆ क्कडितोडि क्काप्पिड वाराय्॥८॥	अप्रतिम आनंददायी नाथ ! देवताओं को अप्राप्य प्रभु ! मदमत्त हाथी के विनाश करने वाले प्रभु ! दुष्ट कंस के हृदय में मृत्यु का संचार करने वाले प्रभु ! ऊंची दीवालों के वेल्लारै के निवासी नाथ ! सुख संपदा में पलने वाले वत्स ! देखो, नरखोपड़ी हाथ मे लिए एक जन वहां खंभे के पीछे खड़ा है। शीघ्र दौड़ते हुए आइए, दूसरों की कुदृष्टि से आपका निवारण करूं। **199**
इरुक्कॊडु नीर् शङ्गिल् कॊण्डिट्टु⋆ एऴिल् मऱैयोर् वन्दु निन्ऱार्⋆ तरुक्केल् नम्बि ! शन्दि निन्ऱु⋆ ताय् शॊल्लु क्कॊळ्ळाय् शिल नाळ्⋆ तिरुक्काप्पु नान् उन्नै च्चात्त⋆ त्तेशुडै वॆळ्ळऱै निन्ऱाय् !⋆ उरु क्काट्टुम् अन्दि विळक्कु⋆ इन्ऱु ऒळि कॊळ्ळ एट्रुकेन् वाराय्॥९॥	जगमग वेल्लारै के निवासी नाथ ! मां की बातों को कुछ और दिनों तक मानिए।ऋग वेद के मंत्रों के ज्ञाता प्रखर संत गन शंखों में जल भरे पधार चुके हैं। चौराहे पर प्रतिरोध करते हुए खड़े मत होइए। आइए सायंकालीन दीपक जलाकर आपके मुखमंडल को प्रकाशित करते हुए दूसरों की कुदृष्टि से आपका निवारण करूं। **200**
पोदमलर् शॆल्व क्कॊऴुन्दु⋆ पुणर् तिरु वॆळ्ळऱैयानै⋆ मादर्क्कुयर्न्द अशोदै⋆ मगन् तन्नै क्काप्पिट्ट माट्रम्⋆ वेद प्पयन् कॊळ्ळ वल्ल⋆ विट्टुशित्तन् शॊन्न मालै⋆ पाद प्पयन् कॊळ्ळ वल्ल⋆ पत्तर् उळ्ळार् विनै पोमे॥१०॥	वैदिक तथ्यों में निष्णात विष्णुचित्त के ये दसक गीत पद्मावती लक्ष्मी स्वरूपा एवं माताओं में सर्वोत्तम यशोदा के तिरूवल्लारै निवासी नाथ तथा अपने पुत्र को दूसरों की कुदृष्टि से निवारण हेतु कहे गये शब्दों को दुहराते हैं। भक्तगण जो इन गीतों के सार को समझेंगे उन्हें कोई भी कर्म अभिभूत नहीं करेगा। **201** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।**

<table>
<tr><td colspan="2">श्रीमते रामानुजाय नमः
19 वण्णय्वि ळुङिग (202-212)
वण्णय्वि ळुङिग (भगवान कृष्ण के खेल, जैसे मक्खन चुराना)</td></tr>
<tr><td>वॆण्णॆय् विळुङ्गि वॆरुङ्गलत्तै वॆप्पिडै इट्टु⋆ अदन् ओशै केट्कुम्⋆
कण्ण पिरान् कट्ट् कल्वि तन्नै⋆ क्काक्कगिल्लोम् उन् मगनै क्कावाय्⋆
पुण्णिल् पुळि प्पॆय्दाल् ऒक्कुम् तीमै⋆ पुरै पुरैयाल् इवै शॆय्य वल्ल⋆
अण्णर् कण्णान् ओर् मगनै प्पॆट्ट्⋆ अशोदै नङ्गाय्! उन् मगनै क्कूवाय्॥१॥</td><td>हे सुन्दरी यशोदा ! तुम्हारे पुत्र एवं उसके भाई की अनोखी जोड़ीदारी है। जैसे इमली घाव को खा जाता है, हाय ! ये लोग इसी तरह मक्खन को निगल जाते हैं, और तत्पश्चात् खाली पात्र को पत्थर पर पटक कर भारी आवाज के साथ फोड़ डालते हैं। बुलाओ अपने लाड़ले को (और पूछो ये किस तरह), दक्षतापूर्वक एक घर से दूसरे घर नटखट काम करते फिरते हैं। इनके बुद्धि कौशल के सामने हम रखवाली नहीं कर सकते हैं। इनपर नियंत्रण रखो। 202</td></tr>
<tr><td>वरुग वरुग वरुग इङ्गे⋆ वामन नम्बी! वरुग इङ्गे⋆
करिय कुळल् शॆय्य वाय् मुगत्तॆम्⋆ कागुत्त नम्बी! वरुग इङ्गे⋆
अरियन् इवन् ऎनक्किन्रु नङ्गाय्!⋆ अञ्जन वण्णा! अशलगत्तार्⋆
परिबवम् पेश त्तरिक्कगिल्लेन्⋆ पावियेनुक्किङ्गे पोदराये॥२॥</td><td>यहां आओ, यहां आओ, यहां आओ। हे वामन प्रभु ! यहां आओ। काले केश एवं लाल होंठ वाले काकुत्स्थ प्रभु ! हे नारियां ! आज तो इन्हें पकड़ना कठिन हो रहा है। घनश्याम ! पड़ोसियों की शिकायत अब सही नहीं जाती। इस दुष्टात्मा के पास तो आओ। 203</td></tr>
<tr><td>तिरुवुडै प्पिळ्ळै तान् तीयवारु⋆ तेक्कम् ऒन्रुम् इलन् तेशुडैयन्⋆
उरुग वैत्त कुडत्तॊडु वॆण्णॆय्⋆ उरिञ्जि उडैत्तिट्टु प्पोन्दु निन्रान्⋆
अरुगिरुन्दार् तम्मै अनियायम् शॆय्वदुदान्⋆ वळक्को अशोदाय्!⋆
वरुग ऎन्रुन्मगन् तन्नै क्कूवाय्⋆ वाळ ऒट्टान् मदुशूदनने॥३॥</td><td>पुत्र रत्न, आपका कहीं ठहराव होगा क्या ! आप अपनी अलौकिकता में अद्वितीय हैं। पात्र से ही सीधे घी पीकर और उसे फोड़कर आप गायब हो जाते हैं। यह मधुसूदन हमलोगों का जीना दुस्तर कर रखे हैं ! क्या इस तरह की घटना पड़ोस में शोभा देती है ? पुत्र आपको यहां बुलाती हूं। 204</td></tr>
<tr><td>कॊण्डल् वण्णा! इङ्गे पोदराये⋆ कोयिर् पिळ्ळाय्! इङ्गे पोदराये⋆
तॆण् तिरै शूळ् तिरुप्पेर् क्किडन्द⋆ तिरुनारणा! इङ्गे पोदराये⋆
उण्डु वन्देन् अम्मम् ऎन्रु शॊल्लि⋆ ओडि अगम् पुग आय्च्चि तानुम्⋆
कण्डॆदिरे शॆन्रॆडुत्तु क्कॊळ्ळ⋆ क्कण्ण पिरान् कट्ट् कल्वि ताने॥४॥</td><td>घनश्याम ! यहां आइए। इश्वरीय बालक ! यहां आइए। शुद्ध जल प्रवाहित तिरूपेर में शयनावस्था वाले तिरूनारायण ! यहां आइए। घर में यह कहते हुए सीधे प्रवेश कर जाते हैं कि दूध इन्होंने पी रखा है। सलोनी यशोदा इनका रास्ता रोककर गोद में लेते हुए यह सोचतीं हैं “अब ये नये तरकीव सीख गये हैं।” 205</td></tr>
</table>

पालै क्करन्दडुप्पेर् वैत्तु* प्पल्वळैयाळ् एन्मगळ् इरुप्प* मेलै अगत्ते नॅरुप्पु वेण्डि च्चॅन्रु* इरैप्पॊळुदङ्ग् पेशि निन्रेन्* शाळक्किरामम् उडैय नम्बि* शायत्तु प्परुगिट्टु प्पोन्दु निन्रान्* आलै क्करुम्बिन् मॊळि अनैय* अशोदै नङ्गाय् ! उन्मगनै क्कूवाय्॥५॥	हे सुन्दर चूड़ियां पहने हुए पुत्री यशोदा ! दूध दुहने के पश्वात् उसे आग पर रखकर कुछ देर बैठी, और फिर ऊपर मंजिल पर अधिक आग लाने के लिये गयी। वहां बातचीत में थोड़ी देर खड़ी हो गयी।शालग्राम वाले प्रभु आये, और दूध पीकर पात्र को उलट दिया। मधुरभाषिणी सलोनी ! अपने लाड़ले को यहां बुलाओ। **206**
पोदर् कण्डाय् इङ्ग् पोदर् कण्डाय्* पोदरेन् एन्नादे पोदर् कण्डाय्* एदेनुम् शॉल्लि अशलगत्तार्* एदेनुम् पेश नान् केट्क माट्टेन्* कोदुगलम् उडै क्कुट्टनेया !* कुन्रॅडुत्ताय् ! कुडम् आडु कूत्ता !* वेद प्पॊरुळे ! एन् वेङ्गडवा !* वित्तगने ! इङ्ग् पोदराये॥६॥	प्रिय नन्हें लाल ! पात्र नर्त्तक ! वेदों के सार! वेंकटम के नाथ ! अलौकिक प्रभु ! आपने घोर वर्षा से त्राण दिलाने के लिए पर्वत उठा लिया । यहां आइए, आने से मना नहीं कीजिये।जब पड़ोसी कुछ बोलते हैं और कुछ कहने आते हैं तो कैसे सहन कर सकती हूं ? अभी शीघ्र यहां आइये। **207**
शॅन्नॆल् अरिशि शिरुपरुप्पु* च्चॅय्द अक्कारम् नरुनॅय् पालाल्* पन्निरण्डु तिरुवोणम् अट्टेन्* पण्डुम् इ प्पिळ्ळै परिशरिवन्* इन्नम् उगप्पन् नान् एन्रु शॊल्लि* एल्लाम् विळुङ्गिट्टु प्पोन्दु निन्रान्* उन्मगन् तन्नै अशोदै नङ्गाय् !* कूवि क्कॊळ्ळाय् इवैयुम् शिलवे॥७॥	हे यशोदा ! 12 नक्षत्रों तक श्रवनम के उपवास के लिए मैं चावल दाल शर्करा दूध घी से नैवेद्य पकाती रही और ये सब खाते रहे। साथ ही यह भी कहते हुए चले गये कि हमारी प्रसन्नता और अधिक पकवान से होगी। अपने लाड़ले को बुलाओ और पूछो कि क्या यही तरीका है ? **208**
केशवने ! इङ्ग् पोदराये* किल्लेन् एन्नादिङ्ग् पोदराये* नेशम् इलादार् अगत्तिरुन्दु* नी विळैयाडादे पोदराये* दूशनम् शॉल्लुम् तॊळुत्तै मारुम्* तॊण्डरुम् निन्र् इडत्तिल् निन्रु* ताय् शॊल्लु क्कॊळ्वदु तन्मम् कण्डाय्* दामोदरा ! इङ्ग् पोदराये॥८॥	केशव ! यहां आइए और यह नहीं कहिए कि नहीं आ सकते हैं।प्रेमविहीनों के घर में खेलने नही जाइए। वहां से अलग रहिए जहां दास दासी आपके विरूद्ध बोलते हैं। यह जानिये कि मां की आज्ञा का पालन धर्म है। दामोदर ! यहां आइए। **209**
कन्नल् इलट्टुवत्तोडु शीडै* कार् एळ्ळिन् उण्डै कलत्तिल् इट्टु* एन् अगम् एन्रु नान् वैत्तु प्पोन्देन्* इवन् पुक्कवट्रै प्पॅरुत्ति प्पोन्दान्* पिन्नुम् अगम् पुक्कुरियै नोक्कि* प्पिरङ्गॊळि वॆण्णॆयुम् शोदिक्किन्रान्* उन्मगन् तन्नै यशोदै नङ्गाय् !* कूवि क्कॊळ्ळाय् इवैयुम् शिलवे॥९॥	हे यशोदा ! मीठे लड्डू नमकीन एवं तिल का लड्डू अलग अलग पात्रों में रख कर घर से यह कहते हुए निकली कि ये मेरे प्रिय भोज्य पदार्थ हैं। यह बालक घुसा और सबों को समाप्त कर चला गया। पुनः घुसा और रस्सी से लटकते हुए श्वेत मक्खन को खा गया। अपने लाड़ले को बुलाओ, क्या बच्चों को ऐसे पाला पोसा जाता है ? **210**

शॉल्लिल् अरशि प्पडुदि नङ्गाय् !⋆ शुऴल् उडैयन् उन् पिळ्ळै ताने⋆ इल्लम पगर्न्दन मगळै क्कवि⋆ क्कैयिल वळैयै क्कऴदि क्कॉण्ड⋆ कॉल्लैयिल् निन्रुम् कॉणर्न्दु विट्⋆ अङ्गॊरुत्तिक्कव् वळै कॉडुत्तु⋆ नल्लन नावर् पळङ्गळ् कॉण्डु⋆ नान् अल्लेन् एन्रु शिरिक्किन्राने॥१०॥	हे नेक नारी ! आपका लाड़ला दुर्गुणों से भरपूर है और अगर उसके सब करतूत आपको बताउं तो आप नाराज हो जाओगी। हमारे घर घुसकर मेरी बेटी को बुलाकर उसके चूडियां उतरवा लिया और पिछले दरवाजा से बाहर निकल आया। उन चूडियों से उसने कुछ जामुन के फल खरीद लिये और हंसते हुए बोला कि वहां वह नहीं था। **211**
वण्डु कळित्तिरैक्कुम् पॉळिल् शूऴ्⋆ वरुपुनल् काविरि त्तॆन्नरङ्गन्⋆ पण्डवन् शॅय्द किरीडै एल्लाम्⋆ पट्टर्पिरान् विट्टुशित्तन् पाडल्⋆ कॉण्डिवै पाडि क्कुनिक्क वल्लार्⋆ गोविन्दन् तन् अडियार्गळ् आगि⋆ एण् दिशैक्कुम् विळक्कागि निर्पार्⋆ इणैयडि एन्तलै मेलनवे॥११॥	विष्णुचित्त, पत्तारविरन के ये दसक गीत, कावेरी के मधुर जल से सिंचित मधुमक्खी से घिरे हुए बाग वाले श्रीरंगम के प्रभु के प्राचीन नटखट कार्यकलाप का स्मरण कराते हैं। जो इसका गान करते हुए नाचेंगे वे हमारे तथा आठों दिशाओं के नाथ गोविन्द के भक्त हो जायेंगे। **212** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं**

श्रीमते रामानुजाय नमः

20 आरिलिरून्दु (213-222)

अयलगत्तार् मुरैप्पाडु (गोप नारियां यशोदा से भगवान कृष्ण के करतूतों की शिकायत करते हुए)

आढ़िल् इरुन्दु⋆ विळैयाडुवोङ्गळै⋆ शेढ़िल् एरिन्दु⋆ वळै तुगिल् कैक्कॊण्डु⋆ काढ़िन् कडियनाय्⋆ ओडि अगम् पुक्कु⋆ माढ़मुम् तारानाल् इन्ऱु मुट्ठम्⋆ वळै त्तिरम् पेशानाल् इन्ऱु मुट्ठम्॥१॥	हमलोग नदी में खेल रहे थे। इसने हमलोगों के ऊपर बालू फेंककर हमारे कंगन एवं साड़ी लेकर वायु गति से भागकर अपने घर में घुस गया। हमारी आवाज का कोई उत्तर नहीं देता । आज हम तो लुट गये । हमारे कंगन के बारे में कुछ नहीं बोलता, हम तो लुट गये। **213**
कुण्डलम् ताळ⋆ क्कुळल् ताळ नाण् ताळ⋆ एण् दिशैयोरुम्⋆ इरैञ्जि त्तॊळुदेत्त⋆ वण्डमर् पूङ्गुळलार्⋆ तुगिल् कै क्कॊण्डु⋆ विण् तोय् मरत्तानाल् इन्ऱु मुट्ठम्⋆ वेण्डवुम् तारानाल् इन्ऱु मुट्ठम्॥२॥	इसके कुण्डल नीचे लटकते हैं, इसके घुंघराले बाल नीचे लटकते हैं, इसके गले का हार नीचे लटकता है, आठों दिसाओं के देवता एवं मनुष्य गन नीचे झुककर इसकी प्रार्थना एवं पूजा करते हैं। मधुमक्खी लटकते फूलों से सज्जित बाल वाली सुन्दरियों के साड़ी लेकर यह गगन चुंबी कुरून्दु के पेड़ पर चढ़ गया। आज हम तो लुट गये । हमारी मांग पर तनिक भी परवाह नहीं करता... हम तो लुट गये। **214**
तडम् पडु तामरै⋆ प्पॊय्गै कलक्कि⋆ विडम् पडु नागत्तै⋆ वाल् पढ़ि ईर्त्तु⋆ पडम् पडु पैन्दलै⋆ मेल् एळ प्पाय्न्दिट्टु⋆ उडम्बै अशैत्तानाल् इन्ऱु मुट्ठम्⋆ उच्चियिल् निन्ऱानाल् इन्ऱु मुट्ठम्॥३॥	कमल के तालाब में प्रवेश कर इसने एक विषैले सांप को उसकी पूंछ से पकड़ लिया और बाहर आकर उसके चौड़े फन पर कूद गया । शरीर को थिरकाते हुए वहां नाचा। आज हम तो लुट गये । उसके सिर पर खड़ा है......हम तो लुट गये। **215**
तेनुगन् आवि शॆगुत्तु⋆ प्पनङ्ङनि तान् एरिन्दिट्ट⋆ तडम् पैरुम् तोळिनाल्⋆ वानवर् कोन् विड⋆ वन्द मळै तडुत्तु⋆ आनिरै कात्तानाल् इन्ऱु मुट्ठम्⋆ अवै उय्य क्कॊण्डानाल् इन्ऱु मुट्ठम्॥४॥	धेनुकासुर को तालवृक्ष पर फेंककर मार दिया। अपने शक्तिशाली भुजाओं पर पर्वत को उठाकर देवताओं के राजा इन्द्र से बरसाये गये वर्षा से गऊओं की रक्षा की। आज हम तो लुट गये । गाय पालने वाले प्रभु से ...... हम तो लुट गये। **216**

आयच्चियर् शेरि⋆ अळै तयिर् पाल् उण्डु⋆ पेर्त्तवर् कण्डु पिडिक्क⋆ प्पिडियुण्डु⋆ वेय् त्तडन् तोळिनार्⋆ वेँण्णॅय् कॊँळ् माट्टादु⋆ अङ्गु आप्पुण्डिरुन्दानाल् इन्रु मुट्टुम्⋆ अडियुण्डळुदानाल् इन्रु मुट्टुम्॥५॥	गांव के ग्वालिनों के दूध और दही चट कर गये। पकड़े जाने पर गोपियों के सुन्दर बाहों में बंधकर मक्खन चोरी से वंचित हुए। आज हम तो लुट गये । ऐसे रो रहे हैं जैसे कि इनकी पिटाई हुई है ...ऐसे प्रभु से... हम तो लुट गये। **217**
तळ्ळि त्तळर् नडै यिट्टु⋆ इळम् पिळ्ळैयाय्⋆ उळ्ळत्तिन् उळ्ळे⋆ अवळै उर नोक्कि⋆ कळ्ळत्तिनाल् वन्द⋆ पेयच्चि मुलै उयिर्⋆ तुळ्ळ च्चुवैत्तानाल् इन्रु मुट्टुम्⋆ तुवक्कर उण्डानाल् इन्रु मुट्टुम्॥६॥	एक पग भी नहीं चलने वाले ये एक शिशु थे। नारी के छद्म वेष वाली एक राक्षसी के हृदय में गहरे झांक कर देखा। स्तन पान से उसके प्राण हर लिए। आज हम तो लुट गये । जहर पीने से इनका बाल भी बांका न हुआ ... हम तो लुट गये। **218**
मावलि वेळ्वियिल्⋆ माण् उरुवाय् च्चॅन्रु⋆ मूवडि ता एन्रु⋆ इरन्द इम् मण्णिनै⋆ ओरडि इट्टु⋆ इरण्डाम् अडि तन्निले⋆ तावडि इट्टानाल् इन्रु मुट्टुम्⋆ दरणि अळन्दानाल् इन्रु मुट्टुम्॥७॥	वामन के रूप में महावली के यज्ञ में जाकर इन्होंने तीन पग भूमि मांगी। मांग पूरी होने पर एक पग और फिर दूसरे पग से संपूर्ण ब्रह्मांड माप लिया। आज हम तो लुट गये । जिसने पृथ्वी माप लिया उस प्रभु से ... हम तो लुट गये। **219**
ताळै तण् आम्बल्⋆ तडम् पॅरुम् पॊय्कैवाय्⋆ वाळु मुदलै⋆ वलैप्पट्टु वादिप्पुण्⋆ वेळम् तुयर् कॅड⋆ विण्णोर् पॅरुमानाय्⋆ आळि पणि कॊण्डानाल् इन्रु मुट्टुम्⋆ अदर्करुळ् शॅय्दानाल् इन्रु मुट्टुम्॥८॥	जलकुक्कुट से रेखांकित कमल के बड़े तालाब में हाथी को ग्राह ने पकड़ कर उसको परास्त कर दिया। उसके दुःख को चक्र चलाकर आपने दूर किया। आज हम तो लुट गये । जिसने हाथी पर दया दिखायी उस प्रभु से ... हम तो लुट गये। **220**

वानत्तॆळुन्द⋆ मळै मुगिल् पोल्⋆ एङ्गुम् कानत्तु मेयन्दु⋆ कळित्तु विळैयाडि⋆ एनत्तुरुवाय्⋆ इडन्द इम् मण्णिनै⋆ तानत्ते वैत्तानाल् इन्ऱु मुट्टुम् दरणि इडन्दानाल् इन्ऱु मुट्टुम्॥९॥	विशाल काले मेघ जैसा बड़े थुथने वाला सूकर का रूप धरकर घने जंगलों में आनन्द से क्रीड़ा किये। पुनः कन्द मूल जैसे गहरे जल से पृथ्वी को अपने थुथने पर ऊपर लाये। आज हम तो लुट गये । जिसने पृथ्वी का उद्धार किया उस प्रभु से ... हम तो लुट गये। **221**
‡अङ्गमल क्कण्णन् तन्नै⋆ अशोदैक्कु⋆ मङ्गै नल्लार्गळ् ताम्⋆ वन्दु मुऱैप्पट्ट⋆ अङ्गवर् शॊल्लै⋆ प्पुदुवै कोन् पट्टन् शॊल्⋆ इङ्गिवै वल्लवर्क्कु⋆ एदम् ऒन्ऱिल्लैये॥१०॥	पुदुवै के सम्राट पत्तारबिरन के ये दसक गीत यशोदा के पास सुन्दर गोपियों से राजीवनयन प्रभु पर किये गये शिकायत को स्मरण कराते हैं। जो इन पदों को समझ कर कण्ठ कर लेगें वे दुष्टों से मुक्त रहेंगे। **222** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं**

श्रीमते रामानुजाय नमः

21 तन्नेरायिरम् (223-233)

अन्नैकण्णनुक्कु इन्मुदनि अम्मान्दारेन् एनल् (भगवान कृष्ण की अलौकिक शक्ति देखकर उनको दूध पिलाने से यशोदा डरतीं हैं)

<table>
<tr><td>तन् नेर् आयिरम् पिळ्ळैगळोडु⋆ तळर्नडैयिट्टु वरुवान्⋆
पॉन् एय् नेय्योंडु पाल् अमुदुण्डु⋆ ऑरु पुळ्ळुवन् पॉय्ये तवळुम्⋆
मिन् नेर् नुण्णिडै वञ्जमगळ् कॉङ्गै तुञ्ज⋆ वाय् वैत्त पिराने !⋆
अन्ने ! उन्नै अरिन्दु कॉण्डेन्⋆ उनक्कञ्जुवन् अम्मम् तरवे॥१॥</td><td>समवयस्क हजारों लड़कों से घिरे हुए पैर घसीटते आप घर आते हैं।मीठा दूध एवं सुनहला घी पीने में सिद्धहस्त आप बच्चे की तरह रेंगते हैं।प्रभु आपने पतले कमरवाली धोखेबाज पूतना के प्राण हर लिये। मेरे लाड़ले, अब हम आपको जान गये, आपको स्तन से दूध पिलाने में भी डर लगता है। **223**</td></tr>
<tr><td>पॉन्पोल् मञ्जनम् आट्टि अमुदूट्टि प्पोनेन्⋆ वरुमळविप्पाल्⋆
वन्पार च्चगडम् इर च्चाडि⋆ वडक्किल् अगम् पुक्किरुन्दु⋆
मिन्पोल् नुण्णिडैयाल् ऑरु कन्नियै⋆ वेट्रुवम् शेय्दु वैत्त⋆
अन्बा ! उन्नै अरिन्दु कॉण्डेन्⋆ उनक्कञ्जुवन् अम्मम् तरवे॥२॥</td><td>आपको स्नान एवं भोजन कराने के बाद यहीं छोड़कर हम चले गये। हमारे वापस आने के पहले आपने भारी गाड़ी को तोड़ एवं उलट कर उत्तर दिशा वाले कमरे में चले गये। वहां आपने एक सलोनी लड़की को श्रृंगारविहीन कर दिया। मेरे लाड़ले, अब हम आपको जान गये, आपको स्तन से दूध पिलाने में भी डर लगता है। **224**</td></tr>
<tr><td>कुम्मायत्तॉडु वॅण्णॅय् विळुङ्गि⋆ क्कुड त्तयिर् शायत्तु प्परुगि⋆
पॉय्म्म माय मरुदान अशुररै⋆ प्पॉन्रुवित्तिन्रु नी वन्दाय⋆
इम् मायम् वल्ल पिळ्ळै नम्बी !⋆ उन्नै एन्मगने एन्बर् निन्रार्⋆
अम्मा ! उन्नै अरिन्दु कॉण्डेन्⋆ उनक्कञ्जुवन् अम्मम् तरवे॥३॥</td><td>दाल एवं मक्खन को निगलते हुए पात्र को उलट कर आपने अपने को दही से पोत लिया। वृक्ष के रूप में छिपे हुए असुर का नाश कर यहां आप निर्दोष की तरह खड़े हैं।चमत्कार करने वाले बालक प्रभु ! आपको अन्यलोग हमारा पुत्र बताते हैं। अरे नहीं ! अब हम आपको जान गये, आपको स्तन से दूध पिलाने में भी डर लगता है। **225**</td></tr>
<tr><td>मै आर् कण् मड वाय्च्चियर् मक्कळै⋆ मैयन्मै शॅय्दवर् पिन् पोय्⋆
कॉय्यार् पून्दुगिल् पट्टि त्तनि निन्रु⋆ कुट्टम् पल पल शॅय्दाय्⋆
पॉय्या ! उन्नै प्पुरम् पल पेशुव⋆ पुत्तगत्तुगुळ केट्टेन्⋆
ऐया ! उन्नै अरिन्दु कॉण्डेन्⋆ उनक्कञ्जुवन् अम्मम् तरवे॥४॥</td><td>बड़े कजरारे नयनोंवाली सलोनियों को अपने आप पर मुग्ध कराते हुए आप उनका पीछा कर उनकी साड़ी चुरा लेते हैं तथा बहुत सारी गलतियां कर डालते हैं। हे झूठे लाड़ले ! आपकी जितनी शिकायतें सुनते हैं उसमें किताब भर जायेगी। नाथ ! अब हम आपको जान गये, आपको स्तन से दूध पिलाने में भी डर लगता है। **226**</td></tr>
<tr><td>मुप्पोदुम् कडैन्दीण्डिय वॅण्णॅयिनोडु⋆ तयिरुम् विळुङ्गि⋆
कप्पाल् आयर्गळ् काविल् कॉणरन्द⋆ कलत्तॉडु शायत्तु प्परुगि⋆
मॅय्प्पाल् उण्डळु पिळ्ळैगळ् पोल⋆ नी विम्मि विम्मि अळुगिन्र⋆
अप्पा ! उन्नै अरिन्दु कॉण्डेन्⋆ उनक्कञ्जुवन् अम्मम् तरवे॥५॥</td><td>सारे दिन आप मक्खन एवं दही खाते रहते है।उसके बाद ग्वालों द्वारा बड़े वर्त्तनों में गाड़ी पर लाये गये दूध को भी पी जाते हैं और पुनः हमारे स्तन से भी दुग्ध पान करते हैं। इसके बाद भी रोते हुए और अधिक दूध की मांग करते हैं। नाथ ! अब हम आपको जान गये, आपको स्तन से दूध पिलाने में भी डर लगता है। **227**</td></tr>
</table>

करुम्बार् नीळ् वयल् काय् कदिर् च्चॆन्नॆलै⋆ क्कद़ा निरै मण्डि त्तिन्न⋆ विरुम्बा क्कन्रोन्रु कॊण्डु⋆ विळङ्गनि वीळ एरिन्द पिराने !⋆ शुरुम्बार् मॆङ्गुळल् कन्नि ऑरुत्तिक्कु⋆ च्चूळ् वलै वैत्तु त्तिरियुम्⋆ अरम्बा ! उन्नै अरिन्दु कॊण्डेन्⋆ उनक्कञ्जुवन् अम्मम् तरवे॥६॥	बड़े बड़े धान के खेत में गायें चराते हुए आप ने देखा कि एक बछड़ा घास नहीं चर रहा है। उसे उसके पैर से उठाकर पेड़ पर दे मारा तथा उस पेड़ के सारे फल नीचे आ गये। हे नटखट लाड़ले ! गलियों में घूमते हुए मधुमक्खी मंडराते फूल से जूड़ा सजी गोपियों को अपने जाल में करते रहते हैं। अब हम आपको जान गये, आपको स्तन से दूध पिलाने में भी डर लगता है। **228**
मरुट्टार् मॆन्कुळल् कॊण्डु पॊळिल् पुक्कु⋆ वाय्वैत्तव् वायर्तम् पाडि⋆ शुरुट्टार् मॆन्कुळल् कन्नियर् वन्दुन्नै⋆ च्चुट्टम् तॊळ निन्र शोदि !⋆ पॊरुट्टायम् इलेन् एम्बॆरुमान् !⋆ उन्नै प्पॆट्र कुट्रम् अल्लाल्⋆ मट्रिङ्गु अरुट्टा ! उन्नै अरिन्दु कॊण्डेन्⋆ उनक्कञ्जुवन् अम्मम् तरवे॥७॥	बागों में आपके मनमोहक मुरली की तान सुनकर घुंघराले बाल वाली गोपियां चारो तरफ से एकत्रित होकर आपकी पूजा करतीं हैं। हे हमारे चमकते तारे! आपके प्रादुर्भाव से मुझे बदनामी छोड़कर और कुछ नहीं मिला। गांव के सार्वजनिक संपत्ति में हमारा तो कोइ हिस्सा है नहीं। हे नटखट लाड़ले ! अब हम आपको जान गये, आपको स्तन से दूध पिलाने में भी डर लगता है। **229**
वाळा वागिलुम् काणगिल्लार्⋆ पिरर् मक्कळै मैयन्मै शॆय्दु⋆ तोळाल् इट्टुवरोडु तिळैत्तु⋆ नी शॊल्ल प्पडादन शॆय्दाय्⋆ केळार् आयर् कुलत्तवर् इ प्पळि कॆट्टेन् !⋆ वाळ्विल्लै⋆ नन्दन् काळाय् ! उन्नै अरिन्दु कॊण्डेन्⋆ उनक्कञ्जुवन् अम्मम् तरवे॥८॥	ऐसे भी गांव वाले आपको देखना नहीं चाहते हैं क्योंकि आप सलोनी लड़कियों को मोह कर उनसे खेलते हैं, उन्हें बाहों में समेट लेते हैं, और न कहने योग्य कार्यो में लिप्त रहते हैं।ग्वालेजन इस तरह के व्यवहार को बुरा मानते हैं। यह भर्त्सना के योग्य है, एवं हमारा दुर्भाग्य है ! हे नन्द के लाड़ले ! अब हम आपको जान गये, आपको स्तन से दूध पिलाने में भी डर लगता है। **230**
ताय्मार् मोर् विर्क प्पोवर्⋆ तगप्पन्मार् कद़ा निरै प्पिन्बु पोवर्⋆ नी आय्प्पाडि इळङ्गन्निमार्गळै⋆ नेर्पडवे कॊण्डु पोदि⋆ काय्वार्क्कॆन्रुम् उगप्पनवे शॆय्दु⋆ कण्डार् कळर् त्तिरियुम्⋆ आया ! उन्नै अरिन्दु कॊण्डेन्⋆ उनक्कञ्जुवन् अम्मम् तरवे॥९॥	गांव की मातायें छांछ बेचने चली जाती हैं एवं पितागन गायें चराने के लिए बाहर चले जाते हैं। आप कुमारियों को जहां चाहते हैं वहां ले जाते हैं और ऐसे काम करते हैं जिससे दुश्मन सब प्रसन्न होकर उसे गांव के लिए कहने सुनने वाली कहानी बना देते हैं। हे भ्रमणशील गोप पुत्र ! अब हम आपको जान गये, आपको स्तन से दूध पिलाने में भी डर लगता है। **231**
तॊत्तार् पूङ्गुळल् कन्नि ऑरुत्तियै⋆ च्चोलै त्तडम् कॊण्डु पुक्कु⋆ मुत्तार् कॊङ्गै पुणर्न्दिरा नाळिगै⋆ मूवेळु शॆन्रपिन् वन्दाय्⋆ ऑत्तार्क्कॊत्तन पेशुवर्⋆ उन्नै उरप्पवे नान् ऑन्रुम् माट्टेन्⋆ अत्ता ! उन्नै अरिन्दु कॊण्डेन्⋆ उनक्कञ्जुवन् अम्मम् तरवे॥१०॥	फूल सज्जित जूड़ा वाली एक गोपी को जंगल में ले गये और वहां उसके स्तन को अपने बाहों में लिये रहे। तत्पश्चात् रात के तीसरे पहर गांव लौटे। लोग इसकी भर्त्सना करते हैं। हाय ! हम आपको डांटने में असमर्थ हैं। हमारे प्रभु ! अब हम आपको जान गये, आपको स्तन से दूध पिलाने में भी डर लगता है। **232**

कारार् मेनि निरत्तेम् पिरानै* क्कडि कमळ् पूङ्गुळल् आय्च्चि* आरा इन्नमुदुण्ण त्तरुवन् नान्* अम्मम् तारेन् एन्र माट्म्* पारार् तोल् पुगळान् पुदुवै मन्नन्* पट्टर्बिरान् शोन्न पाडल्* एरार् इन्निशै माल्गैळ् वल्लार्* इरुडीकेशन् अडियारे॥११॥ ॥ पेरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं॥	प्रसिद्ध पुदुवै के राजा पत्तारबिरन के ये मधुर गीत सुगंधित बालों वाली यशोदा का अपने घनश्याम पुत्र को स्तन के दूध से हटाते हुए कहे हुए शब्दों को दुहराते हैं। जो इसका सम्यक तरीके से गायन करेंगे वे भगवान हृषीकेश के भक्त हो जायेंगे। **233** **पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

22 अञ्जनवण्णनै (234-243)

कण्णनै अन्नै कन्रिन्पिन् पोक्कियदणि मनङ्गरैन्दु इरङ्गुदल् (यशोदा भगवान कृष्ण को चरवाही के लिए भेजकर पछताती है)

‡अञ्जन वण्णनै॰ आयर् कोल क्कॊऴुन्दिनै॰ मञ्जनम् आट्टि॰ मनैगळ् तोरुम् तिरियामे॰ कञ्जनै क्कायन्द॰ कळलडि नोव क्कन्रिन् पिन्॰ एन् शॆय प्पिळ्ळैयै प्पोक्किनेन्॰ एल्ले पावमे ! ॥१॥	हमारे घनश्याम एवं गोपवंश के नाथ ! आप स्नान के बाद एक घर से दूसरे घूमते परन्तु इसके बदले हमने आपको बछड़ों के पीछे भेज दिया। वहां कंस के नाश करने वाले आपके कोमल चरण को पीड़ा होगी। ओह ! क्यों हमने ऐसा दुष्टतापूर्ण काम किया ! **234**
पट्टु मञ्जळ् पूशि॰ प्पावै मारॊडु पाडियिल्॰ शिट्रिल् शिदैत्तॆङ्गुम्॰ तीमै शॆय्दु तिरियामे॰ कट्टु त्तुळियुडै॰ वेडर् कानिडै क्कन्रिन् पिन्॰ एट्टुक्कॆन् पिळ्ळैयै प्पोक्किनेन्॰ एल्ले पावमे ! ॰॥२॥	हल्दी एवं तेल के लेप के साथ स्नान कर आप घूमते हुए गोपियों के बालू के महल को नष्ट करते और अन्य नटखट काम में लिप्त होते। परन्तु इसके बदले हमने आपको शिकारियों के जंगल में बछड़ों के धूल से आच्छादित होने के लिए भेज दिया। ओह ! क्यों हमने ऐसा दुष्टतापूर्ण काम किया ! **235**
नन् मणि मेगलै॰ नङ्गैमारॊडु नाळ् तॊरुम्॰ पॊन्मणि मेनि॰ पुऴुदियाडि त्तिरियामे॰ कल्मणि निन्रदिर॰ कान् अदरिडै क्कन्रिन् पिन्॰ एन् मणिवण्णनै प्पोक्किनेन्॰ एल्ले पावमे ! ॰॥३॥	नीलमणि सा सलोने ! प्रतिदिन मणियों के कमरधनी वाली बालाओं के साथ अपने सुनहले मुखमंडल को धूल धूसरित करते गलियों में घूमते। परन्तु इसके बदले हमने (भयंकर जानवरों की आवाज से) गूंजते जंगली रास्तों पर बछड़ों के पीछे आपको भेज दिया। ओह ! क्यों हमने ऐसा दुष्टतापूर्ण काम किया ! **236**
वण्ण क्करुङ्गुळल्॰ मादर् वन्दलर् तूट्रिड॰ पण्णि प्पल शॆय्दु॰ इ प्पाडि एङ्गुम् तिरियामे॰ कण्णुक्किनियानै॰ क्कान् अदरिडै क्कन्रिन् पिन्॰ एण्णर्करियानै प्पोक्किनेन्॰ एल्ले पावमे ! ॰॥४॥	आप देखने में सुन्दर और समझने में कठिन हैं। गोप गांव में ऐसे काम करते हुए आप घूमते कि काले केशवाली नारियां शिकायतों के साथ हमारे पास आतीं। परन्तु इसके बदले हमने (भयंकर जानवरों की आवाज से) गूंजते जंगली रास्तों पर बछड़ों के पीछे आपको भेज दिया। ओह ! क्यों हमने ऐसा दुष्टतापूर्ण काम किया ! **237**
अव्वव्विडम् पुक्कु॰ अव्वायर् पॆण्डिरक्कणुक्काय्॰ कॊव्वै क्कनिवाय् कॊडुत्तु॰ क्कूळैमै शॆय्यामे॰ एव्वुम् शिलै उडै॰ वेडर् कानिडै क्कन्रिन् पिन्॰ दॆय्व त्तलैवनै प्पोक्किनेन्॰ एल्ले पावमे ! ॰॥५॥	देवाधिदेव एक जगह से दूसरे जगह घूमते हुए चुपके से गोपियों को अपना रक्तिम होठ देकर उन्हें मीठी बातों में व्यस्त रखते। परन्तु इसके बदले हमने धनुष धारी शिकारियों के जंगल में बछड़ों के पीछे आपको भेज दिया। ओह ! क्यों हमने ऐसा दुष्टतापूर्ण काम किया ! **238**

मिडरु मॅळुम् एळुत्तोड★ वॅण्णॅय् विळुङ्गि प्पोय्★ पडिरु पल शॅय्दु★ इप्पाडि एङ्गुम् तिरियामे★ कडिरु पल तिरि★ कान् अदरिडै क्कन्रिन् पिन्★ इडर् एन् पिळ्ळैयै प्पोक्किनेन्★ एल्ले पावमे !★॥६॥	चहचहाते पक्षियों के राजा अपने संगियों के साथ कूदते और खेलते तथा पतली कटि वाली गोपियां दौड़ते शिकायत करने आतीं। परन्तु इसके बदले हमने जंगली हाथियों से आक्रान्त जंगल में लड़खड़ाते कदमों से चलते हुए बछड़ों के पीछे आपको भेज दिया। ओह ! क्यों हमने ऐसा दुष्टतापूर्ण काम किया ! **239**
वळ्ळि नुडङ्ङिडै★ मादर् वन्दलर् तूट्रिड★ तुळ्ळि विळैयाडि★ त्तोळरोडु तिरियामे★ कळ्ळि उणङ्गु★ वॅङ्गान् अदरिडै क्कन्रिन् पिन्★ पुळ्ळिन् तलैवनै प्पोक्किनेन्★ एल्ले पावमे !★॥७॥	हमारे लाड़ले मक्खन निगलते हुए गोप गांव में नटखट काम करते हुए घूमते। परन्तु इसके बदले हमने गर्मी से तप्त जंगली रास्ते पर जहां सीज के कांटे भी कुम्हला जाते, आपको बछड़ों के पीछे भेज दिया। ओह ! क्यों हमने ऐसा दुष्टतापूर्ण काम किया ! **240**
पन्निरु तिङ्गळ्★ वयिट्रिल् कॉण्ड अ प्पाङ्गिनाल्★ एन् इळङ्गॉङ्गै★ अमुदम् ऊट्टि एडुत्तु यान्★ पॉन्नडि नोव★ प्पुलरिये कानिल् कन्रिन् पिन्★ एन् इळञ्जिङ्गत्तै प्पोक्किनेन्★ एल्ले पावमे !★॥८॥	बारह महीने गर्भ में रखने का संबंध है तथा अपने स्तन के अमृत पर आपको पाला है। आज प्रातः सिंह शावक को जगाकर उनके कोमल पैरों को पीड़ा देने वाले जंगल में बछड़ों के पीछे भेज दिया। ओह ! क्यों हमने ऐसा दुष्टतापूर्ण काम किया ! **241**
कुडैयुम् शॅरुप्पुम् कॉडादे★ दामोदरनै नान्★ उडैयुम् कडियन ऊन्रु★ वॅम् परर्गळ् उडै★ कडिय वॅङ्गानिडै★ क्काल् अडि नोव क्कन्रिन् पिन्★ कॉडियेन् एन् पिळ्ळैयै प्पोक्किनेन्★ एल्ले पावमे !★॥९॥	अपने दामोदर को बिना छाता एवं पादुका के पैरों में चुभने वाले नुकीले पथरीले रास्ते पर तप्त जंगल में भेज दिया। ओह ! कितनी हृदयविहीना हूं मैं ! क्यों हमने ऐसा दुष्टतापूर्ण काम किया ! **242**
‡एन्रुम् एनक्किनियानै★ एन् मणिवण्णनै★ कन्रिन् पिन् पोक्किनेन् एन्रु★ अशोदै कळरिय★ पॉन् तिगळ् माड★ प्पुदुवैयर् कोन् पट्टन् शॉल्★ इन् तमिळ् मालै वल्लवर्क्कु★ इडर् इल्लैये★॥१०॥ ॥ पॅरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	सुवर्णअटारियों के पुदुवै के राजा पत्तारविरन के ये मधुर गीत अपने नीले मणि सा सलोने शावक को चरवाही के लिये जंगल में भेजकर पछताते यशोदा के शब्दों को दुहराते हैं।जो इसे कण्ठ करेंगे उनके सारे कठिनाई दूर हो जायेंगे ।**243** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

23 शीलैक्कुदम्बै (244-253)

कण्णन वरवु कण्डु अन्नै मागिऴदल् (यशोदा का भगवान कृष्ण को चरवाही से लौटने पर प्रसन्न होना)

शीलै क्कुदम्बै ऑरुगार्दोरुगादु⋆ शॅन्निर मेल् तोन्रिप्पू⋆ कोल प्पणै क्कच्चुम् कूरै उडैयुम्⋆ कुळिर् मुत्तिन् कोडालमुम्⋆ कालि प्पिन्ने वरुगिन्र⋆ कडल् वण्णन् वेडत्तै वन्दु काणीर्⋆ ञालत्तु प्पुत्तिरनै प्पॅट्रार्⋆ नङ्गैमीर्! नाने मट्रारुम् इल्लै॥१॥	इनके एक कान पर पगड़ी झुक गयी है तथा दूसरे कान पर लाल कुमुद के गुच्छे लगे हुए हैं। कमर के वस्त्रावरण और उसके ऊपर खुला वस्त्र, वक्षस्थल पर झूलता है मोती का चन्द्राकार माला, नील सागर सा सलोने प्रभु बछड़ों के साथ लौट आए हैं। हे नारियां ! आओ और इनके वेष भूषा देखो। संपूर्ण संसार में हम अकेले एसे पुत्र वाले हैं, हां दूसरा कोई नहीं। **244**
कन्नि नन् मा मदिळ् शूळ्तरु⋆ पूम्बॉळिल् काविरि त्तॅन्नरङ्गम्⋆ मन्निय शीर् मदुशूदना! केशवा!⋆ पावियेन् वाळ्वुगन्दु⋆ उन्नै इळङ्गन्रु मेय्क्क⋆ च्चिरुगाले ऊट्टि ऑरुप्पडुत्तेन्⋆ एन्निन् मनम् वलियाळ् ऑरु पॅण् इल्लै⋆ एन् कुट्टने मुत्तम् ता॥२॥	कावेरी नदी के पानी से सिंचित सुगंधमय बाग तथा मजबूत दीवाल वाले श्रीरंगम के मधुसूदन ! इस निर्दयी जीव के प्राणाधार केशव ! प्रातःकाल आपको पूरा भोजन कराकर बछड़ों को चराने के लिये भेज दिया। कोई भी मानव प्राणी हमारे जैसा निष्ठुर हृदय वाला नहीं होगा। हमारे लाल ! शीघ्र एक चुम्बन दो। **245**
काडुगळ् ऊडु पोय्⋆ क्कन्रुगळ् मेय्त्तु मरियोडि⋆ कार्क्कोडल् पू च्शूडि वरुगिन्र दामोदरा!⋆ कट्टु त्तूळि काण् उन् उडम्बु⋆ पेडै मयिर् चायल् पिन्नै मणाळा!⋆ नीराट्टमैत्तु वैत्तेन्⋆ आडि अमुदुशॅय् अप्पनुम् उण्डिलन्⋆ उन्नोडुडने उण्बान्॥३॥	दामोदर ! घने जंगल में प्रवेश कर बछड़ों को भगाते हुए स्वयं आगे आगे दौड़े और लाल कुमुद फूल धारण किए घर लौटे हैं। देखो, आपका शरीर बछड़ों के धूल से भरा हुआ है।मोरनी की तरह आकर्षित करने वाली नप्पिनाय के दुल्हा ! आपके स्नान के लिये तैयारी कर रखी है। स्नान कर के भोजन के लिए आइए। आपके पिता भोजन नहीं किये हैं वे आपके साथ भोजन करना चाहते हैं। **246**

कडि आर् पॊऴिल् अणि वेङ्गडवा !* करुम् पोरेऱे !* नी उगक्कुम् कुडैयुम् शॆरुप्पुम् कुऴलुम्* तरुविक्क कॊळ्ळादे पोनाय् माले !* कडिय वॆङ्गानिडै क्कन्ऱिन् पिन् पोन* शिऱुक्कुट्ट च्चॆङ्गमल* अडियुम् वॆदुम्बि* उन् कण्कळ् शिवन्दाय् अशैन्दिट्टाय्* नी ऎम्बिरान् ! ॥ ४ ॥	सुगन्धित छायेदार स्थलों वाले वेंकटम पर्वतश्रेणी के प्रभु ! हमारे क्रुद्ध घनश्याम वृषभ !आपने अपने पसंद के छाता, पादुका एवं बांसुरी मांगा परन्तु उन्हें छोड़कर आप प्रिय बछड़ों को चराने चले गये। नन्हे लाल ! आपके कमल के पंखुड़ी जैसे कोमल तलवे जल गये हैं, सूर्य की गर्मी से आंखें लाल हो गयीं हैं।देखो, हमारे प्रभु ! तुम थक गये हो। **247**
पढ़ार् नडुङ्ग मुन् पाञ्चशन्नियत्तै* वाय्वैत्त पोरेऱे !* ऎन् शिढ़ायर् शिङ्गमे ! शीदै मणाळा !* शिऱुक्कुट्ट च्चॆङ्गण् माले !* शिढ़ाडैयुम् शिऱु प्पत्तिरमुम्* इवै कट्टिलिन् मेल् वैत्तु प्पोय्* कढ़ायरोडु नी कन्ऱुगळ् मेय्त्तु* क्कलन्दुडन् वन्दाय् पोलुम्॥५॥	मेरे नन्हें गोपकुल के सिंह शावक ! सीता के दुल्हा ! राजीवनयन लाड़ले ! आपने पाञ्चजन्य फूंक कर शत्रुओं को भयत्रस्त कर दिया।अपने वस्त्र एवं तलवार छोड़कर आप युवा बालकों के साथ बछड़े चराने चले गये और उन्हींलोगों के साथ लौटे हैं। **248**
अञ्जुडर् आऴि उन् कैयगत्तेन्दुम् अऴगा !* नी पॊय्गै पुक्कु* नञ्जुमिऴ् नागत्तिनोडु पिणङ्गवुम्* नान् उयिर् वाऴ्न्दिरुन्देन्* ऎन् शॆय्य ऎन्नै वयिऱु मऱुक्किनाय्* ऎदुम् ओर् अच्चम् इल्लै* कञ्जन् मनत्तुक्कुगप्पनवे शॆय्दाय्* कायाम्पू वण्णम् कॊण्डाय् ! ॥६॥	सलोने लाल !आप आभापूर्ण शंख अपने हाथ में धारण करते हैं।जब आप ताल में कूदकर विषैले सर्प से लड़ रहे थे उस समय हमारे पेट में मरोड़ हो रहा था और मैने सब कुछ जीवित देखा। आप क्यों इस तरह के काम करते हैं जिससे कंश प्रसन्न होता है। **249**
पन्ऱियुम् आमैयुम् मीनमुम् आगिय* पार्कडल् वण्णा !* उन्मेल् कन्ऱिन् उरुवागि मेय्पुलत्ते वन्द* कळ्ळ अशुरर् तम्मै* शॆन्ऱु पिडित्तु च्चिऱु क्कैगळाले* विळङ्गाय् ऎऱिन्दाय् पोलुम्* ऎन्ऱुम् ऎन् पिळ्ळैक्कु त्तीमैगळ् शॆय्वार्गळ्* अङ्गनम् आवर्गळे॥७॥	क्षीराब्धि के नाथ !आपने मत्स्य कच्छप एवं वराह का रूप धारण किया। धोखे से एक असुर बछड़ा बनकर चारागाह में आया।आपने अपने छोटे हाथों से उसे पकड़ा और ताड़ वृक्ष पर दे मारा। मेरे लाड़ले की क्षति चाहने वालों की यही गति होती है। **250**
केट्टऱियादन केट्गिन्ऱेन्* केशवा ! कोवलर् इन्दिरर्कु* काट्टिय शोऱुम् कऱियुम् तयिरुम्* कलन्दुडन् उण्डाय् पोलुम्* ऊट्ट मुदल् इलेन् उन्दन्नै क्कॊण्डु* ऒरुपोदुम् ऎनक्करिदु* वाट्टम् इला प्पुगऴ् वाशुदेवा !* उन्नै अञ्जुवन् इन्ऱु तॊट्टुम्॥८॥	शाश्वत यश वाले वासुदेव ! अभूतपूर्व बातें मैं सुन रहीं हूं। एक ही बार (एक कौर में) में आपने गोप जनों द्वारा इन्द्र के लिए एकत्रित सभी भोजन, पकवान, एवं दही चट कर गये।प्रत्येक दिन की बात तो छोड़ दीजिए, मेरे लिए आपको एक दिन भी खिलाना कठिन दिखता है।आज से तो मैं आप से डरने लगी हूं। **251**

तिण्णार् वॅण् शङ्गुडैयाय्!⋆ तिरुनाळ् तिरुवोणम् इन्रॅ़ळु नाळ्⋆ मुन् पण् नेर् मॉळियारै क्कूवि मुळै अट्टि⋆ प्पल्लाण्डु कूऱ़वित्तेन्⋆ कण्णालम् शॅय्य⋆ क्करियुम् कलत्तरिशियुम् आक्कि वैत्तेन्⋆ कण्णा! नी नाळै तॉट्टु क्कन्ऱ़िन् पिन् पोगेल्⋆ कोलम् शॅय्दिङ्गे इरु॥९॥	शक्तिवान श्वेत शंख धारण करने वाले प्रभु ! आज से आपके जन्म नक्षत्र श्रवण को आने में मात्र सात दिन बाकी रह गया है। इस उत्सव की तैयारी में बीज अंकुरण करती हूं, तथा सुन्दर गाने वाली गोपियों को निमन्त्रित करती हूं जो उस दिन "आपके जन्मदिन पर बहुत सारी खुशियां हों" की बधईया गा सकें। हमने पात्रों को चावल एवं सब्जियों से भर कर तैयार कर दिया है। मेरे आंखों के तारे ! कल से आप चरवाही में नहीं जायेंगे, और यहीं उत्सव के लिए अलंकृत होकर रहेंगे। **252**
‡पुद्ऱवल्गुल् अशोदै नल् आय्च्चि⋆ तन् पुत्तिरन् गोविन्दनै⋆ कद्ऱिनम् मेय्त्तु वर क्कण्डुगन्दु⋆ अवळ् कर्पित्त माद्ऱम् एल्लाम्⋆ शॅद्ऱम् इलादवर् वाळ्तरु⋆ तॅन्बुदुवै विट्टुशित्तन् शॉल्⋆ कद्ऱिवै पाड वल्लार्⋆ कडल् वण्णन् कळल्गिणै काण्बार्गळे॥१०॥ ॥ पॅरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं॥	सात्विक जनों की नगरी श्रीविल्लीपुत्तुर के विष्णुचित्त के ये दसक गीत, पतली कमरवाली गोपवंश सलोनी यशोदा की खुशी के शब्दों को दुहराते हैं, जो वे अपने लाल गोविंद को बछड़ों के साथ चरवाही से लौटने पर प्रकट करती हैं। जो इन गीतों को गायेंगे उन्हें भगवान के चरण कमल के दर्शन होंगे। **253** पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

24 तळैगळुं (254-263)

कालिप्पिन् वरूम् कण्णनै क्कण्डु कन्नियर् कामुरळ् (चरवाही से लौटने पर भगवान कृष्ण से गोपियों का प्रेम)

<table>
<tr><td>तळैगळुम् तोँङ्गलुम् तदुम्बि एङ्गुम्* तण्णुमै एक्कम् मत्तळि ताऴपीलि*
कुळल्गळुम् गीदमुम् आगि* एङ्गुम् गोविन्दन् वरुगिन्र् कूट्टम् कण्डु*
मळैगोलो वरुगिन्र्दॆन्रु शोँल्लि* मङ्गैमार् शालग वाशल् पट्ि*
नुळैवनर् निर्पनर् आगि एङ्गुम्* उळ्ळम् विट्टूण् मरन्दॊऴिन्दनरे॥१॥</td><td>विभिन्न तरह के छोटे एवं बड़े छाता दिखने लगे। गोविन्द जब अपने संगियों के साथ लौटते हुए गांव में प्रवेश करते हैं तब ढ़ोल, मृदंग, खोल, मजीरा, बांसुरी आदि के संगीत से वातावरण गूंज उठता है।गोपियां खिड़कियों पर आकर कहती हैं “आश्चर्य है, लगता है वर्षा के मेघ घिर आये हैं”। भोजन भूल कर, कोई तो बाहर आया, एवं कोई खड़े होकर अपना हृदय निछावर करती हैं। 254</td></tr>
<tr><td>वल्लि नुण् इदळ् अन्न आडै कोँण्डु* वशै अर त्तिरुवरै विरित्तुडुत्तु*
पल्लि नुण् पढ़ाग उडैवाळ् शात्ति* प्पणैक्कच्चुन्दि प्पल तळै नडुवे*
मुल्लै नल् नरुमलर् वेङ्ग मलर् अणिन्दु* पल् आयर् कुळाम् नडुवे*
एल्लियम् पोदाग प्पिळ्ळै वरुम्* एदिर् निन्रङ्गिनवळै इळवेन्मिने॥२॥</td><td>कई तह वाले फूल जैसे मुलायम मलमल का वस्त्र, कमर पर अन्य चपते हुए वस्त्र की सहायता से छिपकिली जैसा चिपक कर बंधी हुई तलवार। सलोने कुंवर अपने गोप गिरोह के साथ, मोर पंख, सुगंधित मुलै एवं वेंगै फूलों से सुसज्जित, गोधूलि वेला में प्रवेश करते हैं। (यशोदा चेतावनी देते हुए कहती हैं) युवतियां उनके रास्ते से हट कर खड़ी हों, ऐसा न हो कि आपलोगों को अपने कंगन से हाथ धोना पड़े। 255</td></tr>
<tr><td>शुरिगैयुम् तॆरि विल्लुम् शॆण्डु कोलुम्*
मेलाडैयुम् तोळन्मार् कोँण्डोड*
ऑरु कैयाल् ऑरुवन् तन् तोळै ऊन्रि*
आनिरैयिनम् मीळ क्कुरित्त शङ्गम्*
वरुगैयिल् वाडिय पिळ्ळै कण्णन्*
मञ्जळुम् मेनियुम् वडिवुम् कण्डाळ्*
अरुगे निन्राळ् एन्पेण् नोक्कि क्कण्डाळ्*
अदु कण्डिव्वूर् ऑन्रु पुणरक्किन्रदे॥३॥</td><td>गायों को लौटा कर लाने के लिये जो टोली भेजी गयी थी उसके साथ थके हुए कृष्ण लौट रहें हैं। उनका एक हाथ किसी के कंधे पर टिका है तथा दूसरे में वे शंख धारण किये हुए हैं। उनके साथी तलवार, धनुष, बाण, मुकुट लेकर पीछे पीछे दौड़ते हैं।मेरी बेटी नजदीक से खड़ी होकर धूल धूसरित उनके सुनहले मुखमंडल को निहारती है और पुनः निहारती है। यह देखकर नगरवासियों का तांता लग गया। 256</td></tr>
</table>

कुन्रॅडुत्तानिरै कात्त पिरान्⋆ कोवलनाय् क्कुळल् ऊदि ऊदि⋆ कन्रुगळ् मेय्त्तु त्तन् तोळरोडु⋆ कलन्दुडन् वरुवानै त्तॆरुविल् कण्डु⋆ एन्रुम् इवनै ऑप्पारै नङ्गाय्⋆ कण्डरियेन् एडि ! वन्दु काणाय्⋆ ऑन्रुम् निल्ला वळै कळन्रु⋆ तुगिल् एन्दिळ मुलैयुम् एन् वशम् अल्ल्वे ॥ ४ ॥	गोपजनों के नाथ जिन्होंने पर्वत उठाकर गायों की रक्षा की थी, सारा दिन बछड़ों को चराते हुए बांसुरी बजाते हैं। वे अपने साथियों के साथ इस रास्ते लौट रहे हैं। हे बहन ! आओ, देखो। मैंने ऐसा विस्मयकारी स्वरूप पहले नहीं देखा था। मेरे वस्त्र ढ़ीले पड़ रहे हैं, कंगन स्थिर नहीं हैं, मेरे उभरते उरोज मेरे नियंत्रण में नहीं हैं। **257**
शुट्टि निन्रायर् तळैगळ् इड⋆ च्चुरुळ् पङ्गि नेत्तिरत्ताल् अणिन्दु⋆ पट्टि निन्रायर् कडैत्तलैये⋆ पाडवुम् आड क्कण्डेन्⋆ अन्रि प्पिन् मट्टॊरुवर्क्कॆन्नै प्पेशल् ऑट्टेन्⋆ मालिरुञ्जोलै एम् मायर्कल्लाल्⋆ कॊट्टवनुक्किवळ् आम् एन्रॆण्णि⋆ क्कॊडुमिन्गळ् कॊडीरागिल् कोळम्बमे ॥ ५ ॥	छत्रियां थामे गोपजनों से घिरे हुए मोर पंख से सुसज्जित घुंघराले केश वाले एक घर के वरामदे में खड़ा होकर गाते और नृत्य करते हैं। नारियां मलीरूमसोलै के विस्मयकारी प्रभु को देखकर कहती हैं "दूसरे किसके अब हम समर्पित होंगे" जो कहे "हां हम उनके हैं" वही विजयी है, अन्यथा अनियंत्रित स्थिति को झेले। **258**
शिन्दुरम् इलङ्ग त्तन् तिरुनॆट्टि मेल्⋆ तिरुत्तिय कोरम्बुम् तिरु क्कुळलुम्⋆ अन्दर मुळव त्तण् तळै क्काविन्कीळ्⋆ वरुम् आयरोडुडन् वळैगोल् वीश⋆ अन्दम् ऑन्रिल्लाद आय प्पिळ्ळै⋆ अरिन्दरिन्दिव् वीदि पोदुमागिल्⋆ पन्दु कॊण्डान् एन्रु वळैत्तु वैत्तु⋆ पवळवाय् मुरुवलुम् काण्बोम् तोळी ! ॥ ६ ॥	ललाट पर लाल चंदन, सिरमौर के नीचे लटकते घुंघराले बाल, ढ़ोल एवं मजीरों की ध्वनि से गूंजायमान वातावरण में, जंगल सा भरमार छत्रियों की छांह में, अगम्य गोप कुमार गोपमित्रों से घिरे हुए चरवाही की टेढ़ी छड़ी को हवा में उछालते आ रहे हैं। हे बहन ! पूरी तरह से जानते हुए भी अगर वे इस गली से आ गये तो उनका रास्ता रोकते हुए पूछुंगी "आपने हमारे गेंद ले लिए हैं" और उनके मूंगावत अधरों को चूमते हुए उनके मधुर मुस्कान का आनंद उठाउंगी। **259**
शाल प्पल् निरै प्पिन्ने तळै क्काविन्कीळ्⋆ तन् तिरुमेनि निन्रॊळि तिगळ⋆ नील नल् नरुङ्गुञ्जि नेत्तिरत्ताल् अणिन्दु⋆ पल् आयर् कुळाम् नडुवे⋆ कोल च्चॆन्दामरै क्कण् मिळिर⋆ क्कुळल् ऊदि इशै पाडि क्कुनित्तु⋆ आयरोडु आलित्तु वरुगिन्र आय प्पिळ्ळै⋆ अळगु कण्डॆन्मगळ् अयर्क्किन्रदे ॥ ७ ॥	पशुओं के विशाल समूह के पीछे गोपालकों के बड़े समुदाय के बीच, जंगल सी छत्रियों की छांह में, आभापूर्ण मुखमंडल, लंबे घुंघराले बाल में मोरपंख बांधे, सुन्दर चमकती कमल सी आंखें, वे बांसुरी बजाते हुए गाते हैं एवं मित्रों के साथ नाचते हैं। इतना सुंदर कुंवर को देखकर मेरी बेटी मूर्छित हो गयी। **260**
शिन्दुर प्पॊडि क्कॊण्डु शॆन्नि अप्पि⋆ त्तिरुनामम् इट्टङ्गोर् इलैयन् तन्नाल्⋆ अन्दरम् इन्रि त्तन् नॆरि पङ्गियै⋆ अळगिय नेत्तिरत्ताल् अणिन्दु⋆ इन्दिरन् पोल् वरुम् आय प्पिळ्ळै⋆ एदिर् निन्रङ्गिनवळै इळवेल् एन्न⋆ शन्दियिल् निन्रु कण्डीर् नङ्गै तन्⋆ तुगिलॊडु शरिवळै कळल्गिन्रदे ॥ ८ ॥	इन्द्र की तरह केशांत में शिन्दुर, गोप शावक के ललाट पर ताड़पत्र के डंठल से रेखांकित चिह्न, घने काले केश मोर पंख के साथ बंधे हुए; मैंने अपनी लाड़ली बेटी को उनके रास्ते में खड़ा होने से मना किया, ऐसा न कि उसकी बाहुंपाश ढ़ीली पड़ जाये। हाय वह चौराहे पर अकेली खड़ी हुई और उसके कंगन एवं वस्त्र ढ़ीले पड़ गये। **261**

वल्ङ्गादिन् मेल् तोन्रि प्पूवणिन्दु★ मल्लिगै वनमालै मौवल् मालै★ शिलिङ्गारत्ताल् कुळल् ताळ विट्टु★ तीङ्गुळल् वाय्मडुत्तूदि ऊदि★ अलङ्गारत्ताल् वरुम् आय् प्पिळ्ळै★ अळगु कण्डॆन्मगळ् आशै प्पट्टु★ विलङ्गि निल्लादॆदिर् निन्रु कण्डीर्★ वॆळ्वळै कळन्रु मॆय्म् मॆल्लिगिन्रदे ॥ ९ ॥	अपने दायें कान पर लाल कुमुद के फूल का गुच्छा, कंधे पर लंबा चमेली का माला, हवा में लहराते काले घुंघराले केश। उन्होंने मधुर बांसुरी की अनवरत तान छेड़ी। गोपकुंवर को इस लालित्य के साथ आते देख मेरी बेटी उनके सौंदर्य से मुग्ध हो गई। उनके जाने के रास्ते को छेंककर सामने खड़ी हो गयी। हाय ! हाथी के दांत से बने उसके बाहुपाश गिर गये एवं सारा शरीर सिकुड़ गया। **262**
विण्णिन् मीदमरर्गळ् विरुम्बि त्तॊळ★ मिरैत्तायर् पाडियिल् वीदियूडे★ कण्णन् कालि प्पिन्ने एळुन्दरुळ क्कण्डु★ इळ आय् क्कन्निमार् कामुद् वण्णम्★ वण्डमर् पॊळिल् पुदुवैयर् कोन्★ विट्टुशित्तन् शॊन्न मालै पत्तुम्★ पण् इन्बम् वर प्पाडुम् पत्तर् उळ्ळार्★ परमान वैगुन्दम् नण्णुवरे ॥ १० ॥ ॥ पॆरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	मधुमक्खी से घिरे हुए बाग वाले श्रीविल्लीपुत्तुर के राजा विष्णुचित्त के ये दसक गीत, कुमारी गोपियों के उन इच्छाओं का स्मरण कराते हैं जो उनलोगों ने, बछड़ों के साथ गली में लौटते कृष्ण, जो अपनी पूजा के लिए प्रतीक्षा करते स्वर्ग के देवताओं को छोड़ आये थे, को देखकर प्रकट किये थे। जो भक्तगण वाद्यों के धुन पर इसे गायेंगे उनको वैकुण्ठ मिलेगा। **263** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं**

श्रीमते रामानुजाय नमः

25 अट्टूक्कुवि (264-274)

गोवरद्दन गिरियै क्कुडैकाळ् वण्णम् (भगवान कृष्ण ने गोवर्द्धन को उठाकर यादवों एवं गायों की रक्षा की)

अट्टु क्कुवि शोट्ट प्परुप्पदमुम्* तयिर् वावियुम् नेय् अळरुम् अडङ्ग प्पोट्ट त्तुट्टि* मारि प्पगै पुणर्त्त* पोरु मा कडल्वण्णन् पोरुत्त मलै* वट्ट त्तडङ्गण् मड मान् कन्रिनै* वलैवाय् प्पट्टि क्कोण्डु* कुरमगळिर् कोट्टै त्तलै प्पाल् कोडुत्तु वळर्क्कुम्* गोवर्त्तनम् एन्नुम् कोट्ट क्कुडैये* ॥१॥	सागर सा नील वदन वाले प्रभु, पके हुए चावल के ढ़ेर को, दही एवं घी भरे पात्रों को क्षणभर में चटक गये। ऐसा करके आपने शत्रुवत वर्षा को आमंत्रित किया। पुनः विजयभाव से छाते की तरह पर्वत को उठा लिया। यह पर्वत गोवर्द्धन है जहां बहेलिया लोग वृहत नयन वाले मृगशिशुओं को जाल में पकड़ लेते हैं और उन्हें रूई की बत्ती से दूध पिलाकर उनका लालन पोसन करते हैं। **264**
वळर्वोन्रुम् इला च्चेय्गै वानवर् कोन्* वलिप्पट्टु मुनिन्दु विडुक्कप्पट्टु* मळै वन्देळु नाळ् पेय्दु मा त्तडुप्प* मदुशूदन् एडुत्तु मरित्त मलै* इळवु तरियाददोर् ईट्ट प्पिडि* इळञ्जीयम् तोडरन्दु मुडुगुदलुम्* कुळवि इडै क्काल् इट्टेदिरन्दु पोरुम्* गोवरत्तनम् एन्नुम् कोट्ट क्कुडैये* ॥२॥	निर्दोष कर्म वाले इन्द्र के आदेश से सात दिन तक वर्षा ने कहर ढा दिया। मधुसूदन ने पर्वत को उठाया और उलटकर छाते की तरह धारण किया। यह पर्वत गोवर्द्धन है जहां हाथी का बच्चा सिंह के आक्रमण से बचकर अपने मां के पैरों के बीच शरण लेता है और हथिनी मां आक्रामक सिंह से डटकर मुकावला लेती है। **265**
अम् मै त्तडङ्गण् मड आय्च्चियरुम्* आनायरुम् आनिरैयुम् अलरि* एम्मै च्चरण् एन्रुकोळ एन्रिरप्प* इलङ्गाळि क्कै एन्दै एडुत्त मलै* तम्मै च्चरण् एन्र तम् पावैयरै* पुनमेय्गिन्र मानिनम् काण्मिन् एन्रु* कोम्मै प्पुय क्कुन्रर् शिलै कुनिक्कुम्* गोवरत्तनम् एन्नुम् कोट्ट क्कुडैये* ॥३॥	जब गोप नर नारियां एवं गऊयें आंखें फाड़कर सहायता के लिये पुकारते हुए शरण में आये तो प्रभु कृष्ण ने, जो प्रकाशमान चक्र धारण करते हैं, विजय छत्र की तरह पर्वत को उठा लिया। यह पर्वत गोवर्द्धन है जहां नर बहेलिया अपनी बड़ी बड़ी आंखों वाली पत्नि को झाड़ियों की ओर इशारा कर बताता है "चुप वो मृग है वहां" और उसपर निशाना साधकर बाण का संधान करता है। "बचाओ" की पुकार करते मृग बाहर आते हैं ।**266**
कडु वाय् च्चिन वेङ्गण् कळिट्रिनुक्कु* क्कवळम् एडुत्तु क्कोडुप्पान् अवन् पोल्* अडिवाय् उर क्कैयिट्टेळ प्परित्तिट्टु* अमरर् पेरुमान् कोण्डुनिन्र मलै* कडल्वाय् च्चेन्रु मेगम् कविळ्न्दिरङ्गि* क्कदुवाय् प्पड नीर्मुगन्देरि* एङ्गुम् कुडवाय् प्पड निन्रु मळै पोळियुम्* गोवर्त्तनम् एन्नुम् कोट्ट क्कुडैये* ॥४॥	देवाधिदेव ने अपना हाथ पर्वत के नीचे घुसाकर उसे इस तरह उठा लिया जैसे गुस्से से भरे हाथी के लिये महावत उसका भोजन पात्र उठाता है। यह पर्वत गोवर्द्धन है जहां काले मेघ गहरे सागर में उतरकर पानी उठाता है और भरे हुए घड़े की बौछार की तरह सर्वत्र पानी वर्षाता है।**267**

वानत्तिल् उळ्ळीर्! वलियीर् उळ्ळीरेल्⋆ अरैयो! वन्दु वाङ्गुमिन् एन्बवन् पोल्⋆ एनत्तुरुवागिय ईशन् एन्दै⋆ इडवन् एळ वाङ्गि एडुत्त मलै⋆ कान क्कळि यानै तन् कॊम्बिळन्दु⋆ कदुवाय् मदम् शोर त्तन् कै एडुत्तु⋆ कूनल् पिऱै वेण्डि अण्णान्दु निर्कुम्⋆ गोवर्त्तनम् एन्नुम् कॊऱ्ऱ क्कुडैये⋆ ॥५॥	हमारे नाथ, प्रभु ! एकबार सूकर के रूप में आये थे, वैसे हीं इसबार पर्वत को कुकुरछत्ते की तरह उठा लिए। पुकार कर कहा "स्वर्ग के देवताओं में से है कोई शक्तिमान जो इसे धारण करे, यह मेरी चुनौती है"। यह पर्वत गोवर्द्धन है जहां टूटे हुए दांत वाले हाथी अपनी सूंढ़ को चांद की तरफ उठाकर खुशी में मुंह से लार के पानी का फुहारा छोड़ता है। **268**
शॆप्पाडुडैय तिरुमाल् अवन् तन्⋆ शॆन्दामरै क्कैविरल् ऐन्दिनैयुम्⋆ कप्पाग मडुत्तु मणि नॆडुन् तोळ्⋆ काम्बाग क्कॊडुत्तु क्कवित्त मलै⋆ एप्पाडुम् परन्दिऴि तॆळ् अरुवि⋆ इलङ्गु मणि मुत्तु वडम् पिऱळ⋆ कुप्पायम् एन निन्ऱ काट्चि तरुम्⋆ गोवर्त्तनम् एन्नुम् कॊऱ्ऱ क्कुडैये⋆ ॥६॥	दयानिधान तिरूमल के प्रभु ने पर्वत को एक छाता की तरह उलट लिया। पांचो उंगलियों को कमानी की तरह रखकर सुन्दर लंबी भुजा को छाता का डंडा जैसा बना दिया। किनारों से गिरने वाले ठंढ़े पानी की तेज धार से निकले फुहारें उनके ऊपर मोती के दानों की तरह छा गये। यह पर्वत गोवर्द्धन है प्रभु को विजय छत्र। **269**
पडङ्गळ् पलवुम् उडै प्पाम्बरैयन्⋆ पडर् बूमियै त्ताङ्गि क्किडप्पवन् पोल्⋆ तडङ्गै विरल् ऐन्दुम् मलर वैत्तुत्⋆ दामोदरन् ताङ्गु तडवरैतान्⋆ अडङ्ग च्चॆन्ऱिलङ्गैयै ईडऴित्त⋆ अनुमन् पुगळ् पाडि त्तम् कुट्टन्गळै⋆ कुडङ्गै क्कॊण्डु मन्दिगळ् कण् वळर्त्तुम्⋆ गोवर्त्तनम् एन्नुम् कॊऱ्ऱ क्कुडैये⋆ ॥७॥	दामोदर श्रीकृष्ण ने शक्तिशाली पांचो उंगलियों को फैलाकर पर्वत को ऐसे संभाला जैसे नागराज शेष अपने बहुत सारे फनों पर पृथ्वी को संभाले रहते हैं। यह पर्वत गोवर्द्धन है जहां बन्दरी अपने सुकुमार बच्चे को हनुमान का लंका को नाश करने वाली वीरगाथा की लोरी सुनाते हुए हाथों से थपथपाकर सुलाती है।**270**
शल मा मुगिल् पल् कण प्पोर्क्कळत्तु⋆ शर मारि पॊऴिन्दॆङ्गुम् पूशल् इट्टु⋆ नलिवान् उऱ क्केडगम् कोप्पवन् पोल्⋆ नारायणन् मुन् मुगम् कात्त मलै⋆ इलैवेय् कुरम्बै त्तव मा मुनिवर्⋆ इरुन्दार् नडुवे शॆन्ऱणार् शॊऱिय⋆ कॊलै वाय् च्चिन वेङ्गैगळ् निन्ऱुऱङ्गुम्⋆ गोवर्त्तनम् एन्नुम् कॊऱ्ऱ क्कुडैये⋆ ॥८॥	जब युद्धरत काले बादल एकत्रित होकर युद्धक्षेत्र के बाणों की तरह पानी वर्षाने लगे और सर्वत्र हाहाकार मचा दिया तो नारायण प्रभु आगे आकर पर्वत को छाते की तरह उठा लिये। यह पर्वत गोवर्द्धन है जहां भयंकर बाघ ऋषियों के पर्ण कुटीर में प्रवेश कर जाते हैं और तपोधन ऋषि उसके गले से लटके चर्मभाग को सहलाते हुए उसे खड़े खड़े सुला देते हैं।**271**

वन् पेय्मुलै उण्डदोर् वाय् उडैयन्* वन् तूण् एन निन्ऱदोर् वन् परत्तै* तन् पेर् इट्टु क्कॊण्डु दरणि तन्निल्* दामोदरन् ताङ्गु तडवरै तान्* मुन्बे वळि काट्ट मुशु क्कणङ्गळ्* मुदुगिल् पॆय्दु तम् उडै क्कुट्टन्गळै* कॊम्बेट्रियिरुन्दु कुदि पयिट्रुम्* गोवर्त्तनम् एन्नुम् कॊट्र क्कुडैये* ॥९॥	दुष्टा राक्षसी के स्तन पान करने वाले होठ के दामोदर प्रभु ने अपने ही नाम वाले पर्वत को ऐसे उठा लिया जैसे एक खंभा भारी वजन को संभालता है। यह पर्वत गोवर्द्धन है जहां झुंड के झुंड बन्दर एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर छलांग लगाकर अपने पीठ पर बच्चों चिपकाये बच्चों को जंगल के स्थिति से परिचय का पाठ पढ़ाते हैं। **272**
कॊंडि एरु शॆन् तामरै क्कैविरल्गळ्* कोलमुम् अळिन्दिल वाडिट्रिल* वडिवेरु तिरुवुगिर् नॊन्दुम् इल* मणिवण्णन् मलैयुम् ओर् शम्पिरदम्* मुडि एरिय मा मुगिल् पल् कणङ्गळ्* मुन् नॆट्रि नरैत्तन पोल* एङ्गुम् कुडियेरि इरुन्दु मळै पॊळियुम्* गोवर्त्तनम् एन्नुम् कॊट्र क्कुडैये* ॥१०॥	कमल की तरह कोमल एवं रक्तिम हाथ की उंगलियां ध्वज की तरह फहरा रहे थे। वे न तो अपना सौंदर्य खोये, न कमजोर हुए, न कुम्भलाये, और न उनके नखों को कोइ पीड़ा हुई। मणि सा सलोने वदन वाले प्रभु और पर्वत ने एक दर्शनीय मनोरम दृश्य बना दिया। यह पर्वत गोवर्द्धन है जिसके शिखर पर झुंड के झुंड बादल जमा होकर अनवरत वरसते हुए सफेद हो जाते हैं। **273**
अरविल् पळ्ळि कॊण्डरवम् तुरन्दिट्टु* अरव प्पगै ऊर्दि अवनुडैय* कुरविर् कॊडि मुल्लैगळ् निन्ऱुरङ्गुम्* गोवर्त्तनम् एन्नुम् कॊट्र क्कुडैमेल्* तिरुविर् पॊलि मरै वाणर् पुत्तूर् त्तिगळ्* पट्टर्बिरान् शॊन्न मालै पत्तुम्* परवु मननन् कुडै प्पत्तर् उळ्ळार्* परमान वैगुन्दम् नण्णुवरे* ॥११॥ ॥ पॆरियाळ्वार तिरुवडिगळे शरणं ॥	मेधावी वैदिक ऋषियों वाले श्रीविल्लीपुत्तुर के पत्तारबिरन के ये दसक गीत गोवर्द्धन पर्वत की गाथा गाते हैं। यह पर्वत उस प्रभु का विजय छत्र बना जो एक नाग अनंत पर सोते हैं, दूसरे नाग कालिय को भगा दिया, और सर्पों के शत्रु गरूड़ पर सवारी करते हैं। हृदय से जो भक्त इनको गायेंगे वे परमद वैकुण्ठ को जायेंगे। **274** **पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं**

श्रीमते रामानुजाय नमः

26 नावलम् (275-285)

कुऴ़लूदर्चिऱ़प्पु (भगवान कृष्ण की बांसुरी वादन की महिमा)

नावलम् पॆरिय तीविनिल् वाऴुम्* नङ्गैमीर्गाळ ! इदोर् अर्पुदम् केळीर्* तू वलम्बुरि उडैय तिरुमाल्* तूय वायिल् कुऴल् ओशै वऴियॆ* कोवलर् शिऱुमियर् इळङ्गॊङ्गै कुदुगलिप्प* उडल् उळ अविऴ्न्दु* ऎङ्गुम् कावलुम् कडन्दु कयिऱुमालै आगि* वन्दु कविऴ्न्दु निन्ऱनरे* ॥१॥	बड़े महादेश जम्बु में रहने वाली नारियां इस चमत्कार को सुनो।जब दक्षिणावर्त्त श्वेत शंख धारण करने वाले तिरूमल के प्रभु ने अपने होठ पर बांसुरी रखकर बजाई तो छोटी गोपियों के कोमल उरोज उठने लगे तथा उनके हृदय की धड़कन बढ़ गयी। घर की सीमा को लांघ कर वे सब इनके चारों ओर माला की तरह शर्म से सिर झुकाए खड़ीं हो गयीं।**275**
इड अणरै इड त्तोळॊडु शायत्तु* इरुगै कूड प्पुरुवम् नॆरिन्देऱ* कुडवयिऱु पड वाय् कडै कूडक्* गोविन्दन् कुऴल्गॊडूदिन पोदु* मड मयिल्गळॊडु मान् पिणै पोले* मङ्गै मार्गळ् मलर् क्कून्दल् अविऴ* उडै नॆगिऴ ओर् कैयाल् तुगिल् पऱ्ऱि* ऑल्गि ओडरिक्कण् ओड निन्ऱनरे* ॥२॥	जब गोविन्द बांसुरी बजाने लगे तब इन्होंने अपने शरीर का वजन बायें कंधे पर दे दिया। इनके दोनों हाथ एक साथ हो गये, भौंहे सिकुड़ गयीं, पेट ऊपर की ओर चढ़ गया और मुंह संकुचित हो गया। हिरनि एवं मोरनी जैसी गोपियां, फूल बंधे विखरते जूड़े, सरकते वस्त्र, एक हाथ से साड़ी को पकड़े सकुचाते हुए अलग खड़ी होकर कजरारे नयनों से इनको देखने लगीं। **276**
वान् इळवरशु वैगुन्द क्कुट्टन्* वाशुदेवन् मदुरै मन्नन्* नन्द– कोन् इळवरशु कोवलर् कुट्टन्* गोविन्दन् कुऴल्गॊडूदिन पोदु* वान् इळम्बडियर् वन्दु वन्दीण्डि* मनम् उरुगि मलर् क्कण्गळ् पनिप्प* तेन् अळवु शॆऱि कून्दल् अविऴ* शॆन्नि वेर्प्प च्चॆवि शेर्त्तु निन्ऱनरे* ॥३॥	ऊंचे परमपद के राजकुमार, वैकुण्ठ के बालक वासुदेव, नन्दगोपाल के राजकुमार तथा गोपवंश के किशोर, मथुरा के राजा गोविंद हैं । जब इन्होंने बांसुरी बजाई तो ऊपर के लोकों से द्रवित हृदय, भींगी पलकें, विखरते मधुमक्खी लिपटे फूल वाले जूडे एवं पसीने से तर ललाट के साथ युवतियां झुंड में बंसी की टेर सुनकर आयीं ।**277**
तेनुगन् पिलम्बन् काळियन् ऎन्नुम्* तीप्प प्पूडुगळ् अडङ्ग उऴक्कि* कानगम् पडि उलावि उलावि* करुञ्जिऱुक्कन् कुऴल् ऊदिन पोदु* मेनगैयॊडु तिलोत्तमै अरम्बै* उरुप्पशियरवर् वॆळ्गि मयङ्गि* वानगम् पडियिल् वाय् तिऱप्पिन्ऱि* आडल् पाडल् इवै माऱिनर् तामे* ॥४॥	जहरीले घास उखाड़ने जैसी आसानी से श्यामल कृष्ण ने धेनुका, प्रलंबा, कालिय एवं जंगल में स्वतंत्र रूप से घूमनेवाले अन्यों का नाश किया। जब इनकी बंसी बजी तो उसे सुनकर मेनका, तिलोत्तमा, रम्भा, उर्वशी एवं अन्य अपसराओं के साथ प्रसन्न तो हुई पर लज्जित भी हो गई और अपने आप स्वर्ग तथा भूलोक में गाना एवं नाचना छोड़ दिया। **278**

मुन् नरशिङ्गमदागि⋆ अवुणन् मुक्कियत्तै मुडिप्पान् मूवुलगिल् मन्नर् अञ्जुम्⋆ मदुशूदनन् वायिल्⋆ कुळलिन् ओशै शॅवियै प्पट्रि वाङ्ग⋆ नन् नरम्बुडैय तुम्बुरुवोडु⋆ नारदनुम् तम् तम् वीणै मरन्दु⋆ किन्नर मिदुनङ्गळुम् तम् तम्⋆ किन्नरम् तॉडुगिल्लोम् एन्ऱनरे⋆ ॥५॥	मधुसूदन प्रभु से दंभी राजागन डरा करते थे, उन्होंने ही बहुत पहले नरसिंह का अवतार लेकर हिरण्यकशिपु का नाश किया। इनकी बंसी की टेर सुनकर तंबूरा बजाने वाले तुम्बुरू एवं वीणा पर गाने वाले नारद अपने वाद्ययंत्रों को भूल गये। किन्नरों की जोड़ी ने अपने किन्नरियों को स्पर्श न करने का संकल्प ले लिया। **279**
शॅम् पॅरुन् तडङ्गण्णन् तिरळ् तोळन्⋆ देवकि शिऱुवन् देवर्गळ् शिङ्गम्⋆ नम् परमन् इन्नाळ् कुळल् ऊद⋆ केट्टवर्गळ् इडर् उट्रन केळीर्⋆ अम्बरम् तिरियुम् कान्दप्पर् एल्लाम्⋆ अमुद गीत वलैयाल् शुरुक्कुण्डु⋆ नम् परम् अन्ऱॅन्ऱ नाणि मयङ्गि⋆ नैन्दु शोरन्दु कैम्मरित्तु निन्ऱनरे⋆ ॥६॥	बड़ी रक्तिम आंखों एवं शक्तिशाली भुजाओं वाले प्रभु देवकी के पुत्र तथा देवों के सिंह हैं। सुनो, कैसे अन्य लोग इनकी बंसी की तान सुनकर मर्माहत हो गये। आकाश में घूमते गंधर्वगन इनके अमृतमय गान से आकर्षित होकर प्रसन्न होने के साथ लज्जित हो गये। करबद्ध होकर विनीत भाव से बोले कि प्रभु आपके ये गीत हमारे वश के परे हैं।**280**
पुवियुळ् नान् कण्डदोर् अर्बुदम् केळीर्⋆ पूणि मेय्क्कुम् इळङ्गोवलर् कूट्टत्तु⋆ अवैयुळ् नागत्तणैयान् कुळल् ऊद⋆ अमरलोगत्तळवुम् शॅन्ऱिशैप्प⋆ अवियुणा मरन्दु वानवर् एल्लाम्⋆ आयर् पाडि निऱैय प्पुगुन्दुईण्डि⋆ शॅवि उणाविन् शुवै कॉण्डु मगिळ्न्दु⋆ गोविन्दनै त्तॉडरन्दॅन्ऱम् विडारे⋆ ॥७॥	पृथ्वीलोक का चमत्कार सुनो ः गोपमित्रों से घिरे शेषशयन प्रभु ने बछड़े चराते समय जब अपनी मुरली बजायी तो उसकी ध्वनि ऊंचे स्वर्गलोक में गूंजने लगी। सभी देवगन अग्नि के अपने भाग को भूलकर गोपजनों के आयपाडी में ससमूह पधारकर अपने कानों से अमृतमय गीत सुनते हुए जहां जहां गोविन्द गये वहां उनके साथ गये।**281**
शिऱुविरल्गळ् तडवि प्परिमाऱ⋆ शॅङ्गण् कोड च्चॅय्य वाय् कॉप्पळिक्क⋆ कुऱुवॅयर् प्पुरुवम् कूडलिप्पक्⋆ गोविन्दन् कुळल् कॉडूदिन पोदु⋆ पऱवैयिन् कणङ्गळ् कूडु तुऱन्दु⋆ वन्दु शूळ्न्दु पडुगाडु किडप्प⋆ कऱवैयिन् कणङ्गळ् काल् परप्पीट्टु⋆ कविळ्न्दिऱङ्गि च्चॅवि आट्टगिल्लावे⋆ ॥८॥	छिद्रों पर थिरकती छोटी उंगलियां, तिरछी रक्तिम आंखें, फूल की कली जैसे होठ, भौंहों पर स्वेदकण। जब गोविंद ने अपनी मुरली बजायी तो पक्षीगन अपने घोसला छोड़कर टहनियों की भांति इनके चारों ओर गिरने लगे। गायें कान को बिना हिलाये सिर नीचा करके पैरों को फैलाकर शांत खड़ी हो गयीं। **282**
तिरण्डॅळु तळै मळै मुगिल् वण्णन्⋆ शॅङ्कमल मलर् शूळ् वण्डिनम् पोले⋆	कमल के समान मुखमंडल पर काले भौंरों के समान लटकते घुंघराले बाल वाले श्याम वदन प्रभु ने जब मुरली बजायी तो हिरन घास चरना छोड़ दिये।चरा हुआ मुंह का ग्रास जमीन पर नीचे गिर गया। वे सभी बिना दायें बायें आगे पीछे हिले दीवाल के चित्र की तरह स्थिर खड़े हो गये।

शुरुण्डिरुण्ड कुळल् ताळ्न्द मुगत्तान्⋆ ऊदुगिन्ऱ कुळल् ओशै वळियॆ⋆ मरुण्डु मान् कणङ्गळ् मेय्गै मऱन्दु⋆ मेय्न्द पुल्लुम् कडैवाय् वळि शोर⋆ इरण्डु पाडुम् तुलङ्गा प्पुडै पॆयरा⋆ ए़ळुदु शित्तिरङ्गळ् पोल निन्ऱनवे⋆ ॥९॥	**283**
करुङ्गण् तोगै मयिऱ् पीलि अणिन्दु⋆ कट्टि नन्गुडुत्त पीदग आडै⋆ अरुङ्गल उरुविन् आयर् पॆरुमान्⋆ अवन् ऑरुवन् कुळल् ऊदिन पोदु⋆ मरङ्गळ् निन्ऱु मदु तारैगळ् पायुम्⋆ मलर्गळ् वीळुम् वळर् कॊम्बुगळ् ताळुम्⋆ इरङ्गुम् कूम्बुम् तिरुमाल् निन्ऱ निन्ऱ पक्कम् नोक्कि⋆ अवै शॆय्युम् कुणमे⋆ ॥१०॥	गाढ़े काले रंग की आंख वाले मोरपंख से सुसज्जित गोपवंश के सुन्दर कुंवर सटीक पीले पहनावे पर अनगिनत गहनों से शोभायमान हो रहे हैं। प्रभु ने जब मुरली बजायी तो मुग्ध होकर वृक्षों ने अमृत धार एवं फूलों की झड़ी लगा दी। समर्पण में वे अपनी टहनियों को उन दिशाओं में झुकाये जिन दिशाओं में प्रभु जाते रहे। **284**
‡कुळल् इरुण्डु शुरुण्डेरिय कुञ्जिक्⋆ गोविन्दनुडैय कोमळ वायिल्⋆ कुळल् मुळैञ्जुगळिन् ऊडु कुमिळ्त्तु⋆ कॊळित्तिळिन्द अमुद प्पुनल् तन्नै⋆ कुळल् मुळवम् विळम्बुम् पुदुवै क्कोन्⋆ विट्टुशित्तन् विरित्त तमिळ् वल्लार्⋆ कुळलै वॆन्ऱ कुळिर् वायिनरागि⋆ शादु कोट्टियुळ् कॊळ्ळ प्पडुवारे⋆ ॥११॥	पुदुवै के राजा विष्णुचित्त के ये तमिल गीत मुरली तान की तरह मधुर हैं और उस अमृत नदी की कहानी कहते हैं जो घुंघराले लटकों वाले गोविन्द के होठ से निकलकर उनके द्वारा बजाये हुए बंसी के छिद्रों से प्रवाहित हुई। जो इसे ठीक से समझ लेंगे उनकी आवाज मुरली से भी ज्यादा सुखद होगी और वे संतों की श्रेणी में गिने जायेंगे। **285** पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।

<table>
<tr><th colspan="2">श्रीमते रामानुजाय नमः
27 ऐयपुळुदि (286-296)
मायन्मेल् मगल् मालुरूगोलम् तायवन् कूरल्
(अपनी छोटी उम्र की गुड़ियों से खेलने वाली बेटियों का भगवान विष्णु से प्रेम के लिये माताओं का विस्मय)</th></tr>
<tr><td>ऐय पुळुदि उडम्बळैन्दु⋆ इवळ् पेच्चुम् अलन्दलैयाय्⋆
शॆय्य नूलिन् शिट्राडै⋆ शॆप्पन् अडुक्कवुम् वल्लळ् अल्लळ्⋆
कैयिनिल् शिरुदूदै योडु⋆ इवळ् मुट्रिल् पिर् पिरिन्दुम् इलळ्⋆
पै अरवणै प्पळ्ळियानोडु⋆ कैवैत्तिवळ् वरुमे॥१॥</td><td>अभी उसके ऊपर घरौंदा का धूल भरा है, टूटे फूटे शब्दों से बातें बोलती है, लाल सूती साड़ी को खिसकने से शायद ही बचा पाती है, उसने लघु वर्त्तनों से खेलना भी अभी नहीं छोड़ा है। अहो ! वह तो शेषशायी भगवान के हाथ पकड़े आ रही है। 286</td></tr>
<tr><td>वायिल् पल्लुम् एळुन्दिल⋆ मयिरुम् मुडि कूडिट्रिल⋆
शाय्विलाद कुरुन्दलै⋆ च्चिल पिळ्ळैगळोडिणङ्गि⋆
ती इणक्किणङ्गाडि वन्दु⋆ इवळ् तन् अन्न शॆम्मै शॊल्लि⋆
मायन् मा मणिवण्णन् मेल्⋆ इवळ् माल् उरुगिन्राळे॥२॥</td><td>अभी उसके दांत नहीं निकले हैं, चोटी नहीं बंध पाती है; शर्महीन लड़कियों की संगति में उसने गलत आदत पकड़ लिये हैं। अपनी रक्षा में (अपने को ठीक साबित करने के लिए) नीलमणि के रंग वाले अलौकिक नाथ के सुखदायी ध्यान में चली जाती है। 287</td></tr>
<tr><td>पॊङ्गु वॆण्मणल् कॊण्डु⋆ शिट्रिलुम् मुट्रत्तिळैक्कलुरिल्⋆
शङ्गु चक्करम् तण्डु वाळ्⋆ विल्लुम् अल्लदिळैक्कलुराल्⋆
कॊङ्गै इन्नम् कुविन्दॆळुन्दिल⋆ गोविन्दनोडिवळै⋆
शङ्गै यागि एन् उळ्ळम्⋆ नाळ्दॊरुम् तट्टुळुप्पागिन्रदे॥३॥</td><td>बरामदे में बालू के महल को श्वेत बालू से सजाते समय शंख चक्र गदा खड्ग और धनुष के अतिरिक्त कोई कलाकृति नहीं बनाती है। अभी उसके उरोज भी नहीं दिखते हैं, परन्तु मुझे संदेह होता है, सदा वह गोविंद के संग प्रतीत होती है। हमारी धड़कन बंद होती सी लगती है ! 288</td></tr>
<tr><td>एळै पेदै ओर् बालकन् वन्दु⋆ एन्
पॆण् मगळै एळ्गि⋆
तोळिमार् पलर् कॊण्डु पोय्⋆ च्चॆय्द
शूळ्च्चियै यारक्कुरैक्केन्⋆
आळियान् एन्नुम् आळ मोळैयिल्⋆
पाय्च्चि अगप्पडुत्ति⋆
मूळै उप्परियादॆन्नुम्⋆
मूदुरैयुम् इलळे॥४॥</td><td>मेरी बेटी मुझसे ही जुड़ी एक सीधी सादी बच्ची थी। मैं किसको बताउं,उसकी बहुत सारी सखियों ने क्या शरारतपूर्ण काम किया है? उसको अपने साथ ले जाकर उसे “चक्रधारी” के गहरे ताल में डाल दिया है। “कलछी जिसने कढ़ी के नमक का स्वाद नहीं चखा” जैसी अब वह सीधी सादी नहीं रही। 289</td></tr>
<tr><td>नाडुम् ऊरुम् अरियवे पोय्⋆ नल्ल तुळाय् अलङ्गल्
शूडि⋆ नारणन् पोम् इडम् एल्लाम्⋆ शोदित्तुळिदर्गिन्राळ्⋆
केडु वेण्डुगिन्रार् पलर् उळर्⋆ केशवनोडिवळै⋆
पाडु कावल् इडुमिन् एन्रॆन्रु⋆ पार् तडुमारिनदे॥५॥</td><td>नगर और देश को बताते हुए जहां कहीं भी वे गये वह तुलसी की माला पहन कर नारायण को खोजती। उसके एवं केशव के ऊपर निगरानी की आवश्यकता है। बहुतों उसका नाश होना देखना चाहते हैं और यही आजकल नगर में कहते सुना जाता है। 290</td></tr>
</table>

पट्टम् कट्टि प्पोंट्टोडु पेय्दु⋆ इवळ् पाडगमुम् शिलम्बुम्⋆ इट्ट माग वळर्त्तेडुत्तेनुक्कु⋆ एन्नोडिरु क्कलुराळ्⋆ पोट्ट प्पोय् प्पुरप्पट्टु निन्रु⋆ इवळ् पूवै प्पूवण्णा एन्नुम्⋆ वट्ट वार् कुळल् मङ्गैमीर् !⋆ इवळ् माल् उरुगिन्राळे॥६॥	घुंघराले बाल वाली नारियां ! जो कुछ भी वह मांगी मैंने दिया ः ललाट का झूलन, साने की कर्णबाली, पाजेव एवं नूपुर। अब वह हमारे साथ नहीं रहती। अनायस पुकारती है "वो कया के फूल जैसे रंग वाले प्रभु" और मेरे पास से चली जाती है।अहो! वह मोह से ग्रस्त है। **291**
पेशवुम् तरियाद पेण्मैयिन्⋆ पेदैयेन् पेदै इवळ्⋆ कूशमिन्रि निन्रार्गळ्⋆ तम् एदिर् कोल् कळिन्दान् मूळैयाय्⋆ केशवा एन्रुम् केडिली एन्रुम्⋆ किञ्जुग वाय् मोळियाळ्⋆ वाश वार्कुळल् मङ्गैमीर् !⋆ इवळ् माल् उरुगिन्राळे॥७॥	सुगन्धित बाल वाली नारियां ! मेरी चहेती बेटी अर्द्धविकसित नारी वाली आबाज में सुग्गी की तरह लार गिराते हुए बोलती है। सबों के सामने जैसे "कलछी बेंट से छूटकर दाल मे गिरती है" वह लज्जाहीन होकर पुकारती है "हे केशव, हे अकलुषित"। अहो! वह मोह से ग्रस्त है। **292**
कारै पूणुम् कण्णाडि काणुम्⋆ तन् कैयिल् वळै कुलुक्कुम्⋆ कूरै उडुक्कुम् अयरक्कुम्⋆ तन् कोव्वै च्चेव्वाय् तिरुत्तुम्⋆ तेरि तेरि निन्रायिरम् पेर्⋆ त्तेवन् तिरम् पिदट्टुम्⋆ मारिल् मा मणिवण्णन् मेल्⋆ इवळ् माल् उरुगिन्राळे॥८॥	गले का हार पहनती है, दर्पण में झांकती है, कंगन बजाती है, अपने साड़ी को ठीक करती है, मूर्छित हो जाती है। पुनः अपने मूंगावत होठ पर साज लगाती है, खड़ी होती है, अपने को स्थिर शांत करती है, और नीलमणि सा वदन वाले कृष्ण के हजार नामों का पाठ करती है। अहो! वह मोह से ग्रस्त है। **293**
कैत्तलत्तुळ्ळ माडळिय⋆ क्कण्णालङ्गळ् शेय्दु⋆ इवळै वैत्तु वैत्तु क्कोण्डेन्न वाणिबम्⋆ नम्मै वडुप्पडुत्तुम्⋆ शेय्त्तलै एळु नाट्टु प्पोल्⋆ अवन् शेय्वन शेय्दु कोळ्ळ⋆ मै त्तडमुगिल् वण्णन् पक्कल्⋆ वळर विडुमिन्गाळे॥९॥	उसके साथ रहने और उसके विभिन्न उत्सवों पर इतना व्यय से क्या लाभ ? वह प्रतिष्ठा को गिराते ही रहेगी। पुनः स्थानान्तरित होकर लगने वाले पौधे की तरह, उसे घनश्याम के हाथों छोड़ दो; वे जैसा चाहेंगे वैसा करेंगे। **294**
पेरु प्पेरुत्त कण्णालङ्गळ् शेय्दु⋆ पेणि नम् इल्लत्तुळ्ळे⋆ इरुत्तुवान् एण्णि नाम् इरुक्क⋆ इवळुम् ओन्रेण्णुगिन्राळ्⋆ मरुत्तुव प्पदम् नीङ्गिनाळ् एन्नुम्⋆ वार्त्तै पडुवदन् मुन्⋆ ओरुप्पडुत्तिडुमिन् इवळै⋆ उलगळन्दान् इडैक्के॥१०॥	हमलोगों ने समझा बड़े उत्सवों को मनाते हुए उसे अपने घर में प्रसन्न रख सकेंगे परन्तु उसकी तो अपनी सोच है।इसके पहले कि वैद्य की औषधी को वह निरर्थक करने लगे उसे भूमंडल मापने वाले प्रभु के साथ मिला दें। **295**
ञाल मुट्टम् उण्डाल्लिलै त्तुयिल्⋆ नारायणनुक्कु⋆ इवळ् मालदागि मगिळ्न्दनळ् एन्रु⋆ ताय् उरै शेय्ददनै⋆ कोलम् आर् पोळिल् शूळ् पुदुवैयर्कोन्⋆ विट्टुशित्तन् शोन्न⋆ मालै पत्तुम् वल्लवर्गट्कु⋆ इल्लै वरु तुयरे॥११॥ ॥ पेरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	सुन्दर बागों वाले पुदुवै के राजा विष्णुचित्त के ये मधुर गीत एक मां के विस्मय पूर्ण शब्दों का स्मरण कराते हैं जो अपने बेटी को उस नारायण से मोहग्रस्त होते देखती है जो संपूर्ण सृष्टि को निगलकर एक बालक के रूप में बटपत्र पर आनन्द से सो जाते हैं। जो इसे कण्ठ करेंगे उन्हें कभी कोई दुःख नहीं होगा।**296** पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

28 नल्लदोर्तामरै (297-306)

मायवन् पिन्शन् मगळै उन्नि त्ताय् इरङ्गुदल् (बेटी का उनके साथ चले जाने पर एक मां का विस्मय)

नल्लदोर् तामरै प्पॊय्गै⋆ नाण् मलर् मेल् पनि शोर⋆ अल्लियुम् तादुम् उदिरन्दिट्टु⋆ अळगळिन्दाल् ऒत्तदालो⋆ इल्लम् वॆरियोडिट्टालो⋆ एन् मगळै एङ्गुम् काणेन्⋆ मल्लरै अट्टवन् पिन्पोय्⋆ मदुरै प्पुरम् पुक्काळ् कॊल्लो॥१॥	बर्फ पड़ने से जैसे तालाब का कमल सूखकर नष्ट हो जाता है और तालाब की शोभा जाती रहती है उसी तरह हमारा घर सूना हो गया है क्योंकि हमारी बेटी कहीं मिल नहीं रही है।वह मल्ल योद्धाओं के हन्ता कृष्ण के खोजते चली गयी है। क्या वह मथुरा के पास पहुंच गयी होगी? ओह आश्चर्य ! **297**
ऒन्रुम् अरिवॊन्रिल्लाद⋆ उरुवरै क्कोपालर् तङ्गळ्⋆ कन्रु काल् मारुमा पोले⋆ कन्नि इरुन्दाळै क्कॊण्डु⋆ नन्रुम् किरि शॆय्दु पोनान्⋆ नारायणन् शॆय्द तीमै⋆ एन्रुम् एमर्गळ् कुडिक्कु⋆ ओर् एच्चुच्चॊल् आयिडुङ्गॊल्लो॥२॥	जैसे तीक्ष्णबुद्धि एवं कौशल बिहीन गोपजन दूसरे का बछड़ा दक्षता के साथ ले भगाते हैं उसी तरह नारायण प्रभु हमारे कुंवारी बेटी को पूर्व नियोजित धोखाधड़ी से ले गये। क्या यह हमारे परिवार के लिए चिरकाल का कलंक होगा? ओह आश्चर्य ! **298**
कुमरि मणम् शॆय्दु कॊण्डु⋆ कोलम् शॆय्दिल्लत्तिरुत्ति⋆ तमरुम् पिररुम् अरियत्⋆ दामोदरर्कॆन्रु शाट्रि⋆ अमरर् पदियुडै त्तेवि⋆ अरशाणियै वळिपट्टु⋆ तुमिलम् एळ प्परै कॊट्टि⋆ त्तोरणम् नाट्टिडुङ्गॊल्लो॥३॥	उसे अलंकृत कर बड़े कक्ष में बैठाकर क्या वे हमारे संबंधियों एवं मित्रों को बतायेंगे कि उसने दामोदर से व्याह रचा लिया है ? तब देवेश की रानी की तरह बाजे नगाड़े के साथ पताके फहराते हुए उसे बट वृक्ष की परिकमा करायेंगे और क्या भलीभांति उसके व्याह के उत्सव मनायेंगे? ओह आश्चर्य ! **299**
ऒरु मगळ् तन्नै उडैयेन्⋆ उलगम् निरैन्द पुगळाल्⋆ तिरुमगळ् पोल वळर्त्तेन्⋆ शॆङ्गण् माल् तान् कॊण्डु पोनान्⋆ पॆरु मगळाय् क्कुडि वाळ्न्दु⋆ पॆरुम् पिळ्ळै पॆट्र अशोदै⋆ मरुमगळै क्कण्डुगन्दु⋆ मणाट्टु प्पुरम् शॆय्युङ्गॊल्लो॥४॥	वह हमारी एकलौती बेटी थी और उसका लालन पालन, हमने संसार से प्रशंसित, धन की देवी, लक्ष्मी की तरह किया था।धोखेवाज राजीवनयन आये और उसे ले गये। जब माता यशोदा अपने लाड़ले के पुत्रवधू को देखेंगी तो क्या वे इसका स्वागत सम्मानजनक उपहार से करेंगी? ओह आश्चर्य ! **300**

तम् मामन् नन्दगोपालन्★ तळी इक्कॊण्डॆन् मगळ् तन्नै★ शॆम् मान्दिरे एन्ऱु शॊल्लि★ च्चॊळुङ्गयर् कण्णुम् शॆव्वायुम्★ कॊम्मै मुलैयुम् इडैयुम्★ कॊळुम्बणै त्तोळ्गळुम् कण्डिट्टु★ इम् मगळै प्पॆट्ट् तायर्★ इनि त्तरियार् एन्नुङ्गॊल्लो॥५॥	उसके ससुर नंदगोपाल उत्साहवर्द्धन करते हुए कहेंगे "ऊपर देख" और उसकी मछली जैसी आंखें, मूंगे जैसे होठ, उन्नत उरोज, पतली कमर, और स्वस्थ बांस की तरह बांहें देखकर वे आनन्दित होकर क्या यह पूछेंगे "इस कन्या की मां क्या अब तक जीवित होंगी ?" ओह आश्चर्य ! **301**
वेडर् मरक्कुलम् पोले★ वॆण्डिट्टु च्चॆय्दॆन् मगळै★ कूडिय कूट्टमे याग★ क्कॊण्डु कुडि वाळुङ्गॊल्लो★ नाडुम् नगरुम् अरिय★ नल्लदोर् कण्णालम् शॆय्दु★ शाडिर प्पायन्द पॆरुमान्★ तक्कवा कैप्पट्टुङ्गॊल्लो॥६॥	गाड़ी के उलटने वाले प्रभु, हमारी बेटी के साथ बहेलिया एवं वनवासी की तरह जीवन बिताना पर्याप्त समझेंगे या उसके पाणिग्रहण के उत्सव के लिये विशेष आयोजन कर नगर एवं देश को आमंत्रित करेंगे ? ओह आश्चर्य ! **302**
अण्डत्तमरर् पॆरुमान्★ आलियान् इन्ऱॆन् मगळै★ पण्ड प्पळिप्पुक्कळ् शॊल्लि★ प्परिशर् आण्डिडुङ्गॊल्लो★ कॊण्डु कुडि वाळक्कै वाळन्दु★ कोवल प्पट्टम् कवित्तु★ पण्डै मणाट्टिमार् मुन्ने★ पादुकावल् वैक्कुङ्गॊल्लो॥७॥	चक्रधारी देवाधिदेव, क्या आज हमारी बेटी के गुणों में खोट निकालकर उसका निरादर करेंगे या अपने पूर्व की पत्नियों की मंडली में सम्मिलित कर उसको अपने सम्यक जीवनशैली एवं सुरक्षा प्रदान करते हुए सुखी जीवन बितायेंगे ? ओह आश्चर्य ! **303**
कुडियिल् पिरन्दवर् शॆय्युम्★ गुणम् ऒन्ऱुम् शॆय्दिलन् अन्दो !★ नडै ऒन्ऱुम् शॆय्दिलन् नङ्गाय् !★ नन्दगोपन् मगन् कण्णन्★ इडै इरुपालुम् वणङ्ग★ इळैत्तिळैत्तॆन् मगळ् एङ्गि★ कडैगयिरे पट्रि वाङ्गि★ क्कै तळुम्बेरिडुङ्गॊल्लो॥८॥	हे नारियां ! नंदगोपाल के पुत्र कृष्ण ने अपने कुल की बढ़ती प्रतिष्ठा के लायक कोइ काम नहीं किया और न हीं संसार की रीति रिवाज को माना । क्या मेरी बेटी मथानी की रस्सी पकड़ कर पतली कमर से झुककर दायें बायें करते थककर तबतक मथानी चलायेगी जबतक उसके हाथ सूज नहीं जायेंगे ? ओह आश्चर्य ! **304**
वॆण्णिर् त्तोय् तयिर् तन्नै★ वॆळ्वरै प्पिन् मुन् एळुन्दु★ कण् उऱङ्गादे इरुन्दु★ कडैयवुम् तान् वल्लळ् कॊल्लो★ ऒण्णिर त्तामरै च्चॆङ्कण्★ उलगळन्दान् एन् मगळै★ पण् अरैया प्पणिकॊण्डु★ परिशर आण्डिडुङ्गॊल्लो॥९॥	क्या हमारी बेटी उषा काल से पहले जागकर विना सोये श्वेत दही मथती रहेगी या भूमंडल को पग से मापने वाले सुन्दर रक्तिम आंखों के प्रभु उसे नौकरानी का काम दे उसका निरादर करेंगे ? ओह आश्चर्य ! **305**

मायवन् पिन् वऴि शॆन्रु★ वऴियिडै माट्रङ्गळ् केट्टु★ आयर्गळ् शेरियिलुम् पुक्कु★ अङ्गुत्तै माट्रमुम् ऎल्लाम्★ तायवळ् शॊल्लिय शॊल्लै★ त्तण् पुदुवै प्पट्टन् शॊन्न★ तूय तमिऴ् पत्तुम् वल्लार्★ तू मणि वण्णनुक्काळरे ॥१०॥ ॥ पॆरियाऴ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	सुन्दर बागों से शीतलता प्राप्त किये हुए पुदुवै के विष्णुचित्त के ये सात्विक तमिल गीत एक मां के विस्मय पूर्ण शब्दों का स्मरण कराते हैं जो कृष्ण के रास्ता का संधान करती हुई गोपगांव में जाकर अपनी दुखड़ा सुनाती है।जो इसे कण्ठ करेंगे वे मणिवर्ण वाले सलोने प्रभु का दास हो जायेंगे। **306** **पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

29 एन्नादन् (307 - 317)

नन्दन् मदलैयै क्कागुत्तनै नविन्रू उन्दि पऱत्तल्

(भगवान राम एवं भगवान कृष्ण की गरिमामयी गाथा ः दो गोपियों की वार्ता)

एन् नादन् देविक्कु⋆ अन्ऱिन्बप्पू ईयादाळ्⋆ तन् नादन् काणवे⋆ तण्पू मरत्तिनै⋆ वन् नाद प्पुळ्ळाल्⋆ वलिय प्परित्तिट्ट⋆ एन् नादन् वन्मैयै प्पाडि प्पऱ⋆ एम्बिरान् वन्मैयै प्पाडि प्पऱ॥१॥	जब इन्द्र की पत्नि ने स्वर्गिक फूल देने से मना कर दिया तो घनघोर आवाज वाले गरूड़ ने पेड़ उखाड़ कर सत्यभामा के बाग में लगा दिया। इन्द्र यह सब भयभीत हो चुपचाप देखते रहे। हमारे प्रभु का गुणगान करो और झूमो। हमारे प्रभु का गुणगान करो और झूमो **307**
एन् विल् वलि कण्डु⋆ पो एन्ऱेदिर् वन्दान्⋆ तन् विल्लिनोडुम्⋆ तवत्तै एदिर् वाङ्गि⋆ मुन् विल् वलित्तु⋆ मुदु पेण् उयिरुण्डान्⋆ तन् विल्लिन् वन्मैयै प्पाडि प्पऱ⋆ दाशरति तन्मैयै प्पडि प्पऱ॥२॥	जब प्रशुराम ने मार्ग रोकते हुए कहा "हमारे धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाओ तो जानें " । हमारे प्रभु उनका धनुषबल और तपबल दोनों ले लिए। पूर्व में उन्होंने अपना धनुष चलाते हुए ताड़का राक्षसी का अंत किया था। उनका गुणगान करो और झूमो।दशरथ का गुणगान करो और झूमो **308**
उरुप्पिणि नङ्गैयै⋆ त्तेर् एट्रि क्कोण्डु⋆ विरुप्पुट्रङ्ग⋆ विरैन्देदिर् वन्दु⋆ शेरुक्कुट्रान्⋆ वीरम् शिदैय⋆ त्तलैयै च्चिरैत्तिट्टान् वन्मैयै प्पाडि प्पऱ⋆ देवकि शिङ्गत्तै प्पाडि प्पऱ॥३॥	जब प्रभु रूक्मिणी को रथ में बैठाकर चलने ही वाले थे कि घमंडी भाई रूक्म उनकी ओर तेजी से दौड़ते हुए आया।उसके घमंड को चूर करते हुए प्रभु ने उसके शिर काट लिये। उनके शौर्य का गुणगान करो और झूमो।देवकी के सिंह शावक का गुणगान करो और झूमो **309**
माट्रुत्ताय् शेन्ऱु⋆ वनम् पोगे एन्ऱिड⋆ ईट्रुत्ताय् पिन् तोडर्न्दु⋆ एम्बिरान्! एन्ऱळ⋆ कूट्रु त्ताय् शोल्ल⋆ क्कोडिय वनम् पोन⋆ शीट्रम् इलादानै प्पाडि प्पऱ⋆ शीदै मणाळनै प्पाडि प्पऱ॥४॥	सौतेली मां ने कहा "वन को चले जाओ"। घातकी मां की बात सुनकर विना गुस्सा किये वे वन को चले गये। उनकी अपनी मां ने "हमारे प्रभु" कहते हुए उनका पीछा किया। उनका गुणगान करो और झूमो।सीता के दुल्हा (सीतापति) का गुणगान करो और झूमो **310**

पञ्जवर् दूतन् आय्* प्पारतम् कैशॅय्दु* नञ्जुमिळ् नागम्* किडन्द नल् पॉय्गै पुक्कु* अञ्ज प्पणत्तिन् मेल्* पायन्दिट्टरुळ् शॅय्द* अञ्जन वण्णनै प्पाडि प्पर्* अशोदै तन् शिङ्गत्तै प्पाडि प्पर॥५॥	पांचों भाई के दूत के रूप में उन्होंने युद्ध कराया। उस ताल में प्रवेश किये जिसमें एक नाग विष वमन करता था। उसके पांचों फनों पर नृत्य किया और पुनः उस पर अनुग्रह भी किया। श्यामल प्रभु का गुणगान करो और झूमो।यशोदा के सिंह का गुणगान करो और झूमो **311**
मुडि ऑन्रि* मूवुलगङ्गळुम् आण्डु* उन् अडियेर्करुळ् एन्रु* अवन् पिन् तॉडर्न्द* पडियिल् कुणत्तु* प्परत नम्बिक्कु* अन्रु अडिनिलै ईन्दानै प्पाडि प्पर्* अयोत्तियर् कोमानै प्पाडि प्पर॥६॥	अद्वितीय भाई भरत उनके पीछे गये और कहा "राजमुकुट धारण कर तीनों लोकों का राज्य कीजिए और भक्तों पर अनुग्रह कीजिए" ।तब प्रभु ने उन्हें अपना पादुका दे दिया। उनका गुणगान करो और झूमो।अयोध्या के राजकुमार का गुणगान करो और झूमो **312**
काळियन् पॉय्गै* कलङ्ग प्पायन्दिट्टु* अवन् नीळ्मुडि ऐन्दिलुम्* निन्रु नडम् शॅय्दु* मीळ अवनुक्कु* अरुळ् शॅय्द वित्तगन्* तोळ् वलि वीरमे पाडि प्पर्* तू मणिवण्णनै प्पाडि प्पर॥७॥	उन्होंने कालिय के पांच बड़े फनों पर कूद कर खड़े होकर नृत्य किया जिससे दह मटमैला और गंदा हो गया और पुनः उसपर अनुग्रह किया। उनका गुणगान करो और झूमो।श्यामल प्रभु का गुणगान करो और झूमो **313**
तार्क्किळन् तम्बिक्कु* अरशीन्दु* तण्डगम् नूट्र्वळ्* शॅल्कॉण्डु पोगि* नुडङ्गिडै च्चूर्प्पणकावै* च्चॅवियॊडु मूक्कु* अवळ् आर्क्क अरिन्दानै प्पाडि प्पर्* अयोत्तिक्करशनै प्पाडि प्पर॥८॥	कैकेयी के सुनियोजित वचनों को सुनकर उन्होंने राज्य छोटे भाई भरत को दे दिया। दंडक वन में प्रवेश कर पतली कमर वाली सूर्पनखा के नाक और कान काट लिये जिससे वह चित्कार कर रोने लगी।उनका गुणगान करो और झूमो।अयोध्या के राजा का गुणगान करो और झूमो **314**
माय च्चगडम् उदैत्तु* मरुदिरुत्तु* आयर्गळोडु पोय्* आनिरै कात्तु* अणि वेयिन् कुळल् ऊदि* वित्तगनाय् निन्र* आयर्गळ् एट्रिनै प्पाडि प्पर्* आनिरै मेय्त्तानै प्पाडि प्पर॥९॥	उन्होंने दुष्ट गाड़ी को चकनाचूर कर दिया, मरूदु के वृक्ष को तोड़ा, तथा गोपजनों के साथ गाय चराये, और बांसुरी बजाते हुए चमत्कार करते रहे।गोपराजा का गुणगान करो और झूमो।गाय के चरवाहे का गुणगान करो और झूमो **315**

कारार् कडलै अडैत्तिट्टु⋆ इलङ्गै पुक्कु⋆ ओरादान् पॊन्मुडि⋆ ऒन्बदोडॊन्रैयुम्⋆ नेरा अवन् तम्बिक्के⋆ नीळ् अरशीन्द⋆ आरावमुदनै प्पाडि प्पर⋆ अयोत्तियर् वेन्दनै प्पाडि प्पर॥१०॥	गहरे समुद्र पर सेतु बनाकर वे लंका में गये। रावण के मुकुट सहित दस शिरों को एक एक कर काट गिराया और छोटे भाई विभीषण को राजा बना दिया।सदा अतृप्त रखने वाले अमृत गाथा का गुणगान करो और झूमो।अयोध्या के राजा का गुणगान करो और झूमो **316**
नन्दन् मदलैयै⋆ क्कागुत्तनै नविन्ऱु⋆ उन्दि परन्द⋆ ऒळियिळैयार्गळ् शॊल्⋆ शॆन् तमिळ् तॆन् पुदुवै⋆ विट्टुशित्तन् शॊल्⋆ ऐन्दिनोडैन्दुम् वल्लार्क्कु⋆ अल्लल् इल्लैये॥११॥ ॥ पॆरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	श्रीविल्लीपुत्तुर के विष्णुचित्त के ये सात्विक दसक गीत, उन्दी परात्तल के गाओ और झूमो नृत्य का स्मरण कराते हैं जिसमें सुन्दर गोपियों एक के बाद एक कृष्ण एवं राम का गुणगान करते हैं। जो इसको कण्ठ कर लेंगे वे सभी दुःखों से दूर रहेंगे। **317** **पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं**

श्रीमते रामानुजाय नमः **30 नऱिन्दकरूङ्कुळल् (318- 327)** **शीदैक्कु अनुमन् तरिवित्त अडैयाळम्** (हनुमान जी का लंका पहुंचकर सीता जी से मिलकर भगवान का संवाद सुनाते हुए उनकी अंगूठी देना और सीताजी को प्रसन्न करना)	
नॆऱिन्द करुङ्गुळल् मडवाय्!⋆ निन् अडियेन् विण्णप्पम्⋆ शॆऱिन्द मणि मुडि च्चनगन्⋆ शिलै इरुत्तु निनै क्कॊणर्न्ददु अऱिन्दु⋆ अरशु कळैगट्ट⋆ अरुन्दवत्तोन् इडै विलङ्ग⋆ शॆऱिन्द शिलै कॊडुदवत्तै⋆ च्चिदैत्तदुम् ओर् अडैयाळम्॥१॥	काले सघन केश वाली संभ्रांत महिला ! दास के निवेदन को सुनें। हमारे प्रभु ने आपको जनक के बड़े सुसज्जित धनुष को तोडकर जीता था। तपःशील प्रशुराम जो राजाओं का समूल नाश कर रहे थे यह सुनकर हमारे प्रभु को अपने धनुष की चुनौती दिया।प्रभु ने उनके धनुष और तपवल का हरण कर लिया। यह हमारा एक प्रामाणिक परिचय है। **318**
अल्लियम्पू मलर् क्कोदाय्!⋆ अडि पणिन्देन् विण्णप्पम्⋆ शॊल्लुगेन् केट्टरुळाय्⋆ तुणै मलर् क्कण् मडमाने!⋆ एल्लियम् पोदिनि तिरुत्तल्⋆ इरुन्ददोर् इड वगैयिल्⋆ मल्लिगै मा मालै कॊण्डु⋆ अङ्गार्त्तदुम् ओर् अडैयाळम्॥२॥	कमलनयनी, खिले हुए फूल की माला वाली !।हम आपके चरणों की बन्दना करके कुछ कहने की अनुमति मांगते हैं। सुखद गोधूलि वेला में एक दिन एकान्त स्थल पर आपने उन्हें चमेली की माला से बांध दिया था। यह हमारा दूसरा प्रामाणिक परिचय है। **319**
कलक्किय मा मनत्तनळाय्⋆ क्कैगेशि वरम् वेण्ड⋆ मलक्किय मा मनत्तननाय्⋆ मन्नवनु मऱादॊळिय⋆ कुल क्कुमरा! काडुऱैय प्पो एन्ऱु⋆ विडै कॊडुप्प⋆ इल क्कुमणन् तन्नॊडुम्⋆ अगियदोर् अडैयाळम्॥३॥	कैकेयी का हृदय राम के विरूद्ध हो गया और उनके दो वरदानों को राजा दशरथ अस्वीकार न कर सके। व्यथित हृदय से उन्होंने कहा "कुल के वीर सिंह, आप वन को जायें" । राम और लक्ष्मण वन को चले गये। यह हमारा एक और प्रामाणिक परिचय है। **320**
वार् अणिन्द मुलै मडवाय्!⋆ वैदेवी! विण्णप्पम्⋆ तेर् अणिन्द अयोत्तियर्कोन्⋆ पॆरुन्देवी! केट्टरुळाय्⋆ कूर् अणिन्द वेल् वलवन्⋆ गुगनोडुम् गङ्गै तन्निल्⋆ शीर् अणिन्द तोऴमै⋆ कॊण्डदुम् ओर् अडैयाळम्॥४॥	कंचुकी से बंधे उरोज वाली संभान्त महिला, रथों वाली अयोध्या की योग्यवती रानी, वैदेही ! निवेदन के लिए प्रार्थी हूं ः भुजाल धारण करने वाले गुह को गंगा के किनारे हमारे प्रभु ने अपना सखा बनाया। यह हमारा एक और प्रामाणिक परिचय है। **321**

मान् अमरु मॅनोक्कि !⋆ वैदेवी ! विण्णप्पम्⋆ कान् अमरुम् कल्लदर् पोय्⋆ क्काडुरैन्द कालत्तु⋆ तेन् अमरुम् पॉळिर् चारल्⋆ चित्तिर कूडत्तिरुप्प⋆ पाल् मॉळियाय् ! बरत नम्बि⋆ पणिन्ददुम् ओर् अडैयाळम्॥५॥	दुग्धवत मधुर वचनों वाली हिरननयनी वैदेही ! निवेदन है ः राम पथरीली रास्तों से गुजरते हुए चित्रकूट में सुखद पर्णकुटीर में टिके थे कि छोटे भाई भरत आकर दंडवत हो गये। यह हमारा एक और प्रामाणिक परिचय है। **322**
चित्तिरकूडत्तिरुप्प⋆ च्चिरु काक्कै मुलै तीण्ड⋆ अत्तिरमे कॉण्डॅरिय⋆ अनैत्तुलगुम् तिरिन्दोडि⋆ वित्तगने ! इरामावो !⋆ निन् अबयम् एन्ऱळैप्प⋆ अत्तिरमे अदन् कण्णै⋆ अरुत्तदुम् ओर् अडैयाळम्॥६॥	चित्रकूट में एक छोटे काग ने आपके स्तन पर चोंच मारा तो राम ने उसके ऊपर एक घास के तिनके का संधान किया जिसके डर से वह तीनों लोकों में दौड़ता फिरा। अंततः दया की भिक्षा मांगते हुए राम के चरणों में गिर पड़ा। तिनके के उस आयुध ने उसकी एक आंख निकाल ली। यह हमारा एक और प्रामाणिक परिचय है। **323**
मिन् ऑत्त नुण् इडैयाय् !⋆ मॅय् अडियेन् विण्णप्पम्⋆ पॉन् ऑत्त मान् ऑन्ऱु⋆ पुगुन्दिनिदु विळैयाड⋆ निन् अन्बिन् वळि निन्ऱु⋆ शिलैपिडित्तॅम्बिरान् एग⋆ पिन्ने अङ्गिलक्कुमणन्⋆ पिरिन्ददुम् ओर् अडैयाळम्॥७॥	विद्युत रेखा सी कमर वाली संभान्त महिला ! आपका विनीत दास एक निवेदन करता है ः एक स्वर्णमय हिरन आपके समक्ष कीड़ा करने लगा। आपके स्नेहवश मेरे प्रभु धनुष लेकर चल पड़े। पुनः लक्ष्मण भी विदा हुए। **324**
मै त्तगु मा मलर् क्कुळलाय् !⋆ वैदेवी ! विण्णप्पम्⋆ ऑत्त पुगळ् वानरक्कोन्⋆ उडन् इरुन्दु निनै त्तेड⋆ अत्तगु शीर् अयोत्तियर्कोन्⋆ अडैयाळम् इवै मॉळिन्दान्⋆ इ त्तगैयाल् अडैयाळम्⋆ ईदवन् कै मोदिरमे॥८॥	रंगीन फूल की जूड़ावाली वैदेही ! एक निवेदन है ः अप्रतिम यश वाले बन्दरों के राजा सुग्रीव की सहायता से अयोध्या के राजा ने आपकी खोज के लिए जब दल भेजा तो ये कथायें सुनायीं। पुनः और प्रमाण में यह रहा उनके हाथ की अंगूठी ।**325**
तिक्कु निरै पुगळाळन्⋆ ती वेळ्वि च्चॅन्ऱ नाळ्⋆ मिक्क पॅरुम् शबै नडुवे⋆ विल् इरुत्तान् मोदिरम् कण्डु⋆ ऑक्कुमाल् अडैयाळम्⋆ अनुमान् ! एन्ऱु⋆ उच्चिमेल् वैत्तु क्कॉण्डुगन्दनळाल्⋆ मलर् क्कुळलाळ् शीदैयुमे॥९॥	ऋषियों की यज्ञअग्नि की रक्षा के लिये कृतसंकल्प प्रभु ने जगप्रसिद्ध राजा जनक के धनुष को राजकुमारों की महती सभा में तोड़ा था। उनकी अंगूठी को देखकर रंगीन फूल की जूड़ावाली सीता बोल उठी "हनमान तुम्हारे प्रमाण विश्वसनीय हैं "। तत्पश्चात् अंगूठी को सिर पर चढ़ाकर बहुत प्रसन्न हुई।**326**

वार् आरुम् मुलै मडवाळ्* वैदेवि तनै क्कण्डु* शीर् आरुम् तिरल् अनुमन्* तॆरिन्दुरैत्त अडैयाळम्* पार् आरुम् पुगळ् प्पुदुवै* प्पट्टर्बिरान् पाडल् वल्लार्* एर् आरुम् वैगुन्दत्तु* इमैयवरोडिरुप्पारे॥१०॥ ॥ पॆरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	जगप्रसिद्ध पदुवै के पत्तारबिरन के ये दसक गीत वीर हनुमान के उन प्रमाणों को गाते हैं जो उन्होंने कंचुकी वाली सीता को अशोक वन में देखकर सुनाया था। जो इनको कण्ठ कर लेंगे वे सुखद वैकुण्ठ में देवताओं के साथ निवास करेंगे। **327** **पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं**

श्रीमते रामानुजाय नमः

31 कदिरायिरम् (328 - 337)

मायनै क्कण्ड शुवडु उरैत्तल्

(उनलोगों के बीच का संवाद ः जो उनकी खोज करते हैं और जिन्होंने उन्हें देखा है)

कदिर् आयिरम् इरवि* कलन्देरित्ताल् ऑत्त नीळ् मुडियन्* एदिर् इल् पॅरुमै इरामनै* इरुक्कुम् इडम् नाडुदिरेल्* अदिरुम् कळल् पॉरुदोळ्* इरणियन् आगम् पिळन्दु* अरियाय् उदिरम् अळैन्द कैयोडिरुन्दानै* उळ्ळवा कण्डार् उळर्॥१॥	आप क्या अद्वितीय यश वाले राम के निवास स्थान का अनुसंधान कर रहे हैं जिनका विशाल मुकुट हजारों सूर्य के प्रकाश से भी अधिक प्रकाशमान है ? बहुतों हैं जो उन्हें नरसिंह रूप में हिरण्य की छाती फाड़ने के पश्चात् रक्तरंजित नखपंजरों के साथ देखा है। **328**
नान्दगम् शङ्गु दण्डु* नाण् ऑलि च्चार्ङ्गम् तिरु च्चक्करम्* एन्दु पॅरुमै इरामनै* इरुक्कुम् इडम् नाडुदिरेल्* कान्दळ् मुगिळ् विरल् शीदैक्कागि* क्कडुञ्जिलै शॅन्रिरुक्क* वेन्दर् तलैवन् जनकराजन् तन्* वेळ्वियिल् कण्डार् उळर्॥२॥	आप क्या अद्वितीय यश वाले राम के निवास स्थान का अनुसंधान कर रहे हैं जो शंख चक्र गदा खड्ग एवं धनुष धारण करते हैं ? बहुतों हैं जो उन्हें सम्राट जनक के धनुष यज्ञ में कमलपंखुड़ी सी उंगली वाली सीता के लिए धनुष तोड़ते देखा है। **329**
कॉल्लैयानै क्कॉम्बु परित्तु* क्कूडलर् शेनै पॉरुदळिय* शिल्लैयाल् मरामरम् एय्द देवनै* च्चिक्कॅन नाडुदिरेल्* तल्लैयाल् कुरक्किनम् ताङ्गि च्चॅन्रु* तडवरै कॉण्डडैप्प* अल्लै आर्कडर्करै वीद्दिरुन्दानै* अङ्गुत्ते क्कण्डार् उळर्॥३॥	आप क्या शीघ्र हीं प्रभु का अनुसंधान करना चाहते हैं जिन्होंने दुर्दांत हाथी के दांत उखाड़ लिये, राक्षसों की सेना का संहार किया और एक ही बाण से एक कतार के सात वृक्षों को छेद दिये ? बहुतों हैं जो उन्हें सम्राट जनक के धनुष यज्ञ में कमलपंखुड़ी सी उंगली वाली सीता के लिए धनुष तोड़ते देखा है। **330**
तोयम् परन्द नडुवु शूळलिल्* तॉल्लै वडिवु कॉण्ड* माय क्कुळवि यदनै नाडुरिल्* वम्मिन् शुवडुरैक्केन्* आयर् मडमगळ् पिन्नैक्कागि* अडल् विडै एळिनैयुम्* वीय प्पॉरुदु वियर्त्तु निन्रानै* मॅय्म्मैये कण्डार् उळर्॥४॥	आप क्या प्रभु का अनुसंधान समुद्र के बीच में करना चाहते हैं जहां वे निश्चिन्त हो एक आदि बालक (बट पत्र पर सोये हुए) के रूप में हैं तो आइए हम एक उपाय बताते हैं। गोपवंश की कुमारी नप्पिनाय के लिए उन्होंने सात वृषभों का सामना करते हुए उनका वध किया और पसीना से नहाते हुए खड़े रहे। बहुतों ने उन्हें इस तरह से देखा है। **331**
नीर् एरु शॅञ्जडै नीलकण्डनुम्* नान्मुगनुम् मुरैयाल्* शीर् एरु वाशगञ्जॅय्य निन्र* तिरुमालै नाडुदिरेल्* वार् एरु कॉङ्गै उरुप्पिणियै* वलिय प्पिडित्तु क्कॉण्डु तेर् एद्दि* शेनै नडुवु पोर् शॅय्य* च्चिक्कॅन क्कण्डार् उळर्॥५॥	आप क्या तिरूमल के प्रभु का अनुसंधान करना चाहते हैं जिनकी पूजा चारमुख वाले ब्रह्मा और नीलकंठ शिव मंत्रों के साथ करते हैं ? बहुतों हैं जो उन्हें कंचुकी वाली रूक्मिणी का अपहरण कर अपने साथ रथ पर ले जाते समय शत्रुओं का शौर्यपूर्ण सामना करते देखा है। **332**

पॉल्ला वडिवुडै प्पेय्च्चि तुञ्ज* प्पुणर्मुलै वाय् मडुक्क वल्लानै* मा मणिवण्णनै* मरुवुम् इडम् नाडुदिरेल्* पल्लायिरम् पॅरुन् देविमारॉडु* पौवम् एरि तुवरै* एल्लारुम् शूळ च्चिङ्गाशनत्ते* इरुन्दानै क्कण्डार् उळर्॥६॥	आप क्या नीलमणि वर्ण वाले प्रभु के निवास स्थान का अनुसंधान करना चाहते हैं जिन्होंने खतरनाक राक्षसी के स्तन पर अपने होठ लगाकर उसके प्राण हर लिये ? बहुतों हैं जो समुद्र के लहरों से थपेड़े खाते द्वारका में उन्हें सोलह हजार रानियों से घिरकर राजतिलक के अवसर पर सिंहासनारूढ़ होते देखा है। **333**
वॅळ्ळै विळिशङ्गु वॅञ्जुडर् त्तिरु च्चक्करम्* एन्दु कैयन्* उळ्ळ इडम् विनविल्* उमक्किरै वम्मिन् शुवडुरैक्केन्* वॅळ्ळै प्पुरवि क्कुरक्कु वॅल्कॉडि* त्तेर्मिशै मुन्बु निन्रु* कळ्ळ प्पडैत्तुणै आगि* प्पारतम् कैशॅय्य क्कण्डार् उळर्॥७॥	आप क्या श्वेत शंख एवं चमकते चक्र के धारण करने वाले प्रभु के निवास स्थान का अनुसंधान करना चाहते हैं तो आइए एक छोटा सा उपाय बताते हैं। बहुतों हैं जो उन्हें हनुमान ध्वज फहराते श्वेत घोड़ों के रथ से चुपके से भारत युद्ध का दिशा निर्देश करते देखा है। **334**
नाळिगै कूरिट्टु क्कात्तु निन्र* अरशर्गळ् तम् मुगप्पे* नाळिगै पोग प्पडै पॉरुदवन्* देवकि तन् शिरुवन्* आळि कॉण्डन्रिरवि मरैप्प* च्चयत्तिरदन् तलैयै* पाळिल् उरुळ प्पडै पॉरुदवन्* पक्कमे कण्डार् उळर्॥८॥	देवकी के पुत्र कृष्ण दिन भर उन राजाओं से लड़ते रहे जो जयद्रथ के पक्षधर थे।अगर आप उनका अनुसंधान कर रहे हैं तो बहुतो हैं जिन्होंने उन्हें अर्जुन के पास से अपने चक्र के द्वारा सूर्य को छिपाते देखा है और तब अर्जुन ने बाणों की वर्षा कर जयद्रथ के सिर को काटकर गडढ़े में डाल दिया।**335**
मण्णुम् मलैयुम् मरि कडल्गळुम्* मट्रुम् यावुम् एल्लाम्* तिण्णम् विळुङ्गि उमिळ्न्द देवनै* च्चिक्कॅन नाडुदिरेल्* एण्णर्करियदोर् एनम् आगि* इरुनिलम् पुक्किडन्दु* वण्ण क्करुङ्गुळल् मादरोडु* मणन्दानै क्कण्डार् उळर्॥९॥	क्या आप निश्चित रूप से उनका अनुसंधान कर रहे हैं जो एक ही बार में पृथ्वी पर्वत एवं समुद्र को निगल जाते हैं और पुनः उन्हें बाहर निकाल देते हैं ? बहुतों हैं जिन्होंने उन्हें कल्पनातीत सूकर के रूप में भू मंडल का उद्धार करके सुन्दर केश वाली भू देवी से व्याह रचते देखा है।**336**
करिय मुगिल् पुरै मेनि मायनै* क्कण्ड शुवडुरैत्तु* पुरवि मुगम् शॅय्दु शॅन्नॅल् ओङ्गि* विळै कळनि प्पुदुवै* तिरुविर् पॉलि मरैवाणन्* पट्टर्बिरान् शॉन्न मालै पत्तुम्* परवु मनम् उडै प्पत्तर् उळ्ळार्* परमन् अडि शेर्वर्गळे॥१०॥ ॥ पॅरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	हरे भरे खेत जिसमें धान बढ़कर और घोड़े की तरह झुक जाते हैं उस पुदुवै के मेधावी वैदिक ऋषि विष्णुचित्त के ये तमिल गीत घनश्याम प्रभु के दर्शन के उपाय बताते हैं। हृदय से पाठ करनेवाले भक्तगण प्रभु के चरणारविन्द को प्राप्त करते हैं। **337** **पेरियाळवार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

32 अलम्बावरूट्टा (338-348)

तिरूमालिरूञ्जोलै च्चिऱप्पु

तिरूमालैरून्सओलै पर्वत की गाथा ः

यह स्थान मदुरै से लगभग 20 कि मी उत्तर पश्चिम कोण पर स्थित है (देखिये Miss Ramesh Vol. 4, p 227) । अळगर मलय पर्वत के तलहटी के मंदिर के मूल विग्रह भगवान सुन्दरराजा या सुन्दरबाहु के नाम से जाने जाते हैं। अळगर का शाब्दिक अर्थ सुन्दरता है इसीलिये मंदिर को "अळगर कोईल" भी कहते हैं।भगवान को सुन्दरराजा के अतिरिक्ति "कल्लाळगर" एवं "तिरूमालैरून्सओलै नांबि" भी कहते हैं। इसे "तिरूमल ईरूम सोलै" यानि बागों वाले भगवान का पर्वत भी कहा जाता है। मुख्य पर्वत वृषभ के रूप में दिखता है और चारों तरफ के अन्य पर्वत गाय की तरह दिखते हैं। महाभारत काल में इसीलिये इसको वृषभाद्रि के रूप में वर्णित किया गया है। कूरत्त आळवार यानि रामानुज स्वामी के अन्यतम शिष्य अपनी आंखें खोने के बाद सुन्दरबाहु स्तवन में यहां के पेरूमल की प्रशस्ति गाये हैं।

गोदम्मा अन्डाल ने अळगर पेरूमल यानि सुन्दरबाहु को एक सौ घड़े पायसम एवं मक्खन से अर्चना करने की मनौती रखी थी जो भूलवश पूरा नहीं हो सका था और बाद में रामानुज स्वामी ने सुन्दरबाहु भगवान को 100 घड़े पायसम एवं नवनीत का भोग लगा कर पूरा किया।तत्पश्चात् ही वे श्रीविल्लीपुत्तुर अन्डाल के दर्शन के लिए पहुंचे। कहते हैं रामानुज स्वामी का सुन्दरबाहु भगवान को अन्डाल की भूली बात को पूरा करने से अन्डाल इतनी प्रसन्न हुई कि वे वरामदे तक आगे बढ़कर रामानुज स्वामी को अपना "अग्रज भाई" मानते हुए स्वागत के लिए आगयी। आज भी श्रीविल्लीपुत्तुर में अन्डाल की उत्सवमूर्त्ति वहीं वरामदे में रखी जाती हैं।

अळगर मलय में नूपुर गंगा का बहुत बड़ा महत्त्व है। जब त्रिविक्रम रूप में भगवान सब लोकों तक अपने पवित्र पग को बढ़ा दिये तब ब्रह्मा उनके चरण को धो कर चरणामृत का लाभ लेने लगे। उसी समय चरण धोने के अन्तराल में भगवान के पाजेव से लगकर जल की कुछ बूंदें इस पर्वत पर भी आई और वहीं से नूपुर गंगा का प्रार्दुभाव हुआ।सुन्दरबाहु भगवान की संपूर्ण उत्सव मूर्त्ति एक विशेष तरह के स्वर्ण धातु से ही बनी हुई है जो अन्य किसी मंदिर में नहीं है। अपवाद में मात्र तिरूअनन्तपुरम के अनन्तशयनम भगवान हैं जहां का उत्सव विग्रह इसी तरह के सोने से बना हुआ है।सुन्दरबाहु भगवान का तिरूमंजन मात्र नूपुरगंगा के जल से ही कियाजाता है। जब कभी भी अन्य जल से तिरूमंजन कराया गया भगवान की मूर्त्ति काली हो गयी। अतः नित्य नूपुर गंगा के जल से ही तिरूमंजन होता है।

मदुरै के शिव जी, जो सुन्दरेश्वर के नाम से जाने जाते हैं, का कल्याण उत्सव एवं अळगर कोईल के सुन्दरबाहु भगवान का कल्याण उत्सव चैत्र मास में मनाया जाता है। अपनी बहन पार्वती जी से मिलने सुन्दरबाहु भगवान स्वयं मदुरै जाते हैं जिसमें नौ दिनों के उत्सव अवधि में से अळगर पेरूमल का तीन दिन इसी कार्यक्रम में व्यतीत हो जाता है।

अलम्बा वॆरुट्टा⋆ क्कॊन्ऱु तिरियुम् अरक्करै⋆ कुलम् पाऴ् पडुत्तु⋆ क्कुलविळक्काय् निन्ऱ कोन् मलै⋆ शिलम्बार्क्क वन्दु⋆ दॆय्व मगळिर्गळ् आडुम् शीर्⋆ शिलम्बाऱु पायुम्⋆ तॆन् तिरुमालिरुञ्जोलैये॥१॥	राक्षस गन हत्या करते हुए स्वतंत्र रूप से घूमते और लोग डर से भागे फिरते। राक्षसों का समूल नाश करने वाले प्रभु तिरूमालिरून्सओलै के प्रधान पूज्य देव के रूप में खड़े हैं। यहां पैंजनी बजाती अप्सरायें नूपुर गंगा में स्नान करने आती हैं। **338**
वल्लाळन् तोळुम्⋆ वाळ् अरक्कन् मुडियुम्⋆ तङ्गै पॊल्लाद मूक्कुम्⋆ पोक्कुवित्तान् पॊरुन्दुम् मलै⋆ एल्ला विडत्तिलुम् एङ्गुम् परन्दु⋆ पल्लाण्डॊलि शॆल्ला निर्कुम् शीर्⋆ त्तॆन् तिरुमालिरुञ्जोलैये॥२॥	रावण के मजबूत भुजाओं एवं मस्तकों को एवं उसकी दुष्टा बहन सूर्पनखा के नाक को काटने वाले प्रभु तिरूमालिरून्सओलै में शाश्वत रूप से निवास करते हैं जिसके पर्वतश्रेणी पलाण्डु "विजय हो" की ध्वनि से गूंजते हैं। **339**

तक्कार् मिक्कार्गळै॰ च्चञ्चलम् शॅय्युम् शलवरै॰ तॅक्काम् नॅरियॆ पोक्कुविक्कुम्॰ शॅल्वन् पॊन्मलै॰ ए क्कालमुम् शॅन्ऱु॰ शेवित्तिरुक्कुम् अडियरै॰ अ क्कानॅरियै माट्रुम्॰ तण् तिरुमालिरुञ्जोलैये॥ ३॥	सुनहले तिरूमालिरून्सओलै पर्वत के धनवान प्रभु ऋषियों एवं भक्तों को तंग करने वाले दुष्ट राक्षसों को मृत्यु की दक्षिण दिशा में भेजते हैं ; जबकि अपने भक्त गणों को वे कर्मवन से आसानी से निकाल लेते हैं। **340**
आनायर् कूडि॰ अमैत्त विळवै॰ अमरर् तम् कोनार्क्कॊळिय॰ क्कोवर्त्तनत्तु च्चॅय्दान् मलै॰ वानाट्टिल् निन्ऱु॰ मामलर् क्कर्पग त्तॊत्तिळि॰ तेन् आऱु पायुम्॰ तॅन् तिरुमालिरुञ्जोलैये॥ ४॥	स्वर्ग के कलपका फूल के अमृतमय गुच्छे सुनहले तिरूमालिरून्सओलै पर्वत के नूपुर गंगा में प्रवाहित होते हैं। यह पर्वत उस प्रभु का है जिसने गोपवंश द्वारा दिये गये त्योहार के संपूर्ण सुन्दर उपहार को गोवर्द्धन पर्वत को सौंप दिया। **341**
ऑरु वारणम् पणि कॊण्डवन्॰ पॊय्गैयिल्॰ कञ्जन् तन् ऑरु वारणम् उयिर् उण्डवन्॰ शॅन्ऱैयुम् मलै॰ करु वारणम्॰ तन् पिडि तुरन्दोड॰ कडल् वण्णन् तिरुवाणै कूऱ त्तिरियुम्॰ तण् तिरुमालिरुञ्जोलैये॥ ५॥	गजेन्द्र की रक्षा प्रदान करने वाले एवं कंस के कुवलयापीड का नाश करने वाले प्रभु तिरूमालिरून्सओलै पर्वत में रहते हैं। यहां नीले सागर के वदन वाले प्रभु के नाम का शपथ लेकर वृषभ-हस्ति गन उनका तिरस्कार करके जाने वाली गायों पर उत्पात मचाते हैं। **342**
एविट्टु च्चॅय्वान्॰ एन्ऱॅदिरन्दु वन्द मल्लरै॰ शाव त्तगर्त्त॰ शान्दणि तोळ् चदुरन् मलै॰ आव त्तनम् एन्ऱु॰ अमरर्गळुम् नन् मुनिवरुम्॰ शेवित्तिरुक्कुम्॰ तॅन् तिरुमालिरुञ्जोलैये॥ ६॥	देवगन एवं संतलोग तिरूमालिरून्सओलै के निवासी प्रभु को “दीनों के आधार” के रूप में पूजते हैं। इसी प्रभु ने किराये के पहलवानों को अपने उन भुजाओं से परास्त कर दिये जिसपर कुब्जा ने चंदन का लेप अर्पित किया था। **343**
मन्नर् मऱुग॰ मैत्तुनन्मार्क्कॊरु तेरिन्मेल्॰ मुन् अङ्गु निन्ऱु॰ मोळै एळुवित्तवन् मलै॰ कॊल् नविल् कूर्वेर् कोन्॰ नॅडुमारन् तॅन् कूडर् कोन्॰ तॅन्नन् कॊण्डाडुम्॰ तॅन् तिरुमालिरुञ्जोलैये॥ ७॥	सुदूर पूर्व काल में एक सौ राजाओं के विरूद्ध प्रभु ने पांच भाइयों के लिये रथ चलाया और जमीन में एक वाण मारकर अर्जुन के घोड़े के लिये जल प्रपात उत्पन्न कर दिया। वे तिरूमालिरून्सओलै के निवासी हैं जहां भुजाल धारण करने वाले प्राचीन नेदुमारन राजा ने दक्षिण पांडया के नगर कुदै मदुरै में प्रभु का विजयोत्सव मनाया। **344**
कुऱुगाद मन्नरै॰ क्कूडु कलक्कि॰ वॅङ्गानिडै च्चिऱुगाल् नॅरियॆ पोक्कुविक्कुम्॰ शॅल्वन् पॊन् मलै॰ अऱुगाल् वरि वण्डुगळ्॰ आयिर नामम् शॊल्लि॰ शिऱुगालै प्पाडुम्॰ तॅन् तिरुमालिरुञ्जोलैये॥ ८॥	सुनहले तिरूमालिरून्सओलै के पर्वत प्रभु के आवास हैं। आप शत्रु राजाओं को घने जंगल के संकरे रास्ते में भागने के लिये बाध्य कर देते हैं।यहां छः पैर वाले भौंरे प्रातःकाल में प्रभु के हजार नामों का संगीतमय स्वर से पाठ करते हैं।**345**

शिन्द प्पुडैत्तु⋆ च्चॆङ्गुरुदि कॊण्डु⋆ बूदङ्गळ् अन्दि प्पलि कॊडुत्तु⋆ आवत्तनम् शॆय् अप्पन् मलै⋆ इन्दिर कोपङ्गळ्⋆ एम्बॆरुमान् कनि वाय् ऒप्पान्⋆ शिन्दुम् पुरविल्⋆ तॆन् तिरुमालिरुञ्जोलैये॥९॥	तिरूमालिरून्सओलै पर्वत के दुष्टात्मायें आदमियों को काट कर मार देते हैं और उनका खून बहाते हैं जिसे "दुःख में कामआनेवाला निधि" के रूप में काम लाते हैं। यहां के कीड़े सर्वत्र प्रभु के मूंगावत होठ के लाल रंग उत्पन्न करते हैं। **346**
एट्टुत्तिशैयुम्⋆ एण् इरन्द पॆरुन् देविमार्⋆ विट्टु विळङ्ग⋆ वीढ्रिरुन्द विमलन् मलै⋆ पट्टि प्पिडिगळ्⋆ पगडुरिञ्जि च्चॆन्रु⋆ मालैवाय् तॆट्टि त्तिळैक्कुम्⋆ तॆन् तिरुमालिरुञ्जोलैये॥१०॥	अनगिनत समूह में आठों दिशाओं से सुन्दर बालायें आकर तिरूमालिरून्सओलै पर्वत में जमाव करते हैं। यहां की पुष्ट गायें सारी रात वृषभों के साथ आनन्द मनाते हैं। **347**
मरुद प्पॊऴिल् अणि⋆ मालिरुञ्जोलै मलै तन्नै⋆ करुदि उरैगिन्र⋆ कारक्कडल् वण्णन् अम्मान् तन्नै⋆ विरदम् कॊण्डेत्तुम्⋆ विल्लिपुत्तूर् विट्टुशित्तन् शॊल्⋆ करुदि उरैप्पवर्⋆ कण्णङ्गऴलिणै काण्बार्गळे॥११॥	श्रीविल्लीपुत्तुर के विष्णुचित्त के ये मधुर गीत तिरूमालिरून्सओलै पर्वत के रम्य वनों के मध्य स्थित नील सागर के वदन वाले प्रभु की अर्चा की प्रतिज्ञा लेते हैं।जो स्नेह से इसका गायन करेंगे उन्हें कृष्ण के चरण कमल का दर्शन होगा।**348** **पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं ।**

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

33 उरूप्पिणिनङ्गै (349 - 359)

तिरूमालिरूञ्जोलैयिन् माट्चि

(तिरूमालैरून्सओलै पर्वत की गाथा)

</td></tr>
<tr><td>उरुप्पिणि नङ्गै तन्नै मीट्पान्⋆ तॊडर्न्दोडि च्चॆन्ऱ⋆
उरुप्पनै ओट्टि क्कॊण्डिट्टु⋆ उऱैत्तिट्ट उऱैप्पन् मलै⋆
पॊरुप्पिडै क्कॊन्ऱै निन्ऱु⋆ मुऱि याळियुम् काशुम् कॊण्डु⋆
विरुप्पॊडु पॊन् वळङ्गुम्⋆ वियन् मालिरुञ्जोलैयदे॥१॥</td><td>तिरूमालिरून्सओलै पर्वत पर खड़े कोनरै के वृक्ष से सुनहरे गोल पीली पंखुडियां एवं मुड़े हुए कली उस तरह गिरते हैं जैसे कोई उदार दाता सोने के सिक्के एवं छल्ले का दान कर रहा हो। यहां उस प्रभु का आवास है जो जब रूक्मिणी के साथ भाग रहे थे तब पीछा करते रूक्मा को पकड़ा और रथ से बांध कर उसे लज्जित किया। **349**</td></tr>
<tr><td>कञ्चनुम् काळियनुम्⋆ कळिऱुम् मरुदुम् एरुदुम्⋆
वञ्जनैयिल् मडिय⋆ वळर्न्द मणिवण्णन् मलै⋆
नञ्जुमिऴ् नागम् एऴुन्दणवि⋆ नळिर् मा मदियै⋆
शॆञ्जुडर् ना वळैक्कुम्⋆ तिरुमालिरुञ्जोलैयदे॥२॥</td><td>तिरूमालिरून्सओलै पर्वत पर गेहुंअन सांप अपने फन को उठाकर चमकते एवं लपलपाते जीभ से पूर्ण चांद को चाटने का उपकम करते हैं। यह पर्वत प्रभु का आवास है जिन्होनें कालिय नाग, कुवलयापीड़ हाथी, अर्जुन के युगल वृक्ष, अरिष्टनेमी वृषभ, एवं दुष्ट कंश का उनके ही दोष से नाश कर दिया था। **350**</td></tr>
<tr><td>मन्नु नरगन् तन्नै⋆ च्चूऴ् पोगि वळैत्तॆऱिन्दु⋆
कन्नि मगळिर् तम्मै⋆ क्कवर्न्द कडल् वण्णन् मलै⋆
पुन्नै शॆरुन्दियॊडु⋆ पुन वेङ्गैयुम् कोङ्गुम् निन्ऱु⋆
पॊन् अरि मालैगळ् शूऴ्⋆ पॊऴिल् मालिरुञ्जोलैयदे॥३॥</td><td>पहले से नियोजन करके नरकासुर के गले में फंदा डालकर सागर सा सलोने वदन वाले प्रभु ने उसकी हत्या कर दी और तत्पश्चात् सोलह हजार एक सौ रानियों को कैद मुक्त किया। तिरूमालिरून्सओलै उनका पर्वतीय आवास है जहां पुन्नै, शरून्दि, वेंगै, एवं कोंगु के वृक्ष बागों के गले के हार के रूप में निखरते हैं। **351**</td></tr>
<tr><td>मावलि तन्नुडैय⋆ मगन् वाणन् मगळ् इरुन्द⋆
कावलै क्कट्टळित्त⋆ तनि क्काळै करुदुम् मलै⋆
कोवलर् गोविन्दनै⋆ क्कुऱ मादर्गळ् पण् कुऱिञ्जि⋆
पा ऑलि पाडि नडम् पयिल्⋆ मालिरुञ्जोलैयदे॥४॥</td><td>सदा नवयुवक प्रभु ने मावलि के पुत्र बानासुर की पुत्री ऊषा को कैद से मुक्त किया। अपनी ईच्छा से प्रभु तिरूमालिरून्सओलै के पर्वतों में निवास करते हैं। यहां के मूल निवासी गोप गोविन्द नाम का संकीर्त्तन पन्न एवं कुरून्जी पर करते हुए नृत्य करते हैं। **352**</td></tr>
</table>

पल्ल पल्ल नाळम् शॉल्लि⋆ प्पळित्त शिशुपालन् तन्नै⋆ अलवलैमै तविर्त्त⋆ अळगन् अलङ्गारन् मलै⋆ कुल्ल मलै कोल्ल मलै⋆ कुळिर् मा मलै कॊट्ट मलै⋆ निल्ल मलै नीण्ड मलै⋆ तिरुमालिरुञ्जोलैयदे॥५॥	गाली एवं दोष की बौछार करने वाले शिशुपाल को लावण्य मय प्रभु ने मुस्कराते हुए शांत कर दिया था। आपका तिरूमालिरून्सओलै पर्वतीय आवास अन्य पर्वतों का अभिभावक हैं तथा शांत सुखद स्थिर ऊंचा एवं विजयप्रदायी है। **353**
पाण्डवर् तम्मुडैय⋆ पाञ्जालि मरुक्कम् एल्लाम्⋆ आण्डङ्गु नूट्रुवर् तम्⋆ पॆण्डिर् मेल् वैत्त अप्पन् मलै⋆ पाण् तगु वण्डिनङ्गळ्⋆ पण्गळ् पाडि मदु प्परुग⋆ तोण्डल् उडैय मलै⋆ तॊल्लै मालिरुञ्जोलैयदे॥६॥	पांडव रानी पांचाली ने जो क्लेश झेले थे उसे प्रभु ने याद रखा और अंततः दुष्ट सौ भाईयों की पत्नियों पर डाल दिया। आपका तिरूमालिरून्सओलै पर्वतीय आवास अति प्राचीन है जहां भौंरे निर्झरों के मृदु जल से संपोषित बागों से मधु पीकर प्रभु के अमृतमय नाम को गुंजायमान करते रहते हैं। **354**
कनङ्गुळैयाळ् पॊरुट्टा⋆ क्कणै पारित्तु⋆ अरक्कर् तङ्गळ् इनम् कळुवेट्टुवित्त⋆ एळिल् तोळ् एम् इरामन् मलै⋆ कनम् कॊळि तॆळ् अरुवि⋆ वन्दु शूळ्न्दगल् ञालम् एल्लाम्⋆ इनम् कुळुवाडुम् मलै⋆ एळिल् मालिरुञ्जोलैयदे॥७॥	सुवर्णआभूषणों से सुसज्जित सीता की रक्षा के लिये प्रभु ने बाणों की वर्षा कर राक्षस कुल का नाश किया। तिरूमालिरून्सओलै पर्वत की सुन्दर नदियां मृदु जल प्रवाह के साथ स्वर्ण का ढ़ेर इकट्ठा कर देती हैं । सर्वत्र से आये तीर्थ यात्री इन नदियों में आनन्द से स्नान करते हैं। **355**
एरि शिदरुम् शरत्ताल्⋆ इलङ्गैयिनै⋆ तन्नुडैय वरि शिलै वायिल् पॆय्दु⋆ वाय् क्कोट्टम् तविर्त्तुगन्द⋆ अरैयन् अमरुम् मलै⋆ अमरर्गॊडु कोनुम् शॆन्रु⋆ तिरिशुडर् शूळुम् मलै⋆ तिरु मालिरुञ्जोलैयदे॥८॥	शीलवान राजा राम ने मुंह से अग्नि उगलते लंका के राजा रावण को अपने धनुष के अग्नि बाणों से शांत कर दिया। अपनी ईच्छा से तिरूमालिरून्सओलै पर्वत में रहने वाले प्रभु का देवताओं के राजा इन्द्र तथा प्रकाशमंडल वाले सूर्य एवं चन्द्र परिक्रमा करते रहते हैं। **356**
कोट्टुमण् कॊण्डिडन्दु⋆ कुडङ्गैयिल् मण् कॊण्डळन्दु⋆ मीट्टुम् अदुण्डुमिळ्न्दु⋆ विळैयाडु विमलन् मलै⋆ ईट्टिय पल् पॊरुळ्गाळ्⋆ एम्बिरानुक्कडियुरै एन्रु⋆ ओट्टरुम् तण् शिलम्बारुडै⋆ मालिरुञ्जोलैयदे॥९॥	तिरूमालिरून्सओलै के पर्वतीय आवास में रहने वाले परात्पर प्रभु ने वराह रूप में पृथ्वी का उद्धार उसे अपने दांतों पर उठाकर किया, उपहार मांग कर पृथ्वी को मापा, पुनः सबको निगल गये और सबको बाहर कर दिया। इनका यह खेल इसी क्रम में शाश्वत चलते रहता है। पहाड़ी नदी शिलम्बारू यानि नूपुर गंगा अपने प्रवाह में बहुमूल्य पदार्थो को लाकर प्रभु के चरणों में अर्पित करते रहती हैं। **357**

‡आयिरम् तोळ् परप्पि⋆ मुडि आयिरम् मिन् इलग⋆ आयिरम् पैन्दलैय⋆ अनन्त शयनन् आळुम् मलै⋆ आयिरम् आरुगळुम्⋆ शुनैगळ् पल आयिरमुम्⋆ आयिरम् पूम् पॊळिलुम् उडै⋆ मालिरुञ्जोलैयदे ॥१०॥	तिरूमालिरून्सओलै के पर्वतीय वातारण में सहस्त्रों धारायें, सहस्त्रों तड़ाग, एवं सहस्त्रों फूल के बाग स्थित हैं। यह पर्वत हजार फन के शेषशय्या पर सोने वाले हजार भुजायें एवं हजार मुकुट से सुशोभित प्रभु के शासनाधीन है। **358**
‡मालिरुञ्जोलै एन्नुम्⋆ मलैयै उडैय मलैयै⋆ नालिरु मूर्त्ति तन्नै⋆ नाल् वेद क्कडल् अमुदै⋆ मेल् इरुङ्गर्पगत्तै⋆ वेदान्त विळु प्पॊरुळिन्⋆ मेल् इरुन्द विळक्कै⋆ विट्टुशित्तन् विरित्तनने ॥११॥	विष्णुचित्त के ये पद, वेदों के सार एवं उपनिषद के सिद्धान्तावलियों को प्रकाशित करने वाले, अष्टाक्षर मंत्र की प्रशस्ति हैं, और इसकी साक्षात प्रतिमूर्त्ति उत्तम कलपक वृक्षवाले तिरूमालिरून्सओलै पर्वत का आनन्ददायी अलौकिक एवं ईश्वरीय वातावरण मात्र अनुभूति से ही समझने योग्य है। **359** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

34 नावगारियम् (360 - 370)

तिरूकोट्टियूर् च्चिऱ्प्पु

(तिरूकोट्टियूर के भक्तों की प्रशंसा तथा भजन भाव नहीं करने वालों को प्रताड़ना)

नावगारियम् शॅाल् इलादवर्⋆ नाळ्दॊरुम् विरुन्दोम्बुवार्⋆ देव कारियम् शॅय्दु⋆ वेदम् पयिन्ऱु वाळ् तिरु क्कोट्टियूर्⋆ मूवर् कारियमुम् तिरुत्तुम्⋆ मुदल्वनै च्चिन्दियाद⋆ अ- प्पावगारिगळै प्पडैत्तवन्⋆ एङ्ङनम् पडैत्तान्गॊलो ! ॥१॥	ब्रह्मा, रूद्र, एवं इन्द्र के कर्त्तव्यों का र्निधारण करने वाले प्रभु तिरूकोट्टियूर में रहते हैं। यहां के निवासी सत्यवादी हैं, और जीवन पर्यन्त प्रतिदिन अतिथियों का सत्कार के साथ स्वागत करते हैं, मंदिर सेवा मे लगनशील तथा वेद में अध्ययनरत हैं। आश्चर्य है कि प्रभु, सृष्टि के रचयिता, ने कैसे दुष्टात्माओं को जन्म दिया जो जीवन प्रदान करने वाले प्रभु के बारे में एक बार भी स्मरण और विचार नहीं करते हैं। **360**
कुऱ्ऱम् इन्ऱि क्कुणम् पॆरुक्कि⋆ क्कुरुक्कळुक्कनुगूलराय्⋆ शॆऱ्ऱम् ऒन्ऱुम् इलाद⋆ वण्कैयिनार्गळ् वाळ् तिरु क्कोट्टियूर्⋆ तुऱ्ऱि एळ् उलगुण्ड⋆ तू मणि वण्णन् तन्नै त्तॊळादवर्⋆ पॆऱ्ऱ तायर् वयिऱ्ऱिनै⋆ प्पॆरु नोय् शॆय्वान् पिरन्दार्गळे॥२॥	सात लोकों को क्षण भर में निगल जाने वाले प्रभु तिरूकोट्टियूर में वैसे लोगों के साथ रहते हैं, जो दोष रहित, सद्‌गुण संपन्न, ईर्ष्या द्वेष से मुक्त, उदारमना, तथा आचार्य का अनुसरण करने वाले हैं। जो मणि सा सलोने प्रभु की पूजा अर्चना नहीं करते वे निश्चित रूप से अपने मां के गर्भ के भार हैं। **361**
वण्ण नल् मणियुम् मरगदमुम् अळुत्ति⋆ निळल् एळुम् तिण्णै शूळ्⋆ तिरु क्कोट्टियूर्⋆ त्तिरु मालवन् तिरु नामङ्गळ्⋆ एण्ण क्कण्ड विरल्गाळाल्⋆ इरैप्पॊळुदुम् एण्णगिल्लादु पोय्⋆ उण्ण क्कण्ड तम् ऊत्तै वाय्क्कु⋆ क्कवळम् उन्दुगिन्ऱार्गळे॥३॥	रत्नजटित अटारियों वाले तिरूकोट्टियूर में प्रभु का वास है। यहां रत्नों के प्रकाश से ही अटारियों की छाया बनती है। हाथ की उंगलियां प्रभु का नाम जपने के लिये बना है।हाय ! जो नहीं जानते हैं वे इनका प्रयोग बिना धोये मुंह में केवल भोजन डालने के लिये करते रहते हैं।**362**
उरग मॆल् अणैयान् कैयिल्⋆ उरै शङ्गम् पोल् मड अन्नङ्गळ्⋆ निरैगणम् परन्देरुम्⋆ शॆङ्गमल वयल् तिरु क्कोट्टियूर्⋆ नरकनाशनै नाविल् कॊण्डळैयाद⋆ मानिड शादियर्⋆ परुगु नीरुम् उडुक्कुम् कूरैयुम्⋆ पावम् शॆय्दन ताम् कॊलो ! ॥४॥	शेषशायी प्रभु तिरूकोट्टियूर में निवास करते हैं जहां चतुर्दिक लाल कमल के तालाब में प्रभु के हाथ के शंख के उज्ज्वल वर्ण सा राजहंस विहरते दिखते हैं।मनुष्य का शरीर धारण करके भी जो नरक की यातना से त्राण दिलाने वाले प्रभु का नाम नहीं लेता, हाय ! उसके पीने वाले जल एवं पहरने वाले वस्त्र सभी पापपूर्ण हीं हैं।**363**

आमैयिन् मुदुगत्तिडै क्कुदि कॊण्डु* तू मल्लर् शाडि प्पोय्* तीमै शॆय्दिळवाळैगळ्* विळैयाडु नीर् त्तिरु क्कोट्टियूर्* नेमि शेर् तडङ्गैयिनानै* निनैप्पिला वलि नॆञ्जुडै* पूमि बारङ्गळ् उण्णुम् शोट्रिनै वाङ्गि* प्पुल्लै त्तिणिमिने॥५॥	प्रभु तिरूकोट्टियूर में निवास करते हैं जहां चतुर्दिक जलराशि में विलैय मछलियां कछुओं के पीठ पर खेलती हैं तथा नव विकसित कमल की पंखुडियों को स्पर्श करती हुई क्रीड़ा मग्न रहती हैं। विशाल बाहु में चक्र धारण करने वाले प्रभु का, जो पाषाण - हृदय लोग कभी स्मरण नहीं करते, वे सचमुच (पृथ्वी पर) पत्थर सा भार स्वरूप ही हैं। वे भोजन जो करते हैं,उसको हटा दो और उनके मुंह को घास से भर दो। **364**
वेदम् ऐन्दॊडु वेळ्वि ऐन्दु* पुलन्गळ् ऐन्दु पॊरिगळाल्* एदम् ऒन्ऱुम् इलाद* वण्कैयिनार्गळ् वाळ् तिरु क्कोट्टियूर् नादनै नरशिङ्गनै* नविन्ऱेत्तुवार्गळ् उळक्किय* पाद तूळि पडुदलाल्* इव्वुलगम् पाक्कियम् शॆय्ददे॥६॥	प्रभु तिरूकोट्टियूर में ऐसे कलुष शून्य जनों के साथ निवास करते हैं जो शरीर के पांच तत्वों,पांच यज्ञों,पांच कर्मेन्द्रियों,एवं पांच ज्ञानेन्द्रियों के परस्पर संबंधों से भली भांति परिचित हैं।वे नरसिंह भगवान का गुणानुवाद करते हैं और उनके चरण स्पर्श से यह पार्थिव धरती भी पवित्र हो गयी है।**365**
कुरुन्दम् ऒन्ऱॊशित्तानॊडुम् शॆन्ऱु* कूडि आडि विळा च्चॆय्दु* तिरुन्दु नान्मऱैयोर्* इराप्पगल् एत्ति वाळ् तिरु क्कोट्टियूर्* करुन् तडमुगिल् वण्णनै* क्कडैक्कॊण्डु कैदॊळुम् पत्तर्गळ्* इरुन्दवूरिलिरुक्कुम् मानिडर्* एत्तवङ्गळ् शॆय्दार् कॊलो ! ॥७॥	तिरूकोट्टियूर में चारों वेदों के ज्ञाता कुरून्द वृक्ष के नाश करने वाले प्रभु के साथ निवास करते हैं। इस नगर में भक्तगण सलोने घनश्याम प्रभु के समक्ष विनीत भाव से करबद्ध रहते हैं। रात दिन आपस में मिलकर प्रभु के प्रशस्ति गायन एवं नृत्य का आनंद लेते हैं।अहो, किस तपस्या से ऐसे लागों के बीच इस पृथ्वी पर जन्म प्राप्त होता होगा ! **366**
नळिर्न्द शील्लन् नयाशल्लन्* अबिमन तुङ्गनै* नाळ्दॊरुम् तॆळिन्द शॆल्वनै* च्चेवगङ्गॊण्ड शॆङ्गण् माल् तिरु क्कोट्टियूर्* कुळिर्न्दुऱैगिन्ऱ गोविन्दन्* गुणम् पाडुवार् उळ्ळ नाट्टिनुळ्* विळैन्द दानियमुम् इराक्कदर्* मीदु कॊळ्ळगिल्लार्गळे॥८॥	रक्तिम आखों वाले सेनकनमल प्रभु तिरूकोट्टियूर में सरल हृदय सेल्व नांबी की सेवा स्वीकार हुए हैं। गोविंद नाम लेने वाले भक्तों के मध्य प्रभु आनंदित हैं। राक्षसगण भी इनके धान की फसल को क्षति नहीं पहुंचाते। **367**
कॊम्बिनार् पॊळिल्वाय्* क्कुयिलिनम् गोविन्दन् गुणम् पाडु शीर्* शॆम्पॊनार् मदिल् शूळ्* शॆळुङ्गळनि उडै त्तिरु क्कोट्टियूर्* नम्बनै नरशिङ्गनै* नविन्ऱेत्तुवार्गळै क्कण्ड क्काल्* एम्बिरान् तन् शिन्नङ्गळ्* इवर् इवर् एन्ऱाशैगळ् तीर्वने॥९॥	सम्यक सिंचित बागों से कोयल की कूक में गोविंद की प्रशस्ति सुनाई पड़ती है। पैदावार खेतों से घिरे, संरक्षित अटारियों वाले तिरूकोट्टियूर में भक्तगण विश्वास से नरसिंह भगवान का गुणगान करते हैं। ऐसे भक्तों के दर्शन से मन की सारी कामनाएं को पूर्ण करने वाले प्रभु के साक्षात प्रतिनिधि का दर्शन लाभ होता है। **368**

काशिन् वाय् क्करम् विर्किल्लुम्⋆ कऱ्वादु माट्टिलि शोऱिट्टु⋆ देश वाऱ्त्तै पडैक्कुम्⋆ वण्मैयिनार्गळ् वाळ् तिरु क्कोट्टियूर्⋆ केशवा ! पुरुडोत्तमा !⋆ किळर् जोदियाय् ! कुऱळा ! एन्ऱु⋆ पेशुवार् अडियार्गळ्⋆ एम् तम्मै विर्कवुम् पेऱुवार्गळे॥१०॥	अकाल की अवधि में जब मुट्ठीभर अन्न मूल्यवान मुद्रा के विनिमय से प्राप्त होता है तिरूकोट्टियूर के उदारमना निवासी अपने अन्न के भंडार को बिना छिपाये आगन्तुकों को भोजन देकर निरन्तर केशव, पुरोषत्तम, प्रभावान प्रभु, तथा त्रिविक्रम भगवान के गुणगान का आनन्द लेते हुए, बदले में कुछ भी प्राप्त होने की कोई आशा नहीं रखते। ऐसे लोगों के दासों को भी हमें बंधुआ मजदूर के रूप में रखने का पूर्ण अधिकार है। **369**
शीद नीर् पुडै शूळ्⋆ शेळुङ्गळनि उडै त्तिरु क्कोट्टियूर्⋆ आदियान् अडियारैयुम्⋆ अडिमैयिन्ऱि त्तिरिवारैयुम्⋆ कोदिल् पट्टर्पिरान्⋆ कुळिर् पुदुवैमन् विट्टुशित्तन् शोल्⋆ एदम् इन्ऱैप्पवर्गळ्⋆ इरुडीकेशनुक्काळरे॥११॥	श्रीविल्लीपुत्तुर के कलुष विहीन नाथ, विष्णुचित्त के ये दसक गीत, शीतल जल राशि एवं पैदावार खेतों से घिरे तिरूकोट्टियूर के प्रथम प्रभु के भक्तों के बारे में है, तथा वैसे लोगों के बारे मे भी है जो प्रभु की भक्ति की उपेक्षा कर पृथ्वी पर निरर्थक घूमते रहते हैं । इसके अत्रुटिपूर्ण पाठ से हृषीकेश के दास हो जाते हैं। **370** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं**

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

35 आशैवाय् (371- 380)

एल्लैयिल् मायनै एत्तुम् पेरू

(जो भगवान से नहीं जुड़े हैं उनके लिये परामर्श)

</td></tr>
<tr><td>

आशैवाय् च्चॆन्ऱ शिन्दैयर् आगि*
अन्नै अत्तन् एन् पुत्तिरर् बूमि*
वाश वार् कुऴलाळ् एन्ऱु मयङ्गि*
माळुम् एल्लैक्कण् वाय् तिऱवादे*
केशवा ! पुरुडोत्तमा ! एन्ऱुम्*
केऴल् आगिय केडिली ! एन्ऱुम्*
पेशुवार् अवर् एय्दुम् पॆरुमै*
पेशुवान् पुगिल् नम् परम् अन्ऱे॥१॥

</td><td>

ऐसे जन हैं जो मृत्यु काल में “मेरी मां, मेरे बाप, मेरी भूसंपत्ति, मेरी सुगंधमय बाल वाली पत्नि” आदि न कह कर “केशव, पुरूषोत्तम, निर्विकार वराह” आदि प्रभु का नाम लेते हैं। ऐसे लोगों की महत्ता के बारे में वर्णन करना मेरी बुद्धि के बाहर है। **371**

</td></tr>
<tr><td>

शीयिनाल् शॆऱिन्देऱिय पुण्मेल्*
शॆट्रल् एऱि क्कुऴम्बिरुन्दु* एङ्गुम्
ईयिनाल् अरिप्पुण्डु मयङ्गि*
एल्लैवाय् च्चॆन्ऱु शेर्वदन् मुन्नम्*
वायिनाल् नमो नारणा एन्ऱु*
मत्तगत्तिडै क्कैगळै क्कूप्पि*
पोयिनाल् पिन्नै इ त्तिशैक्कॆन्ऱुम्*
पिणै क्कॊडुक्किलुम् पोग वॊट्टारे॥२॥

</td><td>

जीवन के अंतिम क्षण में सड़े घाव से पीव बहे, शय्या के व्रण से रूग्न शरीर में कीड़े पड़ जायें, चींटी निस्सहाय काटते रहें,और मष्तिष्क मूर्छा से ग्रस्त रहे, ऐसी स्थिति आने के पहले दोनों हाथों को जोड़कर सिरपर रखें और “नमो नारायण” का उच्चारण करे। ऐसा करने से, मेरा यह पक्का वचन है कि ऊपर वर्णित स्थिति आयेगी ही नहीं। **372**

</td></tr>
<tr><td>

शोर्विनाल् पॊरुळ् वैत्तदुण्डागिल्*
शॊल्लु शॊल्लॆन्ऱु शुट्रुम् इरुन्दु*
आर् विनविलुम् वाय् तिऱवादे*
अन्द कालम् अडैवदन् मुन्नम्*
मार्वम् एन्बदोर् कोयिल् अमैत्तु*
मादवन् एन्नुम् दॆय्वत्तै नाट्टि*
आर्वम् एन्बदोर् पूविड वल्लार्क्कु*
अरव दण्डत्तिल् उय्यलुम् आमे॥३॥

</td><td>

अगर आपने धन अर्जित कर संग्रह किया है तो कुटुम्ब लोग पूछेंगे “ बताओ, बताओ” परन्तु स्मरण हीनता के कारण आप कुछ बोल नहीं सकेंगे। ऐसी स्थिति आने के पहले अपने हृदय मंदिर में माधव की स्थापना करो और स्नेह के फूलों से उनकी अर्चना करो। जो ऐसा कर सकते हैं, उनका यमदूत कुछ नहीं बिगाड़ सकते। **373**

</td></tr>
<tr><td>

मेल् एऴुन्ददोर् वायु क्किळर्न्दु*
मेल् मिडट्रिनै उळ् एऴ वाङ्गि*
कालुम् कैयुम् विदिर् विदिर्त्तेऱि*
कण् उऱक्कमदावदन् मुन्नम्*
मूलम् आगियॊट्रै एऴुत्तै*
मून्ऱु मात्तिरै उळ् एऴ वाङ्गि*
वेलै वण्णनै मेवुदिर् आगिल्*
विण्णगत्तिनिल् मेवलुम् आमे॥४॥

</td><td>

हर सांस के साथ छाती बैठेगी, अंग कांपेंगे, आंखें नाचकर बंद हो जायेंगी। ऐसी स्थिति आने के पहले एकाक्षर मंत्र ॐ का तीन घूंट पीते हुए अपना ध्यान सागर सा सलोने प्रभु पर लगाओ। जो ऐसा कर सकते हैं, उनको परमपद की प्राप्ति होगी। **374**

</td></tr>
<tr><td>

</td><td>

भरा हुआ मूत्रासय अनियंत्रित होकर मूत्र विसर्जित करेंगे। मुंह का पतला से पतला तरल भोजन कण्ठ को बन्द कर कपोल पर बहेगा और आंखे की पलकें बंद हो जायेंगी। अगर आप इन्द्रियों के

</td></tr>
</table>

मडि वळि वन्दु नीर् पुलन् शोर्⋆ वायिल् अट्टिय कञ्जियुम् मीण्डे⋆ कडैवळि वार क्कण्डम् अडैप्प⋆ कण् उरक्कमदावदन् मुन्नम्⋆ तोँडैवळि उम्मै नाय्गाळ् कवरा⋆ शूलत्ताल् उम्मै प्पाय्वदुम् शैय्यार्⋆ इडै वळियिल् नीर् कूरैयुम् इळवीर्⋆ इरुडीकेशन् एन्रेत्त वल्लीरेल्॥ ५ ॥	नियंता भगवान ह्यषीकेश का गुणगान करेंगे तो यम के कुत्ते कभी आपके जांघ नहीं काट खायेंगे तथा उनके दूत का भाला आपके शरीर को कभी छेद नहीं सकता । (परलोक के) मार्ग में आपको कोई नंगा नहीं कर सकेगा। **375**
अङ्गम् विट्टवै ऐन्दुम् अगढ़्⋆ आवि मूक्किनिल् शोदित्त पिन्नै⋆ शङ्गम् विट्टवर् कैयै मरित्तु⋆ पैयवे तलै शायप्पदन् मुन्नम्⋆ वङ्गम् विट्टुलवुम् कडर् पळ्ळि मायनै⋆ मदुशूदननै मार्बिल् तङ्ग विट्टुवैत्तु⋆ आवदोर् करुमम् शादिप्पार्क्कु⋆ एन्रुम् शादिक्कलामे॥ ६ ॥	जब पांच प्राण (वायु) शरीर छोड़ते रहेंगे तो आपके पास वाले आपके नाक के पास प्राण वायु की जांच करेंगे। अपना सन्देह दूर करते हुए वे अपना सिर शोक में झुका लेंगे। ऐसा होने के पूर्व ही सागरशायी अलौकिक प्रभु मधुसूदन को अपने हृदय में बिठा लेंगे तो निरन्तर उनके विग्रह स्वरूप की झांकी आपको मिलती रहेगी। **376**
तेँन्नवन् तमर् शैँप्पम् इलादार्⋆ शेवदक्कुवार् पोल प्पुगुन्दु⋆ पिन्नुम् वन् कयिट्राल् पिणित्तेँट्रि⋆ पिन् मुन् आग इळुप्पदन् मुन्नम्⋆ इन्नवन् इनैयान् एन्रु शोँल्लि⋆ एण्णि उळ्ळत्तिरुळ् अर नोक्कि⋆ मन्नवन् मदुशूदनन् एन्बार्⋆ वानगत्तु मन्राडिगळ् तामे॥ ७ ॥	यम के निष्ठुर दूत आकर मोटी रस्सी से बांधकर आपको पशु की तरह आगे पीछे घसीटते हुए ले जायेंगे। ऐसा होने के पूर्व ही जो प्रभु के पावन नाम एवं लीलागाथा का स्मरण करते हुए मधुसूदन नाम का उच्चारण करेंगे वे अपने हृदय के अंधकार को दूर करते हुए वैकुण्ठ में सेवा करने के प्रत्याशी हो जायेंगे। **377**
कूडि क्कूडि उट्रार्गळिरुन्दु⋆ कुट्रम् निर्क नट्रङ्गळ् परैन्दु⋆ पाडि प्पाडि ओर् पाडैयिल् इट्टु⋆ नरि प्पडैक्कोँरु पागुडम् पोले⋆ कोडि मूडि एडुप्पदन् मुन्नम्⋆ कौत्तुवम् उडै क्कोविन्दनोडु⋆ कूडि आडिय उळ्ळत्तर् आनाल्⋆ कुरिप्पिडम् कडन्दुय्यलुम् आमे॥ ८ ॥	कुटुम्ब जन एकत्र होकर आपके दुर्गुणों को भूलकर सद्गुणों की चर्चा करते हुए आपको घड़े के भीतर रखकर कपड़े से बन्द कर लोमड़ी के भोजन के रूप में छोड़ आयेंगे। ऐसा होने के पूर्व ही जो हृदय से गोविंद के नाम के गायन एवं नृत्य में सम्मिलित हो जायेंगे वे श्मसान से मुक्त होकर स्वछंद घूमेंगे। **378**
वायोँरु पक्कम् वाङ्गि वलिप्प⋆ वारन्द नीर् क्कुळि क्कणगळ् मिळट्र⋆ ताय् ओँरु पक्कम् तन्दै ओँरु पक्कम्⋆ तारमुम् ओँरु पक्कम् अलट्र⋆ ती ओरु पक्कम् शेर्वदन् मुन्नम्⋆ शैँङ्गण् मालोँडुम् शिर्क्कॅन च्चुट्रम् आय्⋆ ओँरु पक्कम् निर्क वल्लार्क्कु⋆ अरव तण्डत्तिल् उय्यलुम् आमे॥ ९ ॥	मुंह ऐंठ जायेगा, आंखे भीतर धंस कर लक्ष्य विहीन हो जायेंगी। एक तरफ मां, दूसरे तरफ पिता, एवं पैर के पास विलाप करती पत्नि के समक्ष चिताग्नि को प्रज्वलित कर दी जायेगी। ऐसा होने के पूर्व हीं जो रक्तिम आंखों वाले सेंकनमल प्रभु को अपने अतिप्रिय कुटुम्ब के रूप में ग्रहण कर संसार से अलग होकर रहेंगे वे मृत्यु की पीड़ा से मुक्त हो जायेंगे। **379**

<table>
<tr>
<td>‡शॆत्तु प्पोवदोर् पोदु निनैन्दु⋆
शॆय्युम् शॆय्गैगळ् देवपिरान् मेल्⋆
पत्तराय् इऱन्दार् पॆऱुम् पेट्रै⋆
पाळि त्तोळ् विट्टुशित्तन् पुत्तूर् क्कोन्⋆
शित्तम् नन्गॊरुङ्गि त्तिरुमालै⋆
शॆय्द मालै इवैपत्तुम् वल्लार्⋆
शित्तम् नन्गॊरुङ्गि त्तिरुमाल् मेल्⋆
शॆन्ऱ् शिन्दै पॆऱुवर् तामे॥१०॥</td>
<td>शक्तिशाली भुजाओं वाले विष्णु के भक्त श्रीविल्लीपुत्तुर के राजा विष्णुचित्त द्वारा हृदय को तिरूमल पर लगाकर ये दसक पद गाये गये हैं। इसकी कथावस्तु उनलोगों के बारे में है जो देवताओं के नाथ के भक्त के रूप में अंतिम क्षणों में क्या करते हैं तथा उनको कौन कौन से लाभ मिलते हैं। जो इनको कण्ठ कर लेंगे उनका हृदय तिरूमल प्रभु के प्रति आकर्षित हो जायेगा। 380

पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं</td>
</tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः **36 काशुम् करैयुडै (381-390)** **नारणनामम् तन्दमरक्कु इडुनलम्** (जो अपनी संताान का नाम प्रभु के अनेक नामों में से चुनकर नही रखते उनलोगों के लिये परामर्श)	
काशुम् करै उडै क्करैक्कुम्, अङ्गोर् कट्टैक्कुम् आशैयिनाल्, अङ्गवत्त प्पेर् इडुम्, आदर्गाळ्! केशवन् पेर् इट्टु, नीङ्गळ् तेनित्तिरुमिनो, नायगन् नारणन्, तम् अन्नै नरगम् पुगाळ्॥१॥	मूर्ख ! पैसा, रंगीन कपड़ा, एवं थोड़े से धान के अन्न के लिए अपने बच्चों को खोटा नाम रख देते हो। उनको केशव के नाम से पुकारो और आनन्द में रहो। नारायण प्रभु की अपनी मां कभी भी नरक नहीं जा सकतीं। **381**
अङ्गोरु कूरै, अरैक्कुडुप्पदन् आशैयाल्, मङ्गिय मानिड शादियिन्, पेर् इडुम् आदर्गाळ्!, शेङ्गण् नेडुमाल्!, शिरीदरा! एन्रळैत्तक्काल्, नङ्गैगाळ्! नारणन्, तम् अन्नै नरगम् पुगाळ्॥२॥	मूर्ख ! वहां जाकर नये साड़ी के लोभ में बच्चे का खोटा नाम रख देते हो।उनको श्रीधर एवं रक्तिम आंख नेडुमाल के नाम से पुकारो और इसी तरह से पुत्रियों के लिए भी नाम रखो। हमपर विश्वास करो, नारायण प्रभु की अपनी मां कभी भी नरक नहीं जा सकतीं। **382**
उच्चियिल् एण्णेयुम्, शुट्टियुम् वळैयुम् उगन्दु, एच्चम् पॉलिन्दीर्गाळ्!, एन् शेय्वान् पिरर् पेर् इट्टीर्, पिच्चै पुक्कागिलुम्, एम्बिरान् तिरुनाममे नच्चुमिन्, नारणन्, तम् अन्नै नरगम् पुगाळ्॥३॥	संतान वाली नारियां ! केवल तेल स्नान, ललाट के आभूषण, एवं कंगन के लिये उनको अन्य नाम क्यों रखती हो ? अगर भिक्षा पर भी रहना पड़े तो प्रभु के नाम को ही प्राथमिकता दो। नारायण प्रभु की अपनी मां कभी भी नरक नहीं जा सकतीं। **383**
मानिड शादियिल् तोन्रिट्टु, ओर् मानिड शादियै, मानिड शादियिन् पेर् इट्टाल्, मरुमैक्किल्लै, वान् उडै मादवा!, गोविन्दा! एन्रळैत्तक्काल्, नान् उडै नारणन्, तम् अन्नै नरगम् पुगाळ्॥४॥	मरणशील मां की मरणशील संतान मरणशील नाम से पुकारे जाने पर कभी भी मुक्ति के साधन नहीं हो सकते। उसको गोविन्द, वैकुण्ठ, माधव आदि नामों से पुकारो। मेरे नारायण प्रभु की अपनी मां कभी भी नरक नहीं जा सकतीं। **384**
मलम् उडै ऊत्तैयिल् तोन्रिट्टु, ओर् मल ऊत्तैयै, मलम् उडै ऊत्तैयिन् पेर् इट्टाल्, मरुमैक्किल्लै, कुलम् उडै क्कोविन्दा!, गोविन्दा! एन्रळैत्तक्काल्, नलम् उडै नारणन्, तम् अन्नै नरगम् पुगाळ्॥५॥	गंदगी से भरे शरीर का उद्‌भव गंदगी से भरे शरीर से होकर गंदगी से भरा नाम प्राप्त कर बाद में किसी काम का नहीं होगा। उसको उत्तम नाम “गोविन्द ए गोविन्द” से पुकारो। उत्तम प्रभु की अपनी मां कभी भी नरक नहीं जा सकतीं। **385**

नाडुम् नगरुम् अरिय॰ मानिड प्पेर् इट्टु॰ कूडि अळुङ्गि॰ क्कुळियिल् वीळ्न्दु वळुक्कादे॰ शाडिऱ प्पायन्द तलैवा!॰ दामोदरा! एन्ऱु नाडुमिन्॰ नारणन्॰ तम् अन्नै नरगम् पुगाळ्॥६॥	स्थानीय नगर एवं क्षेत्र की जानकारी से स्थानीय छोटा नाम देकर उसी गड्ढ़े में क्यों गिरते हो ? "शकट नाशक" "दामोदर" नामों से पुकार कर उत्तम स्थान प्राप्त करो। नारायण प्रभु की अपनी मां कभी भी नरक नहीं जा सकतीं। **386**
मण्णिल् पिऱन्दु मण् आगुम्॰ मानिड प्पेर् इट्टु॰ अङ्गु एण्णम् ऑन्ऱिन्ऱि इरुक्कुम्॰ एळै मनिशर्गाळ्!॰ कण्णुक्किनिय॰ करुमुगिल् वण्णन् नाममे नण्णुमिन्॰ नारणन्॰ तम् अन्नै नरगम् पुगाळ्॥७॥	बेचारे जन ! बिना सोंचे अपने बच्चों को जो मिट्टी से उत्पन्न हुए हैं और मिट्टी में मिल जायेंगे उन मरणशीलों का नाम क्यों देते हो ? सलोने घनश्याम नाम से पुकारो जो नयनों को सुख प्रदान करते हैं। नारायण प्रभु की अपनी मां कभी भी नरक नहीं जा सकतीं। **387**
नम्बि पिम्बि एन्ऱु॰ नाट्टु मानिड प्पेर् इट्टाल्॰ नम्बुम् पिम्बुम् एल्लाम्॰ नालु नाळिल् अळुङ्गि प्पोम्॰ शॅम्पॅरुन् तामरै क्कण्णन्॰ पेर् इट्टळैत्तक्काल्॰ नम्बिगाळ्! नारणन्॰ तम् अन्नै नरगम् पुगाळ्॥८॥	लोगजनों ! नांबी एवं पिंबी जैसे मरणशील नाम रखते हो जो चार दिन की चांदनी है। अपने बच्चों को राजीवनयन प्रभु के नामों से पुकारो। नारायण प्रभु की अपनी मां कभी भी नरक नहीं जा सकतीं। **388**
ऊत्तै क्कुळियिल्॰ अमुदम् पाय्वदु पोल्॰ उङ्गळ् मूत्तिर प्पिळ्ळैयै॰ एन् मुगिल् वण्णन् पेर् इट्टु॰ कोत्तु क्कुळैत्तु॰ क्कुणालम् आडि त्तिरिमिनो॰ ना त्तगु नारणन्॰ तम् अन्नै नरगम् पुगाळ्॥९॥	जैसे अमृत गंदे मुंह से लेने पर भी अमरता ही प्रदान करता है उसी तरह अपने नन्हे मूत्रस्त्रावी बालक का नाम भी सलोने घनश्याम का नाम रखो और उस नाम की आवृत्ति से गाओ, नाचो, एवं कूदो। नारायण प्रभु की अपनी मां कभी भी नरक नहीं जा सकतीं। **389**
शीर् अणि माल्॰ तिरुनाममे इड त्तेऱ्िय॰ वीर् अणि तॊल्पुगळ्॰ विट्टुशित्तन् विरित्त॰ ओर् अणि ऑण् तमिळ्॰ ऑन्बदोडॊन्ऱुम् वल्लवर्॰ पेर् अणि वैगुन्दत्तु॰ एन्ऱुम् पेणि इरुप्परे॥१०॥	साहसी एवं प्रसिद्ध विष्णुचित्त के ये मधुर दसक गीत बच्चों को तिरूमल प्रभु का ही नाम रखने की अनुशंसा करते हैं। जो इसे कंठ कर लेंगे वे शाश्वत रूप से उंचे वैकुण्ठ को प्राप्त करेंगे। **390** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

37 तङ्गैयै मूक्कुम् (391-401)

गङ्गै क्करैयिन् कण्डमन्नुन्दिरूप्पदि (देवप्रयाग की महत्ता)

तङ्गैयै मूक्कुम् तमैयनै त्तलैयुम् तडिन्द⋆ एम् दाशरति पोय्⋆ एङ्गुम् तन् पुगळा इरुन्दरशाण्ड⋆ एम् पुरुडोत्तमन् इरुक्कै⋆ गङ्गै गङ्गै एन्र वाशगत्ताले⋆ कडु विनै कळैन्दिडुगिर्कुम्⋆ गङ्गैयिन् करैमेल् कैदॊळ निन्र⋆ कण्डम् एन्नुम् कडिनगरे॥१॥	कण्डम का सुन्दर एवं पूजनीय नगर गंगा के किनारे अवस्थित है जिसके नाम के स्मरण से सभी कर्मो का क्षय हो जाता है। यह दशरथ के पुत्र हमारे प्रभु पुरोषत्तम का निवास है जो बहन की नाक एवं भाई के सिर काट दिये थे। उनका राजशासन यशस्वी एवं लंबी अवधि का रहा है। **391**
शलम् पॊदि उडम्बिन् तळल् उमिळ् पेळ्वाय्⋆ च्चन्दिरन् वॆङ्गदिर् अञ्ज⋆ मलरन्दॆळुन्दणवि मणिवण्ण उरुविन्⋆ माल् पुरुडोत्तमन् वाळ्वु⋆ नलम् तिगळ् शडैयान् मुडिक्कॊन्रै मलरुम्⋆ नारणन् पाद तुळायुम्⋆ कलन्दिळि पुनलाल् पुगर् पडुगङ्गै⋆ क्कण्डम् एन्नुम् कडिनगरे॥२॥	कण्डम का सुन्दर नगर गंगा के किनारे अवस्थित है जिसके तरंगों में जटाधारी शिव के सिर से कोन्रै फूल, एवं नारायण के चरण कमल से तुलसी प्रवाहित होते दिखते हैं। यह नीलमणि सा सलोने हमारे प्रभु पुरोषत्तम का निवास है जो जब वृहत शरीर से अंतरिक्ष को छू रहे थे तो बर्फ से पूर्ण चंद्रमा एवं अग्नि किरणों वाले सूर्य डर से सहम गये थे। **392**
अदिर् मुगम् उडैय वलम्बुरि कुमिळ्त्ति⋆ अळल् उमिळ् आळि कॊण्डॆरिन्दु⋆ अङ्गु एदिर् मुग अशुरर् तलैगळै इडरुम्⋆ एम् पुरुडोत्तमन् इरुक्कै⋆ शदुमुगन् कैयिल् शदुप्पुयन् ताळिल्⋆ शङ्करन् शडैयिनिल् तङ्गि⋆ कदिर् मुगमणि कॊण्डिळि पुनल् गङ्गै⋆ कण्डम् एन्नुम् कडिनगरे॥३॥	कण्डम का सुन्दर नगर गंगा के किनारे अवस्थित है जिसका जल त्रिविक्रम प्रभु के चरणों को धोते समय ब्रह्मा के हाथों से निकल कर शिव की जटाओं से प्रवाहित होते हुए पथ के प्रकाशमान मणियों को धोते हुए नीचे आयी है। यह प्रभु पुरोषत्तम का निवास है जो गंभीर आवाज करने वाले शंख एवं तेजोमय चक्र को धारण कर दुष्ट असुरों का नाश करते हैं। **393**
इमैयवर् इरुमान्दिरुन्दरशाळ⋆ एट्टवर्न्दॆदिर् पॊरु शेनै⋆ नमवुरम् नणुग नान्दगम् विशिरुम्⋆ नम् पुरुडोत्तमन् नगर् तान्⋆ इमवन्दम् तॊडङ्गि इरुङ्गडल् अळवुम्⋆ इरु करै उलगिरैत्ताड⋆ कमै उडै प्पॆरुमै क्कङ्गैयिन् करैमेल्⋆ कण्डम् एन्नुम् कडिनगरे॥४॥	कण्डम का सुन्दर नगर गंगा के किनारे अवस्थित है जिसका जल हिमालय से समुद्रतक प्रवाहित होकर अपने दोनों किनारों पर स्नान करनेवालों के पूर्व कर्म के दोष से निवारण करते हुए धर्म यात्रियों को सदा आकर्षित करते रहता है। यह प्रभु पुरोषत्तम का निवास है जो नंदक खड्ग से देवताओं के शासन का विरोध करने वाले असुरों की सेना का नाश करते हैं। **394**
उळुवदोर् पडैयुम् उलक्कैयुम् विल्लुम्⋆ ऒण् शुडर् आळियुम् शङ्गुम्⋆ मळुवॊडु वाळुम् पडैक्कलम् उडैय⋆ माल् पुरुडोत्तमन् वाळ्वु⋆ एळुमैयुम् कूडि ईण्डिय पावम्⋆ इरै प्पॊळुदळविनिल् एल्लाम्⋆ कळुविडुम् पॆरुमै क्कङ्गैयिन् करैमेल्⋆ कण्डम् एन्नुम् कडिनगरे॥५॥	कण्डम का सुन्दर नगर गंगा के किनारे अवस्थित है जिसका जल स्नान करनेवालों को सात पूर्व जन्मों के कर्मदोष से क्षण में निवारण करता है।यह प्रभु पुरोषत्तम का निवास है जो हल, गदा, धनुष, तेजोमय चक्र, शंख,कुल्हाड़ी एवं खड्ग आयुधों के रूप में धारण करते हैं। **395**

<table>
<tr><td>तलैप्पॆय्दु कुमुरि च्चलम् पॊदि मेगम्⋆
शलशल पॊऴिन्दिड क्कण्डु⋆
मलै प्पॆरुम् कुडैयाल् मरैत्तवन् मदुरै⋆
माल् पुरुडोत्तमन् वाऴ्वु⋆
अलैप्पुडै त्तिरैवाय् अरुन्दव मुनिवर्⋆
अवपिरदम् कुडैन्दाड⋆
कलप्पैगळ् कॊऴिक्कुम् गङ्गैयिन् करैमेल्⋆
कण्डम् एन्नुम् कडिनगरे ॥ ६ ॥</td><td>कण्डम का सुन्दर नगर गंगा के किनारे अवस्थित है जिसके जल में महर्षिगण अग्नि-यज्ञ के पूर्णांत स्नान कर इसमें प्रवाहित लकड़ियों को अगले यज्ञ के आहूति करने वाले कलछा के रूप में उपयोग करने के लिए छानलाते हैं। यह प्रभु पुरोषत्तम का निवास है जो मथुरा के नाथ हैं और गर्जन भरें बादलों की अनवरत वृष्टि से रक्षा करने हेतु पर्वत को छाते के रूप में धारण कर लिये थे। **396**</td></tr>
<tr><td>विर् पिडित्तिरुत्तु वेळत्तै मुरुक्कि⋆ मेल् इरुन्दवन् तलै शाडि⋆
मर् पॊरुदॆळ प्पायन्दरैयनै उदैत्त⋆ माल् पुरुडोत्तमन् वाऴ्वु⋆
अर्बुदम् उडैय ऐरावत मदमुम्⋆ अवर् इळम्पडियर् ऒण् शान्दुम्⋆
कर्पग मलरुम् कलन्दिऴि गङ्गै⋆ क्कण्डम् एन्नुम् कडिनगरे ॥ ७ ॥</td><td>कण्डम का सुन्दर नगर गंगा के किनारे अवस्थित है जिसके जल में ऐरावत का मदस्त्राव एवं स्वर्ग के युवती देवियों के वदन का चन्दनलेप तथा उनके जूड़ा के कल्पक फूल मिश्रित होकर प्रवाहित होते हैं। यह प्यारे प्रभु पुरोषत्तम का निवास है जो धनुष को तोड़ते हुए हाथी तथा उसके महावत के शिर को एंठ कर फेंक दिये ; पहलवानों का बध कर राजा पर कूदते हुए उसका नाश कर दिये। **397**</td></tr>
<tr><td>तिरै पॊरु कडल् शूऴ् तिण्मदिल् तुवरै
वेन्दु⋆ तन् मैत्तुनन् मार्क्काय्⋆
अरशिनै अविय अरशिनै अरुळुम्⋆
अरि पुरुडोत्तमन् अमर्वु⋆
निरै निरैयाग नॆडियन यूबम्⋆
निरन्तरम् ऒऴुक्कु विट्टु⋆ इरण्डु
करै पुरै वेळ्वि प्पुगै कमऴ् गङ्गै⋆
कण्डम् एन्नुम् कडिनगरे ॥ ८ ॥</td><td>कण्डम का सुन्दर नगर गंगा के किनारे अवस्थित है जिसके किनारों पर गायों को बांधने वाले लकड़ी के खूंटों का जाल फैला है तथा अग्नि बेदी से उठते धुंआ फैला हुआ है।यह हमारे प्रभु पुरोषत्तम का निवास है जो पश्चिम समुद्र पर किलाओं से आवृत द्वारकाधीश हैं और जिन्होंने दुर्योधन का नाश कर राज्य अपने संबधियों पांडवों को दे दिया। **398**</td></tr>
<tr><td>वड दिशै मदुरै शाळक्किरामम्⋆ वैगुन्दम् तुवरै अयोत्ति⋆
इडम् उडै वदरि इडवगै उडैय⋆ एम् पुरुडोत्तमन् इरुक्कै⋆
तडवरै अदिर त्तरणि विण्डिडिय⋆ त्तलैप्पढि क्करै मरम् शाडि⋆
कडलिनै क्कलङ्ग क्कडुत्तिऴि गङ्गै⋆ क्कण्डम् एन्नुम् कडिनगरे ॥ ९ ॥</td><td>कण्डम का सुन्दर नगर गंगा के किनारे अवस्थित है जिसके तेज प्रवाह से पहाड़ टूट जाते हैं, पृथ्वी फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाती है, पेड़ उखड़कर डूबते हुए बह जाते हैं,तथा समुद्र सा दृश्य दिखता है। यह हमारे प्रभु पुरोषत्तम का निवास है जो उत्तर के मथुरा, शालग्राम, वैकुंठ, द्वारिका, अयोध्या, तथा बदरी के नाथ हैं। **399**</td></tr>
<tr><td>मून्ऱॆऴुत्तदनै मून्ऱॆऴुत्तदनाल्⋆
मून्ऱॆऴुत्ताक्कि⋆ मून्ऱॆऴुत्तै
एन्ऱु कॊण्डिरुप्पार्क्किरक्कम् नन्गुडैय⋆
एम् पुरुडोत्तमन् इरुक्कै⋆
मून्ऱडि निमिर्त्तु मून्ऱिनिल् तोन्ऱि⋆
मून्ऱिनिल् मून्ऱुरुवानान्⋆
कान् तडम्पॊऴिल् शूऴ् गङ्गैयिन् करैमेल्⋆
कण्डम् एन्नुम् कडि नगरे ॥ १० ॥</td><td>कण्डम का सुन्दर नगर गंगा के किनारे सुगंधित बागों के बीच अवस्थित है। तीन वर्ण अ ऊ म निरूक्त के तीन वर्णों से ॐ हो जाता है। ॐ के तीनों वर्णो पर ध्यान करने से तथा नमो नारायणाय के विस्तार से आत्मा के तीन पक्षों का तीन रूप में प्रकट होने वाले सर्वव्याप्त प्रभु के साथ तीन संबंध बन जाते हैं।**400**</td></tr>
</table>

‡पोँङ्गोँलि गङ्गै क्करै मलि कण्डत्तु⋆ उरै पुरुडोत्तमन् अडिमेल्⋆ वेँङ्गलि नलिया विल्लिपुत्तूर् क्कोन्⋆ विट्टुशित्तन् विरुप्पुट्टु⋆ तङ्गिय अन्बाल् शेँय्द तमिळ् मालै⋆ तङ्गिय ना उडैयार्क्कु⋆ गङ्गैयिल् तिरुमाल् कळलिणै क्कीळे⋆ कुळित्तिरुन्द कणक्कामे॥११॥	कलि के प्रभाव से अक्षुण्ण श्रीविल्लीपुत्तुर वाले विष्णुचित्त के ये मधुर गीतमाला तेज प्रवाहवाली गंगा के किनारे स्थित कण्डम नगरवासी पुरोषत्तम प्रभु की अनवरत गहरे स्नेह से की गयी चरण बन्दना है। जो इसका पाठ करेंगे उनको गंगा स्नान कर तिरूमल प्रभु के चरणों की अर्चना का फल प्राप्त होगा। **401** **पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

38 मादवत्तोन् (402 - 411)

तिरूवरंग त्तिरूप्पदि

(श्रीरगम् की गाथा 1)

मा तवत्तोन् पुत्तिरन् पोय्⋆ मऱिगडल्वाय् माण्डानै⋆ ओदुवित्त तक्कणैया⋆ उरुवुरुवे कॊडुत्तान् ऊर्⋆ तोदवत्ति त्तूय् मऱैयोर्⋆ तुऱैपडिय त्तुळुम्बि एङ्गुम्⋆ पोदिल् वैत्त तेन् शॊरियुम्⋆ पुनल् अरङ्गम् एन्बदुवे॥१॥	सात्विक वैदिक ऋषियों द्वारा कावेरी में स्नान करने के फलस्वरूप प्रवाह उद्वेलित होकर श्रीरंगम (तिरू अरंगम) के जल वाले कमल से अमृत पराग बिखेरते हुए सुन्दर वस्त्रावरण का दृश्य उपस्थित करता है। यह प्रभु कृष्ण का निवास है जिन्होंने अपनी शिक्षा की दक्षिणा में गुरू संदीपनी को समुद्र में खोये उनके पुत्र को यथावत जीवित लाकर सौंप दिया था। **402**
पिऱप्पगत्ते माण्डॊऴिन्द⋆ पिळ्ळैगळै नाल्वरैयुम्⋆ इऱै प्पॊळुदिल् कॊणर्न्दु कॊडुत्तु⋆ ऒरुप्पडित्त उऱैप्पन् ऊर्⋆ मऱै प्पॆरुन् ती वळर्त्तिरुप्पार्⋆ वरुविरुन्दै अळित्तिरुप्पार्⋆ शिऱप्पुडैय मऱैयवर् वाळ्⋆ तिरुवरङ्गम् एन्बदुवे॥२॥	यज्ञाग्नि में हवन करने वाले यशस्वी एवं सात्विक वैदिक ऋषिगण अनपेक्षित अतिथियों को सम्मान पूर्वक भोजन कराते हुए तिरू अरंगम में रहते हैं। यहां वही प्रभु हैं जिन्होंने सूत गृह में ही मरने वाले नवजात चार शिशुओं को क्षण भर में लाकर उनके माता पिता को सुपुर्द कर दिया था। **403**
मरुमगन् तन् शन्दतियै⋆ उयिर्मीट्टु मैत्तुनन्मार्⋆ उरुमगत्ते वीळामे⋆ कुरुमुगमाय् क्कात्तान् ऊर्⋆ तिरुमुगमाय् च्चॆङ्गमलम्⋆ तिरुनिऱमाय् क्करुङ्गुवळै⋆ पॊरु मुगमाय् निन्ऱलरुम्⋆ पुनल् अरङ्गम् एन्बदुवे॥३॥	तिरू अरंगम के जल में प्रभु के मुखमंडल की लालिमा के समान लाल कमल एवं उनके सांवले सलोने वदन के समान कुमुद परस्पर घर्षण करते हुए सघन रूप से पाये जाते हैं। यहां वही प्रभु हैं जिन्होंने अपने भतीजे अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को पुनर्जीवित कर दिया था तथा अपनी बहन के पति पांडवों को युद्धक्षेत्र में गुरू की तरह मार्गप्रदर्शन करते संरक्षण प्रदान किया था। **404**
कून् तॊळुत्तै शिदगुरैप्प⋆ क्कॊडियवळ् वाय् क्कडियशॊल् केट्टु⋆ ईन्ऱॆडुत्त तायरैयुम्⋆ इराच्चियमुम् आङ्गॊळिय⋆ कान् तॊडुत्त नॆऱि पोगि⋆ क्कण्डगरै क्कळैन्दान् ऊर्⋆ तेन् तॊडुत्त मलर् च्चोलै⋆ त्तिरुवरङ्गम् एन्बदुवे॥४॥	अमृतमय फूलों के बाग तिरू अरंगम को चतुर्दिक आवृत्त किये हुए हैं। यहां वही प्रभु हैं जिन्होंने कुब्जा के दुर्वचन एवं रानी के निष्ठुर होठ के शब्दों के कारण घरवार एवं राज्य छोड़ कर वन वास को चले गये थे। **405**

पॆरुवरङ्गळ् अवै पट्रि⋆ प्पिळक्कुडैय इरावणनै⋆ उरुवरङ्ग प्पॊरुदळित्तु⋆ इव्वुलगिनै क्कण्पॆरुत्तान् ऊर्⋆ कुरवरुम्ब क्कोङ्गलर⋆ क्कुयिल् कूवुम् कुळिर् पॊळिल् शूळ्⋆ तिरुवरङ्गम् ऎन्बदुवे⋆ ऎन् तिरुमाल् शेर्विडमे॥५॥	तिरू अरंगम, जगतपति तिरूमल के नाथ का आवास है जिन्होंने राक्षसों के राजा रावण का नाश इसलिये किया कि उसने अपने प्राप्त वरदान का दुरूपयोग कर घृणित कार्य में संलिप्त हुआ। यहां के शीतल बागों में दिनभर कोयल की कूक सुनाई पड़ती है तथा कुरूवा वृक्ष पर कलियों का, एवं कौंगु के वृक्ष से फूलों का बौछार देखा जाता है। **406**
कीळ् उलगिल् असुरर्गळै⋆ क्किळङ्गिरुन्दु किळरामे⋆ आळिविडुत्तवरुडैय⋆ करुवळित्त अळिप्पन् ऊर्⋆ ताळै मडल् ऊडुरिञ्जि⋆ त्तवळ वण्ण प्पॊडि अणिन्दु⋆ याळिन् इशै वण्डिनङ्गळ्⋆ आळम् वैक्कुम् अरङ्गमे॥६॥	फूलों एवं फलों से लदे वृक्षों पर घर्षण करते भौंरा गन परागों से लिपटे हुए ऐसे वाद्ययंत्रों की ध्वनि उत्पन्न करते हैं जैसे लगता है तिरू अरंगम के उस प्रभु का जिन्होंने पाताल लोक के असुर समूहों का नाश अपने चक्र के प्रयोग से किया था, विजयोत्सव अलत्ति के गायन से मना रहे हैं।**407**
कॊळुप्पुडैय शॆळुङ्गुरुदि⋆ कॊळित्तिळिन्दु कुमिळ्त्तॆऱिय⋆ पिळक्कुडैय अशुरर्गळै⋆ प्पिणम् पडुत्त पॆरुमान् ऊर्⋆ तळुप्परिय शन्दनङ्गळ्⋆ तडवरै वाय् ईर्त्तु क्कॊण्डु⋆ तॆळि प्पुडैय काविरि वन्दु⋆ अडिदॊळुम् शीर् अरङ्गमे॥७॥	कावेरी नदी अपने पर्वतीय उद्गम स्थल से चंदन के पेड़ों को निम्न स्वर के भजन की आवाज की तरह बहा कर तिरू अरंगम के प्रभु के चरणों पर समर्पित करती है। जब प्रभु ने संसार को प्रताड़ित करने वाले असुरों के मृतशरीर का ढेर लगा दिया था तो उस समय उनके खून फेनयुक्त फव्वारों की तरह बह रहे थे। **408**
वल् ऎयिट्रु क्केळलुमाय्⋆ वाळ् ऎयिट्रु च्चीयमुमाय्⋆ ऎल्लै इल्ला त्तरणियैयुम्⋆ अवुणनैयुम् इडन्दान् ऊर्⋆ ऎल्लियम् पोदिरुञ्जिऱै वण्डु⋆ ऎम्पॆरुमान् गुणम् पाडि⋆ मल्लिगै वॆण्शङ्गूदुम्⋆ मदिल् अरङ्गम् ऎन्बदुवे॥८॥	दीवारों से घिरे तिरू अरंगम नगर के प्रभु की संध्या काल की प्रशस्ति में दो पंखवाले भृंगी चमेली के श्वेत शंखों की तरह ध्वनि करते दिखते हैं। यह हमारे प्रभु का निवास है जो एकबार वृहत वराह के रूप में अपने दाढ़ों पर पृथ्वी को तथा दूसरी बार श्वेत दांतों के साथ नृसिंह के रूप में हिरण्यकशिपु को आसानी से उठा लिये थे। **409**
कुन्ऱाडु कॊळु मुगिल् पोल्⋆ कुवळैगळ् पोल् कुरै कडल् पोल्⋆ निन्ऱाडु कणमयिल् पोल्⋆ निऱम् उडैय नॆडुमाल् ऊर्⋆ कुन्ऱुडु पॊळिल् नुळैन्दु⋆ कॊडि इडैयार् मुलै अणवि⋆ मन्ऱुडु तॆन्ऱल् उलाम्⋆ मदिल् अरङ्गम् ऎन्बदुवे॥९॥	पर्वतीय बागों से बहने वाली मंद सुखद बायु कृशकटि बालाओं के मध्य बहती हुई दीवारों से घिरे तिरू अरंगम नगर के वीथियों से गुजरती है। यह हमारे प्रभु का निवास है जो घनश्याम, नीले कुमुद, नील सागर, एवं नृत्यशील नीले पंख वाले मोर सा सलोने हैं। **410**

‡परु वरङ्गळ् अवैपढ़ि* प्पडैयालित्तॆळुन्दानै* शॆरुवरङ्ग प्पॊरुदळित्त* तिरुवाळन् तिरुप्पदि मेल्* तिरुवरङ्ग त्तमिळ् मालै* विट्टुशित्तन् विरित्तन कॊण्डु* इरुवर् अङ्गम् ऎरित्तानै* एत्त वल्लार् अडियोमे॥१०॥	विष्णुचित्त के ये दसक पद, उस तिरू अरंगम की प्रशस्ति गान करते हैं,जहां वर के मद से चूर रावण का तथा युगल राक्षस मधु एवं कैटभ का अपने चक्र से नाश करने वाले प्रभु का निवास है। **411** पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

39 मरवडियै (412 - 422)

तिरूवरंग तिरूप्पदि - 2

(श्रीरगम् की गाथा 2)

मरवडियै त्तम्पिक्कु वान्पणैयम् वैत्तुप्पोय्⋆ वानोर् वाळ⋆ शेरुडैय तिशैक्करुमम् तिरुत्ति वन्दुलगाण्ड⋆ तिरुमाल् कोयिल् तिरुवडि तन् तिरुवुरुवुम्⋆ तिरुमङ्गै मलर् कण्णुम् काट्टि निन्ऱु⋆ उरुवुडैय मलर् नीलम् काट्टाट्ट⋆ ओशलिक्कुम् ऑळि अरङ्गमे॥१॥	सुखद मंद हवा में झूमते हुए नीला कुमुद तिरू अरंगम रूपी तेजोमय मंदिर के तिरूमल रंगनाथ प्रभु के सलोने नीले वदन तथा माता रंगनायकी की नीली आंखों के सौंदर्य का दर्शन कराते हैं। प्रभु ने अपना पादुका छोटे भाई भरत को लौट कर आने की प्रतिज्ञा के प्रमाण स्वरूप दिया। देवताओं को राहत प्रदान करने हेतु दक्षिण जाकर आपने कठिन कार्य संपादित किया तथा पुनः लौटकर संसार पर शासन किया। **412**
तन् अडियार् तिऱत्तगत्तु⋆ तामरैयाळ् आगिलुम् शिदगुरैक्कुमेल्⋆ एन् अडियार् अदु शेय्यार्⋆ शेय्दारेल् नन्ऱु शेय्दार् एन्बर् पोलुम्⋆ मन् उडैय विबीडणर्काय्⋆ मदिल् इलङ्गै त्तिशै नोक्कि मलर्कण् वैत्त⋆ एन्नुडैय तिरुवरङ्गर्कन्ऱियुम्⋆ मट्रॊरुवरक्काळ् आवरे॥२॥	सौम्य विभीषण के कल्याण हेतु, सुखद शयनावस्था वाले प्रभु दक्षिण की ओर देखते हुए सुरक्षित लंका पर अपनी दृष्टि रखे हुए हैं। अगर माता लक्ष्मी किसी भक्त के बारे में कुछ विपरीत बात भी बतातीं तो भगवान कहते “हमारे भक्त कभी इस तरह का काम नहीं करेंगे और अगर किया है तो अच्छा ही किया है।” क्या कोई तिरू अरंगम के प्रभु को छोड़कर कोई अन्य की शरण लेगा ? **413**
करुळ् उडैय पॊळिल् मरुदुम्⋆ कद क्कळिरुम् पिलम्बनैयुम् कडिय मावुम्⋆ उरुळ् उडैय शगडरैयुम् मल्लरैयुम्⋆ उडैय विट्टोशै केट्टान्⋆ इरुळ् अगट्रुम् एरि कदिरोन्⋆ मण्डलत्तूडेट्रि वैत्तेणि वाङ्गि⋆ अरुळ् कॊडुत्तिट्टडियवरै⋆ आट्कॊळ्वान् अमरुम् ऊर् अणि अरङ्गमे॥३॥	तिरू अरंगम के प्रभु ने दुष्ट अर्जुन के वृक्ष, गुस्सैल हाथी, प्रलंबासुर, दुर्दांत केशिन घोड़ा, जानलेवा गाड़ी और शक्तिशाली मलयोद्धाओं का नाश उसतरह किया जैसे वे घड़े को फोड़कर आवाज सुनने में आनंद लिया करते थे।आप भक्तों को नहीं लौटने वाली लंबी सीढ़ी से उर्ध्व गति प्रदान कर तेजोमय सूर्य के क्षेत्र में ले जाते हैं तथा अपना स्वरूप दिखाकर उसे वैकुण्ठ में अपनी सेवा में ले जाते हैं। **414**

पदिनाऱाम् आयिरवर्⋆ देविमार्
    पणिशॆय्य तुवरै एन्नुम्⋆
अदिल् नायकरागि वीट्रिरुन्द⋆
    मणवाळर् मन्नु कोयिल्⋆
पुदु नाळ् मलर् क्कमलम्⋆ एम्पॆरुमान्
    पॊन् वयिट्रिल् पूवे पोल्वान्⋆
पॊदु नायकम् बावित्तु⋆ इरुमान्दु
    पॊन् शायक्कुम् पुनलरङ्गमे॥ ४ ॥
	द्वारका के मनोरम दूल्हा सोलह हजार रानियों के नाथ एवं पतिदेव हैं। आप तिरू अरंगम में निवास करते हैं जहां के जलाशयों में अन्य फूलों को मलिन करता हुआ नित्य ताजा कमल खिलते हैं और ये सर्वोत्तम होने का गर्व करते हुए प्रभु के नाभि से निकले सुनहला कमल की समानता करते हैं। **415**

आमैयाय् क्कङ्गैयाय्⋆ आऴ्
    कडलाय् अवनियाय् अरु वरैगळाय्⋆
नान्मुगनाय् नान्मऱैयाय्⋆
    वेळ्वियाय् त्तक्कणैयाय् त्तानुम् आनान्⋆
शेमम् उडै नारदनार्⋆ शॆन्ऱु
    शॆन्ऱु तुदित्तिऱैञ्ज क्किडन्दान् कोयिल्⋆
पू मरुवि प्पुळ् इनङ्गळ्⋆ पुळ्
    अरैयन् पुगऴ् कुळऱुम् पुनल् अरङ्गमे॥ ५ ॥
	जब नारद जी ने एक बार गंगा में स्नान कर एक कछुआ की प्रशंसा की तो कछुआ ने गंगा की ओर संकेत करते हुए उसकी प्रशंसा की। गंगा ने सागर की प्रशंसा की, सागर ने पृथ्वी की, पृथ्वी ने पर्वत की, पर्वत ने चार मुख वाले ब्रह्मा की, ब्रह्मा ने चारों वेद की, वेद ने अग्नि यज्ञ की, तथा यज्ञ ने प्रभु की श्रद्धापूर्ण अर्चना एवं स्नेह भरी दक्षिणा की प्रशंसा की। प्रभु आप ऐसे तिरू अरंगम में रहते हैं जहां हंसगण कमल से उत्पलावित जलाशयों से मधुर ध्वनि में पक्षीराज गरूड़ की प्रशंसा करते हैं। **416**

मैत्तुनन्मार् कादलियै मयिर्⋆
    मुडिप्पित्तवर्गळैये मन्नर् आक्कि⋆
उत्तरै तन् शिऱुवनैयुम् उय्यक्कॊण्ड⋆
    उयिराळन् उऱैयुम् कोयिल्⋆
पत्तर्गळुम् पगवर्गळुम्⋆
    पऴमॊऴिवाय् मुनिवर्गळुम् परन्द नाडुम्⋆
शित्तर्गळुम् तॊऴुदिऱैञ्ज⋆ त्तिशै
    विळक्काय् निर्किन्ऱ तिरुवरङ्गमे॥ ६ ॥
	सवके प्राणाधार प्रभु ने पांडवो को राज दिलवाकर द्रौपदी की जूड़ा बांधने की प्रतिज्ञा पूरी करायी जो उसने दुर्योधन के बहते खून से बांधने के लिये संकल्प लिया था। आप ही प्रभु ने अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित के खाक सा जले हुए शरीर को अपने चरण से छू कर जीवित कर दिया। आप तिरू अरंगम के मन्दिर में विराजमान हैं। आप चतुर्दिक प्रकाश करने वाले दीप हैं तथा आपकी पूजा भक्तगण, साधु लोग, वैदिक ऋषिगण, सिद्धगण, तथा संसार के सब लोग करते हैं। **417**

कुरळ् पिरमशारियाय्⋆ मावलियै कुरुम्बदक्कि अरशुवाङ्गि⋆ इरै प्पॉळिदिल् पाताळम् कलविरुक्कै⋆ कॉडुत्तुगन्द एम्मान् कोयिल्⋆ एरिप्पुडैय मणिवरैमेल्⋆ इळञायिरॆळुन्दार् पोल् अरवणैयिन् वाय्⋆ शिरप्पुडैय पणङ्गळ् मिशै⋆ शॆळु मणिगळ् विट्टॆरिक्कुम् तिरुवरङ्गमे॥७॥	मावलि (महाबली) के पास वामन के रूप में जाकर प्रभु ने उसके अभिमान को चूर कर क्षण भर में उसे पाताल का राज दे दिया। आप स्वेच्छा से तिरू अरंगम में रहते हैं। आपके अनंत नाग के फनों की मणियां ऐसे चमकती हैं जैसेकि पर्वतों पर अनेक उदयकालीन सूर्य उग आये हों। **418**
उरम् पट्रि इरणियनै⋆ उगिर् नुदियाल् ऑळ्ळिय मार्वुरैक्क ऊन्रि⋆ शिरम् पट्रि मुडि इडिय क्कण् पिदुङ्ग⋆ वाय् अलर् त्तॆळित्तान् कोयिल्⋆ उरम् पॆट्र मलर् क्कमलम्⋆ उलगळन्द शेवडि पोल् उयर्न्दु काट्ट⋆ वरम्बुट्र कदिर्च्चॆन्नॆल्⋆ ताळ् शाय्त्तु त्तलै वणक्कुम् तण् अरङ्गमे॥८॥	पृथ्वी को मापने वाले प्रभु के चरण की तरह तिरू अरंगम में कमल के फूल उठते हैं।बढ़े हुए धान के पौधे अपने सुनहले बालियों से झुककर मावली की तरह कमल के फूलों का अभिवादन करते हैं। यहां उस प्रभु का मन्दिर है जिन्होंने अपने तीक्ष्ण नखपंजरों से हिरण्य की छाती को चीर डाला और जब उसके मस्तक को आपने पकड़ा तो उसका मुकुट गिर पड़ा, आंखें बाहर निकल गयीं, तथा वह मुख से चीत्कार करने लगा। **419**
तेवुडैय मीनमाय् आमैयाय्⋆ एनमाय् अरियाय् क्कुरळुम् आगि⋆ मूवुरुविल् इरामनाय्⋆ क्कण्णनाय् कर्कियाय् मुडिप्पान् कोयिल्⋆ शेवलॊडु पॆडै अन्नम्⋆ शॆङ्गमल मलर् एरि ऊशल् आडि⋆ पूवणैमेल् तुदैन्दॆळु⋆ शॆम्पॊडि आडि विळैयाडुम् पुनल् अरङ्गमे॥९॥	तिरू अरंगम के जलाशय में कमल के फूलों पर बैठे हंस एवं हंसिनी फूलों की शय्या पर झूला झूलते हुए एक दूसरे को आलिंगन करते तथा कमल का पराग सिन्दूर की भांति उनके शरीर से लिपट जाता। यहां उस प्रभु का मन्दिर है जिन्होंने मत्स्य, कच्छप, सूकर, सिंह, वामन, तीनों राम (प्रशुराम, राम, बलराम) तथा कृष्ण के रूप में अवतार लिया और अंततः कल्कि अवतार लेंगे। **420**
शॆरुवाळुम् पुळ्ळाळन् मण्णाळन्⋆ शॆरुच्चॆय्युम् नान्दगम् एन्नुम् ऑरु वाळन्⋆ मरैयाळन् ओडाद पडैयाळन्⋆ विळुक्कै याळन्⋆ इरवाळन् पगल् आळन् एन्नै आळन्⋆ एळुलग प्पॆरुम् पेराळन्⋆ तिरुवाळन् इनिदाग⋆ त्तिरुक्कण्गळ् वळर्गिन्र तिरुवरङ्गमे॥१०॥	तिरू अरंगम के मंदिर में शयनावस्था वाले प्रभु श्री पति हैं तथा भयंकर गरूड़ की सवारी करते हैं। आप पृथ्वी के नाथ हैं, नंदक खड्ग को धारण करने वाले हैं, वेदों के सार हैं, देवसेना के अध्यक्ष हैं, उदार हैं, दिन रात के नियंता हैं, तथा हमारे प्रभु सातों जगत के नाथ हैं। **421**

‡कैन्नागत्तिडर् कडिन्द⋆ कनल् आऴि प्पडै उडैयान् करुदुम् कोयिल्⋆ तॆंन्नाडुम् वडनाडुम् तॊंळनिन्र्⋆ तिरुवरङ्गम् तिरु प्पदियिन् मेल्⋆ मॆंयन्नावन् मॆंय् अडियान् विट्टुशित्तन्⋆ विरित्त तमिऴ् उरैक्क वल्लार्⋆ एञ्ञान्रुम् एम्बॆंरुमान् इणैयडिक्कीऴ्⋆ इणै पिरियादिरुप्पर् तामे॥११॥	सच्चे भक्त विष्णुचित्त के ये दसक गीत, उत्तर तथा दक्षिण से पूज्य तीर्थस्थान तिरू अरंगम की प्रशस्ति गाते हैं जहां गजेन्द्र के रक्षक चक्रधारी प्रभु का वास है। इसको कण्ठ करने से प्रभु के चरणारविन्द से अभिन्न रूप में सदा के लिए जुड़ जायेंगे। **422** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं**

श्रीमते रामानुजाय नमः

40 तुप्पुडैयारै (423 - 432)

अरवणै प्पळिळकाळ् प्पोट्रळ्

(भगवान के चरणों में समपर्ण जिससे कि मृत्यु के समय वे रक्षा कर सकें)

तुप्पुडैयारै अडैवदेल्लाम्⋆ शोर् विडत्तु त्तुणै आवर् एन्रे⋆ ऑप्पिलेन् आगिलुम् निन् अडैन्देन्⋆ आनैक्कु नी अरुळ् शॅय्दमैयाल्⋆ एय्प्पॅन्नै वन्दु नलियुम्पोदु⋆ अङ्गु एदुम् नान् उन्नै निनैक्क माट्टेन्⋆ अप्पोदैक्किप्पोदे शॉल्लिवैत्तेन्⋆ अरङ्गत्तरवणै प्पळ्ळियाने ! ॥१॥	शेषशय्या पर शयन करने वाले श्री रंगम के प्रभु ! ऊच्च पदस्थ श्रीमंतों का सम्मान इसी उद्देश्य से किया जाता है कि समय पर वे सहायता करेंगे। मैं इस लायक नहीं हूं फिरभी आपकी बन्दना करता हूं क्योंकि दुःख में आपने गजेन्द्र को राहत दिलायी। जब मैं मृत्यु पाश में बंध जाउंगा तब आपका नाम विस्मृत हो जायेगा। अतः यह मेरी अग्रिम प्रार्थना है। **423**
शाम् इडत्तॅन्नै क्कुरिक्कॉळ् कण्डाय्⋆ शङ्गॊडु चक्करम् एन्दिनाने ! ना मडित्तॅन्नै अनेग दण्डम्⋆ शॅय्वदा निर्पर् नमन् तमर्गळ् पोम् इडत्तुन्दिरत्तॅत्तनैयुम्⋆ पुगावण्णम् निर्पदोर् मायै वल्लै आम् इडत्ते उन्नै च्चॉल्लि वैत्तेन्⋆ अरङ्गत्तरवणै प्पळ्ळियाने ! ॥२॥	शेषशय्या पर शयन करने वाले श्री रंगम के शंख चक्रधारी प्रभु ! मेरी मृत्यु के समय मुझे अवश्य याद रखें। जब यम दूत लोग अपने जीभ ऐंठ कर मेरी बहुत तरह से पिटाई करेंगे तो आपके नाम का स्मरण जाता रहेगा...... यह आपका खेल है। इसलिए अब और यहीं आपकी प्रार्थना कर लेता हूं। **424**
एल्लैयिल् वाशल् कुरुग च्चॅन्राल्⋆ एट्रि नमन् तमर् पट्रुम्बोदु निल्लुमिन् एन्नुम् उपायम् इल्लै⋆ नेमियुम् शङ्गमुम् एन्दिनाने ! शॉल्ललाम् पोदे उन् नामम् एल्लाम्⋆ शॉल्लिनेन् एन्नै क्कुरिक्कॉण्डेन्रुम् अल्लल् पडावण्णम् काक्क वेण्डुम्⋆ अरङ्गत्तरवणै प्पळ्ळियाने ! ॥३॥	शेषशय्या पर शयन करने वाले श्री रंगम के प्रभु ! हमें हमेशा स्मरण रखें तथा दुःखों से मेरी रक्षा करें। शंख चक्रधारी प्रभु ! अभी कर सकता हूं इसीलिए अभी यहीं आपके नाम को रटे लेता हूं । जब उसलोक का प्रवेशद्वार नजदीक आयेगा और यमदूत पैरों से मारते हुए जब मुझे पकड़ लेंगे तो उसे 'रूको' कहने की भी शक्ति मेरे पास नहीं रहेगी। **425**
ऑट्रै विडैयनुम् नान्मुगनुम्⋆ उन्नै अरिया प्पॅरुमैयोने ! मुट्टुलगॅल्लाम् नीये आगि⋆ मून्ॅरॅळुत्ताय मुदल्वने ओ ! अट्रदु वाळ्नाळ् इवर्कॅन्रॅण्णि⋆ अञ्ज नमन् तमर् पट्रल् उट्र अट्रैक्कु नी एन्नै क्काक्क वेण्डुम्⋆ अरङ्गत्तरवणै प्पळ्ळियाने ! ॥४॥	शेषशय्या पर शयन करने वाले श्री रंगम के प्रभु ! आपकी लीला को ब्रह्मा एवं शिव भी पार नहीं पाते । सृष्टि के प्रथम नियंता ! आपहीं तीनों लोकों तथा तीन वर्णों वाले प्रणव मंत्र हैं।जब यमदूत यह निर्णय करते हैं "इस आदमी के दिन पूरे हो गये हैं" और वे आकर निर्दयता से पकड़ लेते हैं उस दिन हमारी रक्षा में अवश्य आई येगा। **426**

पै अरविन् अणै प्पार्कडलुळ्* पळ्ळि कॉळ्ळिान्र् परम मूर्त्ति ! उय्य उलगु पडैक्क वेण्डि* उन्दियिल् तोट्रिनाय् नान्मुगनै वैय मनिशरै प्पॉय् एन्रॅण्णि* कालनैयुम् उडने पडैत्ताय् ऐय ! इनि एन्नै क्काक्क वेण्डुम्* अरङ्गत्तरवणै प्पळ्ळियाने ! ॥५॥	शेषशय्या पर शयन करने वाले श्री रंगम के प्रभु ! क्षीरसागर में फणधारी नागों पर शयन करने वाले बड़े प्रभु ! आपने मंगलमय सृष्टि की रचना के लिए अपने नाभि कमल से ब्रह्मा की रचना की, तथा यह निर्णय लेते हुए कि आदमी मरणशील होगा, मृत्यु के देवता काल की सृष्टि की। आजसे आप हमारी रक्षा करें अवश्य । **427**
तण्णॅनविल्लै नमन् तमर्गळ्* शाल क्कॉडुमैगळ् शॅय्या निर्पर् मण्णॉडु नीरुम् एरियुम् कालुम्* मट्रुम् आगाशमुम् आगि निन्राय् ! एण्णलाम् पोदे उन् नामम् एल्लाम्* एण्णिनेन् एन्नै क्कुरि क्कॉण्डॅन्रु अण्णले ! नी एन्नै क्काक्क वेण्डुम्* अरङ्गत्तरवणै प्पळ्ळियाने ! ॥६॥	शेषशय्या पर शयन करने वाले श्री रंगम के प्रभु ! यमदूत हृदयहीन एवं निर्दय होते हैं, वे बहुत क्षति पहुचायेंगे। प्रभु आपही पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, एवं आकाश हो गये। जब भी हो सका है हमने आपका नाम स्मरण किया है। इसे आप कृपया याद रखें और हमारी रक्षा करें अवश्य । **428**
शॅञ्जॉल् मरैप्पॉरुळ् आगि निन्र्* देवर्गळ् नायकने ! एम्माने ! एञ्जलिल् एन्नुडै इन् अमुदे ! * एळ् उलगुम् उडैयाय् ! एन् अप्पा ! वञ्ज उरुविन् नमन् तमर्गळ्* वलिन्दु नलिन्दॅन्नै प्पट्रुम्पोदु अञ्जलै एन्रॅन्नै क्काक्क वेण्डुम्* अरङ्गत्तरवणै प्पळ्ळियाने ! ॥७॥	शेषशय्या पर शयन करने वाले श्री रंगम के प्रभु ! देवों के नाथ, हमारे नियंता ! वेदों के सार, एवं हमारे कथनातीत अमृतानंद ! सातों लोकों के नाथ, हमारे पिता ! जब यमदूत भयंकर रूपों एवं समूहों में आकर मुझे पकड़कर प्रताड़ित करें, हमारी रक्षा करें अवश्य, और साथ हीं यह आश्वासन दें "डरो मत"। **429**
नान् एदुम् उन् मायम् ऑन्ररियेन्* नमन् तमर् पट्रि नलिन्दिट्टिन्द ऊने पुगेयॅन्रु मोदुम्बोदु* अं- गेदुम् नान् उन्नै निनैक्क माट्टेन् वानेय वानवर् तङ्गळ् ईशा ! * मदुरै प्पिरन्द मा मायने ! * एन् आनाय् ! नी एन्नै क्काक्क वेण्डुम्* अरङ्गत्तरवणै प्पळ्ळियाने ! ॥८॥	शेषशय्या पर शयन करने वाले श्री रंगम के प्रभु ! आपके एक भी रहस्य को हम समझने में असमर्थ हैं। जब यमदूत मुझे पकड़कर यातना दें, और एक कोठरी में बंद कर दें, उस समय मैं आपके बारे में सोंचने में असमर्थ रहूंगा। हे देवताओं के प्रभु ! मथुरा के आश्चर्य जनक किशोर ! हमारे प्यारे हाथी ! हमारी रक्षा करें अवश्य। **430**

कुन्ऱॆडुत्तानिरै कात्त आया ! ⋆ कोनिरै मेय्त्तवने ! ऎम्माने ! ⋆ अन्ऱु मुदल् इन्ऱुऱुदिया ⋆ आदियञ्जोदि मऱन्दऱियेन् ⋆ नन्ऱुम् कॊडिय नमन् तमर्गळ् ⋆ नलिन्दु वलिन्दॆन्नै प्पट्टुम्बोदु ⋆ अन्ऱङ्गु नी ऎन्नै क्काक्क वेण्डुम् ⋆ अरङ्गत्तरवणै प्पळ्ळियाने ! ॥१॥	शेषशय्या पर शयन करने वाले श्री रंगम के प्रभु ! गोपजनों के नाथ हमारे प्रभु ! गोवर्द्धन पर्वत को उठाने वाले और गायों की रक्षा करने वाले नाथ ! उसदिन से आज तक हमने कभी भी आपके ईश्वरीय लीला को भूला नहीं। जब यमदूत मुझे पकड़कर बांध लें आप उसी समय हमारी रक्षा करें अवश्य। **431**
मायवनै मदुसूदनन् तन्नै ⋆ मादवनै मऱैयोर्गळ् एत्तुम् ⋆ आयर्गळ् एऱ्ऱिनै अच्चुदन् तन्नै ⋆ अरङ्गत्तरवणै प्पळ्ळियानै ⋆ वेयर् पुगऴ् विल्लिपुत्तूर् मन् ⋆ विट्टुशित्तन् शॊन्न मालै पत्तुम् ⋆ तूय मनत्तनर् आगि वल्लार् ⋆ तू मणिवण्णनुक्काळर् तामे ॥१०॥ ॥ पॆरियाऴ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	माधव, मधुसूदन, गोपजन नाथ अच्युत, वेदों से प्रशंसित प्रभु, श्रीरंगम के शेषशायी नाथ की प्रशस्ति में ये दसक पदों के माला वयार कुल के नायक श्रीविल्लीपुत्तुर निवासी विष्णुचित्त द्वारा रचे गये हैं। जो इनको शुद्ध हृदय से कण्ठ कर लेंगे वे नीलमणि सा सलोने प्रभु के सेवक हो जायेंगे। **432** **पेरियाऴ्वार तिरूवडिगळे शरणं**

श्रीमते रामानुजाय नमः

41 वाक्कुत्तूय्मै (433 - 442)

नैच्वियानुसन्दानम्

(प्रभु की सेवा के अवसर मिलते रहें इसके लिये प्रार्थना)

वाक्कु तूय्मै इलामैयिनाले⋆ मादवा ! उन्नै वायक्कॊळ्ळ माट्टेन्⋆ नाक्कु निन्नै अल्लाल् अरियादु⋆ नान् अदञ्जुवन् एन् वशम् अन्ऱु⋆ मूर्क्कु प्पेशुगिन्ऱान् इवन् एन्ऱु⋆ मुनिवायेलुम् एन् नाविनुक्काट्रेन्⋆ काक्कै वायिलुम् कट्टुरै कॊळ्वर्⋆ कारणा ! करुळ क्कॊडियाने ! ॥१॥	माधव ! अपनी अशुद्ध भाषा के कारण मैं आपकी गाथा गाने का साहस नहीं करता। हाय ! हमारी जीभ और कुछ नहीं जानती और मैं इसे रोक भी नहीं सकता। अगर आप हमारे मूर्खतापूर्ण शब्दों पर नाराज हो जायेंगे तब भी मैं मुंह बंद नहीं रख सकता। कौए के शब्द भी तो कुछ घटनाओं के संकेत देते हैं। पक्षियों के प्रभु ! प्रथम कारण! **433**
शळक्कु नाक्कॊडु पुन्नावि शॊन्नेन्⋆ शङ्गु चक्करम् एन्दु कैयाने ! ⋆ पिळैप्पर् आगिलुम् तम् अडियार् शॊल्⋆ पॊरुप्पदुम् पॆरियोर् कडन् अन्रे⋆ विळिक्कुम् कण्णिलेन् निन् कण् मट्टल्लाल्⋆ वेरॊरुवरोडॆन् मनम् पट्रादु⋆ उळैक्कुओर् पुळ्ळि मिगै अन्ऱ् कण्डाय्⋆ ऊळि एळ् उलगुण्डुमिळ्न्दाने ! ॥२॥	शंख चक्रधारी प्रभु ! हमने अशुद्ध जीभ से लघु स्तर के गीत गाये हैं। सेवकों के शब्द गलत रहने पर भी क्या मालिक सहन नहीं करता ! आपको छोड़कर हमें देखने वाला कोई है भी नहीं और हमारा हृदय कहीं टिकता भी नहीं। सातों लोकों तथा अन्यों को निगल कर पुनः बाहर करने वाले प्रभु , जरा सोचिये, हरिन के चितकवरा चिह्न उसके भार नहीं होते। **434**
नन्मै तीमैगळ् ऒन्ऱुम् अरियेन्⋆ नारणा ! एन्नुम् इत्तनै अल्लाल्⋆ पुन्मैयाल् उन्नै प्पुळ्ळुवम् पेशि⋆ पुगळ्वान् अन्ऱ् कण्डाय् तिरुमाले ! ⋆ उन्नुमारुन्नै ऒन्ऱुम् अरियेन्⋆ ओवादे नमो नारणा ! एन्बन्⋆ वन्मै आवदुन् कोयिलिल् वाळुम्⋆ वैट्टणवन् एन्नुम् वन्मै कण्डाये॥३॥	तिरूमल ! हम सही और गलत नहीं जानते। नारायण के अतिरिक्त हम कुछ जानते भी नहीं। ह्यदय में छल रखकर हम झूठी प्रशंसा नहीं करते। हम आप पर ध्यान करना भी नहीं जानते और बार बार 'नमो नारायण' कहते हैं। कृपया ध्यान दें, हमारी शक्ति इसी में है कि हम आपके भक्त हैं और आपके मंदिर में रहते हैं। **435**

नॅडुमैयाल् उलगेळुम् अळन्दाय् !★ निन्मला ! नॅडियाय् ! अडियेनै★ कुडिमै कॉळ्वदर्कैयुर् वेण्डा★ कूरै शोरिवै वेण्डुवदिल्लै★ अडिमै एन्नुम् अ क्कोयिन्मैयाले★ अङ्ङे अवै पोदरुम् कण्डाय्★ कॉडुमै क्कञ्जनै क्कॉन्रु निन् तादै★ कोत्त वन् तळै कोळ् विडुत्ताने ! ॥ ४ ॥	शुद्ध सात्विक प्रभु ! आप लंबे होते गये और सातों लोकों को माप दिया। हमें अपनी सेवा में लगाने में आप कोई संदेह नहीं रखें। भोजन और वस्त्र की हमें कोई चिन्ता नहीं रहती इसलिए कि आपकी सेवा के फलस्वरूप जो आवश्यक होगा वह स्वयं मिल जायेगा। प्रभु आपने कंस का बध कर अपने पिता को कैद से मुक्त किया। विनती है, हम पर ध्यान रखें। **436**
तोट्टम् इल्लवळ् आत्तॉळु ओडै★ तुडवैयुम् किणरुम् इवै एल्लाम्★ वाट्टम् इन्रि उन् पॉन्नडि क्कीळे★ वळैप्पगम् वगुत्तु क्कॉण्डिरुन्देन्★ नाट्टु मानिडत्तोडॅनक्करिदु★ नच्चुवार् पलर् केळल् ऑन्रागि★ कोट्टु मण् कॉण्ड कॉळ्कैयिनाने !★ कुञ्जरम् वीळ क्कॉम्बॉशित्ताने ! ॥ ५ ॥	वराह के रूप में आकर पृथ्वी को अपने दातों एवं दाढ़ों पर उठाने वाले प्रभु ! दांत उखाड़कर मदमत्त हाथी का बध करने वाले प्रभु ! इस जगत के बहुतेरे लोग सांसारिक जीवन में आनन्द लेते हैं जो मेरे लिए मुश्किल है। आपके चरण कमल में आश्रय लेने से हमें बाग, स्त्री, पशु, आश्रम, खेत एवं कुआं का कोई अभाव नहीं खटकता। **437**
कण्णा ! नान्मुगनै प्पडैत्ताने !★ कारणा ! करियाय् ! अडियेन् नान्★ उण्णा नाळ् पशि आवदॉन्रिल्लै★ ओवादे नमो नारणा एन्रु★ एण्णा नाळुम् इरुक्कॅशु च्चाम वेद★ नाळ्मलर् कॉण्डुन पादम् नण्णा नाळ्★ अवै तत्तुरुमागिल्★ अन्रॅनक्कवै पट्टिनि नाळे ॥ ६ ॥	कृष्ण प्रभु ! ब्रह्मा के नियंता, प्रथम कारण, घनश्याम ! यह आपका बंधुआ मजदूर एक दिन भी भोजन के बिना भूखे नहीं रहा। अगर कभी वह दिन आ गया जिस दिन हमने आपके मंत्र 'नमो नारायण' का ध्यान नहीं किया या ऋक, यजु, एवं साम से अवगाहित इस मंत्र पुष्प से आपकी पूजा नहीं की तो वही हमारे लिए भूखे रहने का दिन हो जाता है। **438**
वॅळ्ळै वॅळ्ळत्तिन् मेल् ऑरु पाम्बै★ मॅत्तैयाग विरित्तु★ अदन् मेले कळ्ळ नित्तिरै कॉळ्गिन्र मार्ग्गम्★ काणलाङ्गॉल् एन्राशैयिनाले★ उळ्ळम् शोर उगन्दॅदिर् विम्मि★ उरोम कूपङ्गळाय्★ कण्ण नीर्गळ् तुळ्ळम् शोर त्तुयिल् अणै कॉळ्ळेन्★ शॉल्लाय् यान् उन्नै त्तत्तुरुमारे ॥ ७ ॥	क्षीरसागर में शेष शय्या पर योगनिद्रा वाले प्रभु ! आपके अलौकिक सौंदर्य के दर्शन की आशा में हमारा ह्यदय पिघल रहा है, शब्द नहीं निकल रहे हैं, रोमांचित हो कर केश खड़े हो गये हैं, आंखें आंसू बहा रही हैं, और निद्रा जाती रही है। विनती है, कृपया बतायें आपको कैसे प्राप्त किया जा सके ! **439**

वण्ण माल् वरैये कुडैयाग⋆ मारि कात्तवने ! मदुशूदा ! ⋆ कण्णने ! करि कोळ् विडुत्ताने ! ⋆ कारणा ! कळिरट्ट पिराने ! ⋆ एण्णुवार् इडरै क्कळैवाने ! ⋆ एत्तरुम् पॆरुङ्गीर्त्तियिनाने ! ⋆ नण्णि नान् उन्नै नाळ्दोरुम् एत्तुम्⋆ नन्मैये अरुळ्शॆय् एम्बिराने ! ॥८॥	तूफान का सामना करने के लिए पर्वत को ऊपर उठाने वाले प्रभु ! मधुसूदन, कृष्ण, गजेन्द्र को कष्ट से उबारने बाले प्रभु, मदमत्त कुवलयापीड हाथी का नाश करने वाले प्रभु, प्रथम कारण, भक्तों के आश्रय, वर्णनातीत लीला वाले प्रभु ! विनती है, हर दिन अपनी पूजा के अवसर की खुशी मिलने की स्वीकृति दें। **440**
नम्बने ! नविन्रेत्त वल्लार्गळ्⋆ नादने ! नरशिङ्गमदानाय् ! ⋆ उम्बर् कोन् उलगेळुम् अळन्दाय्⋆ ऊळि आयिनाय् ! आळि मुन् एन्दि⋆ कम्ब मा करि कोळ् विडुत्ताने ! ⋆ कारणा ! कडलै क्कडैन्दाने ! ⋆ एम्बिरान् ! एन्नै आळ् उडै त्तेने ! ⋆ एळैयेन् इडरै क्कळैयाये॥९॥	विश्वास (का मूलरूप), प्रशंसनीय कवियों के प्रभु,नरसिंह के रूप वाले प्रभु, देवताओं के नाथ, सातों जगत के मापने वाले प्रभु, काल के नाथ, विपत्ति में हाथी को बचाने वाले, प्रथम कारण, समुद्र मंथन करने वाले प्रभु, मधु से भी मृदुतर प्रभु ! विनती है, इस दरिद्र को कष्ट से मुक्त कीजिये। **441**
‡कामर् तादै करुदलर् शिङ्गम्⋆ काण इनिय करुङ्गुळल् कुट्टन्⋆ वामनन् एन् मरगद वण्णन्⋆ मादवन् मदुशूदनन् तन्नै⋆ शेम नन्नामरुम् पुदुवैयर् कोन्⋆ विट्टुशित्तन् वियन् तमिळ् पत्तुम्⋆ नामम् एन्रु नविन्रुरैप्पार्गळ्⋆ नण्णुवार् ऒल्लै नारणन् उलगे॥१०॥	विकासशील पुदुवै नगर के राजा विष्णुचित्त के ये मधुर तमिल गीत प्रभु की प्रशंसा में है, जो कामदेव के पिता हैं, विश्वास न करने वालों के लिए सिंह के समान हैं, सुन्दर बाल वाले वामन भगवान हैं, नीलमणि से सलोने माधव हैं, मधुसूदन हैं। जो इसका पाठ मंत्र की तरह करेंगे उनको नारायण के आनन्द मय वैकुंठ का लाभ मिलेगा ।**442** पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

42 नय्क्कुडत्तै (443 - 452)

अरवणैयादियान् काप्पार्पिणि पोक्कळ्

(रोगों को शरीर छोड़ने के लिए कहना क्योंकि प्रभु इस शरीर में प्रवेश कर चुके हैं)

नॆय् क्कुडत्तै प्पट्रि⋆ ऎऱुम् ऎऱुम्बुगळ् पोल् निरन्दु⋆ ऎङ्गुम् कै क्कॊण्डु निर्किन्ऱ नोय्गाळ् !⋆ कालम् पॆऱ उय्य प्पोमिन्⋆ मॆय् क्कॊण्डु वन्दु पुगुन्दु⋆ वेद प्पिरानार् किडन्दार्⋆ पै क्कॊण्ड पाम्बणैयोडुम्⋆ पण्डन्ऱु पट्टिनम् काप्पे॥१॥	घी के घड़े पर चींटी के समूह की तरह इस शरीर पर के रोगादि ! अपने को मुक्त कर अपनी रक्षा करो। वेदों के सार, शेषशायी प्रभु हमारे शरीर को अपना निवास बना चुके हैं।अब पुरानी स्थिति नहीं है, यह किला अब संरक्षित है। **443**
चित्तिरगुत्तन् ऎऴुत्ताल्⋆ तॆन्पुल क्कोन् पॊऱि ऒट्रि⋆ वैत्त इलच्चिनै माट्रि⋆ तूदुवर् ओडि ऒळित्तार्⋆ मुत्तु त्तिरै क्कडर् चेर्प्पन्⋆ मूदरिवाळर् मुदल्वन्⋆ पत्तर्क्कमुदन् अडियेन्⋆ पण्डन्ऱु पट्टिनम् काप्पे॥२॥	दक्षिण दिशा के स्वामी यम से अनुशंसित चित्रगुप्त का निर्णय अब निरस्त हो गया है और यमदूत भाग चुके हैं। मुक्ता के सागर में शयन करने वाले प्रभु, प्रवुद्ध ऋषियों के प्रभु, भक्तों के आनन्दामृत ने मुझे अपना लिया है। अब पुरानी स्थिति नहीं है, यह किला अब संरक्षित है। **444**
वयिट्रिल् तॊळुवै प्पिरित्तु⋆ वन्पुल च्चेवै अदक्कि⋆ कयिट्रुम् अक्काणि कळित्तु⋆ क्कालिडै प्पाशम् कळट्रि⋆ ऎयिट्रिडै मण् कॊण्ड ऎन्दै⋆ इराप्पगल् ओदुवित्तु⋆ ऎन्नै प्पयिट्रि प्पणिशॆय्य क्कॊण्डान्⋆ पण्डन्ऱु पट्टिनम् काप्पे॥३॥	सुदूर पूर्व में प्रभु ने अपने दाढ़ों एवं दांतों पर पृथ्वी को उठा लिया था। आपने अपने शास्त्रों को दिन रात पढ़ाकर संयमित जीवन प्रदान किया तथा अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया। पेट की चिन्ता से मुक्त कर मरणशीलता के बंधन से मुक्त कर दिया और हमारे पैर की बेड़ियों को ढ़ीला कर दिया। अब पुरानी स्थिति नहीं है, यह किला अब संरक्षित है। **445**
मञ्जिय वल्विनै नोय्गाळ् !⋆ उमक्कुम् ओर् वल्विनै कण्डीर्⋆ इङ्गु प्पुगेन्मिन् पुगेन्मिन्⋆ ऎळिदन्ऱु कण्डीर् पुगेन्मिन्⋆ शिङ्ग प्पिरान् अवन् ऎम्मान्⋆ शेरुम् तिरुक्कोयिल् कण्डीर्⋆ पङ्गप्पडादुय्य प्पोमिन्⋆ पण्डन्ऱु पट्टिनम् काप्पे॥४॥	कर्म के क्षीण बल! जरा देखो, तुम्हें अपना समकक्ष मिल गया है। यहां नहीं प्रवेश करो, यहां नहीं, यहां अब इतना आसान नहीं, जरा देख लो। विदित हो कि नरसिंह प्रभु अब यहां शयन करते हैं।अब भागो और अपने को बचाओ। अब पुरानी स्थिति नहीं है, यह किला अब संरक्षित है। **446**
माणि क्कुऱळ् उरुवाय⋆ मायनै ऎन् मनत्तुळ्ळे⋆ पेणि क्कॊणर्न्दु पुगुद वैत्तु क्कॊण्डेन्⋆ पिऱिदिन्ऱि⋆ माणिक्क प्पण्डारम् कण्डीर्⋆ वलि वन् कुऱुम्बर्गळ् उळ्ळीर् !⋆ पाणिक्क वेण्डा नडमिन्⋆ पण्डन्ऱु पट्टिनम् काप्पे॥५॥	यह रत्नागार है। कोई भी दुष्ट जीव अब सचेत हो जाओ। अलौकिक सौन्दर्य वाले वामन प्रभु हमारे भीतर बड़े प्रेम से सदा के लिये घर कर गये हैं। अब भागो और विलम्ब न करो। अब पुरानी स्थिति नहीं है, यह किला अब संरक्षित है। **447**

उऱ् उरुविणि नोय्गाळ्!⋆ उमक्कॊन्ऱु शॊल्लुगेन् केण्मिन्⋆ पॆऱ्ङ्गळ् मेयक्कुम् पिरानार्⋆ पेणुम् तिरुक्कोयिल् कण्डीर्⋆ अऱ्म् उरैक्किन्ऱेन्⋆ इन्नम् आळ्विनैगाळ्!⋆ उमक्किङ्गोर् पऱ्ल्लै कण्डीर् नडमिन्⋆ पण्डन्ऱु पट्टिनम् काप्पे॥६॥	दुःखदायी रोगादि! सुनो, मुझे कुछ कहने दो। विदित हो कि यह मेरा शरीर अब एक मंदिर है जहां गोपजन नाथ वास करते हैं। गहरे पैठे दुःखादि ! मैं पुनः कह रहा हूं कि जान लो तुम्हारे लिये अब यहां कोई स्थान नहीं है। अतः चलते बनो। अब पुरानी स्थिति नहीं है, यह किला अब संरक्षित है। **448**
कॊङ्ङै च्चिरुवरै एन्नुम्⋆ पॊदुम्बिनिल् वीऴ्न्दु वऴुक्कि⋆ अङ्गोर् मुऴैयिनिल् पुक्किट्टु⋆ अऴुन्दि क्किडन्दुऴल्वेनै⋆ वङ्ग क्कडल् वण्णन् अम्मान्⋆ वल्विनै आयिन माऱ्⋆ पङ्ग प्पडावण्णम् शॆय्दान्⋆ पण्डन्ऱु पट्टिनम् काप्पे॥७॥	हम दो पर्वतों के बीच की खाड़ी में असहाय गिरकर एक अंधेरी गुफा में पड़ गये। सागर सा सलोने प्रभु ने आकर कर्मों के दोष से हमें मुक्त कर मेरी रक्षा की। अब पुरानी स्थिति नहीं है, यह किला अब संरक्षित है। **449**
एदङ्गळ् आयिन एल्लाम्⋆ इरङ्ग विडुवित्तु⋆ एन्नुळ्ळे पीदग वाडै प्पिरानार्⋆ पिरम गुरुवागि वन्दु⋆ पोदिल् कमल वन् नॆञ्जम्⋆ पुगुन्दुम् एन् शॆन्नि त्तिडरिल्⋆ पाद इलच्चिनै वैत्तार्⋆ पण्डन्ऱु पट्टिनम् काप्पे॥८॥	हमारे पूर्व के कर्मों के दोष का निवारण करते हुए पीत वस्त्रधारी प्रभु हमारे गुरू की तरह आये और ह्यदयात्मा में प्रवेश कर गये। हमारे ह्यदय कमल में रहते हुए आपने हमारे ललाट पर (उर्ध्व पुण्ड्र तिलक का) चरण कमल के चिह्न छोड़ दिया है। अब पुरानी स्थिति नहीं है, यह किला अब संरक्षित है। **450**
उरगल् उरगल् उरगल्⋆ ऑण्शुडर् आऴिये! शङ्गे!⋆ अर एरि नान्दग वाळे!⋆ अऴगिय शारङ्गमे! तण्डे!⋆ इरवु पडामल् इरुन्द⋆ एण्मर् उलोग पालीर्गाळ्!⋆ परवै अरैया! उरगल्⋆ पळ्ळियरै क्कुरिक्कोण्मिन्॥९॥	तेजोमय चक्र एवं शंख सावधान ! भयंकर घातक खड्ग नन्दक सावधान ! सुन्दर सारंग धनुष सावधान ! आठों दिशाओं के दिक्पाल एवं पक्षीराज सावधान होकर हमारे प्रभु के शयनकक्ष को संरक्षित रखिए। **451**
अरवत्तमळियिनोडुम्⋆ अऴगिय पार्कडलोडुम्⋆ अरविन्द प्पावैयुम् तानुम्⋆ अगम्पडि वन्दु पुगुन्दु⋆ परवै त्तिरै पल मोद⋆ प्पळ्ळि कॊळ्गिन्ऱ पिरानै⋆ परवुगिन्ऱान् विट्टुशित्तन्⋆ पट्टिनम् कावर् पॊरुट्टे॥१०॥ ॥ पॆरियाऴ्वार् तिरुवडिगळे शरणं॥	ये पद शरीर रूपी किला के संरक्षण की प्रशंसा में विष्णुचित्त के द्वारा गाये हुए हैं जिनके भीतर शक्तिशाली सागर के लहरों के बीच शयन करने वाले प्रभु, कमल वत लक्ष्मी, तेजोमय शेषनाग की शय्या, और सुन्दर क्षीर समुद्र प्रवेश कर चुके हैं। **452** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

43 दुक्कच्चुऴलैयै (453 - 462)

तिरूमालिरूञ्जोलै एम्परूमानै प्पोग आट्टेन् एनत्तड्डुत्तल्

(तिरूमालैरूनसोलै के प्रभु को छोड़ने से रोकना)

दुक्क च्चुळलैयै च्चूळन्दु किडन्द* वलैयै अऱ प्परित्तु* पुक्किनिल् पुक्कुन्नै क्कण्डु कॉण्डेन्* इनि प्पोग विडुवदुण्डो* मक्कळ् अऱुवरै क्कल्लिडै मोद* इळन्दवळ् तन्वयिट्रिल्* शिक्केन वन्दु पिऱन्दु निन्ऱाय् !* तिरु मालिरुञ्जोलै एन्दाय् ! ॥१॥	हमारे स्वामी तिरूमालैरूनसोलै के प्रभु ! आपने बंधनों को काटकर और सांसारिक दुःखों के भंवरजाल से मुक्त कराया । मैं जानता हूं आप मेरे भीतर प्रवेश किए हुए हैं। अब क्या आपको हम छोड़कर जाने देंगे ? कंश के निर्दयता से देवकी ने छः संतानें खो दीं परन्तु क्षण भर में उनके गर्भ में प्रवेश कर आप उनके संतान के रूप में आये। **453**
वळैत्तु वैत्तेन् इनि प्पोगलॉट्टेन्* उन्ऱन् इन्दिर ञालङ्गळाल्* ऑळित्तिडिल् निन् तिरुवाणै कण्डाय्* नी ऑरुवर्क्कुम् मॅय्यन् अल्लै* अळित्तॅङ्गुम् नाडुम् नगरमुम्* तम्मुडै त्तीविनै तीर्क्कलुट्र्* तॅळित्तु वलञ्जॅय्युम् तीर्त्तम् उडै* त्तिरु मालिरुञ्चोलै एन्दाय् ! ॥२॥	आपको पकड़ लिया है ओर अब कभी भी आपको जाने नहीं देंगे। ऐसा न हो आप चले जायें इसलिए कमल सी कोमल माता लक्ष्मी का शपथ लेता हूं। आपने किसी के साथ सच्चाई नहीं निभाया। तिरूमालैरूनसोलै के प्रभु जहां जल प्रपातों की अधिकता है और नगर एवं ग्राम से लोग समूहों में आकर स्नान कर आपकी अर्चना कर कर्मो के दोष से मुक्त होते हैं। हमारे स्वामी ! **454**
उनक्कु प्पणिशॅय्दिरुक्कुम् तवम् उडै येन्* इनि प्पोय् ऑरुवन् तनक्क प्पणिन्द* कडैत्तलै निर्कै* निन शायै अळिव कण्डाय* पुनत्तिनै किळ्ळि प्पुदुववि काट्टि* उन् पॉन्नडि वाळक एन्ऱु* इन क्कुऱवर् पुदियदुण्णुम्* एळिल् मालिरुञ्जोलै एन्दाय् ! ॥३॥	आपकी पूजा अर्चना करने का हमारा सौभाग्य रहा है। अगर अब हम अन्य किसी के द्वार पर जायें तो क्या आपकी महिमा पर आघात नही पहुंचेगा ? तिरूमालैरूनसोलै के प्रभु जहां कुरवै जनजाति के लोग जंगली अन्न की कोमल बाली से आपका प्रसाद तैयार कर आपके चरण कमल की प्रशस्ति गाते हुए आपको अर्पित करते हैं। हमारे स्वामी ! **455**

कादम् पलवुम् तिरिन्दुळन्रेर्कु⋆ अङ्गोर् निळल् इल्लै नीरुम् इल्लै⋆ उन् पाद निळल् अल्लाल् मट्रोर् उयिरप्पिडम्⋆ नान् एङ्गुम् काणिगन्रिलेन्⋆ तूदु शॆन्राय्! कुरु पाण्डवर्क्काय्⋆ अङ्गोर् पॊय्च्चुट्रम् पेशि च्चॆन्रु⋆ पेदम् शॆय्देङ्गुम् पिणम् पडैत्ताय्!⋆ तिरु मालिरुञ्जोलै एन्दाय्! ॥४॥	लंबी दूरी की यात्रा करने पर न तो कहीं पानी मिला और न छांह । आपके चरण कमल की छांह छोड़ कुछ भी नहीं मिला। तिरूमालैरूनसोलै के प्रभु ! आप पांडवों के दूत बनकर गये और कुछ झूठी बातें कहकर मनमुटाव उत्पन्न कर दिया तथा युद्धक्षेत्र में शवों का सर्वत्र ढ़ेर लगा दिया। हमारे स्वामी ! **456**
काल्लुम् एळा कण्ण नीरुम् निल्ला⋆ उडल् शोरन्दु नडुङ्गि⋆ क्कुरल् मेलुम् एळा मयिर् क्कूच्चुम् अरा⋆ एन तोळ्गाळुम् वीळ्वॊळिया⋆ माल् उगळानिर्कुम् एन् मनने!⋆ उन्नै वाळ त्तलै प्पॆय्दिट्टेन्⋆ शेल् उगळानिर्कुम् नीळ्शुनै शूळ्⋆ तिरु मालिरुञ्जोलै एन्दाय्! ॥५॥	नये जीवन के लिए जब आपके पास आता हूं तब हमारे पैर स्थिर नहीं रहते, आंसू की धार बंद नहीं होती, कमजोरी से कांपते हैं, आवाज नहीं निकलती, केश खड़े हो जाते हैं, कंधे झुक जाते हैं, हृदय में आशा की लहरें उठने लगतीं हैं। तिरूमालैरूनसोलै के प्रभु ! जहां चतुर्दिक बड़े तालाबों में मछलियां नृत्य करती हैं। हमारे स्वामी ! **457**
एरुत्तु क्कॊडि उडैयानुम्⋆ पिरमनुम् इन्दिरनुम्⋆ मट्रुम् ऑरुत्तरुम् इ प्पिरवि एन्नुम् नोय्क्कु⋆ मरुन्दरिवारुम् इल्लै⋆ मरुत्तुवनाय् निन्र मा मणिवण्णा!⋆ मरु पिरवि तविर त्तिरुत्ति⋆ उन् कोयिल् कडै प्पुग प्पॆय्⋆ तिरु मालिरुञ्जोलै एन्दाय्! ॥६॥	ब्रह्मा, शिव या अन्य कोई देवता पुनर्जन्म की व्याधि की औषधि नहीं जानते। सलोने श्याम प्रभु ! आप ही धन्वन्तरी के रूप में आये। विनती है कि हमें पुनर्जन्म के बंधन से मुक्त कर अपने विशाल मंदिर के परिसर में लगा लीजिए। तिरूमालैरूनसोलै के प्रभु ! हमारे स्वामी ! **458**
अक्करै एन्नुम् अनत्त क्कडल्लुळ् अळुन्दि⋆ उन् पेर् अरुळाल्⋆ इक्करै एरि इळै त्तिरुन्देनै⋆ अञ्जल् एन्रु कै कवियाय्⋆ चक्करमुम् तडक्कैगळुम्⋆ कण्गळुम् पीदग आडैयॊडुम्⋆ शॆक्कर् निरत्तु च्चिवप्पुडैयाय्!⋆ तिरु मालिरुञ्जोलै एन्दाय्! ॥७॥	हम संवेदनहीन सागर के उस किनारे पर फिसलते रहे। आपकी असीम कृपा से इस किनारे पर थके हुए आ गये हैं।आप हाथ उठाकर नहीं कह रहे "डरो मत"। शक्तिशाली भुजाओं पर चक्रधारण करने वाले, पीत वस्त्रधारी, संध्याकालीन आकाश की अरूणिमा, तिरूमालैरूनसोलै के प्रभु ! हमारे स्वामी ! **459**

एत्तनै कालमुम् एत्तनै ऊळियुम्⋆ इन्रॊडु नाळै एन्रे⋆ इत्तनै कालमुम् पोय् क्किरि प्पट्टेन्⋆ इनि उन्नै प्पोगलॊट्टेन्⋆ मैत्तुनन् मार्गळै वाळ्वित्तु⋆ माद्लर् नूट्वरै क्कॆडुत्ताय् !⋆ शित्तम् निन्बालदरिदि अन्रे⋆ तिरु मालिरुञ्जोलै एन्दाय् ! ॥८॥	आज और कल के भवंर में हम कितने ऋतु एवं काल से पकड़ लिये गये हैं। अब हम आपको कभी भी नहीं जाने देंगे। पांडवों के प्रिय ! आपने सौ शत्रु बंधुओं का नाश किया। क्या आप यह नहीं जानते कि हमारा हृदय आप से ही लगा हुआ है। तिरूमालैरूनसोलै के प्रभु ! हमारे स्वामी ! **460**
अन्रु वयिट्रिल् किडन्दिरुन्दे⋆ अडिमै शॆय्यल् उद्रिरुप्पन्⋆ इन्रु वन्दिङ्गुन्नै क्कण्डु कॊण्डेन्⋆ इनि प्पोग विडुवदुण्डे⋆ शॆन्रङ्गु वाणनै आयिरन्दोळुम्⋆ तिरु च्चक्करम् अदनाल्⋆ तॆन्रि त्तिशै दिशै वीळ च्चॆट्राय् !⋆ तिरु मालिरुञ्जोलै एन्दाय् ! ॥९॥	जब हम गर्भ में थे उस समय भी आपकी सेवा करने की ईच्छा थी। आज हम यहां आकर आपको पा गये हैं। कैसे आपको हम जाने देंगे ? आपने अपने चक्र से बाणा के हजारों हाथ काट कर दूरस्थ विस्तृत स्थानों पर फेंक दिया। तिरूमालैरूनसोलै के प्रभु ! हमारे स्वामी ! **461**
शॆन्रुलगम् कुडैन्दाडुम् शुनै⋆ त्तिरु मालिरुञ्जोलै तन्नुळ् निन्र पिरान्⋆ अडिमेल् अडिमै त्तिरम्⋆ नेर्पड विण्णप्पञ्जॆय्⋆ पॊन् तिगळ् माडम् पॊलिन्दु तोन्रुम्⋆ पुदुवैक्कोन् विट्टुशित्तन्⋆ ऒन्रिनोडॊन्बदुम् पाड वल्लार्⋆ उलगम् अळन्दान् तमरे॥१०॥ ॥ पॆरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	सारा संसार तिरूमालैरूनसोल जाकर वहां के पवित्र जल में स्नान करता है। वहां के स्थिर खड़े प्रभु के चरण कमल पर, सुवर्णमय अटारियों वाले पुदुवै के राजा विष्णुचित्त के ये दसक पद, श्रद्धापूर्ण प्रार्थना के रूप में समर्पित हैं। जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे पृथ्वी के मापने वाले प्रभु के माध्यम के रूप में काम आयेंगे।**462** **पेरियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।**

श्रीमते रामानुजाय नमः

44 शन्नियोङ्गु (463 - 473)

इदयत्तुळ् निऱैन्दु एम्बिरान् मलरन्दमै

(उनके हृदय में भगवान के प्रवेश करने से जो लाभ हुए उसके बारे में उनके वचन)

शॅन्नि ओङ्गु⋆ तण् तिरुवेङ्गडम् उडैयाय्!⋆ उलगु तन्नै वाळ निन्ऱ नम्बी!⋆ दामोदरा! शदिरा!⋆ एन्नैयुम् एन् उडैमैयैयुम्⋆ उन् शक्करप्पॉऱि ऑऱ्ऱिक्कॉण्डु⋆ निन् अरुळे पुरिन्दिरुन्देन्⋆ इनि एन् तिरु क्कुऱिप्पे॥१॥	शीतल तिरूवेंकटम के प्रभु ! जहां के ऊंचे उठे हुए पर्वत मरणशील संसारियों को राहत देने के लिए प्रतीक्षारत हैं। ज्ञाननिधान दामोदर ! हमारा शरीर एवं आत्मा आपके चक्र से चिह्नित हो चुका है। हम आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा में हैं। विनती है, हमारे बारे में आपकी क्या ईच्छा है ? **463**
पऱवै एऱु परम् पुरुडा!⋆ नी एन्नै क्कैक्कॉण्ड पिन्⋆ पिऱवि एन्नुम् कडलुम् वऱ्ऱि⋆ प्पॅरुम्पदम् आगिन्ऱदाल्⋆ इऱवु शॅय्युम् पाव क्काडु⋆ तीक्कॉळी इवेगिन्ऱदाल्⋆ अऱिवै एन्नुम् अमुदवाऱु⋆ तलैप्पऱ्ऱि वाय् क्कॉण्डदे॥२॥	गरूड़ की सवारी करने वाले प्रभु ! जब से आपने हमें अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया है तब से पुनर्जन्म का सागर सूख कर पवित्र स्थल हो गया है। कर्म के दोष रूपी बेड़ी अब प्रज्वलित अग्नि में जल रहे हैं। ज्ञानामृत की नदी सिर के ऊपर से बह रही है **464**
एम्मना! एन् कुल दॅय्वमे!⋆ एन्नुडै नायकने!⋆ निन् उळेनाय् प्पॅऱ्ऱ नन्मै⋆ इव्वुलगिनिल् आर् पॅऱुवार्⋆ नम्मन् पोले वीळ्त्तमुक्कुम्⋆ नाट्टिल् उळ्ळ पावम् एल्लाम्⋆ शुम्मॅनादे कैविट्टोडि⋆ तूऱुगळ् पाय्न्दनवे॥३॥	मेरे नाथ ! मेरे पूज्य विग्रह ! जो आनन्द हम आप में लेते हैं वह इस जगत में दूसरा कौन उठा सकता है। मृत्यु की तरह भयावनी छाया में दिखने वाले इस जगत की सभी यातनायें अपनी गांठ ढीलाकर बिना किसी बुदबुदाहट के झाड़ी में जा छिपे हैं। **465**
कडल् कडैन्दमुदम् कॉण्डु⋆ कलशत्तै निऱैत्तार् पोल्⋆ उडल् उरुगि वाय् तिऱन्दु⋆ मडुत्तुन्नै निऱैत्तु क्कॉण्डेन्⋆ कॉडुमै शॅय्युम् कूऱ्ऱमुम्⋆ एन् कोल् आडि कुऱुक प्पॅऱा⋆ तड वरै त्तोळ् चक्करपाणी!⋆ शारङ्ग विल् शेवकने! ॥४॥	समुद्र मंथन के बाद जैसे घड़ा अमृत से भर गया उसी तरह हम अपने शरीर को द्रवित करते हुए मुंह खोलकर आपको जी भर पिया है। पर्वत की तरह बाहों में चक्र एवं धनुष धारण करने वाले मेरे नाथ ! दुर्भावना से ग्रस्त यम अब हमारे क्षेत्र में नहीं आ सकते। **466**
पॅान्नै क्कॉण्डुरैगल् मीदे⋆ निऱमॅळ उरैत्ताल् पोल्⋆ उन्नै क्कॉण्डेन् नावगम्बाल्⋆ माऱ्ऱिन्ऱि उरैत्तु क्कॉण्डेन्⋆ उन्नै क्कॉण्डेन्नुळ् वैत्तेन्⋆ एन्नैयुम् उन्निल् इट्टेन्⋆ एन् अप्पा! एन् इरुडीकेशा!⋆ एन् उयिर् क्कावलने! ॥५॥	जैसे सोने की शुद्धता पत्थर पर रगड़ कर परखते हैं उसी तरह आपके नाम को हमने अपने जीभ पर रगड़ा है। सदा के लिये आपको हमने अपने भीतर रख लिया है तथा अपने आप को आपके भीतर रख दिया है। हृषिकेश ! हमारे जनक एवं अभिभावक ! **467**

उन्नुडैय विक्किरमम्★ ऑन्रॊळियामल् एल्लाम्★ एन्नुडैय नॆञ्जगम्पाल्★ शुवर्वळि एळुदि क्कॊण्डेन्★ मन् अडङ्ग मळु वलङ्गै क्कॊण्ड★ इराम नम्बी !★ एन्निडै वन्देम् पॆरुमान् !★ इनि एङ्गु प्पोगिन्ऱदे॥६॥	मन्दिर की दीवारों पर के लिखावट की तरह हमने अपने हृदय में आपके शौर्यपूर्ण गाथा को बिना किसी त्रुटि के लिख लिया है।घमंडी राजाओं को अपने कुल्हाड़ी से कुचलने वाले राम (प्रशुराम) ! मेरे नाथ ! हमारे पास आकर अब आप कहां जायेंगे ? **468**
परु प्पदत्तु क्कयल् पॊरित्त★ पाण्डियर् कुलपति पोल्★ तिरु प्पॊलिन्द शेवडि★ एन् शॆन्नियिन् मेल् पॊरित्ताय्★ मरु प्पॊशित्ताय् ! मल् अडर्त्ताय् !★ एन्ऱॆन्ऱुन् वाशगमे★ उरु प्पॊलिन्द नाविनेनै★ उनक्कुरित्ताक्किनैये॥७॥	पांड्या राजा की तरह जो मत्स्य चिह्न वाले ध्वज को पर्वतों के शिखर पर फहराते हैं आपने हमारे सिर पर अपने चरण कमल को रख दिया है। आपके अनवरत नाम उच्चारण से हमारी जीभ सूज गयी है। आपने हमें अपनी सेवा में स्वीकार कर लिया है। **469**
अनन्तन् पालुम् गरुडन् पालुम्★ ऐदु नॊय्दाग वैत्तु★ एन् मनम् तन् उळ्ळे वन्दु वैगि★ वाळ च्चॆय्दाय् एम्बिरान् !★ निनैन्देन् उळ्ळे निन्ऱु नॆक्कु★ क्कण्गळ् अशुम्बॊळुग★ निनैन्दिरुन्दे शिरमम् तीर्न्देन्★ नेमि नॆडियवने ! ॥८॥	अनंत एवं गरूड़ के प्रति अपना स्नेह कम करते हुए आप हमारे हृदय में प्रवेश कर गये हैं और हमें नया जीवन प्रदान किया है।मेरे नाथ ! मेरा हृदय पिघलता है और मेरी आंखें खुशी के आंसू बहाते हैं। आप पर ध्यान कर हमने अपनी यातना का नाश कर दिया है। चक्रधारी प्रभु ! **470**
पनि क्कडलिल् पळ्ळि कोळै★ प्पळगविट्टु★ ओडि वन्देन् मन क्कडलिल् वाळ वल्ल★ माय मणाळ नम्बी !★ तनि क्कडले ! तनि च्चुडरे !★ तनि उलगे एन्ऱॆन्ऱु★ उन क्किडमाय् इरुक्क★ एन्नै उनक्कुरित्ताक्किनैये॥९॥	दुलहा प्रभु ! क्षीरसागर के शयन को छोड़कर आप हमारे हृदय सागर में आ बसे हैं। जबकि जाजवल्यमान सूर्य एवं उच्चस्थ स्वर्ग जैसे सुन्दर निवास आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं आपने हमारे भीतर आकर बसने का निर्णय लिया। क्या आश्चर्य है ! **471**
तड वरैवाय् मिळिर्न्दु मिन्नुम्★ धवळ नॆडुङ्गॊडि पोल्★ शुडर् ऑळियाय् नॆञ्जिन् उळ्ळे★ तोन्ऱुम् एन् शोदि नम्बि !★ वड तडमुम् वैकुन्दमुम्★ मदिळ् दुवरा पतियुम्★ इड वगैगळ् इगळ्न्दिट्टु★ एन्बाल् इडवगै कॊण्डनैये॥१०॥	श्वेत ध्वज जैसे ऊंचे शिखर पर फहरता है वैसे ही तेज दीपक की तरह आप हमारे हृदय में बसे हुए हैं। उत्तर के क्षीर सागर, ऊंचे वैकुण्ठ, ऊंची दीवारों वाले द्वारका, एवं अन्य सुखद निवास को छोड़कर आपने हमारे भीतर बास ले लिया है। **472**

वेयर् तङ्गळ् कुलत्तुदित्त⋆ विट्टुशित्तन् मनत्ते⋆ कोयिल् कॉण्ड कोवलनै⋆ क्कॉळुङ्गुळिर् मुगिल् वण्णनै⋆ आयर् एट्रै अमरर् कोवै⋆ अन्दणर् तम् अमुदत्तिनै⋆ शायै पोल प्पाड वल्लार्⋆ तामुम् अणुक्कर्गळे॥११॥ ॥ पॅरियाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणं ॥	वेयार जाति के प्रतीकपुरूष विष्णुचित्त के हृदय में घनश्याम गोपाल, गोपजन प्रमुख, देवताओं के नाथ, ने अपना मंदिर बना लिया है।उनकी प्रशस्ति में ये दसक गीत विद्वज्जनों के लिये अमृत हैं। जो इसका गायन करेंगे वे छाया की भांति प्रभु से अभिन्न जुड़े रहेंगे। **473** पेरियाऴवार तिरूवडिगळे शरणं

श्रीमते रामानुजाय नमः

(Thiruppavai)

समर्पण

श्रीमद्भगवतो प्राकुंशाचार्यजी महाराज

This is an excellent piece of Tamil composition by *Andal*. She is variously known by her other names *Godamma, Godai*, and is one among twelve *azhwars* (*alwars*) of srivaishnavite devotional cult. Her father *Vishnuchitt Swamy* is also one among the twelve illustrious *azhwars*. He got her in *tulsi* (basil) garden when he was engaged in doing the maintenance work of the grove and procure tulsi and flowers for the worship of *vatpatrashayi swamy*. *Andal's* advent place is *Srivilliputtur* which is about 80 km from Madurai in Tamil Nadu (India).

She, toeing the line of her father, was fully dedicated to the worship of the Lord *Narayan*. While assisting her father, whatever flower garland she was preparing everyday to be offered to the deities, she used to put them first on her own body around the neck and look into a mirror to ascertain whether they were properly prepared to enhance the deities' grandeur. Once her father *Vishnuchitta Swamy* noticed this, and with great anguish, he didn't offer that day any garland to the deities as he considered them defiled by her because she wore them before they were offered to the deities. To his utmost surprise, he got a dream at night *Narayan* commanding him to offer the garlands prepared and tested by *Andal* only. He could then realize that there was something special in her. With utmost awe, very carefully, he brought her up.

Coming of marriageable age, she rejected offer of marriage to any human being and offered to marry only Lord *Narayan* Himself. Lo and behold! The head priest of *Rangnath Swamy* temple, *SriRanagam* (Trichirapalli) had a dream instructed by the Lord to send a palanquin to *Srivilliputtur* to fetch her and offer her as His consort. Grand procession was organized and she was taken to Lord's sanctum sanctorum with due reverence. No sooner she entered the sanctum than her physical form immersed in the deity's Himself.

In *Srivilliputtur* the *Andal's* temple was raised by her father (also called *Periya azhwar*). Later the *pandya* king Vallabhadeva is said to have built around 789 AD the present temple. Great poet, *Kavichakravarti* Kamban has also sung the glory of the *gopuram* of *Srivilliputtur* in one of his writings.

Thiruppavai is learnt to have been composed by *Andal* when she was quite young, and is being recited in all srivaishnavites temples early morning in the *dhanurmas (*sun remains in 9th zodiac sign, sagittarius*)*, month of *Margshirsh* and *Paush*. At Tirumala, Tirupati, *suprabhatam* for all the thirty days of the said month is replaced by the recitation of *Thiruppavai* only.

The word *Thiruppavai,* among several acknowledged popular meanings, may literally be taken to mean **श्रेष्ठ पर्व -** *shreshtha parva* (grand festival). However, another pertinent meaning, "*thiru*" means respectful, and "*ppavai*" means marriageable girl, is also widely accepted. For inner and deeper meaning of the verses one may refer several publications available on various websites.

There are 30 verses, and they depict how to observe the vow in *Dahanur mas* in honour of Srikrishna. The period of thirty days of vow begins from the full moon night of *Margshirsh* month onwards. The observance of sacred vow is similar to "*katyayani vrat* **कात्यायनी व्रत** " described in *srimadbhagwat mahapuran* (*skandh* 10, *adhyaya* 22). The *gopi* of *Vrindavan* observe this vow to attain Srikirshna as husband and visit the river Yamuna for bath in early morning before sunrise. In *thiruppavai* also, in a similar fashion, *Andal* knocks the doors of all of her girl friends in the wee hour to move to the river Yamuna for bath. Gathering the friends and reminding them about the glory of Srikrishna are the contents of first 1 – 15 verses. They take a vow not to eat (verse 2) ghee and milk, avoid collyrium in the eyes, and flowers in the hair lock for all the thirty days. Thereafter they go to wake up Srikrishna. In the verse 16 the guards of Nandgop are requested to open the door. Verse 17 wakes up Nandgop, Yashoda, Srikrishna, and

Baldeva. Verses 18 – 20 wake Nappinai, the consort of Srikrishna. Verses 21 – 25 are direct audience to Srikrishna. Besides singing the glory of *Trivikram* (verse 3, 17, 24), milky ocean *Padmanabha* (verse 2, 4, 6), *Raam* (verse 10, 12, 13), and Srikrishna (in most of the verses), the glory of *Lakshmi-Nrisimha* is mentioned specially in verse 23. The solicitations are placed from verses 26-29 to the Lord. In verse 26 the age old tradition of the vow is mentioned which she has carried forward as a practice from her forefathers. The last verse is about *Andal* herself wherein she concludes with the glory of the *vrata.*

The Hindi translation is being attempted to benefit the devotees not familiar with Tamil. The sequence of words has been attempted to be maintained similar to the original Tamil composition. The words within quotes " " in Hinid version of the verses, are not in the original Tamil text, and simply intend to facilitate better understanding of the context.

तिरूप्पावै श्रीवैष्णव भक्ति साहित्य की एक अनुपम कृति है।इसके रचियता अन्डाल स्वयं लक्ष्मी के अवतार के रूप में जानी जाती हैं। इनका अवतार स्थल श्रीविल्लीपुत्तुर है जो तमिलनाडु में मदुरै से 80 कि . मी . की दूरी पर है। अन्डाल और इनके पिता श्री विष्णुचित्त स्वामी बारह आलवारों में आते हैं। सीता की तरह अन्डाल भी पृथ्वी से निकली हैं। श्रीविष्णुचित्त स्वामी अन्डाल को तुलसी के बागीचे में पाये थे । भगवान की सेवा के लिये माला बनाने में अन्डाल अपने पिता की सहायता किया करती थीं। पिता की अनुपस्थिति में माला की सुन्दरता को ये स्वयं गले में धारण कर आइने में देखकर परखती थीं । एक दिन पिता ने इस चीज को देख लिया और दुःखी मन से माला को अपवित्र समझ उस दिन भगवान को कोइ माला अर्पित नहीं किया। भगवान ने इन्हें स्वप्न देकर अन्डाल के पहने हुये माला को हीं चढ़ाने का निर्देश दिया। उस दिन से श्रीविष्णुचित्त स्वामी अन्डाल को अवतार के रूप में देखने लगे। जब ये विवाह योग्य हुई तव अन्डाल ने श्रीरंगनाथ भगवान से ही संबंध बानाने का निश्चय किया। भगवान श्रीरंगनाथ के निर्देश से अन्डाल को डोली में सजाकर भगवान के मंदिर में अतिउत्साह पूर्वक लाया गया। तदुपरान्त अन्डाल ने अपने को भगवान की सन्निधि में तिरोहित कर दिया।

श्रीमद्भागवत महापुराण के स्कंध 10 के अध्याय 22 की कात्यायनी व्रत की तरह अन्डाल धर्नुमास में 30 दिन व्रत करती थीं जिसका उद्देश्य श्रीकृष्ण को पति के रूप में प्राप्त करना था। तिरूप्पावै के 30 पाशुर इसी प्रयास का सजीव चित्रण है। पाशुर 1 में अन्डाल अपनी सखियों को सूर्योदय से पूर्व जागकर स्नान कर पूजा के लिये आमन्त्रित करती हैं तथा पाशुर 2 में नियमों के पालन का विवरण है जिसके अनुसार इस अवधि मे दूध घी का त्याग कर जूड़े में फूल नहीं बांधना तथा भक्ति साहित्य का पाठ करते हुए संतजनों को सम्मान तथा दान करना है। पाशुर 3 एवं 4 में भगवान की महत्ता तथा व्रत के फल चित्रित हैं। पाशुर 5 में पूजा की विधि का वर्णन है। पाशुर 6 से 15 तक सखियों को जगाने का वर्णन है। पाशुर 16 में नंद जी के राजमहल के द्वारपाल को जगाया जाता है। पाशुर 17 में नंदजी, यशोदा, बलराम तथा श्रीकृष्ण को जगाया जाता है। पाशुर 18 से 20 तक भगवान श्रीकृष्ण की सहभागिनी नप्पिनाय जो नीला देवी हैं , को जगाया जाता है। 21 से 23 पाशुर तक भगवान से बातचीत को चित्रित किया गया है। पाशुर 24 से 29 तक भगवान की प्रार्थना तथा पूजा व्रत के उद्देशय से भगवद कैंकर्य करने का आश्वाशन प्राप्त कर उत्साह की पूर्णाहति में घी उत्पलावित खीर समर्पित कर श्रृंगार कर

भगवान का चिर सन्निधि प्राप्त करना है। पाशुर **29** तो पूर्ण समपर्ण और शरणागति को चित्रित करता है जो वैष्णवता तथा उसकी प्रपन्नता का द्योत्तक है। पाशुर **30** में अन्डाल ने स्वयं को फलदायी तिरूप्पावै को रचने वाली बताती हैं।

तिरूप्पावै के कई शाब्दिक अर्थ हैं। जो ज्यादा लोकप्रिय है वह है "श्रेष्ठ व्रत"। एक और सटीक अर्थ है । "तिरू" यानि "सम्मानजनक" **,** और "प्पावै" यानि "विवाह योग्य कन्या"। तिरूप्पावै में भगवान नारायण के विभिन्न अवतारों का यशोगान किया गया है । त्रिविक्रम भगवान को पाशुर **3, 17** एवं **24** में**,** क्षीरसागरशायी भगवान को **2, 4** एवं **6** में**,** राम को **10, 12, 13** में**,** तथा श्रीकृष्ण को कईयों में चित्रित किया गया है। श्रीलक्ष्मी नृसिंह को पाशुर **23** मे विशेष रूप से वर्णित किया गया है।

अन्डाल का तिरूप्पावै दिव्य प्रबंध का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसके अतिरिक्त अन्डाल का **143** पाशुर की "नाच्चियार तिरूमोलि" भी दिव्य प्रबंध का एक हिस्सा है। नाच्चियार तिरूमोलि का एक भाग है "वार्णम अयराम" जिसमें अन्डाल ने भगवान श्रीकृष्ण से विवाह के विभिन्न कार्यक्रमों का सजीव चित्रण किया गया है और जो "सप्तपदी" पर जाकर पूरा होता है।तमिल नाडु के प्रत्येक परिवार मे वर वधू के कल्याणार्थ विवाह के अवसर पर "वार्णम अयराम" का विधिवत पारायण आवश्यक रूप से किया जाता है।

<table>
<tr><td>1</td><td>अगहन मास, पूर्णिमा का शुभ दिन
स्नान "यमुना" चाहे वो चले, सुसज्जित बालायें
सुन्दर भव्य आयपादी "वृन्दावन" की ऊच्चाभिलाषी बालायें
तेज भुजाल निष्ठुर कार्य "दुष्टों के नाश हेतु" वाले नंदगोपन, के कुमार
सुन्दर आँखोंवाली यशोदा के मृगशावक
श्याम वदन, सुन्दर ऑखें जगमग दिनकर, चाँद सा मुख
नारायण स्वयं हम पर कृपा करेंगे
संसार से प्रशंसित स्नान, आओ श्रीव्रत करें ।474</td><td>मार्गळि त्तिङ्गळ् मदि निरैन्द नन्नाळाल्
नीराड प्पोदुवीर् पोदुमिनो नेरिळैयीर्
शीर् मल्गुम् आयप्पाडि च्चेल्व च्चिरुमीर्गाळ्
कूर्वेल् कॊडुन्दॊऴिलन् नन्दगोपन् कुमरन्
एरार्न्द कण्णि यशोदै इळञ्शिङ्गम्
कार्मेनि च्चॆङ्गण् कदिर्मदियम् पोल् मुगत्तान्
नारायणने नमक्के परै तरुवान्
पारोर् पुगऴ प्पडिन्देलोर् एम्बावाय्॥१॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">प्रथम पद निमंत्रण का है। गोदम्मा अपने नजदीकी सखियों को पवित्र व्रत के लिए उत्साहित करती हैं। धनुर्मास का यह व्रत प्रातःकाल में यमुना स्नान का है। प्रारंभ का दिन अगहन यानि मार्गशीर्ष के पूर्णिमा का है जो प्रायः धनुर्मास (जब सूर्य धनु राशि में हो) के प्रारंभ काल के आसपास होता है। इससे यशोदा के लाड़ले पुत्र सुन्दर सलोने कृष्ण प्रसन्न होंगे। नन्दजी इनकी रक्षा में निष्ठुर होकर तत्पर रहते हैं। कोई भी छोटी सी छोटी घटना से कृष्ण की रक्षा के लिए सदा हाथ में भुजाल (तेज भाला) लिए तैयार रहते हैं। कृष्ण तो स्वयं नारायण हैं, और इस व्रत की पूर्त्ति में, इनका आशीर्वाद हमें अवश्य मिलेगा।</td></tr>
<tr><td>2</td><td>संसार में जन्म पाया, अपने इष्टदेव हेतु
सुनो, क्षीरसमुद्र के
योगनिद्रासायी नाथ चरणों की वन्दना गायें
घी नहीं खायें, दूध नहीं खायें, प्रातः स्नान करें
काजल न लगायें, जूड़ा फूल न बाधें
त्याज्य कार्य न करें, मिथ्या कहानी न पढ़ें
योग्य जनों, दीन जनों, संतों "को" दान दें
अपना उद्धार सोचें, प्रसन्न रहें, आओ श्रीव्रत करें ।475</td><td>वैयत्तु वाऴ्वीर्गाळ्! नामुम् नम् पावैक्कु
शॆय्युम् किरिशैगळ् केळीरो पार्कडलुळ्
पैयत्तुयिन्र परमनडि पाडि
नॆय्युण्णोम् पालुण्णोम् नाट्काले नीराडि
मैयिट्टॆऴुदोम् मलरिट्टु नाम् मुडियोम्
शॆय्यादन शॆय्योम् तीक्कुरळै च्चॆन्रोदोम्
ऐयमुम् पिच्चैयुम् आन्दनैयुम् कैकाट्टि
उय्युमारॆण्णि उगन्देलोर् एम्बावाय्॥२॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">द्वितीय पद में गोदम्मा बताती हैं कि जीवन की सार्थकता प्रभु की चरण बन्दना में है। नारायण हरि क्षीर सागर में योगनिद्रा में लीन</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">हैं। दोनों पार्श्व में भू देवी एवं नीला देवी सेवारत हैं। श्रीचरणों में मन को समर्पित करने के ऊपाय स्वरूप बताती हैं कि व्रत के दिनों में दूध घी का त्याग कर दें। इससे मन का आलस दूर होगा। श्रृंगार के साधन, जूड़ा में फूल, और आंखों में काजल, का भी त्याग कर दें। भगवत कथा के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को न पढ़ें। संत पुरूषों एवं याचकों की सेवा में यथा शक्ति दान दें। इस तरह से प्रसन्न रहकर श्रीव्रत करें।</td></tr>
<tr><td>3</td><td>बढ़ कर, संसार मापा, सर्वोत्तम नाथ का नाम गायें
अपना श्रीव्रत “का” करें स्नान
दुष्टों से रहित देश पूरा “होगा” , माह में तीन वर्षा होगी
बढ़ेंगे बड़े धान के खेत, छोटी मछलियाँ खेलेंगी
सुन्दर फूलों में चकमक मधुमक्खियां सोयें
स्थिर गायें खड़ी, गोप दूहें, थन पकड़ कर
वर्त्तन भरें, उदार बड़ी गायों से
टिकाऊ ऊन्नति, परिपूर्ण रहें, आओ श्रीव्रत करें ।476</td><td>ओङ्गि उलगळन्द उत्तमन् पेर् पाडि⋆
नाङ्गळ् नम् पावैक्कु च्चाट्रि नीर् आडिनाल्⋆
तीङ्गिन्रि नाडॅल्लाम् तिङ्गळ् मुम्मारि पॅय्दु⋆
ओङ्गु पॆरुञ्जॆन्नॆल्लूडु कयल् उगळ⋆
पूङ्गुवळै प्पोदिल् पॊरिवण्डु कण्पडुप्प⋆
तेङ्गादे पुक्किरुन्दु शीर्त्त मुलै पट्रि
वाङ्ग⋆ क्कुडम् निरैक्कुम् वळ्ळल् पॆरुम् पशुक्कळ्⋆
नीङ्गाद शॆल्वम् निरैन्देलोर् एम्बावाय्॥ ३॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">तृतीय पद में त्रिविक्रम भगवान यानि वामन भगवान की महत्ता का स्मरण कराते हुये बताती हैं कि इनकी असीम कृपा से संपन्नता सद्यः आयेगीं। महीना में तीन बार वर्षा होगी। पृथ्वी धान की फसल से पूर्ण होगी। जल की पर्याप्तता में छोटी मछलियां आनन्दित रहेगीं। गोदम्मा चाहती हैं कि मछली बनकर वे निरंतर सागरशायी प्रभु का दर्शन करती रहें। मधुमक्खी बनकर फूल में ही सो जाना चाहती हैं। यह फूल प्रभु की श्यामल सौंदर्य का है जिसमें चिरकाल के लिये बन्द हो जाना चाहती हैं। स्थायी संपन्नता को चित्राकिंत करते हुए कहती हैं कि स्थिर गायें निरंतर दूध देंगी। सभी पात्र दूध से उत्पलावित रहेंगे। वास्तव में वे, अनंतशायी प्रभु के क्षीर समुद्र में आत्मसात हो जाना चाहती हैं।</td></tr>
<tr><td>4</td><td>समुद्र व वर्षा के नाथ, कुछ नहीं रोकें
समुद्र करें प्रवेश पानी ले, गरजते ऊपर उठें
जगत के मुख्य नाथ स्वरूप जैसा शरीर श्याम
चौड़ा सुन्दर कंधा, पद्मनाभ हाथों “ में “</td><td>आऴि मऴैक्कण्णा ! ऒन्रु नी कै करवेल्⋆
आऴियुळ् पुक्कु मुगन्दु कॊडार्त्तेरि⋆
ऊऴि मुदल्वन् उरुवम् पोल् मॆय् करुत्तु⋆
पाऴियन् तोळुडै प्पर्पनाबन् कैयिल्⋆</td></tr>
</table>

	चक्र जैसी विजली "चमके ", शंख जैसी गर्जन विना देर के, बाण जैसी वर्षा ऊन्नत संसार हेतु हो, हम भी अगहन माह स्नान "का " आनन्द लें, आओ श्रीव्रत करें ।**477**	आऴिपोल् मिन्नि वलम्बुरिपोल् निन्ऱदिर्न्दु⋆ ताऴादे शारङ्गम् उदैत्त शरमऴै पोल्⋆ वाऴ उलगिनिल् पॆय्दिडाय्⋆ नाङ्गळुम् मार्गऴि नीराड मगिऴ्न्देलोर् एम्बावाय्॥ ४॥
	चतुर्थ पद में, वर्षा के बादल का स्वरूप, प्रभु की श्यामलता, का स्मरण कराता है। बादल का गर्जन, पाञ्चजन्य के घोष का, और चमकती बिजली, सुदर्शन चक्र की प्रभा को, याद दिलाते है। वर्षा की बौछार भगवान राम के तीखे बाणों के समान रमनीक दिखते हैं। गोदम्मा का यह पद सर्वव्याप्त प्रभु के लिये प्रेम जागृत करता है।	
5	लीलादेव मथुरा किशोर पवित्र यमुना, गोपों का आश्रय पवित्र ज्योति, मातृ यश वृद्धिकारक दामोदर की पूजा, ताजा एवं सुगंधित पुष्प से करें , पूजा नमन एवं, हम कीर्तिगान ध्यान करें, आगत अनागत सारे पाप तृणवत जलें, उनके नाम से, आओ श्रीव्रत करें ।**478**	मायनै मन्नु वडमदुरै मैन्दनै⋆ तूय पॆरुनीर् यमुनै त्तुरैवनै⋆ आयर् कुलत्तिनिल् तोन्ऱुम् अणि विळक्कै⋆ तायै क्कुडल् विळक्कम् शॆय्द दामोदरनै⋆ तूयोमाय् वन्दु नाम् तूमलर् तूवि त्तॊऴुदु⋆ वायिनाल् पाडि मनत्तिनाल् शिन्दिक्क⋆ पोय पिऴैयुम् पुगुदरुवान् निन्ऱनवुम्⋆ तीयिनिल् तूशागुम् शॆप्पेलोर् एम्बावाय्॥ ५॥
	यमुना किनारे के किशोर दामोदर भगवान हैं।ऊखल में रस्सी से मां यशोदा ने इन्हें बांधकर दामोदर नाम से प्रसिद्ध कर दिया। गोपजनों के सहारा एवं अपनी मां देवकी तथा यशोदा के यश को बढ़ाने वाले हैं। इनकी पूजा पूर्व एवं भविष्य के सारे पापों को नाश करने वाले हैं। इनकी पूजा में सुगंधित फूल का अर्पण तथा प्रेम से उनका यशगान पर्याप्त है।	

<table>
<tr>
<td>6</td>
<td>पक्षी कलरव कर रहे, पक्षिराज आरोही “के” मंदिर में
श्वेत शंख नाद कर रहे, सुन नहीं रहे
जागो बच्चों, राक्षसी के विषैले स्तन पान किया
शकट “छली “ का ठोकर “पैरों “ से नाश किया
क्षीर सागर शेषसायी, जीवन स्त्रोत “ हैं “
संतों योगियों “ के ”
“ उन “ का शनैः शनैः ध्यान टूटा, “उनके “ हरिनाम के ऊच्च स्वर
हृदय में प्रवेश कर रहे, व आनंद दे रहे, आओ श्रीव्रत करें ।479</td>
<td>पुळ्ळुम् शिलम्बिन काण् पुळ्ळरैयन् कोयिल्*
वॆळ्ळै विळि शङ्गिन् पेररवम् केट्टिलैयो*
पिळ्ळाय् ! एळुन्दिराय् पेय्मुलै नञ्जुण्डु*
कळ्ळ च्चगडम् कलक्कळिय क्कालोच्चि*
वॆळ्ळत्तरविल् तुयिल् अमरन्द वित्तिनै*
उळ्ळत्तु क्कॊण्डु मुनिवर्गळुम् योगिगळुम्*
मॆळ्ळ एळुन्दरि एन्र पेररवम्*
उळ्ळम् पुगुन्दु कुळिरन्देलोर् एम्बावाय्॥६॥</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td colspan="2">पहले के पांच पद भगवान के रूप और नाम के यशोगान का है। छठे से पन्द्रह तक के पद गोदम्मा द्वारा अन्य सखियों को जगाने के प्रयास का है। प्रातःकाल के आगमन को प्रमाणित करते हुए अनेकों उदाहरण देकर गोदम्मा अपनी सखियों को जगाती है। पक्षियों की आवाज, पक्षीराज गरूड़ के सवारी नारायण के मंदिर में शंखनाद, तथा योगी जन का ध्यान टूट कर हरिनाम उच्चारण की आवाज, हृदय को आनंदित कर रहे हैं। क्षीरसागर के अनंतशायी भगवान ने ही पूतना एवं शकटासुर का नाश नंदकिशोर के रूप में किया।</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>भरद्वाज “ अळियन “ पक्षियों की चहक
बोलती भाषा, सुने नहीं, गूंगी लड़कियों
गले के आभूषणों के किंकिण शब्द
जूड़ा फूलों के सुगंध, मंथन
दही का घोष, मिला नहीं
नेता किशोरियों के, नारायण की मूर्ति
व केशव का गुणानुवाद, सुनती नहीं, सो रही हो
सुन्दरियों, खोलो “दरवाजा”, आओ श्रीव्रत करें । 480</td>
<td>कीशु कीशॆन्रॆङ्गुम् आनैच्चात्तन्* कलन्दु
पेशिन पेच्चरवम् केट्टिलैयो पेय् प्पॆण्णे*
काशुम् पिरप्पुम् कलकलप्प क्कै पेर्त्तु*
वाश नरुम् कुळल् आय्च्चियर्* मत्तिनाल्
ओशै पडुत्त तयिर् अरवम् केट्टिलैयो*
नायग प्पॆण्पिळ्ळाय् ! नारायणन् मूर्त्ति*
केशवनै प्पाडवुम् नी केट्टे किडत्तियो*
तेशम् उडैयाय् ! तिरवेलोर् एम्बावाय्॥७॥</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td colspan="2">सातवें पद में प्रातः काल के पूर्ण आगमन के सारे लक्षणों का वर्णन है।पक्षियों की चहक (केशु केशु बोल रही हैं जो</td>
</tr>
</table>

	केशव का छोटा नाम है), घर में अन्य लड़कियों की कियाशीलता से होने वाले शब्दों को तो सुनो। जागकर ब्यस्त होने से, घर के अन्य महिलायों के सिर के जूड़ा के फूल, हिलडुलकर सुगंध विखेर रहे हैं, तथा उनके आभूषण के मधुर आवाज मनोहर हैं। क्या ये भी जगाने के लिये पर्याप्त नहीं हैं। घर में मथे जाने वाले दही की हांडी की आवाज नहीं सुनती! ओ प्रमुख सखी! भगवान नारायण एवं केशव (केशी राक्षस का मुंह फाड़ने वाले) का नामगान भी नहीं सुनती!	
8	पूरब का आकाश श्वेत हो रहा, गायें सर्वत्र चर रहीं, व्रत के उत्सुकता से जाने वाली को रोक, तुम्हारी प्रतीक्षा है पुकारें, खड़े हैं खुश जागो बाले, गाते व्रत मनाते हुए जो घोड़ा राक्षस का मुँह फाड़ा, योद्धाओं "कंस के" को पराजित किया देवाधिदेव की अर्चना करें द्रवित होकर " वे " कुशल क्षेम पूछें, आओ श्रीव्रत करें । **481**	कीऴ्वानम् वॆळ्ळॆन्ऱॆरुमै शिऱु वीडु* मेय्वान् परन्दन काण् मिक्कुळ्ळ पिळ्ळैगळुम्* पोवान् पोगिन्ऱारै प्पोगामल् कात्तु* उन्नै- क्कूवुवान् वन्दु निन्ऱोम्* कोदुगलम् उडैय पावाय्! एऴुन्दिराय् पाडि प्पऱै कॊण्डु* मावाय् पिळन्दानै मल्लरै माट्टिय* देवादि देवनै च्चॆन्ऱु नाम् शेवित्ताल्* आवा एन्ऱारायन्दरुळेलोर् एम्बावाय्॥८॥
	गोदम्मा इस आठवें पद में सुवह होने के अन्य और लक्षणों को बताती हैं। पूरब दिशा का आकाश साफ दिखरहा है, गायें चरने के लिए बाहर आ चुकी हैं (अगर नहीं जागोगी तो कृष्ण दर्शन के लाभ से बंचित रह जाओगी क्योंकि वे शीघ्र हीं गायों के पीछे जंगल चले जायेगें)। अन्य सखियां आ चुकी हैं, हम उन्हें तुम्हारे लिये रोक रखे हैं। चलो जागो और देवताओं के सिरमौर, जिन्होनें केशी घोड़ा राक्षस का मुंह फाड़ा, कंस के पहलवानों को ध्वस्त कर दिया, की पूजा करें। वे कृपालु हैं, हमारा कुशल अवश्य पूछेगें।	

<table>
<tr><td>9</td><td>रत्नजटित कक्ष दीपों से प्रकाशित
सुगन्धित धूप “अगरवत्ती “ की महक में, गद्दे पर सो रही
मेरी चाची की बेटी, सुन्दर मणिजड़ित किवाड़ का साकल खोलो
चाची, उस लड़की को जगाओ, जो केवल तुम्हारी बेटी है
गूंगी है, बहरी है, या थकी है
या जादू टोने से सोयी है
बड़े जादूगर, माधवन, वैकुंठन
के नाम अति फलदायक हैं, आओ श्रीव्रत करें । 482</td><td>तूमणि माडत्तु च्चुट्रम् विळक्केरियत्⋆
दूपम् कमळ त्तुयिल् अणैमेल् कण्वळरुम्⋆
मामान् मगळे ! मणि क्कदवम् ताळ् तिऱवाय्⋆
मामीर् ! अवळै एळुप्पीरो⋆ उन् मगळ् तान्
ऊमैयो अन्ऱि च्चेविडो अनन्दलो⋆
एम प्पॆरुन्दुयिल् मन्दिर प्पट्टाळो⋆
मामायन् मादवन् वैकुन्दन् एन्ऱॆन्ऱु⋆
नामम् पलवुम् नविन्ऱेलोर् एम्बावाय्॥ ९ ॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">नौवें पद में गोदम्मा एक सर्वसंपन्न (नित्य मुक्त की भांति जो स्वयं आनन्द में मग्न है) सखी को जगाती हैं। घर रत्नों से अलंकृत है, तथा कमरे सुंदर दीपों से प्रकाशित हैं।आरामदायक गद्दे हैं, सुंगधित वातावरण है। किवाड़ खोलने के लिये आग्रह करते हुये चाची (सखी की मां) से निवेदन करती हैं, “इस लड़की को जगाओ। लगता है थकी होगी, या फिर तो बहरी गूंगी हो गयी होगी ? सचमुच सोयी है, या जादू टोने के असर में है?” इसे माधव एवं वैकुंठन भगवान के नाम से अवश्य लाभ होगा।वे बड़े जादूगर भी हैं।</td></tr>
<tr><td>10</td><td>तपश्रम से स्वर्ग जा रही, ओ सजनी
ऊत्तर भी न देती, दरवाजा न खोलती
सुगंधित तुलसी माला पहने नारायण
का यशगान वरदायक है, बहुत पहले
एक दिन मृत्युग्रस्त हुआ कुभंकर्ण
क्या उसकी लंबी नींद प्रकट हुई, या उसने तुम्हें नींद दी
नींद से उत्पीड़ित, सखी रत्न
स्थिर चित्त होकर दरवाजा खोलें, आओ श्रीव्रत करें ।483</td><td>नोट्र् च्चुवर्क्कम् पुगुगिन्ऱ अम्मनाय्⋆
माट्रमुम् तारारो वाशल् तिऱवादार्⋆
नाट्र त्तुळाय् मुडि नारायणन्⋆ नम्माल्
पोट्र प्पऱै तरुम् पुण्णियनाल्⋆ पण्डॊरुनाळ्
कूट्रत्तिन् वाय्वीळ्न्द कुम्बकरणनुम्⋆
तोट्रुम् उनक्के पॆरुन्दुयिल् तान् तन्दानो⋆
आट्र अनन्दल् उडैयाय् ! अरुङ्गलमे⋆
तेट्रमाय् वन्दु तिऱवेलोर् एम्बावाय्॥ १० ॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">इस पद में एक प्रमुख सखी को गोदम्मा जगाती हैं। यह नित्य मुक्त की तरह आनंद में मग्न सोयी सी दिखती है, दरवाजा भी न खोलती, और न कोई जबाव देती है। लगता है कुंभकर्ण की नींद इसे सता रही है। भगवान नारायण</td></tr>
</table>

	यानि कि कृष्ण जो गले में तुलसी के माला के सुगंध से उन्मादित हो रहे हैं, के नामगान से ही जागेगी। ओ सखीशिरोमणि! आ दरवाजा खोल।	
11	युवा गायें दुही गयीं दुश्मन विदारक गोपों, की स्वर्णलता सांप के फनजैसी अधोभाग वाली, वन की मोरनी बाहर आओ, सुहृद मित्र सभी कुटुंब आये तुम्हारे आंगन श्याम घन, नाम गान करते न हिलती, न बोलती, सौभगे क्यों सोयी हो, आओ श्रीव्रत करें ।**484**	कट्ऱु क्करवै क्कणङ्गळ् पल करन्दु⋆ शॆट्रार् तिरल् अऴिय च्चॆन्ऱु शॆरु च्चॆय्युम्⋆ कुट्रम् ऑन्ऱिल्लाद कोवलर् तम् पॊर्कॊडिये⋆ पुट्रवल्गुल् पुनमयिले! पोदराय्⋆ शुट्रत्तु तोऴिमार् एल्लारुम् वन्दु⋆ निन् मुट्रम् पुगुन्दु मुगिल्वण्णन् पेर् पाड⋆ शिट्रादे पेशादे शॆल्व प्पॆण्डाट्टि⋆ नी एट्रुक्कुऱङ्गुम् पॊरुळेलोर् एम्बावाय्॥११॥
	एक अति सुन्दरी मोर जैसी सखी, जो सुगठित शरीर वाली है और अच्छे कुल की है (गायें से संपन्न शक्तिशाली परिवार), जो अपने पिता की स्वर्णलता जैसी लाड़ली है, को जगाते हुए गोदम्मा कहती हैं कि सभी प्यारे मित्र आकर तुम्हारे आंगन में सांवले सलोने कृष्ण का नाम गा रही हैं। जागो न ! हिलो तो सही, कुछ बोल तो, या नित्य मुक्त का आनंद अकेली लेती रहोगी? आनंद का फल सबको बांटने में है।	
12	पुकारती गायें, बछड़ों को स्नेह वश वत्स स्मरण थन सद्यः दूध बहाता भींगा घर पंकिल है दूध से, प्रगतिशील गोप की बहन सिर पर ओस लिए तुम्हारे प्रवेश द्वार के बाहर खड़े दक्षिण लंका के शासक का नास करनेवाले "का " मन हर्षकारी गीत हैं हम गाते, तुम मुँह नहीं खोलते कम से कम जाग तो सही, क्या घोर निद्रा दूसरे घर के सभी लोग भूले नही "जाग गये ", आओ श्रीव्रत करें ।**485**	कनैत्तिळङ्गट्रेरुमै कन्ऱुक्किरङ्गि⋆ निनैत्तु मुलै वऴिये निन्ऱु पाल् शोर⋆ ननैत्तिल्लम् शेराक्कुम् नर्चॆल्वन् तङ्गाय्⋆ पनि त्तलै वीऴ निन् वाशल् कडै पट्रि⋆ शिनत्तिनाल् तॆन् इलङ्गै क्कोमानै च्चॆट्र⋆ मनत्तुक्किनियानै प्पाडवुम् नी वाय् तिऱवाय्⋆ इनि त्तान् एऴुन्दिराय् ईदॆन्न पेर् उऱक्कम्⋆ अनैत्तिल्लत्तारुम् अऱिन्देलोर् एम्बावाय्॥१२॥

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">यह पद पूर्ववर्ती पद की तरह ऐसे सखी को जगाने का है जिसका भाई गौरवशाली है।

(पूर्व के पद में पिता को संबोधित किया गया है और इस पद में भाई को। बहुत सारी गायें हैं। भाई आवश्यक भगवत कैंकर्य से बाहर गया है। गायें इसी कारण दूही नहीं गयी हैं। गायें बछड़ों को याद कर थन से दूध बहाकर घर को पंकिल कर रहीं हैं।)

गोदम्मा कहती हैं कि सुबह के ओस की परवाह किए वगैर हम सभी आये हैं। भगवान राम का गुणानुवाद कर रहे हैं। केवल तुम ही सोयी हो, बाकि सभी लोग जाग चुके हैं।</td></tr>
<tr><td>13</td><td>“वकासुर” पक्षी का मुंह फाड़ा, दुष्ट राक्षस “रावण” का
सिर काटा, उनकी कीर्तिगान करते जाते
सभी किशोरियाँ श्रीव्रत स्थल पहुँच गये
शुक्र ऊग आये, गुरू अस्त हुए
पक्षी कलरव करें, देखो सुमनसी सुन्दरी, मृगनयनी
कठोर शीतल जल में डुबकी नहीं लगाती
सोयी सेज पर, ओ वालिके, अच्छा दिन “है आज”
छोड़ युक्ति आलस, हमारे संग, आओ श्रीव्रत करें ।486</td><td>पुळ्ळिन् वाय् कीण्डानै प्पोल्ला अरक्कनै*
किळ्ळि क्कळैन्दानै क्कीर्त्तिमै पाडि प्पोय्*
पिळ्ळैगळ् एल्लारुम् पावै क्कळम् पुक्कार्*
वेळ्ळियेळुन्दु वियाळम् उरङ्गिट्रु*
पुळ्ळुम् शिलम्बिन काण् पोदरि क्कण्णिनाय्*
कुळ्ळ क्कुळिर क्कुडैन्दु नीराडादे*
पळ्ळि क्किडत्तियो पावाय्! नी नन्नाळाल्*
कळ्ळम् तविर्न्दु कलन्देलोर् एम्बावाय्॥१३॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">यह पद एक ऐसी सुन्दर आंखोवाली सखी को जगाने का है जो भगवत आनंद में लिप्त सोयी जान पड़ती है।गोदम्मा बताती हैं कि सुवह का तारा शुक्र उग आये हैं, पक्षियां कलरव कर रही हैं, अन्य सखियां भगवान कृष्ण एवं राम का यशगान करते स्नान को जा चुके हैं। उसे जागकर शीतल जल में स्नान के लिये प्रेरित किया जा रहा है।</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>14</td><td>पिछवाड़े बाग के तड़ाग में
लाल कमल खिल गये, कुमुदिनी सकुचे
केसरिया वस्त्र संत गण
पवित्र मंदिर में शंख वादन हेतु जा रहे
हमें पहले जगाओगी, वादा से बोला था
ओ बाले, जागो, निर्लज्ज बड़बोला
शंख चक्रधारी, वक्षस्थल विशाल
कमलनयन के गीत गायें, आओ श्रीव्रत करें ।487</td><td>उङ्गळ् पुळैक्कडै त्तोट्टत्तु वावियुळ्⋆
शेङ्गळुनीर् वाय् नेगिळ्न्दाम्बल् वाय् कूम्बिन काण्⋆
शेङ्गर्पॊडि क्कूरै वॆण्बर् तवत्तवर्⋆
तङ्गळ् तिरुक्कोयिर् चङ्गिडुवान् पोदन्दार्⋆
एङ्गळै मुन्नम् एळुप्पुवान् वाय् पेशुम्⋆
नङ्गाय्! एळुन्दिराय् नाणादाय्! नावुडैयाय्⋆
शङ्गॊडु चक्करम् एन्दुम् तडक्कैयन्⋆
पङ्गय क्कण्णानै प्पाडेलोर् एम्बावाय्॥१८॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">अब बारी एक ऐसी सखी को जगाने का है जिसने कल वादा किया था कि सब को जगायेगी परंतु सब भूलकर स्वयं सो रही है (बोलने में चतुर है अतः इसको जगाकर ले चलें भगवान कृष्ण को बात से प्रभावित करेगी) । दिन निकलने पर है अब, लाल कमल खिलने लगे तथा कुमुदिनी बंद होने लगी। साधुलोग केसरिया वस्त्र पहने मंदिर में शंख नाद करने के लिए जा रहे हैं। आओ कमलनयन भगवान का हम भी यश गान करें।</td></tr>
<tr><td>15</td><td><u>दो दलों का संवाद एक बाहर 1 एक भीतर 2</u>
आश्चर्य, सुगनी सो रही 1
कठोर वचन मत बोल, मैं शीघ्र आ रही 2
वाक् पटुता से हैं पूर्व अवगत 1
वाग्विवाद में आगे हो, हम हैं वंचित लाभ से 2
शीघ्र चलो और सारे काम हैं 1
सभी जाने वाले आ गये 2 हाँ बाहर आ गिन ले 1
शक्तिशाली हाथी “कुवलयापीठ” संहारे, रण में दुश्मनों को मारे
गजेन्द्र नायक के गीत गायें, आओ श्रीव्रत करें । 488</td><td>एल्ले! इळङ्किळिये! इन्नम् उरङ्गुदियो⋆
शिल् एन्रळैयेन्मिन् नङ्गैमीर्! पोदरुगिन्रेन्⋆
वल्लै उन् कट्टुरैगळ् पण्डेयुन् वायरिदुम्⋆
वल्लीर्गळ् नीङ्गळे नाने तान् आयिडुग⋆
ऑल्लै नी पोदाय् उनक्कॆन्न वेरुडैयै⋆
एल्लारुम् पोन्दारो पोन्दार् पोन्दॆण्णिक्कॊळ्⋆
वल्लानै कॊन्रानै माट्रारै माट्रळिक्क
वल्लानै⋆ मायनै प्पाडेलोर् एम्बावाय्॥१५॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">सखियों के जगाने का यह अंतिम पद है।भीतर सोयी हुई सखी भगवत आनन्द में निमग्न बतायी जाती है। जब बाहर वालों ने उसके सोने पर आश्चर्य प्रकट किया तो शीघ्र उसने आने का वादा किया। वह बाद बिवाद नहीं करना चाहती और नामभजन का लाभ लेना चाहती है। अतः उसे तुरत बाहर आकर गजेन्द्रउद्धारक और कंश के निष्ठुर हाथी के</td></tr>
</table>

	संहारक भगवान का यशोगान करने को कहा गया।	
16	रक्षक हमारे नंदगोपन राय के मंदिर "पुष्पसज्जित" तोरण द्वार, रक्षक खोलिए रत्न जटित द्वार घुंघुरू संग साकल यमुना यात्रा उद्घोष हेतु ढोल देने को नीलमणि नायक कल ही वचन देय नूतन सज्जित हम आये, जगाने, गाते पहले पहले "भोर में", मातृवत दया करें इंकार न करें, पट खोलें, आओ श्रीव्रत करें। **489**	नायगनाय् निन्ऱ नन्दगोपनुडैय कोयिल् काप्पाने ! ⋆ कॉडित्तोन्ऱुम् तोरण वायिल् काप्पाने ! ⋆ मणिक्कदवम् ताळ् तिऱवाय् ⋆ आयर् शिऱुमियरोमुक्कु ⋆ अऱै पऱै मायन् मणिवण्णन् नेंन्नले वाय्नेरन्दान् ⋆ तूयोमाय् वन्दोम् तुयिलॅळ प्पाडुवान् ⋆ वायाल् मुन्नम् मुन्नम् माट्रादे अम्मा ⋆ नी नेय निलै क्कदवम् नीक्केलोर् एम्बावाय् ॥१६॥
	पूर्व के दस पदों में, **6** से लेकर **15** तक, दस सखियों को जगाया गया (अनुमान किया जाता है कि गोदम्मा अपने से पूर्ववर्ती दस आलवारों को जगायी हैं)। सभी अब भगवान कृष्ण के पिता नन्द जी के फाटक पर द्वारपाल से प्रार्थना कर रहे हैं कि प्रवेश का सुन्दर दरवाजा खोलिये। भगवान ने कल हमें यशगान के लिये सुन्दर ढ़ोल (यशोगान रूपी कैंकर्य का उत्तम साधन) देने को कहा था। आप में माता की करूणा है अतः दरवाजा खोल कर हमें अनुगृहित करें। (बिना नाम लिये द्वारपााल से विनती की गयी है। द्वारपाल आचार्यश्री की तरह प्रवेश देने के अधिकारी हैं। सम्मान में आचार्य का नाम नही लिया जाता, उसीतरह यहां द्वारपाल का भी नाम नहीं लिया गया है।पिता का नाम लेना उनके गौरव गाथा है जिससे कि उन्हें भगवान के पिता होने का गौरव मिले।)	
17	वस्त्र, जल, भोजन, खुशी देत जन नायक नन्दगोप, जागिये जननायिका कुलदीपिका सजनी, यशोदा जागिये गगन भेद, विशाल रूप, मापा त्रैलोक को देवराय, नींद छोड़ जागिये स्वर्ण पायल पाद, समुन्नत बलदेव भ्राता सहित जागिये, आओ श्रीव्रत करें । **490**	अम्बरमे तण्णीरे शोऱे अऱम् शैय्युम् ⋆ एम्बॆरुमान् नन्द गोपाला ! एऴुन्दिराय् ⋆ कॉम्बनार्क्कॆल्लाम् कॉऴुन्दे ! कुल विळक्के ⋆ एम्बॆरुमाट्टि यशोदाय् ! अऱिवुराय् ⋆ अम्बरम् ऊडऱुत्तोङ्गि उलगळन्द ⋆ उम्बर् कोमाने ! उऱङ्गादॆऴुन्दिराय् ⋆ शॆम्बॊर् कऴलडि च्चॆल्वा बलदेवा ! ⋆ उम्बियुम् नीयुम् उऱङ्गेलोर् एम्बावाय् ॥१७॥

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">इस पद में गोपियों का द्वार खुलने के बाद सबों के शयनकक्ष के समीप पहुंचने का आभास मिलता है। वे एक एक कर सब को जगा रही हैं ः- सबके मालिक, अन्न, जल, भोजन तथा खुशी बांटने वाले नन्दगोप जी को, फिर माता यशोदा को, तथा स्वयं भगवान को जिन्होंने तीनो लोक को त्रिविक्रम रूप में माप डाला, और फिर भाई बलदेव जी को, जो अपने पैर में सुन्दर सोने का आभूषण पहने रहते हैं।</td></tr>
<tr><td>18</td><td>दर्शाते उत्साह हाथी का, न भागते "रण से ", शक्तिमान वक्ष स्थल
उस नन्दगोप की पुत्रवधू, ओ नप्पिनाय
सुगंधित केशवाली, दरवाजा खोलिये
जागे, सभी पक्षी पुकारें, देख
माधवी शिखर से कुहु करे कोयल, देख
गेंद पकड़े उंगलियों से, उन आपके पति का गुन गायें
लाल सरोरूह हाथ, कर किंकिणि बाजे, आप
आयें, खोलें हर्ष से, आओ श्रीव्रत करें । **491**</td><td>‡उन्दु मद कळिट्रन् ओडाद तोळ् वलियन्*
नन्द गोपालन् मरुमगळे ! नप्पिन्नाय् ! *
कन्दम् कमळुम् कुळलि ! कडै तिरवाय्*
वन्देङ्गुम् कोळि अळैत्तन काण्* मादवि–
प्पन्दल् मेल् पल्गाल् कुयिल् इनङ्गळ् कूविन काण्*
पन्दार् विरलि ! उन् मैत्तुनन् पेर् पाड*
शॆन्दामरै क्कैयाल् शीरार् वळै ऑलिप्प*
वन्दु तिरवाय् मगिळ्न्देलोर् एम्बावाय्॥१८॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">यह पद श्रीवैष्णवों के लिये अति महत्वपूर्ण है। कहा जाता है आचार्य प्रवर भाष्यकार स्वामी श्रीरामानुज स्वामी इस पद को गुनगुनाते हुए एक बार अपने गुरू के दरवाजे पर पहुंचे। गुरू पुत्री ने जब दरवाजा खोला तो वे साष्टांग अडियन के मुद्रा में जमीन पर लेट कर उसे प्रणाम किया। बेटी दौड़ कर अपने पिता को अनपेक्षित स्थिति से अवगत कराया। गुरू ने रामानुज स्वामी से इस पद के स्मरण का सवाल पूछा, और वस्तुस्थिति भी वैसी ही थी कि रामानुज स्वामी उस समय तिरूप्पावै के इसी पद का स्मरण करते हुए गुरू गृह के प्रवेश द्वार पर खड़े थे। फलतः उन्होंने गुरू पुत्री में नीला देवी का दर्शन पाया।

इस पद में गोपियां लक्ष्मी नप्पिनाय यानि कि नीला देवी से प्रार्थना करती हैं कि वे यशस्वी ससुर नन्दजी की पुत्रवधु हैं, जो रण में हाथी के उत्साह से अपने चौड़े छाती के साथ शत्रुओं का शमन करते हैं। फिर इनको सुन्दर एवं सुगंधमय केशवाली हैं, कहकर यह याद दिलाती हैं कि कोयल वृक्ष पर आवाज कर सुवह होने का प्रमाण दे रही हैं। आप अपने</td></tr>
</table>

	हाथ में संपूर्ण सृष्टि को गेंदवत रखे हुये रहती हैं। हम आपके पतिदेव का यशगान करने को आये हैं अतः अपने सुन्दर लालिमापूर्ण हाथों से दरवाजा खोलें। कहते हैं भगवान राम ने जनकपुर के राजपथ से सीता को अपने महल में हाथ से गेंद फेंकने का खेल खेलते देखा था। गेंद का रंग बार बार बदल रहा था। विश्वामित्र जी ने बताया, जमीन पर गेंद का श्वेत रंग सीता जी के नख के रंग को दर्शाता है। हवा में उसका नीला रंग उनकी नीली आंखों का रंग ले लेता है, और हाथ मे लाल रंग उनकी रक्तिम हथेली के रंग का द्योतक है।	
19	तैल दीप "कक्ष में ", हस्ति दंत पैर पलंग पर कोमल गद्दे सोये पुष्प गुच्छा सजे बाल, नप्पिनाय "जिनके " वक्षस्थल रख सिर सोय, विशाल वक्ष स्थल "वाले ", मुंह खोलिये कजरारे नयनों वाली, अपने पतिदेव देर ही सही, कभी भी, जगाइये, देखो क्षणमात्र भी विलगाव आप नहीं चाहती शुभ स्वभाव वाली, क्या यह न्याय है, आओ श्रीव्रत करें। **492**	कुत्तु विळक्कॅरिय कोट्टुक्काल् कट्टिल्मेल्* मॅत्तॅन्ऱ पञ्च शयनत्तिन् मेल् एऱि* कॉत्तलर् पूङ्गुळल् नप्पिन्नै कॉङ्गै मेल्* वैत्तु क्किडन्द मलर् मार्बा ! वाय् तिऱवाय् ! * मै तडङ्कण्णिनाय् ! नीयुन् मणाळनै* एत्तनै पोदुम् तुयिलॅळ ऑट्टाय् काण् ! * एत्तनै येलुम् पिरिवाट्गिल्लायाल्* तत्तुवम् अन्ऱु तगवॅल्लोर् एम्बावाय्॥१९॥
	पद **18, 19** एवं **20** नप्पिनाय को विभिन्न नामों से संबोधित करते हैं। पद **19** में पहले भगवान से प्रार्थना है कि आप दीपों से प्रकाशित कक्ष में हाथी के दांतों से बने पलंग पर नप्पिनाय के वक्षस्थल पर सिर रख सोये हैं , कृपा कर अपना मुंह खोलिये और हमसे कुछ बोलिए। कोई उत्तर न मिलने पर फिर नप्पिनाय से गोपियां कहती हैं कि अब देर हो रही है , सुवह होने को आया, आप इन्हें कभी भी जगाइये , पर जगाइये। यह कहां का न्याय है कि आप इनसे क्षणभर भी अलग नहीं होना चाहती हैं। हमें भी आप से न्याय की प्रार्थना है। भगवान वैकुंठनाथ त्रिपादविभूति में श्रीदेवी, भूदेवी, एवं नीलादेवी के साथ नित्य विराजमान रहते हैं। गोदम्मा ने इस पद में नीला देवी को नप्पिनाय से संबोधित करते हुए अपनी आगे की प्रार्थना की है। इस प्रसंग में श्री पराशर भट्ट के श्लोक का तिरूप्पावै के पाठ करने के प्रारंभ में सर्वथा स्मरण किया जाता है।	

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">
नीलातुङ्ग स्तनगिरितटी सुप्तमुद्बोध्य कृष्णं ।
पारार्थ्यं स्वं श्रुतिशतशिरस्सिद्धमध्यापयन्ती ।।
स्वोच्छिष्टायां स्त्रजिनिगलितं या बलात्कृत्य भुङ्क्ते ।
गोदा तस्यै नम इदमिदं भूय एवास्तु भूयः ।।

श्रीपराशर भट्ट भाष्यकार रामानुज स्वामी के सर्वप्रिय शिष्य श्री कुरेश स्वामी के पुत्र थे । इनका विष्णु सहस्त्रनाम पर ‘भगवद्गुण दर्पण’ नाम से व्याख्यान अति प्रसिद्ध रचना है। कहते हैं श्रीरंगम में श्रीपराशर भट्ट को एक बार राजकोप का भाजन बनना पड़ा क्योंकि इन्होनें राजा को मन्दिर विस्तार के निर्माण में श्रीवैष्णवों के तत्कालिन निवास को तोड़ने से मना कर दिया था। उस समय दीर्घ काल तक इन्हें श्रीरंगम से निष्कासित कर दिया गया था और उस अवधि में नप्पिनाय को प्रसन्न करने के लिये इन्होनें उक्त श्लोक से उनकी आराधना की थी।
</td></tr>
<tr><td>20</td><td>
तैंतीस “करोड़ “ देवताओं के जाते
भय दूर करने आप, नायक जागिये
पूर्ण सर्वशक्तिशाली, आप दुश्मनों का
नाश करें, आप नायक जागिये
कुंभवत कोमल कुच, अरूण होंठ, सुन्दर कटि
नप्पिनाय, सुन्दर सजनी, जागिये
पंखा, दर्पण, हमे देय, अपने पतिदेव जगाइये
अभी शीघ्र हम नहा सकें, आओ श्रीव्रत करें ।**493**
</td><td>
मुप्पत्तु मूवर् अमरर्क्कु मुन् शॆन्ऱु★
कप्पम् तविर्क्कुम् कलिये ! तुयिल् ऎऴाय्★
शॆप्पम् उडैयाय् ! तिऱल् उडैयाय्★ शॆट्रार्क्कु
वॆप्पम् कॊडुक्कुम् विमला ! तुयिल् ऎऴाय्★
शॆप्पन्न मॆन् मुलै च्चॆव्वाय् च्चिऱु मरुङ्गुल्★
नप्पिन्नै नङ्गाय् ! तिरुवे ! तुयिल् ऎऴाय्★
उक्कमुम् तट्टॊळियुम् तन्दुन् मणाळनै★
इप्पोदे ऎम्मै नीराट्टेलोर् ऎम्बावाय् ॥२०॥
</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">
इस पद में पुनः भगवान तथा लक्ष्मी दोनों से एक एक कर प्रार्थना है। प्रथम भगवान को गोदम्मा कहती हैं कि आपने तो तैंतीस (करोड़ों : **11** रूद्र , **8** वसु , **12** आदित्य , **2** अश्विनी कुमारों से निःसृत) देवताओं का दुःख दूर किया है।
</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td></td><td colspan="2">कृपा कर जागिये। पुनः लक्ष्मी से प्रार्थना करती हैं तथा उनकी सुन्दरता का बखान करती हैं। पंखा तथा आईना मांगते हुए कहती हैं कि आप नाथ को जगाइये। (पंखा तथा आईना भगवत कैंकर्य के साधन हैं। भगवान अलंकार के बाद आईना में अपना स्वरूप झांक कर देखना चाहते हैं।)</td></tr>
<tr><td>21</td><td>पूर्ण घट से दूध छलके
बहुत दूध दें, दूधारू उदार गउयें
कुमार नन्दगोपन के जागिये
शक्तिशाली बड़े "इस " जगत " में "
एक मात्र "प्राण " दीप दिखें, जागिये
शत्रु पराजित आपके द्वार पड़े
स्वतः आये, आपके चरणाश्रित वैसे हीं
पूजा करें, आये हम, यश गान करें, आओ श्रीव्रत करें ।494</td><td>एट्र कलङ्गळ् एदिर् पोङ्गि मीदळिप्प॰
माट्रादे पाल् शोरियुम् वळ्ळल् पॆरुम् पशुक्कळ्॰
आट्र प्पडैत्तान् मगने! अरिवुराय्॰
ऊट्रम् उडैयाय्! पॆरियाय्!॰ उलगिनिल्
तोट्रमाय् निन्र शुडरे! तुयिल् एळाय्॰
माट्रार् उनक्कु वलि तॊलैन्दुन् वाशर्कण्॰
आट्रादु वन्दुन् अडिपणियुमा पोले॰
पोट्रियाम् वन्दोम् पुगळ्न्देलोर् एम्बावाय्॥ २१ ॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">इस पद से गोपियां पुनः भगवान का यशगान करती हैं और उन्हें जगाती हैं। कहती हैं कि आप नन्दजी के लाड़ले हैं जिनके पास अनगिनत गायें हैं और सभी वर्त्तन दूध से भरे रहते हैं। हारे हुए राजागण (जो जरासंध के पराभव के बाद उसके कारागार से स्वतंत्र किये गये) आपके पास शरणागत हुए हैं। हम भी आपकी पूजा करने और गाथा गाने आपके पास आये हैं।</td></tr>
<tr><td>22</td><td>सुन्दर बड़े संसार के राजागन, मान
छोड़ , आपके पलंग " पैर " नीचे
एकत्रित, हम आए आप पास
मधुर किंकिणि, मुंह खोलिए, कमल फूल
सुन्दर नयन, थोड़ी सी देखिए हमारी ओर
चंद्र सूर्य वत जागें
दोनो नयन, प्रदान करें हमें, अगर आप खोलें
मृत्यु से त्राण दें, आओ श्रीव्रत करें ।495</td><td>अङ्गण् मा ञालत्तरशर्॰ अबिमान
पङ्गमाय् वन्दु निन् पळ्ळिक्कट्टिल् कीळे॰
शङ्गम् इरुप्पार् पोल् वन्दु तलैप्पॆय्दोम्॰
किङ्गिणिवाय् च्चॆय्द तामरै प्पू प्पोले॰
शॆङ्गण् शिरु च्चिरिदे एम्मेल् विळियावो॰
तिङ्गळुम् आदित्तियनुम् एळुन्दार्पोल्॰
अङ्गण् इरण्डुम् कॊण्डॆङ्गळ्मेल् नोक्कुदियेल्॰
एङ्गळ्मेल् शापम् इळिन्देलोर् एम्बावाय्॥ २२ ॥</td></tr>
</table>

	पद **21** तथा **22** गोदम्मा भगवान को जागने का प्रार्थना करती हैं। सभी राजागण अपना अभिमान छोड़ आपके पलंग के पांवों के पास एकत्रित हैं। उनलोगों की तरह हम भी यहां आये हैं। आप अपनी कृपा कटाक्ष से हमें अनुगृहित करें। कमलनयन सुन्दर आंखें खोलकर सूर्य और चांद की तरह हमारे हृदय को प्रकाशित करें। सुन्दर घुंघुरूओं की तरह आप अपनी आधी खुली हुई सुन्दर आंखों से हमें देखने की कृपा करें। (घुंघुरू आधी खुली हुई आंख की तरह दिखती है)	
23	इस पद में श्री लक्ष्मी नृसिंह वंदना है वर्षा काल, पर्वत गुफा, सपत्नि सोयें धीर सिंह जागें, ज्वालामयी आंखें गर्दन केश झाड़ें सब ओर संभल कर, खड़ा हों, गर्जन करें, तैयार जाने को, विष्णुकांता फूल की तरह आप सुन्दर खड़े हों, आप आयें, आशीष करें, सज्जित सिंहासन विराजें , हमारे आने का उद्देश्य जान अनुगृहित करें, आओ श्रीव्रत करें । **496**	मारि मलै मुळैञ्जिल् मन्नि क्किडन्दुऱङ्गुम् शीरिय शिङ्गम् अऱिवुट्रु त्ती विळित्तु वेरि मयिर् पोङ्ग एप्पाडुम् पेर्न्दुदऱि मूरि निमिर्न्दु मुळङ्गि प्पुऱप्पट्टु पोदरुमा पोले नी पूवैप्पू वण्णा उन् कोयिल् निन्ऱिङ्गने पोन्दरुळि क्कोप्पुडैय शीरिय शिङ्गाशनत्तिरुन्दु याम् वन्द कारियम् आरायन्दरुळेलोर् एम्बावाय्॥ २३ ॥
	यह पद भगवान के लक्ष्मी नृसिंह स्वरूप की प्रार्थना है। वर्षा काल में सोये हुए सिंह जागने पर अपने केश झाड़कर गर्जते हुए खड़ा हों उसी तरह आप अपने सुन्दर श्यामल शरीर से अपने सिंहासन पर विराजमान होकर हमें दर्शन देकर अनुगृहित करें।	

<table>
<tr><td>24</td><td>एक बार संसार मापा गया श्रीचरणों से, हम पूजें
जाकर दक्षिण लंका जीता , हम पूजें
नष्ट किया "शकटासुर " चक्का ठोकर से, हम पूजें
बछड़ा फेंका "वत्सासुर " चरण से, हम पूजें
पर्वतराज छत्रवत लिया सौम्य स्वभाव, हम पूजें
जीते दुश्मनों को हाथ के भुजाल से, हम पूजें
इस तरह सेवा कर, हम यशगान कर उद्धार हों
आज हम आये, कृपा करें, आओ श्रीव्रत करें ।497</td><td>‡अन्रिव्वुलगम् अळन्दाय् अडिपोट्रि*
शेन्रङ्गु तेन् इलङ्गै शेट्राय् तिरल् पोट्रि*
पॊन्र च्चकडम् उदैत्ताय् पुगळ् पोट्रि*
कन्रु कुणिला एरिन्दाय् कळल् पोट्रि*
कुन्रु कुडैयाय् एडुत्ताय् गुणम् पोट्रि*
वॆन्रु पगै कॆडुक्कुम् निन् कैयिल् वेल् पोट्रि*
एन्रॆन्रुन् शेवगमे एत्ति प्परै कॊळ्वान्*
इन्रु याम् वन्दोम् इरङ्गेलोर् एम्बावाय्॥२४॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">भगवान जागकर लक्ष्मी के साथ अब सिंहासनारूढ़ हो गोपियों को दर्शन देगें। पलंग से सिंहासन तक की गति को देखकर गोदम्मा भगवान का मंगलाशासन करती हैं। श्रीचरणों की प्रार्थना मे कहती हैं ः- उन चरणों का मंगलाशासन हो जिनसे त्रिविक्रम अवतार में संसार को मापा, लंका जाकर राक्षसों को जीता, शकटासुर तथा वत्सासुर का नाश किया। पुनः गोवर्धन धारण के लिये मंगलाशासन हो। शत्रुओं को तेज हथियार से जीते, इसके लिये मंगलाशासन हो।</td></tr>
<tr><td>25</td><td>एक सौभाग्यवती के यहाँ जन्मे, एक रात
एक सौभाग्यवती के यहाँ पले छिपे हुए
सह न सका, आपको नुकसान का, सोंचा
सभी चाल विफल हुए, कंस के पेट में
आग की तरह सर्वनायक, आप पास
भिक्षा हेतु, आए हम उद्धार का, देखें आप देंगे
लक्ष्मी जैसा सौंदर्य सेवा अवसर, गान करें
दुःख दूर हो, हों हम खुश, आओ श्रीव्रत करें।498</td><td>ऒरुत्ति मगनाय् प्पिरन्दु* ओर् इरविल्
ऒरुत्ति मगनाय् ऒळित्तु वळर*
तरिक्किलान् आगि तान् तीङ्गु निनैन्द*
करुत्तै प्पिळैप्पित्तु क्कञ्जन् वयिट्रिल्*
नॆरुप्पॆन्न निन्र नॆडुमाले* उन्नै
अरुत्तित्तु वन्दोम् परै तरुदि यागिल्*
तिरुत्तक्क शॆल्वमुम् शेवगमुम् याम् पाडि*
वरुत्तमुम् तीरन्दु मगिळ्न्देलोर् एम्बावाय्॥२५॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">इस पद में कृष्णावतार का रहस्य वर्णित है। देवकी के यहां जन्म और यशोदा के यहां लालन पालन तथा कंस का नाश । यशगान से दुःख दूर होकर प्रसन्नता का आशीर्वाद मिले यही गोदम्मा की प्रार्थना है</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>26</td><td>नायक नीलमणि, अगहन का व्रत
पूर्वजों से आ रहा, हम क्या चाहें, अगर आप पूछें
जगत को जगाने वाली, आवाज का
दुग्ध श्वेत, आपके पाञ्चजन्य
की तरह शंख, शक्तिमान
वृहत ढ़ोल, पालंडु गायक
तैल दीप, ध्वज, वृहत छत्र
हे नायक, प्रदान करें, आओ श्रीव्रत करें ।499</td><td>माले ! मणिवण्णा ! मार्गळि नीर् आडुवान्⋆
मेलैयार् शॅय्वनगळ् वेण्डुवन केट्टियेल्⋆
ञालत्तै एल्लाम् नडुङ्ग मुरल्वन⋆
पालन्न वण्णत्तुन् पाञ्चजन्नियमे⋆
पोल्वन शङ्गङ्गळ् पोय् प्पाडुडैयनवे⋆
शाल पॅरुम् परैये पल्लाण्डिशैप्पारे⋆
कोल विळक्के कॉडिये विदानमे⋆
आलिन् इलैयाय् ! अरुळेलोर् एम्बावाय् ॥ २६ ॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">इस पद में दर्शन पश्चात् गोपियों नें पुरातन काल से अपन पूर्वजों द्वारा मान्य व्रत की सफलतापूर्ण पूर्त्ति हेतु शंख, ढ़ोल, गायक, दीप, ध्वज, और बड़े छाता की मांग की।ये सभी भगवत कैंकर्य के ऊत्तम साधन हैं।</td></tr>
<tr><td>27</td><td>दुश्मनों को जीतें, वीर गोविंदा, आपके
गीत गायें, हम ढ़ोल का पुरस्कार पायें
सारा देश प्रशंसा करें, आभूषण सुन्दर
कंगन, कंधों का, कान की बाली
पाजेब दूसरे अन्य गहने हम पहनें
सुन्दर वस्त्र धारण करें, तब दूध चावल
घी उत्पलावित, हाथ केहुनी तक "घी ढ़रके"
साथ हम खायें, आओ श्रीव्रत करें ।500</td><td>कूडारै वॅल्लुम् शीर् गोविन्दा !⋆ उन् तन्नै–
प्पाडि प्परैकॉण्डु याम् पॅरु शम्मानम्⋆
नाडु पुगळुम् परिशिनाल् नन्राग⋆
शूडगमे तोळ्वळैये तोडे शॅवि प्पूवे⋆
पाडगमे एन्रनैय पल् कलनुम् याम् अणिवोम्⋆
आडैयुडुप्पोम् अदन् पिन्ने पार् चोरु⋆
मूड नॅय् पॅय्दु मुळङ्गै वळिवार⋆
कूडियिरुन्दु कुळिर्न्देलोर् एम्बावाय् ॥ २७ ॥</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">भगवान से संवाद होने पर गोपियां अतिप्रसन्न हुई। गोविंद का जयघोष करते हुए ढ़ोल पर प्रभु का यशगान की कामना कीं तथा अपने को आभूषित कर घी मिश्रित खीर भोज का आयोजन करने को ठानी। गोविंद नाम का गान 27, 28, और 29 पद तक लगातार किया गया है।</td></tr>
</table>

28	गायों के पीछे वन में, हम भोजन करें अनभिज्ञ रहे हम, ग्वालों में आप जन्मे, हमारा बड़ा अहोभाग्य कोई गलती नहीं, गोविंदा आपसे हमारा संबंध टूटे नहीं, न आप तोड़ें निर्दोष बच्चे हम, स्नेह वश छोटे नाम से पुकारें, गुस्सा न करें नाथ हमें उद्धार करें, आओ श्रीव्रत करें । **501**	कऱवैगळ् पिन् शॆन्ऱु कानञ्जेर्न्दुण्बोम्★ अऱिवॊन्ऱुम् इल्लाद आय्क्कुलत्तु★ उन् तन्नै प्पिऱवि पॆऱुन्दनै प्पुण्णियम् याम् उडैयोम्★ कुऱैवॊन्ऱुम् इल्लाद गोविन्दा★ उन् तन्नो– डुऱवेल् नमक्किङ्गॊळिक्क ऒळियादु★ अऱियाद पिळ्ळैगळोम् अन्बिनाल्★ उन् तन्नै शिऱुपेर् अऴैत्तनवुम् शीऱियरुळादे★ इऱैवा ! नी ताराय् पऱैयेलोर् एम्बावाय्॥ २८ ॥
	अब प्रसन्न हो सभी जंगल में सहभोज को चले। गोविंद से गलतियों की क्षमा याचना की और अपना शेष शेषी के चिरंतन संबंध को टिकाऊ रखने की दुहाई कीं।	
29	भोर में, हम पास आये आपके पूजे चरण कमल, प्रशंसा गाये, कृपया सुनें पशु सेवा से जीविका पाया, उसमें जन्में आप भी चढ़ावा हमारा लिये बिना, जायें नहीं आप केवल आज के लिए दया नही चाहिए, देखिए, गोविंदा सात सात जन्म आपके साथ शान्ति शाश्वत सुख हमें मिल, केवल आपके सेवक रहें, अन्य चाह मिटीं रहें, आओ श्रीव्रत करें ।**502**	शिट्रम् शिऱुकाले वन्दुन्नै शेवित्तु★ उन् पॊट्रामरै अडिये पोट्रुम् पॊरुळ् केळाय्★ पॆट्रम् मेय्त्तुण्णुम् कुलत्तिल् पिऱन्दु★ नी कुट्रेवल् एङ्गळै क्कॊळ्ळामल् पोगादु★ इट्रै प्पऱै कॊळ्वान् अन्ऱु काण् गोविन्दा !★ एट्रैक्कुम् एऴेऴ् पिऱविक्कुम्★ उन् तन्नो– डुट्रोमेयावोम् उनक्के नाम् आट्चॆय्वोम्★ मट्रै नम् कामङ्गळ् माट्रेलोर् एम्बावाय्॥ २९ ॥
	गोपियों के साथ गोदम्मा का यह अंतिम पद है जिसमें गोविंद नाम का गान किया गया है। सुवह की शुरूआत से ही गोविंद नाम का स्मरण प्रारंभ हुआ। गोविंद से इस जीवन का नाता जोड़कर अगले जन्मों तक सबंध बने रहने की कामना कीं। सेवक सेव्य संबंध के अतिरक्त और कोई चाह नहीं रहे, यही अर्न्तमन से गोदम्मा की ईच्छा है।	

30	जहाज से भरे समुद्र मंथन किया, नाथ माधवन, और नाथ केशवन चांद सी सुमुखी अलंकृत किशोरियां, आयीं पूजा कीं पायीं कल्याण श्रेयस, सुन्दर पाठ श्रीविल्लीपुत्तुर का ताजा कमल फूल माला पहनें अर्चक, श्री गोदा कहे सुन्दर तमिल माला तीस का पढ़े नित्य इसे, चार पर्वतों मे फैले वक्षस्थल लाल आंखें, सुन्दर मुख, तिरूमाल "श्रेष्ठ भगवान " से कहीं भी दया पायें, परम सुख पायें, आओ श्रीव्रत करें । **503**	वङ्ग क्कडल् कडैन्द मादवनै क्केशवनै* तिङ्गळ् तिरुमुगत्तु शेयिऴैयार् शॅन्निऱैञ्जि* अङ्ग प्पऱै कॉण्डवाट्रै* अणि पुदुवै प्पैङ्गमल त्तण् तॅरियल् पट्टर्बिरान् कोदै शॉन्न* शङ्ग त्तमिऴ्मालै मुप्पदुम् तप्पामे* इङ्गिप्परिशुरैप्पार् ईरिरण्डु माल् वरै त्तोळ्* शॅङ्गण् तिरुमुगत्तु च्चॅल्व त्तिरुमालाल्* एङ्गुम् तिरुवरुळ् पॅट्रिन्बुरुवर् एम्बावाय् ॥ ३० ॥
	अंतिम पद में गोदम्मा इसके नित्य पाठ का फल बताती हैं। केशव एवं माधव की कृपा की दुहाई देते हुए प्रभु के सुन्दर स्वरूप के ध्यान की सलाह दी हैं।	

गोदा तस्यै नम इदमिदं भूय एवास्तु भूयः

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ नाच्चियार् तिरुमॊळि त्तनियन्गळ् ॥

तिरुक्कण्णमङ्गैयाण्डान् अरुळिच्चॆय्द

अल्लिनाळ् तामरैमेल् आरणङ्गिन् इन् तुणैवि⋆
  मल्लिनाडाण्ड मडमयिल्⋆ मॆल्लियलाळ्
आयर् कुलवेन्दन् आगत्ताळ्⋆ तॆन् पुदुवै
  वेयर् पयन्द विळक्कु

कोल च्चुरिशङ्गै मायन् शॆव् वायिन् गुणम्विनवुम्
  शील त्तनळ् तॆन् तिरुमल्लि नाडि शॆळुङ्कुळल् मेल्
मालै त्तॊडैदॆन् अरङ्गरुक्कीयुम् मदिप्पुडैय
  शोलै क्किळि अवळ् तूयनर् पादम् तुणैनमक्के

॥ आण्डाळ तिरुवडिगळे शरणं ॥

1 तैयारूतिङ्गळ् (504 – 513)

‘कण्णणै इण्क्कु’ एन क्कामनै त्ताळुदल्

(कृष्ण से मिलने के लिये कामदेव की प्रार्थना)

तैयॊरु तिङ्गळुम् तरै विळक्कि* त्तण् मण्डलम् इट्टु माशि मुन्नाळ्* ऐय नुण् मणल् कॊण्डु तॆरुवणिन्दु* अळगिनुक्कलङ्गरित्तनङ्गदेवा !* उय्यवुम् आङ्गॊलो एन्रु शॊल्लि* उन्नैयुम् उम्बियैयुम् तॊळुदेन्* वॆय्यदोर् तळल् उमिळ् चक्कर क्कै* वेङ्गडवर्कॆन्नै विदिक्किट्रियेॽ१॥	अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए बसंत के प्रारंभिक महीनों में जमीन बुहारती हूं, गलियों को फूलों से सजाती हूं, तथा सुन्दर मंडल को फैलाती हूं। हे प्रेम के अनंग देव कामदेव ! मैं आपकी तथा आपके भाई श्याम की पूजा करती हूं।आप कृपया चक्रधारी प्रभु एवं वेंकटम पर्वतों के प्रभु की ओर हमें उत्प्रेरित करें।**504**
वॆळ्ळै नुण् मणल्कॊण्डु तॆरुवणिन्दु* वॆळ्वरै प्पदन् मुन्नम् तुरै पडिन्दु* मुळ्ळुम् इल्ला च्चुळ्ळि एरि मडुत्तु* मुयन्रुन्नै नोर्किन्रेन् कामदेवा* कळ्ळविळ् पूङ्गणै तॊडुत्तुक्कॊण्डु* कडल् वण्णन् एन्बदोर् पेर् एळुदि* पुळ्ळिनै वाय् पिळन्दान् एन्बदोर्* इलक्किनिल् पुग एन्नै एय्क्किट्रियेॽ२॥	गलियों को छोटे दाने वाले बालू से सजाकर सूर्योदय के पहले स्नान करती हूं। अग्नि में कांटाबिहीन पतले सुगंधित लकड़ियों से हवन कर आपको आह्वान करती हूं। हे प्रेम के देव कामदेव ! मृदु फूलों (बाण) को अपने धनुष पर संधान कर “सागर सा सलोने” प्रभु का ध्यान करते हुए मुझे पक्षी (बकासुर) के चोंच को तोड़ने वाले प्रभु से मिलाने का लक्ष्य बेध करें (यानि फूलों के बाण पर चढ़ा कर प्रभु के पास फेंक दें)। **505**
मत्त नन् नरुमलर् मुरुक्क मलर् कॊण्डु* मुप्पोदुम् उन्नडि वणङ्गि* तत्तुवम् इलि एन्रु नॆञ्जॆरिन्दु* वाशगत्तळित्तुन्नै वैदिडामे* कॊत्तलर् पूङ्गणै तॊडुत्तुक्कॊण्डु* गोविन्दन् एन्बदोर् पेर् एळुदि* वित्तगन् वेङ्गड वाणन् एन्नुम्* विळक्किनिल् पुग एन्नै विदिक्किट्रियेॽ३॥	दिन में तीन बार धतूरा के फूल एवं अन्य श्वेत पुष्पों से पूजा करती हूं। हे प्रेम के देव कामदेव! निराश आत्माओं के शाप से बचते हुए अपनी कीर्तिमान पर ध्यान दीजिए। फूलों (बाण) को अपने धनुष पर संधान कर “गोविंद” प्रभु का ध्यान करते हुए मुझे वेंकटम पर्व तश्रेणी के प्रभु से मिलाने का लक्ष्य बेध करें (यानि फूलों के बाण पर चढ़ा कर प्रभु के पास फेंक दें)। **506**
शुवरिल् पुराण ! निन् पेर् एळुदि* च्चुरव नर्कॊडिगळुम् तुरङ्गङ्गळुम्* कवरि प्पिणाक्कळुम् करुप्पु विल्लुम्* काट्टि त्तन्देन् कण्डाय् कामदेवा* अवरै प्पिरायम् तॊडङ्गि* एन्रुम् आदरित्तॆळुन्द एन् तड मुलैगळ्* तुवरै प्पिरानुक्के शङ्गर्पित्तु* त्तॊळुदु वैत्तेन् ऒल्लै विदिक्किट्रियेॽ४॥	हे प्रेम के गाथादेव कामदेव! दीवार पर आपका नाम लिखकर, घोड़ा, मत्स्य चिह्नित ध्वज, गन्ने का धनुष, एवं चंवर धारण किये हुए कुमारियों का चित्र बनाती हूं। मेरे उरोज आयु के अनुपात से पहले हीं उन्नत हो गये हैं। विनती है कि शीघ्र इन्हें द्वारिकाधीश प्रभु के संन्निधि में लगा दीजिए। **507**
वानिडै वाळुम् अव्वानवर्क्कु* मरैयवर् वेळ्वियिल् वगुत्त अवि* कानिडै त्तिरिवदोर् नरि पुगुन्दु* कडप्पदुम् मोप्पदुम् शॆय्वदॊप्प* ऊनिडै आळि शङ्गुत्तमर्क्कॆन्रु* उन्नित्तॆळुन्द एन् तड मुलैगळ्* मानिडवर्क्कॆन्रु पेच्चुप्पडिल्* वाळगिल्लेन् कण्डाय् मन्मदने ! ॥५॥	हे प्रेम के देव कामदेव ! मेरे उन्नत उरोज चक्रधारी कृष्ण के लिये हैं। वन के श्रृगाल जैसे चोरी से वैदिक ऋषियों द्वारा तैयार किये हुए हविष को सूंघते हुए उलट कर कलुषित कर देते हैं, उसीतरह किसी भी मरणशील से मेरा विवाह होने पर मेरा जीवन रखना संभव नहीं होगा, कृपया ध्यान दें।**508**

उरुवुडैयार् इळैयार्गळ् नल्लार्⋆ ओत्तु वल्लार्गळै क्कॊण्डु⋆ वैगल् तॆरुविडै एदिर्कॊण्डु⋆ पङ्गुनि नाळ् तिरुन्दवे नोर्किन्ऱेन् कामदेवा⋆ करुवुडै मुगिल् वण्णन् कायावण्णन्⋆ करुविळै पोल् वण्णन् कमल वण्ण⋆ तिरुवुडै मुगत्तिनिल् तिरु क्कण्गळाल्⋆ तिरुन्दवे नोक्कॆनक्करुळ् कण्डाय्॥६॥	हे प्रेम के देव कामदेव! हर दिन सुन्दर एवं दक्ष कुमारियों के साथ वसंत ऋतु की पूजा विधि को संपन्न करती हूं।कृपा करके आर्शीवाद प्रदान कीजिये कि घनश्याम वदन एवं कया फूल जैसे सलोने कृष्ण अपनी सुन्दर कमल जैसी आंखों से हमें देख तो लें।**509**
कायुडै नॆल्लॊडु करुम्बमैत्तु⋆ क्कट्टियरिशि अवल् अमैत्तु⋆ वायुडै मऱैयवर् मन्दिरत्ताल्⋆ मन्मदने! उन्नै वणङ्गुगिन्ऱेन्⋆ देशमुन् अळन्दवन् तिरिविक्किरमन्⋆ तिरुक्कैगळाल् एन्नै त्तीण्डुम् वण्णम्⋆ शायुडै वयिरुम् एन् तड मुलैयुम्⋆ दरणियिल् तलैप्पुगळ् तरक्किऱ्िये॥७॥	हे प्रेम के देव कामदेव! यह भोग ताजा धान के चिपटे चावल, शर्करा एवं गन्ने के रस के साथ आपके लिये पकायी हूं और आपको मंत्र के साथ अर्पित करती हूं। कृपा करके आर्शीवाद प्रदान कीजिये कि कुमारे प्रभु जिन्होंने पृथ्वी को मापा अपन सुकोमल हाथों से हमारे सुन्दर उन्नत उरोज एवं पुष्ट धड़ को स्पर्श करें। **510**
माशुडै उडम्बॊडु तलै उलऱि⋆ वाय्प्पुऱम् वॆळुत्तॊरु पोदुम् उण्डु⋆ तेजुडै त्तिऱल् उडै क्कामदेवा!⋆ नोर्किन्ऱ नोन्बिनै क्कुऱिक्कॊळ् कण्डाय्⋆ पेशुवदॊन्ऱुण्डिङ्गॆम्बॆरुमान्⋆ पॆण्मैयै त्तलै उडैत्ताक्कुम् वण्णम्⋆ केशव नम्बियै क्काल् पिडिप्पाळ् एन्नुम्⋆ इप्पेऱॆनक्करुळ् कण्डाय्॥८॥	मैं गन्दा रह कर केश नहीं संवारूगीं तथा होठों को नहीं सजाउंगी और दिन में एक ही बार भोजन करूंगी। हे तेजोमय एवं सुयोग्य प्रेम के देव कामदेव ! कृपया हमारे संयम व्रत पर ध्यान दीजिये। अगर आप मेरे कुमारीपन के सौंदर्य की रक्षा चाहते हैं तो हमें अपना आशीर्वाद अवश्य दीजिये जिससे कि हम कृष्ण केशव प्रभु के चरणों को पलोट सकूं। **511**
तॊळुदु मुप्पोदुम् उन्नडि वणङ्गि⋆ तूमलर् तूय् त्तॊळुदेत्तुगिन्ऱेन्⋆ पळुदिन्ऱि प्पार्कडल् वण्णनुक्के⋆ पणिशॆय्दु वाळ प्पॆऱाविडिल् नान्⋆ अळुदळुदलमन्दम्मा वळङ्ग⋆ आट्वुम् अदुवुनक्कुऱैक्कुम् कण्डाय्⋆ उळुवदोर् एरुत्तिनै नुगङ्कॊडु पायन्दु⋆ ऊट्टम् इन्ऱि तुरन्दाल् ऒक्कुमे॥९॥	हे प्रेम के देव कामदेव ! दिन में तीन बार मैं आपके चरणों पर ताजा फूल चढ़ाती हूं। बिना भोजन पानी के डंडे की मार खाकर बाहर कर दिये गये हल के बैल की तरह अगर मुझे सागर सा सलोने कृष्ण प्रभु की निर्दोष सेवा का अवसर नहीं दिया गया, तो सुन लीजिये ! मैं रोते विलखते 'मां...मां' कहकर चिल्लाउंगी जो आपके हृदय में पीड़ा पहुंचायेगा। **512**
करुप्पुविल् मलरक्कणै क्कामवेळै⋆ क्कळलिणै पणिन्दङ्गोर् करि अलऱ⋆ मरुप्पिनै ऒशित्तु प्पुळ् वाय् पिळन्द⋆ मणिवण्णऱ्कॆन्नै वगुत्तिडॆन्ऱु⋆ पॊरुप्पन्न माडम् पॊलिन्दु तोन्ऱुम्⋆ पुदुवैयर् कोन् विट्टुशित्तन् कोदै⋆ विरुप्पुडै इन्तमिळ् मालै वल्लार्⋆ विण्णवर् कोन् अडि नण्णुवरे॥१०॥ ॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	दिव्य अटारियों वाले पुदुवै के प्रधान विष्णुचित्त की बेटी गोदा के ये आनन्ददायी तमिल गीतमाला प्रेम के देवता कामदेव से कृष्ण को प्राप्त कराने के लिये याचना करते हैं। जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे प्रभु के चरण कमल के बड़भागी होंगे। **513** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

2 नाममायिरम् (514 - 523)

शिरूमियर् मायनै त्तम् 'शिट्रिल् शिदैयेल् ! ' एनल्

(भगवान कृष्ण को गोपियां छेड़ छाड़ करने से मना करती है)

नामम् आयिरम् एत्त निन्र⋆ नारायणा ! नरने ! ⋆ उन्नै मामि तन् मगन् आग प्पॆट्राल्⋆ एमक्कु वादै तविरुमे⋆ कामन् पोदरु कालम् एन्रु⋆ पङ्गुनि नाळ् कडै पारित्तोम्⋆ तीमै शॆय्युम् शिरीदरा ! ⋆ एङ्गळ् शिट्रिल् वन्दु शिदैयेल्ले ॥१॥	सहस्त्र नामवाले नररूपधारी प्रभु! क्या आपको मेरी मां का जामाता बन जाने से हमारे दुःख दूर हो जायेंगे ? यह बसंत ऋतु है और हम कामदेव के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे। नटवर लाल ! कृपया हमलोगों के बालू का महल तोड़ने के लिए मत आइए। **514**
इन्रु मुट्टम् मुदुगु नोव⋆ इरुन्दिळैत्त इच्चिट्रिलै⋆ नन्रुम् कण्णुर नोक्कि⋆ नाम् कॊळुम् आर्वन्तन्नै त्तणिगिडाय्⋆ अन्रु बालकन् आगि⋆ आलिलै मेल् तुयिन्र एम् आदियाय् ! ⋆ एन्रुम् उन्रनक्कॆङ्गळ् मेल्⋆ इरक्कम् एळादद्दॆम् पावमे ॥२॥	दिन भर के रीढ़ तोड़ने वाले श्रम से हमने ये बालू के खेलमहल बनाये हैं। विनती है, इसे देखकर आनंद लीजिये और हमलोगों का आशाभंग मत कीजिये। बटपत्र पर शिशु की भांति सोने वाले प्रभु! ओह ! हमलोगों का दुर्भाग्य है कि आप कभी भी हमारे साथ सद्व्यवहार नहीं किये। **515**
कुण्डु नीर् उरै कोळरी ! ⋆ मद यानै कोळ् विडुत्ताय् ! ⋆ उन्नै- क्कण्डु माल् उरुवोङ्गळै⋆ क्कडैक्– कण्गळाल् इट्टु वादियेल्⋆ वण्डल् नुण् मणल् तॆळ्ळि⋆ याम् वळैक्कैगळाल् शिरम प्पट्टोम्⋆ तॆण् तिरैक्कडल् पळ्ळियाय् ! ⋆ एङ्गळ् शिट्रिल् वन्दु शिदैयेल्ले ॥३॥	गहन वन के महान सिंह ! गजेन्द्र के रक्षक कृष्ण! सरल चित्त हम गोपियों को अपनी पैनी तिरछी नजर से घायल मत कीजिये। कंगन भरे हाथों से हम बालू में बहुत श्रम किये हैं। सागर में प्रेम से सोने वाले प्रभु! कृपया हमलोगों के बालू का महल तोड़ने के लिए मत आइए। **516**
पॆय्यु मा मुगिल् पोल् वण्णा ! ⋆ उन्रन् पेच्चुम् शॆय्गैयुम्⋆ एङ्गळै मैयल् एट्रि मयक्क⋆ उन् मुगम् माय मन्दिरम् तान् कॊलो⋆ नॊय्यर् पिळ्ळैगळ् एन्बदर्कु⋆ उन्नै नोव नाङ्गळ् उरैक्किल्लोम्⋆ शॆय्य तामरै क्कण्णनाय् ! ⋆ एङ्गळ् शिट्रिल् वन्दु शिदैयेल्ले ॥४॥	घनश्याम वदन प्रभु ! आपके मुखमंडल में जादुई आकर्षण है। आपके प्रेममय शब्द एवं संकेत से हमारा सिर घूमने लगता है। हमलोगों का आपसे कठोर शब्दों का प्रयोग न करना आपके मन में हमारे निम्नस्तर के घर में जन्म होने का संकेत देता होगा। अरूणाभ राजीव नयन प्रभु! कृपया हमलोगों के बालू का महल तोड़ने के लिए मत आइए। **517**

वॆळ्ळै नुण् मणल् कॊण्डु★ शिद्रिल् विचित्तिर प्पड★ वीदि वाय्– तॆळ्ळि नाङ्गळ् इळैत्त कोलम् अळित्ति यागिलुम्★ उन्रन् मेल्★ उळ्ळम् ओडि उरुगलल्लाल्★ उरोडम् ऒन्रुम् इलोम् कण्डाय्★ कळ्ळ मादवा ! केशवा !★ उन् मुगत्तन कण्गळ् अल्लवे ! ॥५॥	गलियों को बुहारकर हमने अपने खेलघरों को महीन बालू से सजाया। यहां आकर के आपने इसकी सुन्दर रचना को विकृत कर दिया। देखिये, हमलोग दुःखी हैं और हमारा हृदय टूट गया है, परन्तु हम नाराज नहीं हैं। नटखट कृष्ण, केशव ! आपको आंखें नहीं है क्या ? **518**
मुद्रिलाद पिळ्ळैगळोम्★ मुलै पोन्दिला तोमै★ नाळ्दॊरुम् शिद्रिल् मेल् इट्टु क्कॊण्डु★ नी शिरिदुण्डु तिण्णॆन नाम् अदु कद्रिलोम्★ कडलै अडैत्तरक्कर् कुलङ्गळै★ मुद्रवुम् शॆद्रु★ इलङ्गैयै प्पूशल् आक्किय शेवगा !★ एम्मै वादियेल्॥६॥	हमलोग अभी परिपक्व नहीं हैं और न हमारे उरोज वयस्क हो पाये हैं। बालू के घरौंदे से आपके खेलने की कला से भी हम अवगत नहीं हैं। लंका में राक्षसों को नाश करने वाले प्रभु ! नगर को धूल चटाने वाले प्रभु ! विनती है, हमें कृपया आप छोड़ दीजिये। **519**
भेदनन्गारिवार्गळोडु★ इवै पेशिनाल् पॆरिदिन् शुवै★ यादुम् ऒन्ररियाद पिळ्ळैगळोमै★ नी नलिन्दॆन् पयन्★ ओद मा कडल् वण्णा !★ उन् मणवाट्टि मारॊडु शूळुरुम्★ शेतु बन्दम् तिरुत्तिनाय् !★ एङ्गळ् शिद्रिल् वन्दु शिदैयेल्ले॥७॥	जब सुन्दरियों से आप बोलते हैं तो आपके शव्द मधुर रहते हैं। आप उन शव्दों को हम सरल चित्त वालों पर व्यर्थ नहीं लगाइये। नील सागर सा सलोने प्रभु! समुद्र पर सेतु बांधने वाले प्रभु ! आपकी पत्नियों की कसम, कृपया हमलोगों के बालू का महल तोड़ने के लिए मत आइए ।**520**
वट्ट वाय् च्चिरु तूदैयोडु★ शिरुशुळकुम् मणलुम् कॊण्डु★ इट्टमा विळैयाडु वोङ्गळै★ च्चिद्रिल् ईडळित्तॆन् पयन्★ तॊट्टुदैत्तु नलियेल् कण्डाय्★ शुडर् च्चक्करम् कैयिल् एन्दिनाय्★ कट्टियुम् कैत्ताल् इन्नामै★ अरिदिये कडल् वण्णने ! ॥८॥	हमलोग बालू में छोटे मुंह के गोल पात्रों एवं छोटी तश्तरियों से खेल रहे थे। आपने हमारे खेल के आनन्द को क्यों नष्ट कर दिया ? चक्रधारी प्रभु सावधान ! हमारे घरौंदों को छूकर या पैरों से मारकर नष्ट मत कीजिये। याद रखिये हृदय में खटास रहने पर चीनी की मिठास जाती रहती है। **521**
मुद्रत्तूडु पुगुन्दु★ निन् मुगम् काट्टि प्पुन्मुरुवल् शॆय्दु★ शिद्रिलोडॆङ्गळ् शिन्दैयुम्★ शिदैक्क क्कडवैयो गोविन्दा★ मुद्र मण्णिडम् तावि★ विण्णुर नीण्डळन्दु कॊण्डाय्★ एम्मै– प्पद्रि मॆय् प्पिणक्किट्टक्काल्★ इन्दप्पक्कम् निन्रवॆरन् शॊल्लार्॥९॥	गोविन्द ! आप हमारे प्रांगन में आये हैं। अपने मृदु मुखमंडल पर अजेय मुस्कान के साथ हमारे बालू के घरौंदों को तोड़ते हुए हमारा हृदय भी तोड़ देंगे क्या ? अपने वृहत कदमों से पृथ्वी को मापने वाले प्रभु ! आप जब हमें अपने बाहों में ले लेंगे तो यहां खड़े दर्शक लोग क्या कहेंगे ? **522**

‡शीदै वाय् अमुदम् उण्डाय् ! ⋆ एङ्गळ् शिट्रिल् नी शिदैयेल् एन्रु⋆ वीदिवाय् विळैयाडुम्⋆ आयर् शिरुमियर् मळलै च्चोल्लै⋆ वेद वाय् त्तोळिलार्गळ् वाळ्⋆ विल्लिपुत्तूर् मन् विट्टुशित्तन् तन्⋆ कोदै वाय् त्तमिळ् वल्लवर्⋆ कुरैविन्रि वैगुन्दम् शेर्वरे॥१०॥ ॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	विल्लीपुत्तुर के विष्णुचित्त की सुपुत्री गोदा के ये तमिल गीत गलियों में खेलतीं गोपियों के बचपना र्दशाती हुई बात "सीता के अधरों से अमृत पीने वाले प्रभु हमारे बालू के घरौंदे को मत तोड़िये" का स्मरण कराती हैं। जो इसका कण्ठ करेंगे वे निःसंदेह वैकुण्ठ जायेंगे। **523** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

3 कोऴियऴैप्पदन् (524 - 533)

कवरन्द कूरैगळै वेण्डि क्कन्नियर् कण्णनै इरत्तळ् (भगवान कृष्ण से गोपयों का अपना वस्त्र मांगना)

कोऴि अऴैप्पदन् मुन्नम्⋆ कुडैन्दु नीराडुवान् पोन्दोम्⋆ आऴियम् शॅल्वन् एऴुन्दान्⋆ अरवणै मेल् पळ्ळि कॉण्डाय्⋆ एऴैमै आट्रवुम् पट्टोम्⋆ इनि एन्रुम् पॉय्गैक्कु वारोम्⋆ तोऴियुम् नानुम् तॊऴुदोम्⋆ तुगिलै प्पणित्तरुळाये॥१॥	प्रातः मुर्गा बोलने के समय हम यहां स्नान को आये। शेषशायी नाथ ! सूर्य उग आया है और हम शर्मिन्दा हैं। इस ताल में पुनः हम नहीं आयेंगे। हम अपनी बहन के साथ करबद्ध प्रार्थना करते हैं 'हमारे वस्त्र लौटा दीजिये'। **524**
इदुवॆन् पुगुन्ददिङ्गन्दो !⋆ इप्पॉय्गैक्कॆव्वारु वन्दाय्⋆ मदुविन् तुऴाय् मुडि माले !⋆ मायने ! एङ्गळ् अमुदे !⋆ विदि इन्मैयाल् अदु माट्टोम्⋆ वित्तग प्पिळ्ळाय् ! विरैयेल्⋆ कुदिकॊण्डरविल् नडित्ताय् !⋆ कुरुन्दिडै क्कूरै पणियाय्॥२॥	आप यहां कैसे आये। ओह ! आपको इस ताल का कैसे पता चला ? हमारे अमृत तुल्य मधुर नाथ! तुलसी मुकुट के प्रिय प्रभु ! हम अशोभनीय कुछ नहीं करेंगे। चालाक किशोर ! शीघ्रता नहीं करो। हमें पता है, आप नाग के सिर पर नाचने वाले हैं ।कृपाकर, 'हमारे वस्त्र लौटा दीजिये'। **525**
एल्ले ! ईदॆन्न इळमै⋆ एम् अनैमार् काणिल् ऑट्टार्⋆ पॊल्लाङ्गीदॆन्रु करुदाय्⋆ पूङ्कुरुन्देरि इरुत्ति⋆ विल्लाल् इलङ्गै अऴित्ताय् !⋆ वेण्डियदॆल्लाम् तरुवोम्⋆ पल्लारुम् काणामे पोवोम्⋆ पट्टै प्पणित्तरुळाये॥३॥	आइये, कुरून्दु वृक्ष पर बैठकर क्या लड़कपन कर रहे हैं ! हमारी मां इसे कभी नहीं सहेंगी ।आप को यह अच्छा लगता है क्या ? लंका को अपने बण से नाश करने वाले नाथ! आप जो मांगेंगे हम आपको दे देंगे तथा आप चुपके से घर वापस चले जायेंगे। विनती है, 'हमारे वस्त्र लौटा दीजिये'। **526**

परक्क विळित्तॆङ्गुम् नोक्कि⋆ प्पलर् कुडैन्दाडुम् शुनैयिल्⋆ अरक्क निल्ला कण्ण नीर्गळ्⋆ अलमरुगिन्ऱवा पाराय्⋆ इरक्कमेल् ऑन्ऱुम् इलादाय्!⋆ इलङ्गै अऴित्त पिराने⋆ कुरक्करशावदऱिन्दोम्⋆ कुरुन्दिडै क्कूऱै पणियाय्॥४॥	यह सार्वजनिक ताल है और चारो तरफ से लोग इसे देख रहे हैं। लंका को नाश करने वाले निष्ठुर नाथ! हमारी आंखों में आंसू भर आये हैं और ये आंसू अनियंत्रित बह रहे हैं। हमें पता है कि आप बन्दरों के स्वामी हैं। विनती है, 'हमारे वस्त्र लौटा दीजिये'। **527**
काल्लै क्कदु विडुगिन्ऱ⋆ कयलॊडु वाळै विरवि⋆ वेल्लै प्पिडित्तॆन्नै मार्गळ् ओट्टिल्⋆ एन्न विळैयाट्टो⋆ कोल च्चिट्राडै पलवुम् कॊण्डु⋆ नी एऱियिरादे⋆ कोलम् करिय पिराने!⋆ कुरुन्दिडै क्कूऱै पणियाय्॥५॥	मछलियां हमारे पैरों को काट रहीं हैं। अगर हमारे भाई डंडा लेकर आपको यहां से भगा दें तो कैसा लगेगा ? हमारे सुन्दर वस्त्रों को लेकर आप वृक्ष पर नहीं बैठे रहें। सलोने घनश्याम प्रभु 'कुरून्दु के वृक्ष से ही हमारे वस्त्र लौटा दीजिये'। **528**
तडत्तविळ् तामरै प्पॊय्गै⋆ ताळ्गाळ् एम् काल्लै क्कदुव⋆ विड त्तेळ् एऱिन्दाल्ले पोल⋆ वेदनै आट्रवुम् पट्टोम्⋆ कुडत्तै एडुत्तेऱ विट्टु⋆ कूत्ताड वल्ल एम् कोवे⋆ पडिट्रै एल्लाम् तविरन्दु⋆ एङ्गळ् पट्टै प्पणित्तरुळाये॥६॥	इस बड़े ताल में कमल के लंबे डंठलों से हमारे पैर घर्षण कर दुख रहे हैं जैसे कि बिच्छू डंक मार रहे हों।हे नाथ ! हमारे प्रभु ! ऊपर हवा में उछाले हुए पात्रों के साथ नृत्य करने में दक्ष ! अपना शरारत छोड़कर 'हमारे वस्त्र लौटा दीजिये'। **529**
नीरिल्ले निन्ऱयरक्किन्ऱोम्⋆ नीदि अल्लादन शॆय्दाय्⋆ ऊरगम् शालवुम् शेय्त्ताल्⋆ ऊऴि एल्लाम् उणर्वाने!⋆ आर्वम् उनक्के उडैयोम्⋆ अम्मनै मार् काणिल् ऑट्टार्⋆ पोर विडाय् एङ्गळ् पट्टै⋆ पूङ्कुरुन्देऱि इरादे॥७॥	पानी में खड़े खड़े हम यातना झेल रहे हैं।आप यह उचित नहीं कर रहे हैं। प्रभु आप तो समूचे ब्रह्माण्ड को जानते हैं, हमारा घर यहां से दूर है और हमारी मां इस तरह की आज्ञा नहीं देंगी। फूल से भरे कुरून्दु पर इस तरह बैठे मत रहिए, 'हमारे वस्त्र लौटा दीजिये'। **530**

मामिमार् मक्कळे अल्लोम्⋆ मट्रुम् इङ्गॆल्लारुम् पोन्दार्⋆ तूमलर् क्कण्गळ् वळर⋆ त्तॊल्लै इरा त्तुयिल्वाने !⋆ शेममेल् अन्रिदु शाल⋆ चिक्कॆन नाम् इदु शॊन्नोम्⋆ कोमळ आयर् कॊळुन्दे !⋆ कुरुन्दिडै क्कूरै पणियाय्॥८॥	हम आपकी मां के पुत्रवधू नहीं हैं। इसके अतिरिक्त दूसरे लोग भी हमें देख रहे हैं। हमारी सम्यक राय में आप जो भी कर रहे हैं वह बिलकुल ही ठीक नहीं है। सागर में बिना कोई चिंता के सोने वाले एवं ताजे फूल की तरह आंखवाले प्रभु ! उदार गोपपुत्र ! 'कुरून्दु पर से ही हमारे वस्त्र लौटा दीजिये'। **531**
कञ्जन् वलै वैत्त अन्रु⋆ कारिरुळ् एल्लिल् पिळैत्तु⋆ नॆञ्जु तुक्कम् शॆय्य प्पोन्दाय्⋆ निन्र इक्कन्नियरोमै⋆ अञ्ज उरप्पाळ् अशोदै⋆ आणाड विट्टिट्टिरुक्कुम्⋆ वञ्जग प्पेय्च्चिपाल् उण्ड⋆ मशिमैयिली ! कूरै ताराय्॥९॥	खड़े हम कुमारियों के मन पर आघात पहुंचाने वाले प्रभु ! आप तो अर्द्धरात्रि में कंस के फंदे से निकल गये।यशोदा आपको कुछ भी नहीं कहती और जो आप चाहते हैं करने देती है। राक्षसी के स्तन पान करने वाले बेलज्ज ! 'हमारे वस्त्र लौटा दीजिये'। **532**
कन्नियरोडॆङ्गळ् नम्बि⋆ करिय पिरान् विळैयाट्टै⋆ पॊन् इयल् माडङ्गळ् शूळ्न्द⋆ पुदुवैयर् कोन् पट्टन् कोदै⋆ इन्निशैयाल् शॊन्न मालै⋆ ईरैन्दुम् वल्लवर् ताम् पोय्⋆ मन्निय मादवनोडु⋆ वैगुन्दम् पुक्किरुप्पारे॥१०॥ ॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	सुनहले अटारियों वाले पुदुवै (श्रीविल्लीपुत्तुर) के स्वामी पत्तन की सुपुत्री गोदा के ये तमिल मधुर पद सलोने घनश्याम का कुमारियों के साथ करने वाले खेल के बारे में हैं। इसका गान वैकुंठ लोक के साथ साथ माधव की प्राप्ति करा देता है।**533** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

4 तळिळयार् पलर् (534 - 544)

कूडल् इळैत्तल् (भगवान कृष्ण को आमंत्रण)

‡तॆळ्ळियार् पलर्⋆ कै तॊळुम् देवनार्⋆ वळ्ळल्⋆ मालिरुञ्शोलै मणाळनार्⋆ पळ्ळि कॊळ्ळुम् इडत्तु⋆ अडि कॊट्टिड⋆ कॊळ्ळु मागिल्⋆ नी कूडिडु कूडले ! ॥१॥	गंधर्वों एवं अन्य देवों से पूजे जाने वाले प्रभु मलिरूमसोलै के दूलहा हैं। क्या हम उनके शयन कक्ष में प्रवेश पा सकेंगे ? समूह के स्वामी ! कहीं आ गये ! आओ, साथ हो जायें । **534**
‡काट्टिल् वेङ्गडम्⋆ कण्णपुर नगर्⋆ वाट्टम् इन्रि⋆ मगिळ्न्दुरै वामनन्⋆ ओट्टरा वन्दु⋆ एन् कै प्पट्रि⋆ तन्नॊडुम् कूट्टु मागिल्⋆ नी कूडिडु कूडले ! ॥२॥	वामन ! वेंकटम के पर्वत श्रेणी एवं कण्णपुरम में कुमारावस्था में आनंद से रहने वाले ! क्या वे दौड़ते हुये आकर हमें अपने हाथों से पकड़ लेंगे ? समूह के स्वामी ! कहीं आ गये ! आओ, साथ हो जायें । **535**
पू मगन् पुगळ् वानवर्⋆ पोट्रुदर्– कामगन्⋆ अणि वाणुदल्⋆ देवकि मामगन्⋆ मिगु शीर्⋆ वशुदेवर् तम्⋆ कोमगन् वरिल्⋆ कूडिडु कूडले ! ॥३॥	ब्रह्मा एवं देवों से प्रशंसित प्रभु सुन्दर मां देवकी के यशस्वी पुत्र हैं तथा सज्जन पिता वसुदेव के लाड़ले राजकुमार हैं। समूह के स्वामी ! कहीं आ गये ! आओ, साथ हो जायें । **536**
आय्च्चि मार्गळुम्⋆ आयरुम् अञ्जिड⋆ पूत्त नीळ्⋆ कडम्बेरि प्पुग प्पाय्न्दु⋆ वाय्त्त काळियन्मेल्⋆ नडम् आडिय⋆ कूत्तनार् वरिल्⋆ कूडिडु कूडले ! ॥४॥	जब ऊंचे कदंब के पेड़ पर चढ़कर कृष्ण कालिय के फनों पर कूद पड़े तो गोपवंश के नर एवं नारी सम्मानपूर्ण भय से इन्हें देखने लगे। समूह के स्वामी ! कहीं वे नर्त्तक आ गये ! आओ, साथ हो जायें । **537**

माड माळिगै शूळ्⋆ मदुरै प्पदि नाडि⋆ नम् तॆरुविन् नडुवे वन्दिट्टु⋆ ओडै मा⋆ मद यानै उदैत्तवन्⋆ कूडुमागिल्⋆ नी कूडिडु कूडले ! ॥५॥	मथुरा में प्रवेश कर कृष्ण ने कुवलयपीड़ हाथी का बध कर दिया। हमारी यही कामना है कि मुझे खोजते हुए यहां आकर वे हमारी वीथि में प्रवेश करें। समूह के स्वामी ! कहीं आ गये ! आओ, साथ हो जायें । **538**
अट्टवन्⋆ मरुदम् मुरिय नडै कट्टवन्⋆ कञ्जनै⋆ वञ्जनैयिल् शॆट्टवन्⋆ तिगळुम्⋆ मदुरै प्पदि⋆ कॊट्टवन् वरिल्⋆ कूडिडु कूडले ! ॥६॥	बचपन में मरूद के वृक्षों के बीच रेंगते हुए उन्होंने उसे जड़ से उखाड़ फेंका। बिना भय एवं दुर्भावना के राजमहल में प्रवेश कर उन्होंने कंस का बध कर दिया। दिव्य नगर मथुरा के नाथ एवं राजा ! समूह के स्वामी ! कहीं आ गये ! आओ, साथ हो जायें । **539**
अन्रिन्नातन शॆय्⋆ शिशुपालनुम्⋆ निन्र नीळ्⋆ मरुदुम् एरुदुम् पुळ्ळुम्⋆ वॆन्रि वेल् विरल्⋆ कञ्जनुम् वीळ⋆ मुन् कॊन्रवन् वरिल्⋆ कूडिडु कूडले ! ॥७॥	वही प्रभु कृष्ण हैं जिन्होंने पक्षी, वृषभ,वृक्ष तथा शक्तिशाली कंस एवं अशिष्ट शिशुपाल का बध कर दिया। समूह के स्वामी ! कहीं आ गये ! आओ, साथ हो जायें । **540**
आवल् अन्बुडयार्⋆ तम् मनत्तन्रि मेवलन्⋆ विरैशूळ्⋆ तुवरापदि– क्कावलन्⋆ कन्रु मेय्त्तु विळैयाडुम्⋆ कोवलन् वरिल्⋆ कूडिडु कूडले ! ॥८॥	किशोरावस्था वाले गोपाल जिन्होंने आनन्द से गायें चरायीं सुगंध से परितृप्त द्वारिका के प्रभु हैं।औरों से भागते हुए वे केवल प्रेमी एवं जिज्ञासुओं के हृदय में बसते हैं। समूह के स्वामी ! कहीं आ गये ! आओ, साथ हो जायें । **541**
कॊण्ड कोल⋆ क्कुरळ् उरुवाय् च्चॆन्रु⋆ पण्डु मावलि तन्⋆ पॆरु वेळ्वियिल्⋆ अण्डमुम् निलनुम्⋆ अडि ऒन्रिनाल्⋆ कॊण्डवन् वरिल्⋆ कूडिडु कूडले ! ॥९॥	सुन्दर सलोने वामन किशोर के रूप में मावलि के यज्ञ में जाकर प्रभु ने पृथ्वी एवं आकाश को एक ही पग से माप दिया। समूह के स्वामी ! कहीं आ गये ! आओ, साथ हो जायें । **542**

पळगु नान्मरैयिन् पॊरुळाय् मदम् ऑळुगु वारणम् उय्य अळित्त एम् अळगनार् अणि आय्च्चियर् शिन्दैयुळ् कुळगनार् वरिल् कूडिडु कूडले ! ॥१०॥	सुन्दर सलोने वामन किशोर के रूप में माबलि के यज्ञ में जाकर प्रभु ने पृथ्वी एवं आकाश को एक ही पग से माप दिया। समूह के स्वामी ! कहीं आ गये ! आओ, साथ हो जायें । **543**
ऊडल् कूडल् उणर्दल् पुणर्दलै नीडु निन्र् निरै पुगळ् आय्च्चियर् कूडलै क्कुळर् कोदै मुन् कूरिय पाडल् पत्तुम् वल्लार्क्कु इल्लै पावमे॥११॥	सुन्दर केश से सुसज्जित गोदा के ये दसक, प्रेम में कभी कलह एवं कभी स्नेह करने वाले गोपियों के गीत का स्मरण दिलाते हैं। जो इसका गान करेगा वह कर्म बंधन से मुक्त रहेगा। **544** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

5 मन्नु परूमपुगऴ (545 - 555)

कुयिर्पत्तु (मंदिर के पक्षियों को अपने प्रेमी को बुलाने के लिये आग्रह करना)

मन्नु पॆरुम्पुगळ् मादवन्⋆ मा मणि वण्णन् मणिमुडि मैन्दन् तन्नै⋆ उगन्ददु कारणमाग⋆ ऎन् शङ्गिळक्कुम् वळक्कुण्डे⋆ पुन्नै कुरुक्कत्ति ञाळल् शॆरुन्दि⋆ प्पॊदुम्बिनिल् वाळुम् कुयिले!⋆ पन्नि ऎप्पोदुम् इरुन्दु विरैन्दु⋆ ऎन् पवळ वायन् वर क्कूवाय्॥१॥	नील मणि के वर्ण वाले जगत प्रसिद्ध माधव सम्राट के रूप अभिषिक्त हैं। हमने उनसे प्रेम किया और हमारा कंगन खो गया। क्या यह उपयुक्त है ? पुन्नै,कुरूक्कत्ति, नालल एवं शरून्दि के बाग में कूकने वाल कोयल ! शीघ्र हमारे मूंगावत अधर वाले प्रभु के पास जाकर कहो कि वे आ जायें। **545**
वॆळ्ळै विळिशङ्गिडम् कैयिल् कॊण्ड⋆ विमलन् ऎनक्कुरु क्काट्टान्⋆ उळ्ळम् पुगुन्दॆन्नै नैवित्तु⋆ नाळुम् उयिर्पॆय्दु कूत्ताट्टु क्काणुम्⋆ कळ्ळविळ् शॆण्बगप्पू मलर् कोदि⋆ क्कळित्तिशै पाडुम् कुयिले⋆ मॆळ्ळ इरुन्दु मिळट्रि मिळट्रादु⋆ ऎन् वेङ्गडवन् वर क्कूवाय्॥२॥	हाय ! श्वेत शंख वाले दिव्य प्रभु आये नहीं। दिन प्रति दिन हमारे हृदय को विदीर्ण करते हुए वे हमारे अंतिम नृत्य में आनंद लेते हैं। सण्वगम के उत्तम फूलों का मधु पीकर मृदु आवाज वाली कोयल ! छलिया मृदु बातों से हमारी उपेक्षा नही करो, अब जाओ और वेंकटम के प्रभु को बुला लाओ। **546**
मातलि तेर् मुन्बु कोल्कॊळ्ळ⋆ मायन् इरावणन् मेल्⋆ शर मारि ताय् तलै अट्रट्रु वीळ⋆ तॊडुत्त तलैवन् वर ऎङ्गुम् काणेन्⋆ पोदलर् काविल् पुदुमणम् नार⋆ प्पॊरि वण्डिन् कामरम् केट्टु⋆ उन् कादलियोडुडन् वाळ् कुयिले!⋆ ऎन् करुमाणिक्कम् वर क्कूवाय्॥३॥	मातली के रथ पर सवार होकर प्रभु युद्ध में गये और रावण के सिर को एक एक कर काट दिया। हाय ! वे आये नहीं। खिले हुए फूलों का मधु पीते हुए सुगंधमय बाग में अपने प्रेयसी के साथ रहने वाले कोयल ! जाओ और मणिवर्ण वाले प्रभु को बुला लाओ। **547**
ऎन्बुरुगि इन वेल् नॆडुङ्गण्गळ्⋆ इमै पॊरुन्दा पल नाळुम्⋆ तुन्ब क्कडल् पुक्कु वैगुन्दन् ऎन्बदोर्⋆ तोणि पॆरादुळल्गिन्रेन्⋆ अन्बुडैयारै प्पिरिवुरु नोय्⋆ अदु नीयुम् अरिदि कुयिले⋆ पॊन् पुरै मेनि क्करुळ क्कॊडि उडै⋆ पुण्णियनै वर क्कूवाय्॥४॥	हम हड्डी मात्र रह गये हैं तथा बहुत दिनों से पलकें नहीं बन्द हुई हैं। दया के सागर में हम बिना किसी डेंगी या सहारा के बहते जा रहे हैं। कोयल ! प्रियतम से बिछुड़न का दर्द तो तुम जानती हो। जाओ और गरूड़ ध्वजधारी सुनहले वर्ण वाले प्रभु को बुला लाओ। **548**

मॆन्नडै अन्नम् परन्दु विळैयाडुम्⋆ विल्लिपुत्तूर् उऱैवान् तन्⋆ पॊन्नडि काण्बदोर् आशैयिनाल्⋆ एन् पॊरु कयल् कण्णिणै तुञ्जा⋆ इन् अडिशिलोडु पाल् अमुदूट्टि⋆ एडुत्त एन् कोल क्किळियै⋆ उन्नोडु तोळमै कॊळ्ळुवन् कुयिले !⋆ उलगळन्दान् वर क्कूवाय्॥५॥	जहां हंसों की जोड़ी फुदकती तथा खेलती हैं उस विल्लीपुत्तुर में प्रभु का निवास है। दिव्य चरणों को देखने की ईच्छा से हमारी मीनवत नाचती आंखें बंद नहीं होती हैं।कोयल ! पृथ्वी को पग से मापनवाले प्रभु को बुला लाओ। तुम्हें हम अपने सुग्गा से मित्रता करा देगें जो दूध एवं मीठे पदार्थो पर पलता है। **549**
एत्तिशैयुम् अमरर् पणिन्देत्तुम्⋆ इरुडीकेशन् वलि शॆय्य⋆ मुत्तन्न वॆण् मुऱुवल् शॆय्य वायुम् मुलैयुम्⋆ अळगऴिन्देन् नान्⋆ कॊत्तलर् काविल् मणित्तडम् कण्पडै⋆ कॊळ्ळुम् इळङ्गुयिले !⋆ एन् तत्तुवनै वर क्कूगिट्रियागिल्⋆ तलै अल्लाल् कैम्माऱिलेने ! ॥६॥	हृषीकेश की यातना से हमअपनी मुक्तामयी मुस्कान, होठों की लाली, तथा उरोज की सुन्दरता खो बैठे हैं। फूलों के गुच्छों तथा शीतल स्थान में रहने वाले नूतन यौवन से संपन्न कोयल ! अगर तुम हमारे सम्मानीय प्रभु को बुलाओगे तो कृतज्ञता में हम तुम्हारे प्रति सिर झुकायेंगे। **550**
पॊङ्गिय पार्कडल् पळ्ळि कॊळ्वानै⋆ प्पुणर्वदोर् आशैयिनाल्⋆ एन् कॊङ्गै किळर्न्दु कुमैत्तु क्कुदुगलित्तु⋆ आवियै आगुलम् शॆय्युम् अङ्गुयिले !⋆ उनक्कॆन्न मऱैन्दुऱैवु⋆ आऴियुम् शङ्गुम् ऒण् तण्डुम्⋆ तङ्गिय कैयवनै वर क्कूविल्⋆ नी शाल त्तरुमम् पॆऱुदि॥७॥	फेनसे भरे क्षीर सागर में शयन करने वाले प्रभु से आलिंगन की प्रत्याशा के उल्लास में हमारी छाती फूल रही है तथा धड़कन बढ़ गयी है और हृदय वेदना से ग्रस्त हो गया है। सौम्य कोयल ! तुम छिपकर क्यों रहती हो ? हमारे शंख–चक्र –गदाधारी प्रभु को बुलाओ और सदा के लिए कृतज्ञता का पुरूस्कार प्राप्त करो। **551**
शार्ङ्गम् वळैय वलिक्कुम्⋆ तडक्कैच्चतुरन् पॊरुत्तम् उडैयन्⋆ नाङ्गळ् एम् इल्लिरुन्दॊट्टिय कच्चङ्गम्⋆ नानुम् अवनुम् अऱिदुम्⋆ तेङ्गनि माम् पॊऴिल् शॆन्दळिर् कोदुम्⋆ शिरु कुयिले !⋆ तिरुमालै आङ्गु विरैन्दॊल्लै क्कूगिट्रियागिल्⋆ अवनै नान् शॆय्वन काणे ! ॥८॥	मेरे तिरूमल प्रभु सारंग धनुष चलाने में सिद्वहस्त हैं।वे हमारे सही जोड़ी हैं तथा हम दोनों की आपस की बहुत सी रहस्मय बातें हैं। आम के वृक्षों से मधु का पान करनेवाले छोटा कोयल ! तुम जाकर शीघ्र प्रभु को बुलाओ और तब देखना कि हम दोनों क्या करते हैं। **552**
पैङ्गिळि वण्णन् शिरीदरन् एन्बदोर्⋆ पाशत्तग प्पट्टिरुन्देन्⋆ पॊङ्गॊळि वण्डिरैक्कुम् पॊऴिल् वाऴ् कुयिले !⋆ कुऱिक्कॊण्डिदु नी केळ्⋆ शङ्गॊडु चक्करत्तान् वर क्कूवुदल्⋆ पॊन्वळै कॊण्डु तरुदल्⋆ इङ्गुळ्ळ काविनिल् वाऴ क्करुदिल्⋆ इरण्डत्तॊन्ऱेल् तिण्णम् वेण्डुम्॥९॥	सुग्गे के रंग वाले श्रीधर प्रभु की प्राप्ति की ईच्छा के पिंजरा में हम कैद हैं। मधुमक्खी के गीत से गुंजायमान बागों वाले काले कोयल ! मेरी बातों पर ध्यान दोः या तो शंख चक्र वाले प्रभु को बुलाओ या मेरे सोने के कंगनों को लाकर दो। अगर तू इस बाग में रहना चाहते हो तो दो में से एक तो तुम्हें करना ही होगा। **553**

अन्ऱ्लगम् अळन्दानै उगन्दु⋆ अडिमैक्कण् अवन् वलि शॅय्य⋆ तॅन्ऱलुम् तिङ्गळुम् ऊडरुत्तु⋆ एन्नै नलियुम् मुऱैमै अरियेन्⋆ एन्ऱुम् इक्काविल् इरुन्दिरुन्दु⋆ एन्नैत्तगरत्तादे नीयुम् कुयिले !⋆ इन्ऱु नारायणनै वर क्कूवायेल्⋆ इङ्गुट्टु निन्ऱुम् तुरप्पन्॥१०॥	जिस प्रभु से हम प्रेम करते हैं उन्होंने अपनी सेवा से हमें वंचित कर दिया है।पता नहीं क्यों चांद एवं वायु भी हमें कष्टकर लगते हैं। यहां रह कर हमारे दर्द को बढ़ाने वाले कोयल ! अगर हमारे नारायण को अभी नहीं बुलाती हो तो हम तुम्हें सदा के लिये यहां से बाहर भगा देंगे। **554**
‡विण्णुर् नीण्डडि ताविय मैन्दनै⋆ वेर्कण् मडन्दै विरुम्बि⋆ कण्णुर् एन् कडल् वण्णनै क्कूवु⋆ करुङ्गुयिले ! एन्ऱ माट्रम्⋆ पण्णुरु नान् मऱैयोर् पुदुवै मन्नन्⋆ पट्टर्बिरान् कोदै शॊन्न⋆ नण्णुरु वाशग मालै वल्लार्⋆ नमो नारायणाय एन्बारे ! ॥११॥ ॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	पुदुवै के स्वामी पत्तारबिरन की सुपुत्री गोदा के ये तमिल मधुर पद सुन्दर सलोनी सुकुमारी के गीतों का स्मरण कराते हैं जो काले कोयल को संबोधित करते हुए प्रभु को बुलाने के लिये गाये गये हैं। इसको कण्ठ करने वाले 'नमो नारायणाय' के स्मरण का लाभ उठायेंगे। **555** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

6 वारण मायिरम (556 - 566)

मायवन् तन्नै मणञ्शय्य क्कण्ड तूयनर् कनैवै त्तोळि क्कुरैत्तल् (प्रभु से परिणय का स्वप्न)

वारणम् आयिरम्⋆ शूळ वलम् शॆय्दु⋆ नारण नम्बि⋆ नडक्किन्ऱान् एन्ऱॆदिर्⋆ पूरण पॊर्कुडम्⋆ वैत्तु प्पुरम् एङ्गुम्⋆ तोरणम् नाट्ट⋆ क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान्॥१॥	बहन ! हमने एक स्वप्न देखा है कि पूरा नगर पताकों एवं सुनहले घड़ों से सजाया गया है। हजार हाथी से घिरे पांव पयादे नारायण हमारे पास आये। **556**
नाळै वदुवै⋆ मणम् एन्ऱु नाळ् इट्टु⋆ पाळै कमुगु⋆ परिशुडै प्पन्दल् कीळ्⋆ कोळरि मादवन्⋆ गोविन्दन् एन्बान् ओर्⋆ काळै पुगुद⋆ क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान्॥२॥	बहन ! हमने एक स्वप्न देखा है कि सुपारी वृक्षावलियों के पत्तों की छांह में माधव यानि गोविन्द सिंह की भांति खड़े हैं। उनलोगों ने हमारा परिणय कल के लिये निश्चित किया है। **557**
इन्दिरन् उळ्ळिट्ट⋆ देवर् कुळाम् एल्लाम्⋆ वन्दिरुन्दॆन्नै⋆ मगट्पेशि मन्दिरित्तु⋆ मन्दिर क्कोडि उडुत्ति⋆ मण मालै⋆ अन्दरि शूट्ट⋆ क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान्॥३॥	बहन ! हमने एक स्वप्न देखा है कि इन्द्र एवं अन्य देवगण आये और उनलोगों ने वर कन्या के जोड़ी की अनुशंसा करते हुए मंत्र पाठ किया। उनकी बहन अन्दरी ने हमें दुल्हन की साड़ी एवं माला से सजा दिया। **558**
नाल् दिशै त्तीर्त्तम्⋆ कॊणर्न्दु ननि नल्गि⋆ पार्प्पन च्चिट्टर्गळ्⋆ पल्लार् एडुत्तेत्ति⋆ पू प्पुनै कण्णि⋆ प्पुनिदनोडॆन् तन्नै⋆ काप्पु नाण् कट्ट⋆ क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान्॥४॥	बहन ! हमने एक स्वप्न देखा है कि बहुत सारे ऋषि गणों ने उच्च स्वर में मंत्र पाठ किया और हमदोनों को चारों दिशाओं के पवित्र जल से संप्रोक्षित कर हमलोगों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांध दिया। **559**
कदिरॊळि दीपम्⋆ कलशम् उडन् एन्दि⋆ शदिरिळ मङ्गैयर्⋆ ताम् वन्दॆदिर् कॊळ्ळ⋆ मदुरैयार् मन्नन्⋆ अडिनिलै तॊट्टु⋆ एङ्गुम् अदिर प्पुगुद⋆ क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान्॥५॥	बहन ! हमने एक स्वप्न देखा है कि सुन्दर युवतियों ने आरती की ज्योति एवं घड़ों से मथुरा के राजा का स्वागत किया है। जब वे चंदन से लेप किये हुए पग से आगे बढ़े तो पृथ्वी कांप गयी। **560**

मत्तळम् कॉट्ट⋆ वरि शङ्गम् निन्ऱ्द⋆ मुत्तुडै त्तामम्⋆ निरै ताळ्न्द पन्दल् कीळ्⋆ मैत्तुनन् नम्बि⋆ मदुशूदन् वन्दु⋆ एन्नै– क्कैत्तलम् पट्⋆ क्कनाक्कण्डेन् तोळी ! नान्॥६॥	बहन ! हमने एक स्वप्न देखा है कि धागों से लटके मोतियों के लर से सज्जित मंडप के नीचे ढ़ोल एवं शंख बज रहे हैं। हमारे प्रभु एवं संबंधी मधुसूदन ने मेरा हाथ अपने हाथ में पकड़ लिया। **561**
वाय् नल्लार्⋆ नल्ल मरै ओदि मन्दिरत्ताल्⋆ पाशिलै नाणल् पडुत्तु⋆ प्परिदि वैत्तु⋆ काय् शिन मागळिरु⋆ अन्नान् एन् कैप्पट्रि⋆ ती वलम् शेय्य⋆ क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान्॥७॥	बहन ! हमने एक स्वप्न देखा है कि विद्वान अर्चकों ने बेद मंत्रों का उच्चारण करते हुए सुगंधित धूपबत्तियों को दुर्वा पर रखा। गुस्सैल हाथी की तरह प्रभु ने हमें अग्नि बेदी के चारों तरफ घुमाया। **562**
इम्मैक्कुम्⋆ एळेळ् पिरविक्कुम् पट्रावान्⋆ नम्मै उडैयवन्⋆ नारायणन् नम्बि⋆ शेम्मै उडैय⋆ तिरुक्कैयाल् ताळ् पट्रि⋆ अम्मि मिदिक्क⋆ क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान्॥८॥	बहन ! हमने एक स्वप्न देखा है कि हमारे इस और सात आनेवाले जन्मों के आश्रय नाथ नारायण ने अपने करकमलों से हमारे पैर को उठाकर पत्थर पर रख दिया। **563**
वरिशिलै वाळ् मुगत्तु⋆ एन्नैमार् ताम् वन्दिट्टु⋆ एरिमुगम् पारित्तु⋆ एन्नै मुन्ने निरुत्ति⋆ अरिमुगन् अच्चुतन्⋆ कैम्मेल् एन् कै वैत्तु⋆ पॊरिमुगन्दट्ट⋆ क्कनाक्कण्डेन् तोळी ! नान्॥९॥	बहन ! हमने एक स्वप्न देखा है कि चमकते मुखड़े एवं धनुषाकार भौंह वाले भाईयों ने हमें प्रज्वलित अग्नि के सामने खड़ा कर दिया। उनलोगों ने मेरे हाथों को अच्युत के सिंह सदृश हाथों में रखकर उसे अग्नि में डालने के लिए धान के लावा से भर दिया। **564**
कुङ्कुमम् अप्पि⋆ क्कुळिर् शान्दम् मट्टित्तु⋆ मङ्गल वीदि⋆ वलम् शेय्दु मण नीर्⋆ अङ्गवनोडुम् उडन् शेन्रु⋆ अङ्गानै मेल्⋆ मञ्जनम् आट्ट⋆ क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान्॥१०॥	बहन ! हमने एक स्वप्न देखा है कि उनलोगों ने हमें लाल चूर्ण तथा चन्दन का लेप लगाकर हमदोनों को हाथी पर बैठाकर नगर में भ्रमण के लिये ले गये। तत्पश्चात् हमलोगों को सुगंधित जल से स्नान कराया। **565**

‡आयनु क्काग★ त्तान् कण्ड कनाविनै★ वेयर् पुगऴ्★ विल्लिपुत्तूर्क्कोन् कोदै शॊल्★ तूय तमिऴ् मालै★ ईरैन्दुम् वल्लवर्★ वायुनन् मक्कळै पॆट्ट्★ मगिऴ्वरे॥११॥	विल्लीपुत्तुर के स्वामी की सुपुत्री गोदा के ये मधुर तमिल पद उसके अपने स्वप्न के बारे में बताते हैं जो उसने गोपजन बल्लभ से परिणय हेतु देखे। इसका गान करने वाले अच्छे संतान से लाभान्वित होंगे। **566** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

7 करूप्पूरम् नारूमो (567 - 576)

पाञ्चजन्नियत्तै प्पद्दमनाभनोडुम् शुट्रमाक्कुदल्

(पाञ्चजन्य शंख का प्रभु से संबंध)

करु प्पूरम् नारुमो॰ कमल प्पू नारुमो॰ तिरु प्पवळ च्चॅव्वाय् तान्॰ तित्तित्तिरुक्कुमो॰ मरुप्पॊशित्त मादवन् तन्॰ वाय् च्चुवैयुम् नाट्रमुम्॰ विरुप्पुट्रु क्केट्गिन्रेन्॰ शॊल् आळि वॆण् शङ्गे ! ॥१॥	श्वेत शंख ! बताओ, हम जानने के लिये उत्सुक हैं कि 'गले के पास बाल' वाले हाथी के संहारक माधवन प्रभु के मुख से किसका, कर्पूर का या कमल का सुगंध मिलता है ? क्या उनके दिव्य होठ स्वाद में मधुर हैं ? **567**
कडलिल् पिरन्दु॰ करुदादु॰ पञ्चजनन् उडलिल् वळरन्दुपोय्॰ ऊळियान् कैत्तलत्तु॰ इडरिल् कुडियेरि॰ तीय अशुरर्॰ नडलै प्पड मुळङ्गुम्॰ तोट्रत्ताय् नल् शङ्गे ! ॥२॥	शंख ! तुम्हारे लिए तो अच्छा हुआ। नीचे समुद्र में जन्मे तथा पाञ्चजन के अपवित्र शरीर में पले। इसके बाद भी ऊंचे उठ गये, प्रभु के बायें हाथ में रहकर अपने घोर आवाज से दुष्ट असुरों के हृदय में भय उत्पन्न करते हो। **568**
तड वरैयिन् मीदे॰ शरद् काल चन्दिरन्॰ इडै उवाविल् वन्दु॰ एळुन्दाले पोल॰ नीयुम् वड मदुरैयार् मन्नन्॰ वाशुदेवन् कैयिल्॰ कुडियेरि वीट्रिरुन्दाय्॰ कोल प्पॆरुम् शङ्गे ! ॥३॥	सुन्दर शंख ! शरद ऋतु के पूर्ण चंद्र की तरह ऊंचे उदयगिरी पर्वत के समान मथुरा के राजा हमारे प्रभु वासुदेव के कंधे पर स्थापित रहते हो। **569**
चन्दिर मण्डलम् पोल्॰ दामोदरन् कैयिल्॰ अन्दरम् ऒन्रिन्रि॰ एरि अवन् शॆवियिल्॰ मन्दिरम् कॊळ्वाये पोलुम्॰ वलम्पुरिये॰ इन्दिरनुम् उन्नोडु॰ शॆल्वत्तुक्केलाने॥ ४ ॥	चंद्रमा की तरह वालमपुरी शंख ! दामोदर के कंधे पर सदा के लिये स्थापित होकर उनके कान में रहस्यमय बातें धीरे धीरे बताते रहते हो। तुम्हारे जैसे भाग्य के लिए तो इन्द्र भी तरसते हैं। **570**
उन्नोडुडने॰ ऒरु कडलिल् वाळ्वारै॰ इन्नार् इनैयार् एन्रु॰ एण्णुवार् इल्लै काण्॰ मन्नागि निन्र॰ मदुशूदन् वायमुदम्॰ पन्नाळुम् उण्गिन्राय्॰ पाञ्चजन्नियमे ! ॥५॥	तुम्हारे साथ वाले दूसरे यूं ही बिना जाने और बजे समुद्र में पड़े हैं। महान शंख ! लेकिन तुम्हें तो मधुसूदन के होठों का स्वाद लेने सौभाग्य प्राप्त है। **571**

पोय् त्तीर्त्तम् आडादे⋆ निन्र पुणर् मरुदम्⋆ शायत्तीर्त्तान् कैत्तलत्ते⋆ एरि क्कुडिकोण्डु⋆ शेय् त्तीर्त्तमाय् निन्र⋆ शेङ्कण् माल् तन्नुडैय⋆ वाय् त्तीर्त्तम् पायन्दाड वल्लाय्⋆ वलम्पुरिये ! ॥६॥	महान शंख ! प्रभु के साथ निरन्तर रहकर तुम स्नान करने के लिये दूर नहीं जाते हो। मरूद के वृक्ष को उखाड़ने वाले राजीव नयन प्रभु के होठों के स्राव से ही तुम्हारा स्नान होते रहता है।। **572**
शेङ्कमल नाळ् मलर्मेल्⋆ तेनुगरुम् अन्नम् पोल्⋆ शेङ्कण् करुमेनि⋆ वाशुदेवनुडय⋆ अङ्ग त्तलम् एरि⋆ अन्न वशम् शेय्युम्⋆ शङ्गरैया ! उन् शेल्वम्⋆ शाल अळगियदे ! ॥७॥	शंखों में सर्वोत्तम शंख ! तुम्हारा सुन्दर सौभाग्य है। राजीव नयन घनश्याम प्रभु के कंधे पर उसी तरह सुशोभित रहते हो जैसे दिन के ताजे कमल का मधु पीकर हंस बड़े तालाब में विहार करता है।**573**
उण्बदु शोल्लिल्⋆ उलगळन्दान् वायमुदम्⋆ कण्पडै कोळ्ळिल्⋆ कडल् वण्णन् कैत्तलत्ते⋆ पेण् पडैयार् उन् मेल्⋆ पेरुम् पूशल् शाट्रुगिन्रार्⋆ पण्पल शेय्गिन्राय्⋆ पाञ्चजन्नियमे ! ॥८॥	भोजन की बात करो तो तुम्हें सदा वामन प्रभु के होठों का अमृत प्राप्त है। विश्राम के लिए तुम्हें नीले वदन प्रभु का हाथ मिला हुआ है। शंख ! कुमारियों का समूह इस का विरोध कर रहे हैं कि तुम जो कर रहे हो वह ठीक नहीं है।**574**
पदिनाराम् आयिरवर्⋆ देविमार् पार्त्तिरुप्प⋆ मदु वायिल् कोण्डार्पोल्⋆ मादवन् तन् वायमुदम्⋆ पोदुवाग उण्बदनै⋆ प्पुक्कु नी उण्डक्काल्⋆ शिदैयारो उन्नोडु⋆ शेल्व प्पेरुम् शङ्गे ! ॥९॥	सोलह हजार दैविक सुन्दरियां प्रतीक्षा में हैं कि कब उनकी बारी आयेगी और वे माधव प्रभु के होठ का अमृत प्राप्त कर सकेंगी।तुम तो अकेले ही सब पी जाते हो। सौम्य शंख ! क्या वे सब तुमसे झगड़ा नहीं करेंगे ? **575**
‡पाञ्चजन्नियत्तै⋆ प्पर्पनाबनोडुम्⋆ वायन्द पेरुम् शुट्रम् आक्किय⋆ वण् पुदुवै⋆ एयन्द पुगळ् प्पट्टर्बिरान्⋆ कोदै तमिळ् ईरैन्दुम्⋆ आयन्देत्त वल्लार्⋆ अवरुम् अणुक्करे॥१०॥	प्राचीन पुदुवै के सर्वसम्मानीय स्वामी पत्तारबिरन की सुपुत्री गोदा के ये तमिल मधुर पद पाञ्चजन्य शंख का पद्मनाभ प्रभु के साथ सुन्दर संबंध को स्थापित करते हैं। जो इसके भावरस का अनुभव करते हुए गान करेंगे वे प्रभु के भक्त हो जायेंगे। **576** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

8 विण्णील मेलाप्पु (577 - 586)

मेगविडु तूदु (मेघ को प्रभु के पास दूत बनाकर भेजना)

‡विण्णील मेलाप्पु⋆ विरित्तार्पोल् मेगङ्गाळ्⋆ तॅण्णीर् पाय् वेङ्गडत्तु⋆ एन् तिरुमालुम् पोन्दाने⋆ कण्णीर्गळ् मुलैक्कुवट्टिल्⋆ तुळिशोर च्चोर्वेनै⋆ पॅण्णीमैं ईडळिक्कुम्⋆ इदु तमक्कोर् पॅरुमैये॥१॥	नील छतरी वाले आकाश में फैलने वाले काले बादल! क्या निर्झरों के स्त्राव से भरे वेंकटम के मेरे तिरूमल तुम्हारे साथ आते हैं ? हमारे सूजे हुए उरोजों के ऊपर से बहने वाले अश्रु धारा से हमको मूर्छा आरही है। हाय ! उन्हें किसी एक कुमारी के सौन्दर्य का नाश करने में गौरव प्राप्त होता है क्या ? **577**
मा मुत्तनिदि शॊरियुम्⋆ मा मुगिल्गाळ्⋆ वेङ्गडत्तु च्चामत्तिन् निऱङ्कॊण्ड⋆ ताळाळन् वार्त्तै एन्ने⋆ कामत्ती उळ्पुगुन्दु⋆ कदुवप्पट्टिडै क्कङ्गुल्⋆ एमत्तोर् तॆन्ऱलुक्कु⋆ इङ्गिलक्काय् नान् इरुप्पेने॥२॥	वेंकटम के पर्वतों पर मोती वर्षाने वाले महान बादल! घनश्याम वदन प्रभु से क्या संवाद है ? हाय ! अर्द्धरात्रि के मिलन की प्रज्वलित अग्नि से झुलस कर हम खड़े खड़े सुखद शीतल हवा की प्रतीक्षा में हैं। **578**
ऑळि वण्णम् वळै शिन्दै⋆ उऱक्कत्तोडिवै एल्लाम्⋆ एळिमैयाल् इट्टॆन्नै⋆ ईडळिय प्पोयिनवाल्⋆ कुळिर् अरुवि वेङ्गडत्तु⋆ एन् गोविन्दन् गुणम् पाडि⋆ अळियत्त मेगङ्गाळ् !⋆ आवि कात्तिरुप्पेने॥३॥	मेरा सौंदर्य, रंग, कंगन, भावना, एवं नींद ः हाय ! हमारे कुशल जीवन को नष्ट करते हुए कितनी जल्दी ये सब हमें छोड़ चुके हैं। दयालु बादल! शीतल झरनों वाले वेंकटम के गोविन्द का लीला गान करते हुए कबतक हम अपना धैर्य बनाये रहें ? **579**
मिन् आगत्तॆळुगिन्ऱ⋆ मेगङ्गाळ्⋆ वेङ्गडत्तु- त्तन् आग त्तिरुमङ्गै⋆ तङ्गिय शीर् मार्वर्कु⋆ एन् आगत्तिळङ्कॊङ्गै⋆ विरुम्बि त्ताम् नाडोऱुम्⋆ पॊन् आगम् पुल्गुदर्कु⋆ एन् पुरिवुडैमै शॆप्पुमिने॥४॥	विद्युत ज्योति से प्रकाशित काले बादल ! वेंकटम जाकर, वक्षस्थल पर तेजोमय 'श्री ' धारण करने वाले प्रभु से बताओ कि हर दिन हमारे उरोज प्रभु के दिव्य वदन से मिलने के लिये लालायित रहते हैं।**580**
वान् कॊण्डु किळर्न्दॆळुन्द⋆ मा मुगिल्गाळ् !⋆ वेङ्गडत्तु- त्तेन् कॊण्ड मलर् शिदऱ⋆ त्तिरण्डेऱि प्पॊळिवीर्गाळ्⋆ ऊन् कॊण्ड वळ् उगिराल्⋆ इरणियनै उडल् इडन्दान्⋆ तान् कॊण्ड शरि वळैगळ्⋆ तरुमागिल् शाट्रुमिने॥५॥	सिंह नखपंजरों से असुर की छाती विदीर्ण करने वाले वेंकटम के प्रभु के ऊपर अमृतमय फूल वर्षाने वाले एवं आकाश के आर पार घूमने वाले महान बादल ! उनसे पूछो कि उन्होंने जो हमारे कंगन लिये थे वो वापस करेंगे क्या ? **581**

शलङ्गॊण्डु किळर्न्दॆळुन्द⋆ तण् मुगिल्गाळ्! मावलियै निलङ्गॊण्डान् वेङ्गडत्ते⋆ निरन्देरि प्पॊळिवीर्गाळ्⋆ उलङ्गुण्ड विळङ्गनि पोल्⋆ उळ् मॆलिय प्पुगुन्दु⋆ ऎन्नै नलङ्गॊण्ड नारणर्कु⋆ ऎन् नडलै नोय् शॆप्पुमिने॥६॥	पानी से भरे शीतल काले बादल ! वेंकटम पर वर्षा करो और उनसे हमारी व्यथा सुनाओ। बलि से भूमि लेने वाले प्रभु ने मुझे वैसे ही सुखा डाला है जैसे मक्खियां ताड़ फल को सुखा देती हैं। **582**
शङ्ग मा कडल् कडैन्दान्⋆ तण् मुगिल्गाळ्!⋆ वेङ्गडत्तु च्चॆङ्गण् माल् शेवडि क्कीळ्⋆ अडि वीळ्च्चि विण्णप्पम्⋆ कॊङ्गै मेल् कुङ्कुमत्तिन्⋆ कुळम्बळिय प्पुगुन्दु⋆ ऒरुनाळ् तङ्गुमेल् ऎन् आवि⋆ तङ्गुमॆन्ऱुरैयीरे॥७॥	काले बादल ! वेंकटम जाओ जहां समुद्र मंथन करने वाले प्रभु रहते हैं। उनके चरणकमल पर गिरकर यह संवाद सुनाओ ः यह आजीवन दासी तभी जीवित रहेगी जब वे एक दिन हमारे उरोजों के ऊपर के कुमकुम को गिराते हुए मिलन का आनंद प्रदान करें । **583**
कार् कालत्तॆळुगिन्ऱ⋆ कार्मुगिल्गाळ्!⋆ वेङ्गडत्तु– प्पोर् कालत्तॆळुन्दरुळि⋆ प्पॊरुदवनार् पेर् शॊल्लि⋆ नीर् काल त्तॆरुक्किलम्⋆ पळविलै पोल् वीळ्वेनै⋆ वार् कालत्तॊरु नाळ्⋆ तम् वाशगम् तन्दरुळारे॥८॥	वर्षा के काले बादल ! युद्धक्षेत्र में विजय प्राप्त करने वाले वेंकटम के प्रभु का लीला गान करती हूं। मैं कालतरोपि के पौधे की पत्तियों की तरह वर्षा में विखर गयी हूं। हाय ! उनसे आशापूर्ण कोई संवाद मिलेगा क्या ? **584**
मद यानै पोल् ऎळुन्द⋆ मा मुगिल्गाळ्!⋆ वेङ्गडत्तै– प्पदियाग वाळ्वीर्गाळ्!⋆ पाम्बणैयान् वार्त्तै ऎन्ने⋆ कदि ऎन्ऱुम् तान् आवान्⋆ करुदादु⋆ ओर् पॆण् कॊडियै वदै शॆय्दान् ऎन्नुम् शॊल्⋆ वैयगत्तार् मदियारे॥९॥	हाथी के समान वेंकटम के काले बादल ! दो जीभ वाले सांप की संगति रखने वाले के वचन का क्या भरोसा ? उन्होंने जिज्ञासु को आश्रय का वचन दिया परन्तु उसे पूरा नहीं करते। एक असहाय कुमारी के मारने पर संसार उन्हें कभी भी सम्मान नहीं देगा। **585**
नागत्तिन् अणैयानै⋆ नन्नुदलाळ् नयन्दुरै शॆय्⋆ मेगत्तै वेङ्गडक्कोन्⋆ विडुदूतिल् विण्णप्पम्⋆ पोगत्तिल् वळुवाद⋆ पुदुवैयर्कोन् कोदै तमिळ्⋆ आगत्तु वैत्तुरैप्पार्⋆ अवर् अडियार् आगुवरे॥१०॥ ॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं॥	पुदुवै के सात्विक स्वामी की सुपुत्री गोदा के ये तमिल मधुर प्रेम पद वेंकटम के प्रभु के पास बादल को दूत के रूप में भेजने का है। जो इसके भावरस का अनुभव करते हुए गान करेंगे वे प्रभु के भक्त हो जायेंगे। **586** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

9 शिन्दुर च्चम्पाडि (587 - 596)

तिरूमालिरूञ्शालै एम्परूमान् तिऱत्तीडुबट्टिरङ्गुदल्

(तिरूमलरिनसोलै तिरूमल की प्रार्थना)

शिन्दुर च्चॅम्पॉडि प्पोल् तिरुमालिरुञ्शोलै एङ्गुम् इन्दिर गोपङ्गळे एऴुन्दुम् परन्दिट्टनवाल् मन्दरम् नाट्टि अन्ऱु मदुर क्कॉळुञ्शाऱु कॉण्ड शुन्दर त्तोळुडैयान् शुऴलैयिनिन्ऱुय्दुङ्गॉलो ! ॥१॥	हाय ! संपूर्ण तिरूमलरिनसोलै, विशेष तरह के उड़ने वाला लाल कीड़ा से भरा हुआ है जैसे लगता है कि सर्वत्र सिन्दूर चूर्ण छिड़का हुआ है। सुन्दर भुजाओं वाले प्रभु ने पर्वत की मथानी स्थापित कर अमृतमंथन किया। मैं कैसे इस भंवर (मंथन से उत्पन्न गहरा चक्रीय गति वाला ऊपरी सतह का दृश्य) में खड़ी रहकर जीवित रह सकूं ! **587**
पोर्क्कळिऱु पॅारुम् मालिरुञ्शोलै अम् पूम्पुरविल् तार्क्कॉडि मुल्लैगळुम् तवळ नगै काट्टुगिन्ऱ कार्क्कॉळ पडाक्कळ निन्ऱु कळऱि च्चिरिक्क त्तरियेन् आर्क्किडुगो तोऴि ! अवन् तार् शॅय्द पूशलैये ॥२॥	तिरूमलरिनसोलै के अंतहीन बागों में दांत वाले हाथी क्रीड़ा रत हैं। पूर्ण स्फुटित मुलै लता का विजय मुस्कान, एवं पता फूलों का हृदय स्पर्शी हास अब सहा नहीं जाता। बहन ! हम उनकी तुलसी की माला की कामना कर वेदना ग्रस्त हुए। **588**
करुविळै ऑण्मलर्गाळ ! काया मलर्गाळ् तिरुमाल् उरुवॉळि काट्टुगिन्ऱीर् एनक्कुय् वऴक्कॉन्ऱुरैयीर् तिरु विळैयाडु तिण् तोळ् तिरुमालिरुञ्शोलै नम्बि वरिवळै इल् पुगुन्दु वन्दि पट्रुम् वऴक्कुळदे ॥३॥	कारूविलै एवं काया के फूल! तुमलोगों के श्याम रंग देखकर हमें प्रभु की याद सताने लगती है। हमें कोई रास्ता बताओ। मलिरूमसोले के प्रभु की सुन्दर भुजायें लक्ष्मी के साथ क्रीड़ा करती हैं। हमारे घर में घुसकर उन्होंने हमारा कंगन छीन लिया। क्या यह उचित है ? **589**
पैम्पॉऴिल् वाऴ् कुयिल्गाळ् ! मयिल्गाळ् ! ऑण् करुविळैगाळ् वम्ब क्कळङ्गनिगाळ् ! वण्ण प्पूवै नऱुमलर्गाळ् ऐम् पॅरुम् पातगर्गाळ् ! अणि मालिरुञ्शोलै निन्ऱ एम्पॅरुमानुडैय निऱम् उङ्गळुक्कॅन् शॅय्वदे ॥४॥	बागों के सुन्दर कोयल! सुन्दर मोर! श्याम कारूविलै फूल! ताजा कल के फल! एवं काया के फूल ! मलिरूमसोले के पांच पापी ! प्रभु का श्याम वर्ण का प्रदर्शन कर तुमलोगों क्या भलाई कर रहे हो ? **590**
तुङ्ग मलर् प्पॉऴिल् शूऴ् तिरुमालिरुञ्शोलै निन्ऱ शॅङ्कण् करुमुगिलिन् तिरुवुरु प्पोल् मलर्मेल् तॉङ्गिय वण्डिनङ्गाळ् ! तॉगु पूञ्जुनैगाळ् ! शुनैयिल् तङ्गु शॅन्तामरैगाळ् ! एनक्कोर् शरण् शाट्रुमिने ॥५॥	बागों के ऊंचे फूलों के भौंरे गन ! गहरे ताल ! ताल के लाल कमल ! आपलोगों को देखकर प्रभु के श्याम वर्ण एवं अरूणाभ राजीव नयन की यादें सताने लगती हैं। आपलोगों को देखने से

	बचने का कोई उपाय है क्या ? कृपा कर बतायें। **591**
नारु नरुम् पॉळिल्⋆ मालिरुञ्शोलै नम्बिक्कु⋆ नान् नूरु तडाविल् वॅण्णॅय्⋆ वाय्नेरन्दु पराविवैत्तेन्⋆ नूरु तडा निरैन्द⋆ अक्कार अडिशिल् शॉन्नेन्⋆ एरु तिरुवुडैयान्⋆ इन्रु वन्दिवै कॉळ्ळुङ्गॉलो ! ॥६॥	सुगंधित बागों से घिरे मलिरूमसोलै के प्रभु! मैं बचन देती हूं कि आज ही मक्खन के एक सौ घड़े, एवं मधुर खीर के एक सौ लबालब भरे घड़े आपको अर्पित करूंगी। क्या अपार धन से संपन्न प्रभु इस छोटे नैवेद्य के समर्पण को स्वीकार करेंगे ? **592**
इन्रु वन्दित्तनैयुम्⋆ अमुदु शॅय्दिड प्पॅरिल्⋆ नान् ऑन्रु नूरायिरमा क्कॉडुत्तु⋆ पिन्नुम् आळुम् शॅय्वन्⋆ तॅन्रल् मणम् कमळुम्⋆ तिरुमालिरुञ्शोलै तन्नुळ् निन्रपिरान्⋆ अडियेन् मनत्ते⋆ वन्दु नेर् पडिले॥७॥	अगर वे मेरे नैवेद्य को आज स्वीकार कर लेते हैं तो मैं इसे एक सौ गुना हजार बार समर्पित करूंगी। अहा ! प्रभु तो सुगंधित बागों में निवास बनाये हुए हैं, क्या वे हमारे छोटे से हृदय में वास करेंगे ? **593**
कालै एळुन्दिरुन्दु⋆ करिय कुरुवि क्कणङ्गळ्⋆ मालिन् वरवु शॉल्लि⋆ मरुळ् पाडुदल् मॅय्म्मैकॉलो⋆ शोलैमलै प्पॅरुमान्⋆ तुवारापदि एम्पॅरुमान्⋆ आलिन् इलै प्पॅरुमान्⋆ अवन् वार्त्तै उरैक्किन्रदे॥८॥	जैसे हीं आज प्रातः जागी तो काले पक्षियों के झुण्ड, पर्वतीय बागों वाले प्रभु, द्वारका के सम्राट प्रभु, प्रलय की बाढ़ में बट पत्र पर सोने वाले प्रभु के बारे में बोलने लगे। उनके मधुर मरूल आवाज प्रभु के आगमन के द्योत्तक हैं, क्या यह सत्य है ? **594**
कोङ्गलरुम् पॉळिल्⋆ मालिरुञ्शोलैयिल् कॉन्रैगळ् मेल्⋆ तूङ्गु पॉन् मालैगळोडु⋆ उडनाय् निन्रु तूङ्गुगिन्रेन्⋆ पूङ्गॉळ् तिरुमुगत्तु⋆ मडुत्तदिय शङ्गॊलियुम्⋆ शारङ्गविल् नाण् ऑलियुम्⋆ तलै प्पॅय्वदॆञ्ञान्रु कॉलो ! ॥९॥	कोंगु के पुष्प वृक्षों वाले मलिरूमसोलै में हमारा रहना कोनरै के गिरते फूल की तरह व्यर्थ ही है। कब मैं उनके सारंग की टंकार सुन सकूंगी और कब उनके मधुर होठों से बजने वाले शंख की ध्वनि सुनूगीं ? **595**
शन्दॊडु कारगिलुम् शुमन्दु⋆ तडङ्गळ् पॊरुदु⋆ वन्दिळियुम् शिलम्बारुडै⋆ मालिरुञ्शोलै निन्र शुन्दरनै⋆ शुरुम्बार् कुळल् कोदै⋆ तॊगुत्तुरैत्त⋆ शॅन्दमिळ् पत्तुम् वल्लार्⋆ तिरुमालडि शेर्वर्गळे॥१०॥ ॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	मधुमक्खी से लिपटे जूड़े के फूल वाली गोदा के ये सात्विक तमिल दसक पद तालों से घिरे मलिरूमसोलै वाले प्रभु के बारे में है जहां नुपुर गंगा चंदन एवं सुगंधित वृक्षों को प्रक्षालित करती हुई प्रवाहित हैं। इसके गायन करने वाले अवश्य हीं प्रभु तिरूमल को प्राप्त करेंगे। **596** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः **10 कारक्कोडल् पूक्काळ् (597 - 606)** **तलैवि पिरिवाट्राद्रु वरून्दुदल्** (प्रभु से विछुड़ने पर शोकमग्न होना)	
कार् क्कोडल् पूक्काळ् !⋆ कार्क्कडल् वण्णन् एन् मेल्⋆ उम्मै– प्पोर् क्कोलम् शेय्दु⋆ पोर विडुत्तवन् एङ्गुट्रान्⋆ आर्क्को इनि नाम्⋆ पूशल् इडुवदु⋆ अणितुळाय्– त्तार्क्कोडुम् नेञ्जन् तन्नै⋆ पडैक्क वल्लेन् अन्दो ! ॥१॥	कोडल के गाढ़े रंगवाले फूल ! सागर सा सलोने वर्ण के प्रभु कहां हैं ? देखते तुमको हैं, और बाणों की वर्षा हम पर कर रहे हैं। हाय ! हमारी शिकायत कौन सुनेगा ? उनके तुलसी के मुकुट के लिये, हमारा बेलगाम हृदय भी उन्हीं से मिल गया है। **597**
मेल् तोन्रि प्पूक्काळ् !⋆ मेल् उलगङ्गळिन् मीदु पोय्⋆ मेल् तोन्रुम् शोदि⋆ वेद मुदल्वर् वलङ्कैयिल्⋆ मेल् तोन्रुम् आळियिन्⋆ वेन्जुडर् पोल च्चुडादु⋆ एम्मै माट्रोलै प्पट्टवर् कूट्टत्तु⋆ वैत्तु कोळ्गिट्रिरे ॥२॥	ऊंचे लताओं पर खिलने वाले कांतल के फूल ! सर्वज्ञ एवं वेद के वस्तुविषय वाले प्रभु के उच्च स्तरीय पृष्ठभूमि पर ले जाकर वहां चक्र की गर्मी से झुलसने से अच्छा है कि हमें मृतकों के साथ छोड़ दो। **598**
कोवै मणाट्टि !⋆ नी उन् कोळुङ्गनि कोण्डु⋆ एम्मै आवि तोलैवियेल्⋆ वायळगर् तम्मै अञ्जुदुम्⋆ पावियेन् तोन्रि⋆ पाम्बणैयार्क्कुम् तम् पाम्बु पोल्⋆ नावुम् इरण्डुळ वाय्त्तु⋆ नाणिलियेनुक्के ॥३॥	श्रीमति कोवै लता ! कृपाकर अब और न सताओ। प्रभु के होंठ जैसा सुन्दर तुम्हारे फल देखकर मैं कांप जाती हूं। कितना लज्जाविहीन पापी हूं मैं ! नाग की संगति के कारण प्रभु भी हमारे साथ दो जीभ वाले हो गये हैं यानि कथनी करनी में भेद है। **599**
मुल्लै प्पिराट्टि !⋆ नी उन् मुरुवल्गाळ् कोण्डु⋆ एम्मै अल्लल् विळैवियेल्⋆ आळि नङ्गाय् ! उन् अडैक्कलम्⋆ कोल्लै अरक्कियै मूक्करिन्दिट्ट⋆ कुमरनार् शोल्लुम् पोय्यानाल्⋆ नानुम् पिरन्दमै पोय् अन्रे ॥४॥	श्रीमति मुलै लता ! कृपाकर अपने शुभ्र मुस्कान से अब और न सताओ। मेरी स्वामिनी ! आपके पैर पड़ती हूं। हमारे प्रभु वह राजकुमार हैं जिन्होंने साहसी राक्षसी को शांत कर दिया। अगर उनके वचन गलत होते तो मेरा जन्म नहीं हुआ होता। **600**
पाडुम् कुयिल्गाळ् !⋆ ईदेन्न पाडल्⋆ नल् वेङ्गड नाडर् नमक्कोरु वाळ्वु तन्दाल्⋆ वन्दु पाडुमिन्⋆ आडुम् करुळ क्कोडि उडैयार्⋆ वन्दरुळ् शेय्दु⋆ कूडुवरायिडिल्⋆ कूवि नुम् पाट्टुगळ् केट्टुमे ॥५॥	गायक कोयल ! बहुत हुआ, कैसा गीत है यह। अगर वेंकटम के प्रभु नया जन्म दें तो पुनः आना। हमारे प्रभु अपने ध्वज पर नृत्यशील गरूड को धारण करने वाले हैं। अगर वे हमारे पास आते हैं तब हमदोनों बैठकर तुम्हारे गीत सुनेंगे। **601**

कण मा मयिल्गाळ् !⋆ कण्णपिरान् तिरुक्कोलम् पोन्ऱु⋆ अणि मा नडम् पयिन्ऱाडुगिन्ऱीर्क्कु⋆ अडि वीऴ्गिन्ऱेन्⋆ पणम् आडरवणै⋆ प्पर्पल कालमुम् पळ्ळिकॉळ्⋆ मणवाळर् नम्मै वैत्त परिशु⋆ इदु काण्मिने ॥ ६ ॥	हमारे प्रभु कृष्ण के सलोने वर्ण को धारण करने वाले मोरगन ! हां, तुमलोग कलापूर्ण नर्त्तक हो लेकिन मैं तुम्हारे पांव पड़ती हूं, नृत्य बन्द करो। दुलहाराजा फनवाले नाग शय्या पर सतत सोते हैं। देखो हम कितना वेदनाग्रस्त हैं। **602**
नडम् आडि त्तोगै विरिक्किन्ऱ⋆ मा मयिल्गाळ्⋆ उम्मै नडम् आट्टम् काण⋆ प्पावियेन् नान् ओर् मुदल् इलेन्⋆ कुडम् आडु कूत्तन्⋆ गोविन्दन् कोमिऱै शॆय्दु⋆ एम्मै उडैमाडु कॊण्डान्⋆ उङ्गळुक्किनियॊन्ऱु पोदुमे ॥ ७ ॥	नये नृत्य की तैयारी में पंख फैलाने वाले मोरगन ! यह पापिनी तुम्हारे प्रदर्शन के लिए तुम्हें कुछ भी नहीं देगी। हमारे पात्र नर्त्तक गोविन्द ने हमारा सर्वस्व हर लिया है और हम अभी एक भिखारिन हैं। तुम्हारे लिये अब नृत्य करना उचित है क्या ? **603** पात्र को हवा में उछाल कर उसकी गति के साथ नृत्य करना ही पात्र नर्त्तन है।
मऴैये ! मऴैये ! मण् पुऱम् पूशि⋆ उळ्ळाय् निन्ऱु⋆ मॆऴुगूट्टिनार् पोल्⋆ ऊट्टुनल् वेङ्गडत्तुळ् निन्ऱ⋆ अऴग प्पिरानार् तम्मै⋆ एन् नॆञ्जत्तगप्पड– त्तऴुव निन्ऱु⋆ एन्नै त्तदर्त्ति क्कॊण्डु⋆ ऊट्रवुम् वल्लैये ॥ ८ ॥	धातु की ढ़लाई करने वाले कर्मकार मिट्टी के सांचे में जैसे धातु द्रव को बहा कर खाली देते हैं उसी तरह से मेरा सर्वस्व खाली हो गया है। वेंकटम के ऊपर से जाने वाले वर्षा के मेघ! हमारे ऊपर वर्षा कराकर उनकी प्रतिछाया को हमारे हृदय में सदा के लिए स्थापित कर दोगे क्या ? **604**
कडले ! कडले ! उन्नै क्कडैन्दु⋆ कलक्कुऱुत्तु⋆ उडलुळ् पुगुन्दु⋆ निन्ऱूऱल् अऱुत्तवर्क्कु⋆ एन्नैयुम् उडलुळ् पुगुन्दु⋆ निन्ऱूऱल् अऱुक्किन्ऱ मायर्क्कु⋆ एन् नडलैगळ् एल्लाम्⋆ नागणैक्के शॆन्ऱुरैत्तिये ॥ ९ ॥	विशाल सागर ! जैसे प्रभु ने मंथन कर जीवन दायी अमृत तुम्हारे गह्वर से निकाल लिया उसी तरह हमारे भीतर प्रवेश कर उन्होंने हमारा जीवन हर लिया है। क्या तुम जाकर उनके संगी नाग को मेरी वेदना नहीं सुनाओगे ? **605**
नल्ल एन् तोऴि !⋆ नागणै मिशै नम्परर्⋆ शॆल्वर् पॆरियर्⋆ शिऱु मानिडवर् नाम् शॆय्वदॆन्⋆ विल्लि पुदुवै⋆ विट्टुशित्तर् तङ्गळ् तेवरै⋆ वल्ल परिशु वरुविप्परेल्⋆ अदु काण्डुमे ॥ १० ॥ ॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	मेरी अच्छी बहन ! शेषशय्या पर सोने वाले प्रभु धनवान एवं शक्तिशाली हैं। हम तुच्छ मरणशील प्राणि कर ही क्या सकते हैं ? जब विल्लीपुत्तुर के हमारे पिता विष्णुचित्त उनको बहुत उपहार देते हैं उससमय हम उनका दर्शन कर लेंगे। **606** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

11 तामुगक्कुम् (607 - 616)

तिरूवरङ्गत्तुरै शल्वनै क्कामुरल्

(श्रीरंगन के व्यवहार से वेदनाग्रस्त होकर अपनी मां को बताना)

ताम् उगक्कुम् तम् कैयिल्⋆ शङ्गमे पोलावो⋆ याम् उगक्कुम् एम् कैयिल्⋆ शङ्गमुम् एन्दिळैयीर् !⋆ ती मुगत्तु नागणैमेल्⋆ शेरुम् तिरुवरङ्गर्⋆ आ ! मुगत्तै नोक्काराल्⋆ अम्मने ! अम्मने ! ॥१॥	गहनों से आभूषित नारियां ! उनको अपने हाथ का शंख प्यारा है, तो क्या मुझे शंख के बने अपने हाथ के कंगन प्यारे नहीं हैं ? मां ! मां ! दुर्दांत सांप पर सोने वाले तिरूवरंगर (श्रीरंगम) के प्रभु ने मेरा मुंह देखने की स्वीकृति नहीं दी है। **607**
एळिल् उडैय अम्मनैमीर् !⋆ एन् अरङ्गत्तिन्नमुदर्⋆ कुळल् अळगर् वाय् अळगर्⋆ कण् अळगर्⋆ कौप्पूळिल् एळु कमल प्पूवळगर्⋆ एम् मानार्⋆ एन्नुडैय कळल् वळैयै त्तामुम्⋆ कळल् वळैये आक्किनरे॥२॥	दिव्य नारियां ! मेरे मधुर तिरूवरंगर प्रभु के सुन्दर केश हैं, सुन्दर होठ हैं, सुन्दर आंखें हैं, और नाभि में सुन्दर कमल है। हाय ! वे हमारे ढ़ीले कललवलै कंगन अपने पैर में पहने हुए हैं। **608**
पौङ्गोदम् शूळ्न्द⋆ भुवनियुम् विण् उलगुम्⋆ अङ्गादुम् शोरामे⋆ आळ्गिन्र एम्बैरुमान्⋆ शैङ्गोल् उडैय⋆ तिरुवरङ्ग च्चैल्वनार्⋆ एङ्गोल् वळैयाल्⋆ इडर् तीर्वर् आगादे॥३॥	तिरूवरंगर के श्रीसंपन्न प्रभु शाश्वत रूप से सागर परिवृत्त पृथ्वी एवं आकाश के सर्वप्रभुतासंपन्न स्वामी हैं। हमारे कंगन को हर के वे क्या करेंगे ? **609**
मच्चणि माड⋆ मदिळ् अरङ्गर् वामननार्⋆ पच्चै प्पशुन् देवर्⋆ ताम् पण्डु नीर् एट्ट⋆ पिच्चै क्कुरैयागि⋆ एन्नुडैय पैय्वळै मेल्⋆ इच्चै उडैयरेल्⋆ इत्तेरुवे पोदारे॥४॥	ऊंची अटारियों वाले तिरूवरंगर के प्रभु एक बालक ब्रह्यचारी के रूप में याचना करने आये। मिले हुए दान से संतुष्ट न होकर अगर वे हमारा कंगन भी चाहते हैं तो क्या उनको इस मार्ग से नहीं गुजरना चाहिए ? **610**
पौल्ला क्कुरळ् उरुवाय्⋆ पौर् कैयिल् नीर् एट्ट⋆ एल्ला उलगुम्⋆ अळन्दु कौण्ड एम् पैरुमान्⋆ नल्लार्गळ् वाळुम्⋆ नळिर् अरङ्ग नागणैयान्⋆ इल्लादोम् कैप्पौरुळुम्⋆ एय्दुवान् ऒत्तुळने॥५॥	बली के हाथ से जल मिलते हीं उन्होंने एक पग में पृथ्वी को माप दिया। अच्छे लोगों वाले तिरूवरंगर में रहकर वे अब हम दीन जनों का सर्वस्व हरण करने की योजना बनाये हुए हैं। **611**

<table>
<tr>
<td>कै प्पॊरुळ्गाळ् मुन्नमे⋆ कै क्कॊण्डार्⋆ काविरि नीर्
शॆय् प्पुरळ ओडुम्⋆ तिरुवरङ्ग च्चॆल्वनार्⋆
ऎप्पॊरुट्कुम् निन्ऱार्क्कुम्⋆ ऎय्दादु⋆ नान् मऱैयिन्
शॊऱ्पॊरुळाय् निन्ऱार्⋆ ऎन् मॆय्प्पॊरुळुम् कॊण्डारे॥६॥</td>
<td>कावेरी से सिंचित तिरूवरंगर के श्रीसंपन्न प्रभु वेदों के सार हैं तथा सर्वव्याप्त होकर भी सबों से छिपे रहते हैं। मेरा सर्वस्व लेने के बाद अब वे मेरा ह्यदय भी लेना चाह रहे हैं। 612</td>
</tr>
<tr>
<td>उण्णादुऱङ्गादु⋆ ऒलिकडलै ऊडऱुत्तु⋆
पॆण् आक्कै याप्पुण्डु⋆ ताम् उऱ्ऱ पेदॆल्लाम्⋆
तिण्णार् मदिळ् शूळ्⋆ तिरुवरङ्ग च्चॆल्वनार्⋆
ऎण्णादे तम्मुडैय⋆ नन्मैगळे ऎण्णुवरे॥७॥</td>
<td>ऊंची दीवारों वाले सम्मान के स्वाभिमानी तिरूवरंगर के प्रभु ने अपनी पत्नि के लिये भोजन और नींद त्याग कर सागर को नियंत्रित किया। उस समय जो पागलपन उनपर सवार हुआ था उसे भूल गये क्या ? 613</td>
</tr>
<tr>
<td>‡पाशि तूर्त्तु क्किडन्द⋆ पार् मगट्कु⋆ प्पण्डॊरुनाळ्
माशुडम्बिल् नीर् वारा⋆ मानम् इला प्पन्ऱियाम्⋆
देशुडैय देवर्⋆ तिरुवरङ्ग च्चॆल्वनार्⋆
पेशियिरुप्पनगळ्⋆ पेर्क्कवुम् परावे॥८॥</td>
<td>तिरूवरंगर के प्रभु सम्मानीय हैं एवं श्रीसंपन्न हैं। परन्तु सुदूर पूर्व में एक निम्न प्राणी सूकर के रूप में आकर उन्होंने बाढ़ के कीचड़ में फंसे सुन्दरी पृथ्वी को ऊपर उठाया। उस समय उन्होंने भू देवी से क्या बातचीत की यह कौन बतायेगा ? 614</td>
</tr>
<tr>
<td>कण्णाल्म् कोडित्तु⋆ क्कन्नि तन्नै क्कै प्पिडिप्पान्⋆
तिण् आर्न्दिरुन्द⋆ शिशुपालन् तेजऴिन्दु⋆
अण्णान्दिरुक्कवे⋆ आङ्गवळै क्कै प्पिडित्त⋆
पॆण्णाळन् पॆणुम् ऊर्⋆ पेरुम् अरङ्गमे॥९॥</td>
<td>शिशुपाल रूक्मिणी से परिणय के लिये तैयार था। प्रभु आये और रूक्मिणी को रथ पर उठा ले गये जिसे वह आश्चर्य से दुःखी एवं लज्जित हो देखता रह गया। इसीलिये लोग तिरूवरंगर को प्रभु का आवास एवं नाटक गृह कहते हैं। 615</td>
</tr>
<tr>
<td>‡शॆम्मै उडैय⋆ तिरुवरङ्गर् ताम् पणित्त⋆
मॆय्म्मै प्पॆरु वार्त्तै⋆ विट्टुशित्तर् केट्टिरुप्पर्⋆
तम्मै उगप्पारै⋆ ताम् उगप्पर् ऎन्नुम् शॊल्⋆
तम्मिडैये पॊय्यानाल्⋆ शादिप्पार् आर् इनिये ! ॥१०॥
॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥</td>
<td>तिरूवरंगर की सच्ची गाथा से विष्णुचित्त भली भांति परिचित हैं। ”जो स्नेह करता है उसे स्नेह मिलता है” वाली कहावत अगर प्रभु के साथ लागू नहीं होगी तो किसचीज को लोग समझेंगे कि यह निश्चित है ? 616
आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।</td>
</tr>
</table>

<table>
<tr><td colspan="2">

श्रीमते रामानुजाय नमः

12 मट्रीरून्दीर् (617 - 626)

“शीदरनिरून्दुळि च्चलुत्तुवीर एनै” एन क्कोदै तमरक्कु क्कूरिय तुणिबु

(कृष्ण के पास ले चलने के लिये अपने परिजनों से निवेदन करना)

</td></tr>
<tr><td>मद्रिरुन्दीर्गट्करियलागा⋆ मादवन् एन्बदोर् अन्बुदन्नै⋆
उद्रिरुन्देनुक्कुरैप्पदेल्लाम्⋆ ऊमैयरोडु शेविडर् वार्त्तै⋆
पेद्रिरुन्दाळै ऑळियवे पोय्⋆ पेर्त्तोरु तायिल् वळर्न्द नम्बि⋆
मर् पोरुन्दामल् कळम् अडैन्द⋆ मदुरै प्पुरत्तेन्नै उय्त्तिडुमिन्॥१॥</td><td>माधव के साथ हमारे संबंध के बारे में आपकी राय एक बहरे को एक गूंगे द्वारा दी गयी राय के समान है। अपने माता पिता को छोड़कर क्या वे दूसरे के घर में नहीं पले ? हमें मथुरा ले चलो जहां मल्ल युद्ध में प्रतिद्वन्दि के चुनाव में उनके साथ न्याय नहीं हुआ था। **617**</td></tr>
<tr><td>नाणि इनियोर् करुमम् इल्लै⋆ नाल् अयलारुम् अरिन्दोळिन्दार्⋆
पाणियादेन्नै मरुन्दु शेय्दु⋆ पण्डु पण्डाक्क उरुतिरागिल्⋆
माणि उरुवाय् उलगळन्द⋆ मायनै क्काणिल् तलैमरियुम्⋆
आणैयाल् नीर् एन्नै क्काक्क वेण्डिल्⋆ आय्प्पाडिक्के एन्नै उय्त्तिडुमिन्॥२॥</td><td>जब सभी लोग जान ही गये हैं तब लज्जित रहने से क्या लाभ ? मैं शपथ खाती हूं कि अगर हमारी भलाई चाहते हैं और हमें जीवित देखना चाहते हैं तो हमें आयप्पादी ले चलें। अगर मैं पृथ्वी को उठा लेने वाले अविवाहित सुन्दर किशोर को देख सकी तो जीवित रह सकूंगी। **618**</td></tr>
<tr><td>तन्दैयुम् तायुम् उद्रारुम् निर्क⋆ तनिवळि पोयिनाळ्! एन्नुम् शोल्लु⋆
वन्द पिन्नै प्पळि काप्परिदु⋆ मायवन् वन्दुरु क्काट्टुगिन्रान्⋆
कोन्दळम् आक्कि प्परक्कळित्तु⋆ कुरुम्बु शेय्वान् ओर् मगनै प्पेट्र⋆
नन्दगोपालन् कडैत्तलैक्के⋆ नळ् इरुट्कण् एन्नै उय्त्तिडुमिन्॥३॥</td><td>लोग कहते हैं कि हमने पुराने रीति रिवाज को तोड़कर माता पिता एवं परिजनों को छोड़ दिया है। मैं अब इस तरह के अपमान के विरोध में अपनी रक्षा का तर्क भी नहीं कर पाती। एक अनजान मुखमंडल हमें सर्वत्र कौंधते रहता है। अर्द्धरात्रि में मुझे नन्द के प्रवेश ड्योढ़ी में छोड़ दो जहां किशोरियां वेदनाग्रस्त हो कराहती रहती हैं और नन्दपुत्र उनलोगों के प्रतिष्ठा को धूमिल करते हुए उनसे खेलते रहते हैं। **619**</td></tr>
<tr><td>अङ्गै त्तलत्तिडै आळि कोण्डान्⋆ अवन् मुगत्तन्रि विळियेन् एन्रु⋆
शेङ्गच्चु क्कोण्डु कण् आडै आर्त्तु⋆ च्चिरु मानिडवरै क्काणिल् नाणुम्⋆
कोङ्गैत्तलम् इवै नोक्कि क्काणीर्⋆ गोविन्दनुक्कल्लाल् वायिल् पोगा⋆
इङ्गुत्तै वाळ्वै ऑळियवे पोय्⋆ यमुनै क्करैक्केन्नै उय्त्तिडुमिन्॥४॥</td><td>लाल कंचुकी से ढ़के हुए हमारे उरोजों को देखिये। ये मात्र शंखधारी को हीं खोजरहे हैं और सभी मरणशील की आंखों से ओझल हो गये हैं। चूंकि अब ये किसी और के घर में नहीं जायेंगे अतः मेरा जीवन का यहीं अंत हो जाये । मुझे यमुना के किनारों तक पहुंचा दो। **620**</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>आर्क्कुम् एन्नोय् इदरियलागादु⋆ अम्मनैमीर् ! तुळदि प्पडादे⋆
कार्क्कडल् वण्णन् एन्बान् ऑरुवन्⋆ कैकण्ड योगम् तडव त्तीरुम्⋆
नीर् क्करै निन्ऱ कडम्बै एऱि⋆ काळियन् उच्चियिल् नट्टम् पायन्दु⋆
पोर्क्कळमाग निरुत्तम् शैय्द⋆ पॊय्गै क्करैक्कॆन्नै उय्त्तिडुमिन्॥५॥</td><td>मेरी सखियां ! मेरा रोग सामान्य समझ के परे है अतः उदास मत हो।मुझे उस यमुना के किनारों पर ले चलो जो तब युद्धक्षेत्र में बदल गया था जब श्याम प्रभु कदंब के पेड़ पर चढ़ कर वहां से कूदते हुए कालिय नाग के फन को कुचल डाले थे। उनका वात्सल्य ही हमलोगों की औषधी है। **621**</td></tr>
<tr><td>कार् त्तण् मुगिलुम् करुविळैयुम्⋆ काया मलरुम् कमल प्पूवुम्⋆
ईर्त्तिडुगिन्ऱन एन्नै वन्दिट्टु⋆ इरुडीकेशन् पक्कल् पोगे एन्ऱु⋆
वेर्त्तु प्पशित्तु वयिरशैन्दु⋆ वेण्डडिशिल् उण्णुम् पोदु⋆ ईदॆन्ऱु
पार्त्तिरुन्दु नॆडु नोक्कु क्कॊळ्ळुम्⋆ पत्त विलोशनत्तुय्त्तिडुमिन्॥६॥</td><td>शीतल मेघ ; करूविलै, काया एवं कमल के फूल यह कहते हुए मुझे सता रहे हैं ः “उनके पास जाओ, उनके पास जाओ”। मुझे भक्तविलोचनम के पास ले चलो जहां वे भूखे, थके, किसी द्वारा खिलाये जाने की प्रतीक्षा में सामान्य दृष्टि से बहुत दूर बैठे दिखते हैं।**622**</td></tr>
<tr><td>वण्णम् तिरिवुम् मनम् कुळैवुम्⋆ मानम् इलामैयुम् वाय् वॆळुप्पुम्⋆
उण्णल् उऱामैयुम् उळ् मॆलिवुम्⋆ ओद नीर् वण्णन् एन्बान् ऑरुवन्⋆
तण्णन् तुळाय् एन्नुम् मालै कॊण्डु⋆ शूट्ट त्तणियुम् पिलम्बन् तन्नै⋆
पण् अळिय प्पलदेवन् वॆन्ऱ⋆ पाण्डिवडत्तॆन्नै उय्त्तिडुमिन्॥७॥</td><td>मेरे रोग के सभी लक्षण ः रक्तहीनता, विषाद, संवेदनहीनता, श्वेत होठ, भूख का जाना, अनिद्रा एवं उदासी भरा मौन, ये सभी लुप्त हो जायेंगे जब एकबार प्रभु के सिर की तुलसी माला मेरे गले में डाल दी जायेगी। अतः मुझे भंदीरवत ले चलो जहां उनके भाई ने प्रलम्बासुर की जांघ उखाड़ कर उसका नाश कर दिया था। **623**</td></tr>
<tr><td>कद्दिनम् मेय्क्किलुम् मेयक्क प्पॆट्टान्⋆ काडु वाळ् शादियुम् आग प्पॆट्टान्⋆
पट्टि उरलिडै आप्पुम् उण्डान्⋆ पाविगाळ् ! उङ्गळुक्केच्चु क्कॊल्लो⋆
कट्टन पेशि वशवुणादे⋆ कालिगळ् उय्य मळै तडुत्तु⋆
कॊट्ट क्कुडैयाग एन्दि निन्ऱ⋆ गोवर्त्तनत्तॆन्नै उय्त्तिडुमिन्॥८॥</td><td>पाप से पूर्ण नारियां! प्रभु के ऊपर लांछना लगाने का कैसे हिम्मत करती हो कि वे गाय चराते थे, वनवासी कुल में जन्म लिये थे, और मक्खन चुराने के लिये दंडित हुए थे। अपनी बुद्धि अपने पास रखते हुए हमारे कोध से बचो। मुझे गोवर्द्धन ले चलो जहां उन्होंने तूफान के विरोध में पर्वत को उठा लिया था। **624**</td></tr>
<tr><td>कूट्टिल् इरुन्दु किळि एप्पोदुम्⋆ गोविन्दा ! गोविन्दा ! एन्ऱळैक्कुम्⋆
ऊट्ट क्कॊडादु शॆरुप्पनागिल्⋆ उलगळन्दान् ! एन्ऱुयर क्कूवुम्⋆
नाट्टिल् तलैप्पळि एय्दि⋆ उङ्गळ् नन्मै इळन्दु तलैयिडादे⋆
शूट्टुयर् माडङ्गळ् शूळ्न्दु तोन्ऱुम्⋆ दुवरापदिक्कॆन्नै उय्त्तिडुमिन्॥९॥</td><td>गोविंद बोलने के लिए इस पिंजड़ाबद्ध सुग्गा को लगातार भूखे रख दंडित किया गया।अब यह जोर से चिल्लाती है “पृथ्वी के मापने वाले प्रभु”। जगत से अभिशाप मत लो, तथा लज्जा से अपने सिर न झुकाओ।मुझे ऊंची दीवारों से घिरे अटारियों वाले द्वारका ले चलो। **625**</td></tr>
</table>

मन्नु मदुरै तॊडक्कमाग⋆ वण् दुवरापदि तन् अळवुम्⋆ तन्नै त्तमर् उय्त्तु प्पॆय्य वेण्डि⋆ त्ताळ्कुळलाळ् तुणिन्द तुणिवै⋆ पॊन् इयल् माडम् पॊलिन्दु तोन्रुम्⋆ पुदुवैयर्कोन् विट्टुशित्तन् कोदै⋆ इन्निशैयाल् शॊन्न शॆञ्जॊल् मालै⋆ एत्त वल्लार्क्किडम् वैगुन्दमे॥१०॥ ॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	पुदेवै के स्वामी विष्णुचित्त की सुपुत्री गोदा ने इस तमिल गीतमालिका में अपने सखियों से उसे मथुरा द्वारका आदि जगहों के प्रभु के पास ले जाने का निवेदन किया है। जो इसका गायन करेंगे वे सदा के लिए वैकुण्ठ में रहेंगे। **626** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

13 कण्णनन्नुम् (627 - 636)

कण्णनउगन्द पारूळकान्डु कादल्नोय् तणिमिन् एनल्

(श्रीकृष्ण के कपड़े, तुलसी आदि का उपयोग कर अपनी वेदना को कम करना)

कण्णन् एन्नुम् करुन्दॅय्वम्⋆ काट्चि पळगि क्किडप्पेनै⋆ पुण्णिल् पुळि प्पॅय्दाऱ् पोल⋆ प्पुऱम् निन्ऱळगु पेशादे⋆ पॅण्णिन् वरुत्तम् अऱियाद⋆ पॅरुमान् अरैयिल् पीदग वण्ण आडै कॉण्डु⋆ एन्नै वाट्टम् तणिय वीशीरे॥१॥	श्यामल कृष्ण से ग्रस्त होकर हम सो गये हैं। विनती है कि हमें शिक्षा न दें और हमारे घाव पर इमली न डालें।हाय ! प्रभु एक किशोरी के वेदना को नहीं समझते हैं। उनका पीतांवर ले लो और उससे हवा करते हुए हमारी मूर्च्छा को दूर करो।627
पाल् आलिलैयिल् तुयिल् कॉण्ड⋆ परमन् वलैप्पट्टिरुन्देनै⋆ वेलाल् तुन्नम् पॅय्दाऱ्पोल्⋆ वेण्डिट्टॅल्लाम् पेशादे⋆ कोलाल् निरै मेय्त्तायनाय्⋆ क्कुडन्दै क्किडन्द कुडम् आडि⋆ नीलार् तण्णन् तुळाय् कॉण्डु⋆ एन् नॅऱि मॅन् कुळल्मेल् शूट्टीरे॥२॥	मैं बटपत्र पर सोने वाले शिशु के जाल में पकड़ ली गयी हूं। विनती है कि आप अपने पर नियंत्रण रखें, आपके शब्द हमें कटार की तरह चुभ रहे हैं।जाकर गाढ़ी निद्रा से कुडन्दै में सोये हुए पात्र- नर्त्तक गोपवल्लभ के पहने हुए शीतल तुलसी को लाओ और उसे हमारे जूड़े में लपेट दो।628
कञ्जै क्कायन्द करुविल्लि⋆ कडैक्कण् एन्नुम् शिऱैक्कोलाल्⋆ नॅञ्जूडुरुव वेवुण्डु⋆ निलैयुम् तळर्न्दु नैवेनै⋆ अञ्जेल् एन्नान् अवन् ऑरुवन्⋆ अवन् मार्वणिन्द वनमालै⋆ वञ्जियादे तरुमागिल्⋆ मार्विल् कॉणर्न्दु पुरट्टीरे॥३॥	असुर विमर्दन करने वाले कृष्ण के धनुषवत भ्रू से चलने वाले नजरों के पैने वाण ने हमारे मर्मस्थल को चीर दिया है। हाय ! हमारी शक्ति क्षीण हो रही है। वे स्वयं प्रकट नहीं होते और कहते हैं कि "डरो मत"। अगर वे झूठ का खेल छोड़कर अपना वनमाला दे दें तो उसे लाकर हमारे वक्षस्थल पर रगड़ो। 629
आरे उलगत्ताट्टुवार्⋆ आयर् पाडि कवर्न्दुण्णुम्⋆ कारेऱळक्क उळक्कुण्डु⋆ तळर्न्दुम् मुऱिन्दुम् किडप्पेनै⋆ आरावमुदम् अनैयान् तन्⋆ अमुद वायिल् ऊऱिय⋆ नीर् तान् कॉणर्न्दु पुलरामे⋆ परुक्कि इळैप्पै नीक्किरे॥४॥	श्यामल –वृषभ कृष्ण, आयपाडि में मतवाला हो चौकड़ी दे रहे हैं। मैं उनके चोट से खून से लथपथ एवं घायल होकर गिर गयी हूं और अब हमारी स्थिति में सुधार होने की कोई आशा नहीं है। जाओ और उनके मधुर होठों के अमृतमय स्त्राव को लाकर उसे सूखने के पहले हमें पीने को दे दो। एक मात्र यही हमारी संजीवनी है। 630
अळिलुम् तॉळिलुम् उरु क्काट्टान्⋆ अञ्जेल् एन्नान् अवन् ऑरुवन्⋆ तळुवि मुळुशि प्पुगुन्दॅन्नै⋆ शुट्रि च्चुळन्ऱु पोगानाल्⋆ तळैयिन् पॉळिल्वाय् निरै प्पिन्ने⋆ नॅडुमाल् ऊदि वरुगिन्ऱ⋆ कुळलिन् तॉळैवाय् नीर् कॉन्डु⋆ कुळिर मुगत्तु त्तडवीरे॥५॥	हमारी रूदन भरी विनती के बाद भी वे आकर यह नहीं कहते कि "डरो मत"। न तो हमारा तनिक भी ख्याल रखते और न तो आकर लुघड़ते हुए आलिंगन करते और चले जाते।घने वन में गायें चराते हुए वे अनवरत वंशी बजाते रहते हैं। जाओ, मुरली के छिद्रों से उनके मुंह के स्त्राव को लेकर हमारे भौं पर

	लगाकर हमारे बुखार को शांत करो। **631**
नडै ऑन्रिल्ला उलगत्तु⋆ नन्दगोपन् मगन् एन्नुम्⋆ कॉडिय कडिय तिरुमालाल्⋆ कुळप्पु क्कूरु कॉळप्पट्टु⋆ पुडैयुम् पैयरगिल्लेन् नान्⋆ पोक्कन् मिदित्त अडिप्पाट्टिल्⋆ पॉडित्तान् कॉणर्न्दु पूशीर्गळ्⋆ पोगा उयिर् एन् उडम्बैये॥६॥	स्वेच्छा वाले तिरूमल अव्यवस्थित जगत में नन्दगोप के एक अनुशासनहीन छोकरा के रूप में आये। हमारे घाव पर निष्ठुर प्रहार करते हुए उसे क्षत विक्षत कर दिये हैं। उस नटखट शैतान के पांव तले की मिट्टी का लेप चढ़ाकर हमें बचाओ। **632**
वॆट्रि क्करुळ क्कॉडियान् तन्⋆ मीमीदाडा उलगत्तु⋆ वॆट्र् वॆरिदे पॆट्र् ताय्⋆ वेम्बे आग वळर्त्ताळे⋆ कुट्रम् अट्र् मुलै तन्नै⋆ क्कुमरन् कोल प्पणैत्तोळोडु⋆ अट्र् कुट्रम् अवै तीर⋆ अणैय अमुक्कि क्कट्टीरे॥७॥	एक निष्ठुर शासक की तरह पक्षी के ध्वज को लहराते हुए वे जगत में घूमते रहते हैं। उनकी मां को एक नाकाम पुत्र का लालन पालन करने का घोर पश्चाताप है। उस अभद्र छोकरे के साथ उचित व्यवहार करते हुए उसके सुन्दर भुजाओं को हमारे वक्षस्थल से आलिंगन की स्थिति में बांध दो। **633**
उळ्ळे उरुगि नैवेनै⋆ उळळो इलळो एन्नाद⋆ कॉळ्ळै कॉळ्ळि क्कुरुम्बनै⋆ क्कोवर्त्तननै क्कण्डक्काल्⋆ कॉळ्ळुम् पयन् ऑन्रिल्लाद⋆ कॊङ्गै तन्नै क्किळङ्गोडुम्⋆ अळ्ळि प्परित्तिट्टवन् मार्विल्⋆ एरिन्देन् अळलै तीर्वेने॥८॥	गोवर्द्धन के हमारे प्रेमी प्रभु पथिकों के राह के दुर्दांत लुटेरा हैं।हमारी मानसिक स्थिति के खराब होने पर भी वे कभी भी इस बात की चिंता नहीं करते कि हम जीवित हैं या मर गये ।कभी भी अगर उस निर्दयी को हमने देख लिया तो अपने उरोजों को समूल उखाड़ कर उनके सुन्दर वक्षस्थल पर फेंककर अपना बदला चुका लेंगे। **634**
कॉम्मै मुलैगळ् इडर् तीर⋆ गोविन्दर्कोर् कुट्रेवल्⋆ इम्मै प्पिरवि शॆय्यादे⋆ इनि प्पोय् च्चॆय्युम् तवन्दान् एन्⋆ शॆम्मै उडैय तिरुमार्विल्⋆ शेर्त्तानेनुम् ऑरु ञान्रु⋆ मॆय्म्मै शॊल्लि मुगम् नोक्कि⋆ विडैदान् तरुमेल् मिग नन्रे॥९॥	अगर हम इस जीवन में अपने गोविन्द की सेवा नहीं कर पाये तथा अपने उरोजों को संतुष्ट नहीं कर सके तो भविष्य के जीवन का क्या प्रयोजन ? अच्छा होता वे अपने वक्षस्थल से हमें अभी आलिंगन कर बांध लेते। अन्यथा एक दिन उनको हमें स्पष्टीकरण देना ही होगा। **635**
‡अल्लल् विळैत्त पॆरुमानै⋆ आयर् पाडिक्कणि विळक्कै⋆ विल्लि पुदुवै नगर् नम्बि⋆ विट्टुशित्तन् वियन् कोदै⋆ विल्लै तॊलैत्त पुरुवत्ताळ्⋆ वेट्कै उट्रुमिग विरुम्बुम्⋆ शॊल्लै तुदिक्क वल्लार्गळ्⋆ तुन्ब क्कडलुळ् तुवळारे॥१०॥ ॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	विल्लीपुत्तुर के स्वामी विष्णुचित्त की सुन्दर भौंहे वाली सुपुत्री गोदा के ये वेदना ग्रस्त प्रेम गीत गोपवंश के दीपक की पशस्ति गाथा है।जो इसका उछाह भरे प्रेम से गान करेंगे वे दुःख के सागर से अन्यथा पार कर जायेंगे। **636** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

14 पट्टि मेयन्दु (637 - 646)

विरून्दावनत्ते परन्दामनै क्कण्डमै

(वृन्दावन में उनके दर्शन का वर्णन)

पट्टि मेयन्दोर् कारेरु* बल देवर्कोर् कील् क्कन्राय्* इट्टीरिट्टु विळैयाडि* इङ्गे पोद क्कण्डीरे* इट्ट मान पशुक्कळै* इनिदु मरित्तु नीर् ऊट्टि* विट्टु क्कोण्डु विळैयाड* विरुन्दा वनत्ते कण्डोमे॥१॥	बलदेव के सहायक के रूप में एक श्यामल किशोर वृषभ इस रास्ते से भटकते निकला है, क्या आपने उसे जाते देखा है ? एक गोपकिशोर सुन्दर गायों के साथ खेलते हुए उनलोगों को (दूध) पीने का उपाय बता रहा था।इस तरह का एक हमने वृन्दावन में देखा है। **637**
अनुङ्ग एन्नै प्पिरिवु शेय्दु* आयर् पाडि कवरन्दुण्णुम्* कुणुङ्गु नारि क्कुट्टै* क्कोवर्त्तननै क्कण्डीरे* कणङ्गळोडु मिन् मेगम्* कलन्दार् पोल् वनमालै* मिनुङ्ग निन्रु विळैयाड* विरुन्दा वनत्ते कण्डोमे॥२॥	हमें उदास एवं अकेला छोड़कर एक किशोर वृषभ मक्खन का गंध विखेरता आयप्पाडि में छापा मारते घूम रहा है। क्या आपने गोवर्द्धन किशोर को देखा है ? उनके श्यामल वदन पर तेजोमय वनमाला मेघ की विद्युत रेखा सी दिखती है। हमलोगों ने उन्हें अपने मित्रों के साथ खेलते वृन्दावन में देखा है। **638**
मालाय् प्पिरन्द नम्बियै* माले शेय्युम् मणाळनै* एला प्पोय्गळ् उरैप्पानै* इङ्गे पोद क्कण्डीरे* मेलाल् परन्द वेयिल् काप्पान्* विनदै शिरुवन् शिरगेन्नुम्* मेलाप्पिन् कीळ् वरुवानै* विरुन्दा वनत्ते कण्डोमे॥३॥	प्रभु एक प्रेमी ही नहीं हैं अपितु प्रेम ने ही दूलहा का शरीर धारण कर लिया है। क्या आपने निपुन मिथ्या भाषी को इस रास्ते जाते देखा है ? सूर्य की तेज किरणों से गरूड़ के पंख की छत्रछाया में रक्षित हमलोगों ने उनको वृन्दावन में जाते देखा है। **639**
कार् त्तण् कमल क्कण् एन्नुम्* नेडुङ्कयिरु पडुत्ति* एन्नै ईर्त्तु क्कोण्डु विळैयाडुम्* ईशन् तन्नै क्कण्डीरे* पोर्त्त मुत्तिन् कुप्पाय* पुगर् माल् यानै क्कन्रे पोल्* वेर्त्तु निन्रु विळैयाड* विरुन्दा वनत्ते कण्डोमे॥४॥	प्रभु के कमल नयन से हम जंजीर की तरह बंधे हुए है। क्या आपने इस रास्ते उन्हें खेलते जाते देखा है ? मोतियों से आच्छादित हाथी के मांसल बच्चे की तरह हमलोगों ने उनको पसीने से तरबतर वृन्दावन में खेलते देखा है। **640**
मादवन् एन् मणियिनै* वलैयिल् पिळैत्त पन्रि पोल्* एदुम् ओन्रुम् कोळ त्तारा* ईशन् तन्नै क्कण्डीरे* पीतग आडै उडै ताळ* पेरुङ्गार्मेग क्कन्रे पोल्* वीदि आर वरुवानै* विरुन्दा वनत्ते कण्डोमे॥५॥	जाल से सुरक्षित बचकर निकले हुए विजयी सूकर की भांति क्या आपने श्यामल माधव को देखा है ? मंदिर परिसर में घुमाते हुए वृषभ की भांति अपने रेशमी वस्त्रों को लहराते हुए हमलोगों ने उनको वृन्दावन में देखा है। **641**

धरुमम् अऱिया क्कुरुम्बनै⋆ तन् कै च्चारङ्गम् अदुवे पोल्⋆ पुरुव वट्टम् अऴगिय⋆ पॅारुत्तम् इल्लियै क्कण्डीरे⋆ उरुवु करिदाय् मुगम् शॅय्दाय्⋆ उदय प्परुप्पदत्तिन् मेल्⋆ विरियुम् कदिरे पोल् वानै⋆ विरुन्दा वनत्ते कण्डोमे॥६।	मनमौजी नटखट की भुवा रेखा उनके अपने सारंग धनुष की आकृति जैसी है। क्या आपने विरोधाभास से पूर्ण प्रभु को देखा है ? श्यामल वदन पर अरूणाभ मुखड़ा ऐसा प्रतीत होता है जैसे उदयकालीन सूर्य पूर्व के पर्वत से ऊपर निकल रहा हो। हमलोगों ने उनको वृन्दावन में देखा है। **642**
पॅारुत्तम् उडैय नम्बियै⋆ प्पुऱम् पोल् उळ्ळुम् करियानै⋆ करुत्तै प्पिऴैत्तु निन्ऱ⋆ अक्करु मा मुगिलै क्कण्डीरे⋆ अरुत्ति त्तारा कणङ्गळाल्⋆ आर प्पॅरुगु वानम् पोल्⋆ विरुत्तम् पॅरिदाय् वरुवानै⋆ विरुन्दा वनत्ते कण्डोमे॥७॥	बादल की तरह भीतर एवं बाहर से समान काले एवं बुद्धि से परे प्रभु को क्या आपने देखा है ? विस्तृत काले आकाश में अनगिनत सुन्दर तारे की तरह हमलोगों ने उन्हें अपनी मित्रमंडली के साथ वृन्दावन में आते देखा है। **643**
वॅळिय शङ्गॅान्ऱुडैयानै⋆ प्पीतग आडै उडैयानै⋆ अळि नन्गुडैय तिरुमालै⋆ आऴियानै क्कण्डीरे⋆ कळिवण्डॅङ्गुम् कलन्दाऱ् पोल्⋆ कमऴ् पूङ्कुऴल्गाळ् तडन्तोळ् मेल्⋆ मिळिर निन्ऱु विळैयाड⋆ विरुन्दा वनत्ते कण्डोमे॥८॥	प्रभु ने श्वेत शंख, सुन्दर चक्र, तथा पीले परिधान धारण कर रखा है। अप्रतिम करूणा वाले तिरूमल के प्रभु को क्या आपने देखा है ? कंधे पर लटके केश की अलकें कमल के समान उनके मुखमंडल पर मधुमक्खी की भांति शोभायमान है।ऐसे प्रभु को हमलोगों ने वृन्दावन में देखा है। **644**
‡नाट्टै प्पडै एन्ऱयन् मुदलात्तन्द⋆ नळिर् मामलर् उन्दि⋆ वीट्टै प्पण्णि विळैयाडुम्⋆ विमलन् तन्नै क्कण्डीरे⋆ काट्टै नाडि त्तेनुगनुम्⋆ कळिऱुम् पुळ्ळुम् उडन् मडिय⋆ वेट्टै आडि वरुवानै⋆ विरुन्दा वनत्ते कण्डोमे॥९॥	प्रभु ब्रह्मा को बनाकर उनसे जगत की सृष्टि कराते हैं । जिनके लिये यह सब खेल है, क्या आपने उस शुद्ध प्रभु को देखा है ? पक्षी, बछड़ा, एवं हाथी (बकासुर, धेनुकासुर, एवं कुवलयापीड़) का नाश करने वाले प्रभु वन से शिकार के बाद बाहर आये हैं।हमलोगों ने उन्हें वृन्दावन में देखा है। **645**
‡परुन्दाळ् कळिट्रुक्करुळ् शॅय्द⋆ परमन् तन्नै⋆ प्पारिन्मेल् विरुन्दा वनत्ते कण्डमै⋆ विट्टुशित्तन् कोदै शॅाल्⋆ मरुन्दाम् एन्ऱु तम् मनत्ते⋆ वैत्तु क्कॅाण्डु वाऴ्वार्गळ्⋆ पॅरुन्दाळ् उडैय पिरान् अडिक्कीऴ्⋆ पिरियादॅन्ऱुम् इरुप्पारे॥१०॥ ॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	विष्णुचित्त की सुपुत्री गोदा के ये शब्द गजेन्द्र के रक्षक दिव्य प्रभु के पृथ्वी पर वृन्दावन में दर्शन का वर्णन करते हैं ।जो इनको अपने जीवनौषधी की तरह हृदय में धारण करेंगे वे प्रभु के श्रीचरणों से कभी भी अलग नहीं होंगे। **646** आण्डाल तिरूवडिगळे शरणं ।

पॊरुळ् अडक्कम्

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ पॆरुमाळ् तिरुमॊऴि त्तनियन्गाळ् ॥

उडैयवर् अरुळि च्चॆय्द तनियन्

इन्नमुदम् ऊट्टुगेन् इङ्गवा पैङ्गिळिये ! ⋆
तॆन्नरङ्गम् पाडवल्ल सीर्प्पॆरुमाळ्⋆ – पॊन्नम्
शिलैशेर् नुदलियर्वेळ् शेरलर्कोन्⋆ एङ्गळ्
कुलशेगरन् एन्रे कूरु

मणक्काल् नम्बि अरुळि च्चॆय्द तनियन्

आरम् कॆडप्परन् अन्बर् कॊळ्ळार् एन्रु⋆ अवर्गळुक्के
वारङ्गॊडुगुड प्पाम्बिल् कैयिट्टवन्⋆ माट्रलरै
वीरङ्गॆडुत्त शॆङ्गोल् कॊल्लि कावलन्⋆ विल्लवर् कोन्
शेरन् कुलशेगरन् मुडिवेन्दर् शिगामणिये

॥ कुलशेगरप्पॆरुमाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥

1 इरूळिरिय (647 – 657)

तिरूवरङ्ग प्परूमानै क्कण्डु एन्रूगाल् मगिऴ्वेन् एनल्

(श्रीरंगनाथ के दर्शन से आनन्दित होने में अभिरूचि)

इरुळिरिय च्चुडर् मणिगळ् इमैक्कुम् नॆट्रि* इनत्तुत्ति अणि पणम् आयिरङ्गळ् आर्न्द* अरवरश प्पॆरुञ्जोदि अनन्दन् एन्नुम्* अणि विळङ्गुम् उयर् वॆळ्ळै अणैयै मेवि* तिरुवरङ्ग प्पॆरु नगरुळ् तॆण्णीर् प्पॊन्नि* तिरै क्कैयाल् अडि वरुड प्पळ्ळि कॊळ्ळुम्* करुमणियै क्कोमळत्तै क्कण्डु कॊण्डु* एन् कण्णिणैगळ् एन्रुगॊलो कळिक्कुम् नाळे ! ॥१॥	तिरूवरंग के वड़े नगर में हमारे नील मणि सा सलोने प्रभु अनन्त पर सोये हुए हैं। श्वेत वर्ण के अनन्त को सहस्त्र फन हैं तथा हरेक फन पर प्रभु का चरण चिह्न अंकित है। प्रभु के कोमल चरण कावेरी जल की लहरों से प्रक्षालित हो रहे हैं। कब हमारी प्यासी आंखें उनके सूक्ष्म रूप के दर्शन से आनन्दित होंगी ? **647**
वायोर् ईरैञ्ञूरु तुदङ्गळ् आर्न्द* वळै उडम्बिन् अळल् नागम् उमिऴ्न्द शॆन्दी* वीयाद मलर् च्चॆन्नि विदानमे पोल्* मेन्मेलुम् मिग एङ्गुम् परन्द तन् कीऴ्* कायाम्बू मलर् प्पिरङ्गल् अन्न माल्लै* कडि अरङ्गत्तरवणैयिल् पळ्ळि कॊळ्ळुम्* मायोनै मणत्तूणे पट्रि निन्रु* एन् वायार एन्रुगॊलो वाऴ्त्तुम् नाळे ! ॥२॥	अटारियों वाले तिरूवरंग नगर में कुंडलाकार बैठे शेषनाग पर अलौकिक प्रभु लेटे हुये अवस्था में ऐसे दिखते हैं जैसे लगता है शेष शय्या पर कया फूल का गुलदस्ता रखा हो। पूज्य प्रभु के पुष्पवत सिर को शेषनाग के मुड़े हुए फन ऊपर से ढ़के हुए हैं। शेषनाग के सहस्त्रों होठों पर प्रभु की गाथा शाश्वत रूप से रहता है तथा उनके सहस्त्रों जीभ से बरसती आग प्रभु के ऊपर छाता का आवरण बनाये हुए है। कव वह समय आयेगा जब हम गर्भगृह के बाहर मंगलमय युगल मणत्तून के खंभों के पास खड़ा होकर प्रभु का जी भर प्रशस्ति गायेंगे ? **648**
एम्माण्बिन् अयन् नान्गु नाविनालुम् एडुत्तेत्ति* ईरिरण्डु मुगमुम् कॊण्डु* एम्माडुम् एऴिर्कण्गळ् एट्टिनोडुम्* तॊऴुदेत्ति इनिदिरैञ्ज निन्र* शॆम् पॊन् अम्मान् तन् मलर् क्कमल क्कॊप्पूळ् तोन्र* अणि अरङ्गत्तरवणैयिल् पळ्ळि कॊळ्ळुम्* अम्मान् तन् अडियिणै क्कीऴ् अलर्गळ् इट्टु* अं- गडियवरोडॆन्रुगॊलो अणुगुम् नाळे ! ॥३॥	रत्नों वाला तिरूवरंग नगर में प्रभु शेषशय्या पर लेटे हुये हैं और उनके नाभि से निकले कमल पर प्रशंसनीय ब्रह्मा बैठे हुए हैं। चतुर्मुख ब्रह्मा अपनी आठों आंखों से सर्वत्र देखते हुए प्रभु के सम्मान में चारों हाथ से करबद्ध हो सिर नवाए हैं तथा साथ ही साथ चारों जीभ से प्रभु का अनवरत यश गान कर रहे हैं। कब हम प्रभु के चरणों पर फूल चढ़ायेंगे तथा कब उनके भक्तों के बीच हिल मिल जायेंगे ? **649**

माविनै वाय् पिळन्दुगन्द मालै★ वेलै 　वण्णणै ऎन् कण्णनै वन् कुन्ऱमेन्दि★ आविनै अन्ऱुय्य क्कॊण्ड आयर् ऎट्टै★ 　अमरर्गळ् तम् तलैवनै अन्दमिऴिन् इन्ब– प्पाविनै★ अव् वडमॊऴियै प्पट्टर्गळ्★ 　पयिल् अरङ्गत्तरवणैयिल् पळ्ळि कॊळ्ळुम्★ गोविनै ना उऱ वऴुत्ति ऎन्दन् कैगळ्★ 　कॊय्म्मलर् तूय् ऎन्ऱुगॊलो कूप्पुम् नाळे ! ॥ ४ ॥	सागर सा सलोने पूज्य प्रभु तिरूवरंग में शेषशय्या पर लेटे हुये हैं। पूर्व में इन्होंने केशिन घोड़ा के जबड़े फाड़ डाले थे, तथा पर्वत को उठाकर तूफान से गायों की रक्षा की थी। मुक्त जीवों एवं वैदिक संतों द्वारा गाये हुए तमिल के मधुर गीतों वाले ये हमारे प्रिय कृष्ण हैं। कब हम अपने हाथों फूल चुनकर प्रभु की अर्चना करेंगे तथा इनकी गाथा तबतक गाते रहेंगे जबतक जीभ सूजन से भर नहीं जाये ? **650**
इणैयिल्ला इन्निशै याऴ् कॆऴुमि★ इन्ब– 　त्तुम्बुरुवुम् नारदनुम् इऱैञ्जि ऎत्त★ तुणैयिल्ला त्तॊल् मऱैनूल् तोत्तिरत्ताल्★ 　तॊल् मलरक्कण् अयन् वणङ्गि ओवादेत्त★ मणिमाड माळिगैगळ् मल्गु शॆल्व★ 　मदिल् अरङ्गत्तरवणैयिल् पळ्ळि कॊळ्ळुम्★ मणिवण्णन् अम्मानै क्कण्डु कॊण्डु★ ऎन् 　मलर् च्चॆन्नि ऎन्ऱुगॊलो वणङ्गुम् नाळे ! ॥ ५ ॥	मणि सा सलोने प्रभु,श्रीसंपन्न एवं विकसित तिरूवरंग के रत्न जटित महलों में शेषशय्या पर लेटे हुये हैं। नाभि कमल पर बैठे सनातन ब्रह्मा वेद के पुरातन ऋचाओं से इनकी अनवरत प्रशस्ति गाते रहते हैं। पूज्य ऋषिगण, तुम्बुरू एवं नारद, अद्वितीय मधुर वाद्य यंत्रों पर इनका यशगान करते हुए सिर नवाते हैं। कब हम इनका दर्शन करेंगे तथा कब मुकुट के साथ अपना सिर इनके पूज्य चरणों पर रख देंगे ? **651**
अळिमलर् मेल् अयन् अरन् इन्दिरनोडु★ ऎनै 　अमरर्गळ् तम् कुऴुवुम् अरम्बैयरुम् मट्रुम्★ तॆळिमदि शेर् मुनिवर्गळ् तम् कुऴुवुम् उन्दि★ 　तिशै तिशैयिल् मलर् तूवि च्चॆन्ऱु शेरुम्★ कळिमलर् शेर् पॊऴिल् अरङ्गत्तुरगम् ऎऱि★ 　कण्वळरुम् कडल् वण्णर् कमल क्कण्णुम्★ ऒळिमदि शेर् तिरुमुगमुम् कण्डु कॊण्डु★ ऎन् 　उळ्ळमिग ऎन्ऱुगॊलो उरुगुम् नाळे ! ॥ ६ ॥	चमकते चांद सा मुखड़ा वाले प्रभु, सुगंधित बागों से घिरे तिरूवरंग में शेषशय्या पर लेटे हुये हैं। शिव, इन्द्र आदि देवताओं की अगुवाई करते ब्रह्मा जो ताजा खिले एवं मधुमक्खियों से घिरे कमल पर बैठे हैं, अप्सराओं की अगुआई करती रंभा, शुभ्र विचार वाले मुनियों की अगुवाई करते नारद, ये सभी लोग प्रभु के गर्भगृह में भीड़ करते हुए सब ओर से फूल अर्पित कर रहे हैं। कब हम इनका दर्शन करेंगे तथा कब हम अपने हृदय को पिघला कर बाहर करेंगे ? **652**
मऱम् तिगऴुम् मनम् ऒऴित्तु वञ्ज मट्रि★ 　ऐम् पुलन्गळ् अडक्कि इडर् प्पार त्तुन्बम् तुऱन्दु★ इरु मुप्पॊऴुदेत्ति ऎल्लैयिल्ला– 　त्तॊल् नॆऱिक्कण्★ निलै निन्ऱ तॊण्डरान★ अऱम्दिगऴुम् मनत्तवर् तम् कदियै प्पॊन्नि★ 　अणि अरङ्गत्तरवणैयिल् पळ्ळि कॊळ्ळुम्★ निऱम् तिगऴुम् मायोनै क्कण्डॆन् कण्गळ्★ 　नीर्मल्ग ऎन्ऱुगॊलो निर्कुम् नाळे ! ॥ ७ ॥	पोन्नी, कावेरी एवं कोल्लिदम नदियों से घिरे तिरूवरंग में शेषशय्या पर प्रभु लेटे हुये हैं। ये दया से भरे हृदय तथा दृढ़विश्वास से सनातन धर्म का पालन करने वाले भक्तों के एकमात्र आश्रय हैं। लोभ का त्याग करते हुए, हृदय को दुर्गुणों से साफ रखते हुए, तथा इन्द्रियों पर नियंत्रण रखते हुए, ये भक्तगण प्रतिदिन पांच बार अर्चना करते हैं तथा अपने कर्मों के बोझ से निवृत्त होते हैं। इन भक्तों के बीच खड़ा होकर कब हम सजल नयनों से प्रभु की पूजा करेंगे ? **653**

<table>
<tr>
<td>कोल् आऱ्न्द नॆडुम् शार्ङ्गम् कूनऱ् चङ्गम्⋆
　कॊलैयाळि कॊडुन्दण्डु कॊट्ट् ऒळ् वाळ्⋆
काल् आऱ्न्द कदि क्करुडन् एन्नुम् वॆन्ऱि⋆
　कडुम् पऱवै इवैयनैत्तुम् पुऱम् शूऴ् काप्प⋆
शेल् आऱ्न्द नॆडुङ्गऴनि शोलै शूऴ्न्द⋆
　तिरुवरङ्गत्तरवणैयिल् पळ्ळि कॊळ्ळुम्⋆
मालोनै क्कण्डिन्ब क्कलवि एय्दि⋆
　वल्विनैयेन् एन्ऱुगॊलो वाऴुम् नाळे ! ॥८॥</td>
<td>मछली से भरे हुए जलाशय वाले खेतों एवं बागों से घिरे तिरूवरंग में शेषशय्या पर हमारे सुन्दर प्रभु लेटे हुये हैं।आप पांच आयुधों से संरक्षित हैं ः वृहत सारंग धनुष एवं बाण, आकर्षक आकृति वाला पाञ्चजन्य शंख, भयानक कौमोदकी गदा, चमकता नंदकी खड्ग, एवं आकामक सुदर्शन चक्र। हवा से भी तेज गति वाले गरूड़ सदा तैयार खड़े रहते हैं। हे दुखियारा मन ! कब दर्शन कर इनसे मिलने का आनंद उठायेंगे ? **654**</td>
</tr>
<tr>
<td>तूराद मन क्कादल् तॊण्डर् तङ्गळ्
　कुऴाम् कुऴुमि⋆ त्तिरुप्पुगऴ्गळ् पलवुम् पाडि⋆
आराद मन क्कळिप्पोडऴुद कण्णीर्⋆
　मऴै शोर निनैन्दुरुगि एत्ति⋆ नाळुम्
शीर् आऱ्न्द मुऴवोशै परवै काट्टुम्⋆
　तिरुवरङ्गत्तरवणैयिल् पळ्ळि कॊळ्ळुम्⋆
पोर् आऴि अम्मानै क्कण्डु तुळ्ळि⋆
　पूदलत्तिल् एन्ऱुगॊलो पुरळुम् नाळे ! ॥९॥</td>
<td>नित्य मंगलकारी ढ़ोलों की समुद्रवत बहुतायत वाले तिरूवरंग में चक्रधारी प्रभु लेटे हुये हैं। प्रभु का ध्यान कर अपूर्ण कामना वाले भक्तगण टिकाउ संतोष को प्राप्त करते हैं। इन भक्तों की आंखें आंसू बहाते हुए अपने हृदय को द्रवित करते हैं। कब वह दिन आयेगा जब हम इन भक्तों के साथ गाते, नाचते, भूमि पर लोटेंगे ? **655**</td>
</tr>
<tr>
<td>वन्बॆरु वानगम् उय्य अमरर् उय्य
　मण् उय्य⋆ मण् उलगिल् मनिशर् उय्य⋆
तुन्बमिगु तुयर् अगल⋆ अयर्वॊन्ऱिल्ला
　च्चुगम्वळर⋆ अगमगिऴुम् तॊण्डर् वाऴ⋆
अन्बॊडु तॆन्दिशै नोक्कि प्पळ्ळि कॊळ्ळुम्⋆
　अणि अरङ्गन् तिरुमुट्टत्तडियार् तङ्गळ्⋆
इन्बमिगु पॆरुङ्गुऴुवु कण्डु⋆ यानुम्
　इशैन्दुडने एन्ऱुगॊलो इरुक्कुम् नाळे ! ॥१०॥</td>
<td>तिरूवरंग में प्रभु दक्षिण दिशा में देखते हुए लेटे हुये हैं। अपनी शक्ति को तथा आकाश के देवताओं को ऊंचा रखते हुए, पृथ्वी तथा इसके समस्त प्राणिमात्र के सभी दुख को मिटाते हैं, थकान को हटाते हुए आनंद प्रदान करते हैं, भक्तों के हृदय में प्रेम का संचार करते हैं। उत्सुक भक्त परिसर में उपस्थित हैं, कब हम भी इन भक्तों में से एक होंगे ? **656**</td>
</tr>
</table>

‡तिडर् विळङ्गु करै प्पॊन्नि नडुवु पाट्टु*
तिरुवरङ्गत्तरवणैयिल् पळ्ळि कॊळ्ळुम्*
कडल् विळङ्गु करुमेनि अम्मान् तन्नै*
कण्णार क्कण्डुगक्कुम् कादल् तन्नाल्*
कुडै विळङ्गु विऱल् तानै क्कॊट्र् ऑळ् वाळ्*
कूडलर् कोन् कॊडै कुलशेगरन् शॊऱ् चॆय्द*
नडै विळङ्गु तमिळ् मालै पत्तुम् वल्लार्*
नलन् तिगळ् नारणन् अडिक्कीळ् नण्णुवारे॥११॥

॥ कुलशेगरप्पॆरुमाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥

मदुरै के शासक, तलवार चलाने में निपुण, विजयी सेना के नायक, बड़े छत्र के अधिकारी, कुलशेखर के ये तमिल दसक गीत उनके हृदय की प्रवल ईच्छा को प्रगट करते हैं, जिसे उन्होंने कावेरी नदी के मध्य टापूवत स्थित, तिरूवरंग के, शेषशय्या पर लेटे, सागर सा सलोने प्रभु के मनचाहे दर्शन प्राप्त करने के लिये गाया है। जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे नारायण के मंगलमय चरण कमल के बड़भागी होंगे। **657**

कुलशेखर पेरूमाळ् तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः **2 तेट्टरून्दिऱल् (658 - 667)** **अरङ्गन् अडियारदु अडिमैत्तिऱत्तिल् ईडुबडुदल्** (श्रीरंगनाथ के भक्तों की भक्ति)	
तेट्टरुम् तिऱल् तेनिनै⋆ त्तेन् अरङ्गनै⋆ त्तिरुमादु वाऴ् वाट्टम् इल् वनमालै मार्वनै वाऴ्त्ति⋆ माल् कॊळ् शिन्दैयराय्⋆ आट्टमेवि अलन्दऴैत्तु⋆ अयर्वॆय्दुम् मॆय्यडियार्गळ् तम्⋆ ईट्टम् कण्डिड क्कूडुमेल्⋆ अदु काणुम् कण् पयन् आवदे॥१॥	प्रभु को प्राप्त करना कठिन है। आप भक्तों की शक्ति हैं तथा शहद जैसे मधुर हैं। आपका वक्षस्थल जो लक्ष्मी के ठहरने की उपयुक्त जगह है, नहीं कुम्हलाने वाले फूल की माला से सुशोभित है। आप तिरूवरंग के मंदिर में अपने भक्तों से पूजित हैं। वे गाते, नाचते हैं तथा असहाय स्थिति में "रंगा" कहकर तबतक आपको पुकारते हैं जबतक थक नहीं जाते। अगर हमारी आंखें ऐसे सच्चे भक्तों की टोली को देख सकें, तो क्या ये अपना काम पूरा नहीं कर लिये ? **658**
तोडुला मलर् मङ्गै तोळिणै तोयन्ददुम्⋆ शुडर् वाळियाल्⋆ नीडुमा मरम् शॆट्ददुम्⋆ निरै मेयत्तदुम् इवैये निनैन्दु⋆ आडिप्पाडि अरङ्गवो ऎन्ऱऴैक्कुम्⋆ तॊण्डर् अडि प्पॊडि आडनाम् पॆऱिल्⋆ कङ्गै नीर् कुडैन्दाडुम् वेट्कै⋆ ऎन्नावदे॥२॥	कमल सी कुमारी लक्ष्मी को अपने भुजाओं में समेटने वाले प्रभु ने एक तीखे बाण से पंक्तिबद्ध सात वृक्षों को बेध दिया और आपही गाय चराते हैं।भक्तगण अनवरत आपका ध्यान करते हुए गाते, नाचते तथा "रंगा" पुकारते। अगर इन भक्तों के चरण रज से स्नान किया जाय तो फिर गंगा नहाने की कहां आवश्यकता है ? **659**
ऎऱ्डर्त्तदुम् ऎनमाय् निलम् कीण्डदुम्⋆ मुन् इरामनाय्⋆ माऱडर्त्तदुम् मण् अळन्ददुम्⋆ शॊल्लि प्पाडि⋆ वण् पॊन्निप्पेर् आऱुबोल् वरुम् कण्ण नीर् कॊण्डु⋆ अरङ्गन् कोयिल् तिरुमुट्रम्⋆ शेऱुशॆय् तॊण्डर् शेवडि⋆ च्चॆळुम् शेऱन् शॆन्निक्कणिवने॥३॥	'सात वृषभों का शमन करने वाले प्रभु' 'सूकर रूप में पृथ्वी उठाने वाले प्रभु' 'रावण को मारने वाले राम प्रभु' 'पृथ्वी को मापने वाले प्रभु' तथा अन्य लीलाओं का भक्तगण गान करते हुए कावेरी की तरह प्रमाश्रु बहाते हैं जो तिरूवरंग (श्रीरंगम्) मंदिर के परिसर को कीचड़ से भर देता है। भक्तों के चरण रज का कीचड़ हमारे ललाट के लिये अतिउपयुक्त है। **660**

तोय्त्त तण् तयिर् वॆण्णॆय् पालुडन् उण्डलुम्* उडन्ऱायच्चि कण्डु* आर्त्त तोळ् उडै एम्बिरान्* एन् अरङ्गनुक्कडियार्गळ् आय्* नात्तळुम्बॆळ नारणा! एन्ऱळैत्तु* मॆय् तळुम्ब तॊळु- देत्ति* इन्बुरुम् तॊण्डर् शेवडि* एत्ति वाळ्त्तुम् एन् नॆञ्जमे॥४॥	दही, मक्खन, एवं दूध चट करने वाले तिरूवरंग के प्रभु को यशोदा ने पकड़े जाने पर हाथ बांध दिया।आनन्दातिरेक में भक्तगण आपको तबतक 'नारायण' पुकारते हैं जबतक उनके जीभ सूज नहीं जाते, तथा करबद्ध आपके चरणों पर तबतक बार बार गिरते रहते हैं जब तक कि उनके शरीर सूज नहीं जाते। हमारा हृदय इन भक्तों के ही चरणों की सदा पूजा एवं प्रशंसा करेगा।**661**
पॊय्च्चिलै क्कुरल् एर्ॆुरुत्तम् इरुत्तु* प्पोररवीरत्त कोन्* शॆय्च्चिलै च्चुडर् शूळ् ऒळि* त्तिण्ण मा मदिळ् तॆन् अरङ्गनाम्* मॆय्च्चिलै क्करु मेगम् ऒन्ऱु* तम् नॆञ्जिल् निन्ऱु तिगळ प्पोय्* मॆय्च्चिलिर्प्पवर् तम्मैये निनैन्दु* एन्मनम् मॆय् शिलिर्क्कुमे॥५॥	तिरूवरंग के प्रभु ऊंचे दीवारों से घिरे हैं जो आपके चतुर्दिक ऐश्वर्य की छटा विखेरते हैं। आपने आक्रमणकारी सात वृषभों को परास्त किया तथा एक सर्प के साथ युद्ध किया।आप श्याम मेघ के इन्द्रधनुष हैं। जो आपको हृदय में ध्यान करते हैं वे रोमहर्षित अनुभव का आनन्द उठाते हैं। जब हमारा हृदय इन भक्तों के पास जाता है तो हमें भी रोमहर्षक अनुभव का आनन्द मिलता है।**662**
आदि अन्दम् अनन्दम् अर्पुदम् आन* वानवर् तम् पिरान्* पादमा मलर् शूडुम् पत्ति इलाद* पाविगळ् उय्न्दिड* तीदिल् नन्नॆऱि काट्टि* एङ्गुम् तिरिन्दरङ्गन् एम्मानुक्के* कादल् शॆय् तॊण्डर्क्कॆ प्पिऱप्पिलुम्* कादल् शॆय्युम् एन् नॆञ्जमे॥६॥	तिरूवरंग के प्रभु देवाधिदेव हैं, शाश्वत आश्चर्य हैं, तथा (जगत के) आदि और अंत हैं। भक्तिहीन दुष्टजन आपके चरण के फूलों को अपने सिर पर नहीं रख सकते। उनके भटके हुए स्थिति को ठीक करने एवं उन्हें सच्चे रास्ते पर लाने के लिए भक्तगण घूमकर प्रभु के प्रति उनके हृदय में प्रेम जगाते हैं। इस जन्म और आने वाले सारे जन्मों में हमारा हृदय इनके प्रेम से भरा रहेगा। **663**
कार् इनम् पुरै मेनि नल् कदिर् मुत्त* वॆण्णगै च्चॆय्य वाय्* आर मार्वन् अरङ्गन् एन्नुम्* अरुम् पॆरुम् शुडर् ऒन्ऱिनै* शेरुम् नॆञ्जिनर् आगि च्चेर्न्दु* कशिन्दिळिन्द कण्णीर्गळाल्* वारनिर्पवर् ताळिणैक्कु* ऒरु वारम् आगुम् एन् नॆञ्जमे॥७॥	तिरूवरंग के प्रभु सघन वर्षा के मेघ जैसे वर्ण के हैं : सौम्य तेज, मुक्तामय हास, मूंगावत अरूणाभ होंठ, एवं माला से विभूषित वक्षस्थल। भक्तगण सजल नयनों के साथ आपकी अलौकिक झांकी के लिये प्रतीक्षारत रहते हैं। मैं हृदय से इनभक्तों के पवित्र चरणों का दास हूं। **664**

मालै उद़ कडल् किडन्दवन्⋆ वण्डु किण्डु नरुन् तुळाय्⋆ मालै उद़ वरै प्पॅरुन् तिरुमार्वनै⋆ मलर् क्कण्णनै⋆ मालै उद़्ॅळुन्दाडि प्पाडि⋆ त्तिरिन्दरङ्गन् एम्मानुक्के⋆ मालै उद़िडुम् तॉण्डर् वाळ्वुक्कु⋆ मालै उद़्ॅदन् ऩॅञ्जमे॥८॥	राजीवनयन प्रभु सुगंधित तुलसी का माला पहने लहरों वाले समुद्र में शयन करते हैं तथा इनके वक्षस्थल पर भौंरे गुंजार करते हैं। तिरूवरंग के प्रभु के आनंदातिरेक में भक्तगण पागल हो नाचते गाते घूमते रहते हैं। मैं भी हृदय से ऐसा ही जीवन चाहता हूं। **665**
मॉय्त्तु क्कण् पनि शोर मॅय्याळ् शिलिर्प्प⋆ एङ्गि इळैत्तु निन्ऱ⋆ एय्त्तु क्कुम्बिडु नट्टम् इट्टॅळुन्दु⋆ आडि प्पाडि इरैञ्जि⋆ एन् अत्तन् अच्चन् अरङ्गनुक्कु⋆ अडियार्गळ् आगि⋆ अवनुक्के पित्तराम् अवर् पित्तर् अल्लर्गळ्⋆ मद़ैयार् मुद़्म् पित्तरे॥९॥	अश्रुपूर्ण आंखें,रोमांचित शरीर, अपने प्रभु की चाह में खड़े हैं।उन्मक्त हो नाचते हैं और पुनः गाते नाचते प्रभु के चरणों पर साष्टांग हो कर 'मेरे नाथ' 'मेरे पिता' एवं 'मेरे रंगा' पुकारते हुए उनमें ही एकमात्र आश्रय लेते हैं। वे पागल नहीं, अपितु दूसरे जन ही पागल हैं। **666**
‡अल्लि मा मलर् मङ्गै नादन्⋆ अरङ्गन् मॅय् अडियार्गळ् तम्⋆ एल्लै इल् अडिमै त्तिऱत्तिनिल्⋆ एन्ऱुम् मेवु मनत्तनाम्⋆ कॉल्लि कावलन् कूडल् नायगन्⋆ कोळिक्कोन् कुलशेगरन्⋆ शॉल्लिन् इन्दमिळ् मालै वल्लवर्⋆ तॉण्डर् तॉण्डर्गळ् आवरे॥१०॥ ॥ कुलशेगरप्पॅरुमाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	कोल्लि के शासक एवं कुडल के राजा कुलशेखर के ये तमिल मधुर दसक गीत उनकी ईच्छा को बताते हैं , 'तिरूवरंग के प्रभु जो कमल सी कुमारी लक्ष्मी के साथ रहते हैं, कब हम इनके भक्तों की जमात के साथ हो पायेंगे ?' जो इसे कण्ठ कर लेंगे वे प्रभु के भक्त हो जायेंगे। **667** कुलशेखर पेरूमाळ् तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः **3 मय्यिल्वाऴ्क्कैयै (668 - 676)** **अऴगिय मणवाळन्बाल् मयल विञ्जिय निलैयिल् एळुन्द माट्रम्** (भगवान रंगनाथ के भक्त होने पर संसार से संबंध विच्छेद)	
मॅय्यिल् वाऴ्क्कैयै⋆ मॅय् एन क्कॊळ्ळुम्⋆ इव् वैयम् तन्नॊडुम्⋆ कूडुवदिल्लै यान्⋆ ऐयने⋆ अरङ्गा ! एन्ऱऴैक्किन्ऱेन्⋆ मैयल् कॊण्डॊऴिन्देन्⋆ एन्दन् माल्क्के॥१॥	संसारी सुख भोग के जीवन को सच समझने वाले लोगों के साथ मैं नहीं रह सकता। हम तो यही कहते हैं कि 'हमारे प्रभु' 'हमारे अरङ्गा' ही सबकुछ हैं। अपने प्रभु मल से हम अतृप्त रहकर मूर्च्छित हो जाते हैं। **668**
नूलिनेर् इडैयार्⋆ तिऱत्ते निर्कुम्⋆ ञालम् तन्नॊडुम्⋆ कूडुवदिल्लै यान्⋆ आलिया अऴैया⋆ अरङ्गा ! एन्ऱु⋆ माल् एऴुन्दॊऴिन्देन्⋆ एन्दन् माल्क्के॥२॥	प्रभु में नित्य प्रेम बढ़ता जा रहा है। कृश कटि किशोरी की प्राप्ति को लक्ष्य बनाने वाले संसारी अपने मधुर प्रभु के साथ उन्मत्त की भांति प्रेम कर हम गाते नाचते तथा 'अरंगा' पुकारते। **669**
मारनार्⋆ वरि वॅम् शिलैक्काट् शॅय्युम्⋆ पारिनारॊडुम्⋆ कूडुवदिल्लै यान्⋆ आर मार्वन्⋆ अरङ्गन् अनन्दन्⋆ नल् नारणन्⋆ नरगान्दगन् पित्तने॥३॥	कामदेव के प्रेमवाणों के हम शिकार नहीं हो सकते। नरक विनाशक आभूषणों से सज्जित प्रभु 'अरंगा' एवं शाश्वत 'नारायण' के लिये हम उन्मत्त की स्थिति में रहते हैं। **670**
उण्डिये उडैये⋆ उगन्दोडुम्⋆ इम् मण्डलत्तॊडुम्⋆ कूडुवदिल्लै यान्⋆ अण्डवाणन्⋆ अरङ्गन् वन् पेय् मुलै⋆ उण्ड वायन् तन्⋆ उन्मत्तन् काण्मिने॥४॥	अच्छे भोजन एवं सुन्दर कपड़ों की चाह रखने वालों के साथ रहने में हमें आनन्द नहीं मिलता। पूतना के स्तन पान करने वाले ब्रह्मांड के नायक 'अरंगा' प्रभु के लिये हम लालायित रहते हैं। **671**
तीदिल् नन्नॆऱि निर्क⋆ अल्लादु शॅय्⋆ नीदि यारॊडुम्⋆ कूडुवदिल्लै यान्⋆ आदि आयन्⋆ अरङ्गन् अन् तामरै⋆ पेदै मा मणवाळन्⋆ तन् पित्तने॥५॥	सद्मार्ग को छोड़कर बुरे रास्ते पर चलने वालों के साथ मैं एक नहीं हो सकता। कमल सी कुमारी लक्ष्मी के पति, गोपजन वल्लभ प्रभु, एवं प्रथम नाथ 'अरंगा' के लिये हम पागल बने रहते हैं। **672**

एम् परत्तर्★ अल्लारोंडुम् कूडलन्★ उम्बर् वाळ्वै★ ऑन्राग क्करुदिल्लन्★ तम्बिरान् अमरर्क्कु★ अरङ्ग नगर्★ एम्बिरानुक्कु★ एळुमैयुम् पित्तने॥६॥	मैं न तो हरि विमुखन के साथ रह सकता हूं और न राजशाही जिन्दगी में कोई सद्‌गुण देखता हूं। 'अरंगा' के नाथ जो हमारे सातों जन्मों के नाथ हैं के लिये मैं लालायित रहता हूं। **673**
एत्तिरत्तिलुम्★ यारोंडुम् कूडुम्★ अ– च्चित्तन् तन्नै★ त्तविर्त्तनन् शेंङ्गण् माल्★ अत्तने !★ अरङ्गा ! एन्रळैक्किन्रेन्★ पित्तनाय् ऑळिन्देन्★ एम्बिरानुक्के॥७॥	किसी भी चीज के लिए किसी के साथ हो जाने से प्रभु ने हमको अलग रखा। जिनको हम 'अपने प्रभु' 'प्रभु अरंगा' पुकारते हैं उसी मधुर प्रभु के प्रेम में हम पागल बने रहते हैं। **674**
पेयरे★ एनक्कु यावरुम्★ यानुम् ओर् पेयने★ एवर्क्कुम् इदु पेशि एन्★ आयने !★ अरङ्गा ! एन्रळैक्किन्रेन्★ पेयनाय् ऑळिन्देन्★ एम्बिरानुक्के॥८॥	संसार को मैं पागल दिखता हूं परन्तु संसार हमें पागल दिखता है। हाय! इन चीजों को सोचने से क्या लाभ ? 'गोप जन नायक' 'प्रभु अरंगा' पुकारते हैं उसी अमृतमय प्रभु के प्रेम में हम पागल बने रहते हैं। **675**
‡अङ्ङ आळि★ अरङ्गन् अडियिणै★ तङ्गु शिन्दै★ त्तनि प्पेरुम् पित्तनाय्★ कोंङ्गर् कोन्★ कुलशेगरन् शोंन्न शोंल्★ इङ्गु वल्लवर्क्कु★ एदम् ऑन्रिल्लैये॥९॥	पश्चिम क्षेत्र के राजा कुलशेखर ने इन मधुर दसक गीत को 'चक्रधारी तिरूवरंग' के प्रभु के लिए अतिउन्मत्त भाव से गाकर उनके श्रीचरणों पर समर्पित किया है। जो इसे कण्ठ कर लेंगे उनको अभी या आने वाले दिनों में कोई यातना से नहीं गुजरना पड़ेगा। **676** कुलशेखर पेरूमाळ् तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

4 ऊनेरू (677 - 687)

तिरूवेंङ्गड मलै त्तोडर्बु वेण्डल

(तिरूवेंगडम के पर्वत श्रेणी पर स्थान पाने की ईच्छा)

ऊनेरु शॆल्वत्तु॰ उडर्पिरवि यान् वेण्डेन्॰ आनेऱॢ् वॆन्ऱान्॰ अडिमै त्तिरम् अल्लाल्॰ कूनेरु शङ्गम् इडत्तान्॰ तन् वेङ्गडत्तु॰ कोनेरि वाऴुम्॰ कुरुगाय् प्पिरप्पेने॥१॥	अगर मैं बायें हाथ में चक्रावर्त शंख धारण करने वाले वेंकटम प्रभु के चरणों की सेवा नहीं कर सका तो जन्म के बाद का कष्टमय जीवन मैं कभी पसंद नहीं करूंगा। क्या मैं स्वामी पुष्करणी का पक्षी हो सकता हूं ? 677
आनाद शॆल्वत्तु॰ अरम्बैयर्गळ् तर् चूऴ॰ वान् आळुम् शॆल्वमुम्॰ मण् अरशुम् यान् वेण्डेन्॰ तेन् आर् पूञ्जोलै॰ त्तिरुवेङ्गड च्चुनैयिल्॰ मीनाय् प्पिरक्कुम्॰ विदि उडैयेन् आवेने॥२॥	स्वर्णाभूषणों से सज्जित नर्त्तकियों से घिरकर धन, संपत्ति यश, एवं शासक का जीवन मुझे नहीं चाहिए। वेंकटम के घाटियों में जहां फूल अमृत वर्षाते हैं, क्या मैं छोटी मछली हो सकता हूं ? 678
पिन्निट्ट शडैयानुम्॰ पिरमनुम् इन्दिरनुम्॰ तुन्निट्टु पुगल् अरिय॰ वैगुन्द नीळ् वाशल्॰ मिन् वट्ट च्चुडराऴि॰ वेङ्गडक्कोन् तान् उमिऴुम्॰ पॊन् वट्टिल् पिडित्तुडने॰ पुग प्पॆरुवेन् आवेने॥३॥	प्रभु अपने मंदिर में दिव्य चक्र धारण कर विराजते हैं। जटाजूट धारी शिव, ब्रह्मा, एवं इन्द्र मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रवेश की प्रतियोगिता में रहते हैं।अहा ! लेकिन मैं तो प्रभु का दिव्य थूक को लेकर शीघ्र हीं भाग जाउंगा।(इसीलिये मछली बनना चाहता हूं) 679
ऑण् पवळ वेलै॰ उलवु तण् पार्कडलुळ्॰ कण् तुयिलुम् मायोन्॰ कळलिणैगळ् काण्वदर्कु॰ पण् पगरुम् वण्डिनङ्गळ्॰ पण् पाडुम् वेङ्गडत्तु॰ शॆण्बगमाय् निर्कुम्॰ तिरुवुडैयेन् आवेने॥४॥	जहां धुला हुआ मूंगा तट पर आ लगता है उसी क्षीरसमुद्र में सोने वाले प्रभु वेंकटम के मन्दिर में खड़े हैं। मैं इस पर्वत पर मधुमक्खियों से चूमे जानेवाले सेनपकम का फूल बनना चाहता हूं जिससे कि प्रभु के चरणोंश्री पर समर्पित किया जा सकूं। 680
कम्बमद यानै॰ कळुत्तगत्तिन् मेल् इरुन्दु॰ इन्बमरुम् शॆल्वमुम्॰ इव् अरशुम् यान् वेण्डेन्॰ एम् पॆरुमान् ईशन्॰ एळिल् वेङ्गड मलै मेल्॰ तम्बगमाय् निर्कुम्॰ तवम् उडैयेन् आवेने॥५॥	मैं छतरी वाले हाथी के ऊंचे आसन पर बैठकर राजा के रूप में साम्राज्य का आनंद नहीं लेना चाहता हूं। वेंकटम के महान पर्वत वाले मन्दिर में किसी खंभे के पास खड़े होकर तपस्या में रत रहना चाहता हूं। 681

मिन्ननैय नुण्णिडैयार⋆ उरुप्पशियुम् मेनगैयुम्⋆ अन्नवर्तम् पाडलोडुम्⋆ आडल् अवै आदरियेन्⋆ तेन्न एन वण्डिनङ्गळ⋆ पण् पाडुम् वेङ्गडत्तुळ⋆ अन्नैय पोर्कुवडाम्⋆ अरुन्दवत्तन् आवेने॥६॥	मैं विद्युतरेखा जैसी पतली कमर वाली उर्वशी एवं मेनका के नाचगान की चाह नहीं रखता हूं।मैं तो वेंकटम का दिव्य शिखर बनना चाहता हूं जहां भौंरों का 'तेना तेना' गान सुनाई पड़ता है। **682**
वान् आळुम् मा मदि पोल्⋆ वेण् कुडैक्कीळ⋆ मन्नवर् तम् कोन् आगि वीट्रिरुन्दु⋆ कोण्डाडुम् शेल्वरियेन्⋆ तेनार् पून्जोलै⋆ त्तिरु वेङ्गड मलै मेल्⋆ कानाराय् प्पायुम्⋆ करुत्तुडैयेन् आवेने॥७॥	चंद्रमा की तरह शीतल छतरी वाला राजाओं के सम्राट के रूप में मैं शासन करना नहीं चाहता हूं। मैं तो वेंकटम में अमृत वर्षाने वाले फूल के बागों से पार करता हुआ एक मनमाना बहने वाला जल स्त्रोत बनना चाहता हूं। **683**
पिरै एरु शडैयानुम्⋆ पिरमनुम् इन्दिरनुम्⋆ मुरैयाय पेरु वेळ्वि⋆ क्कुरै मुडिप्पान् मरै आनान्⋆ वेरियार् तण् शोलै⋆ त्तिरु वेङ्गडमलै मेल्⋆ नेरियाय् क्किडक्कुम्⋆ निलै उडैयेन् आवेने॥८॥	ब्रह्मा, शिव एवं इन्द्र को उनके यज्ञ का पुरस्कार देने वाले प्रभु वेदों के सार हैं। आप वेंकटम के निवासी हैं जहां मैं शीतल एवं आपकी गाथा गाते बागों से पार करने वाले पैदल यात्रियों का मार्ग बनना चाहता हूं। **684**
‡शेडियाय् वल्विनैगळ तीर्क्कुम्⋆ तिरुमाले⋆ नेडियाने! वेङ्गडवा!⋆ निन् कोयिल्लिन् वाशल्⋆ अडियारुम् वानवरुम्⋆ अरम्बैयरुम् किडन्दियङ्गुम्⋆ पडियाय् क्किडन्दु⋆ उन् पवळवाय् काण्बेने॥९॥	घास की तरह बढ़ने वाले कर्म का क्षय करने प्रभु ! वेंकटम पर्वत पर के शाश्वत प्रभु ! आपके अरूणाभ मूंगावत होठ के दर्शन के लिये मैं आपके मन्दिर के प्रवेश की सीढ़ियां बनना चाहता हूं जिसपर देवगन, भक्तगन, एवं रंभा खड़े होकर प्रतीक्षा करते हैं। **685**
उम्बर् उलगाण्डु⋆ ओरु कुडैक्कीळ उरुप्पशिदन्⋆ अम्बोर् कलै अल्गुल्⋆ पेट्रालुम् आदरियेन्⋆ शेम् पवळ वायान्⋆ तिरुवेङ्गडम् एन्नुम्⋆ एम्बेरुमान् पोन्मलै मेल्⋆ एदेनुम् आवेने॥१०॥	सुवर्णाभूषित कटि स्थल वाली उर्वशी एवं देवों के शासक छत्रधारी का साम्राज्य भी मिल जाये तो भी मैं अपना निश्चित विचार नहीं बदलूंगा।हमारे प्रभु के निवास वाले वेंकटम पर्वत पर के कोई भी चीज बनने हेतु मैं समझौता करने को तैयार हूं ।**686**

‡मन्निय तण् शारल्⋆ वड वेङ्गडत्तान् तन्⋆ पॆान्नियल्लुम् शेवडिगळ्⋆ काण्बान् पुरिन्दिरैञ्जि⋆ कॊन्नविल्लुम् कूर्वेल्⋆ कुलशेगरन् शॊन्न⋆ पन्निय नूल् तमिळ् वल्लार्⋆ पाङ्गाय पत्तर्गळे॥११॥	तमिल के ये सुन्दर दसक गीत, वेंकटम प्रभु के दिव्य चरणों के अभिलाषी, मृत्यु की तरह तेज धारवाली तलवार धारण करने वाले कुलशेखर ने गाये हैं। जो इसका गान करेगा वह प्रभु का प्यारा भक्त हो जायेगा। **687** कुलशेखर पेरूमाळ् तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

5 तरूदुयरन्दडायेल् (688 - 697)

विट्टुव क्कोट्टम्मानैये वेण्डि निट्रल (वित्तुवक्कोडु के अलावे कोई आश्रय नहीं)

वित्तुवक्कोडु केरल में स्थित है और स्थानीय लोग इसे 'अंजु मूर्त्ति कोइल' यानि पांच मूर्त्तियों वाला मंदिर भी कहते हैं। बोलचाल की भाषा के कारण इसके अन्य नाम हैं ः तिरूविचीकोड, तिरूविंजीकोड, तिरूमिथकोड । (Ramesh Vol. seven pp 212) शोर्नूर कोझिकोड रलवे लाईन के पट्टंवि स्टेशन से यह 3 कि मी पर है। यहां गुरूवायुर से भी आया जा सकता है क्योंकि यह स्थान गुरूवायुर शोर्नूर रोड पर है। भगवान खड़े मुद्रा में दक्षिण की ओर देख रहे हैं। कहा जाता है अंबरीष ऋषि की प्रार्थना पर प्रभु यहां प्रकट हुए थे। यह केरल की सबसे लंबी नदी भरतपुड़ा के तट के पास है। अंबरीष ने व्यूह रूप में दर्शन की ईच्छा की थी इसीलिये बीच में विष्णु एवं चारों दिशाओं में प्रद्युम्न, अनिरूद्ध, संकर्षण, एवं पर वासुदेव हैं।महाभारत की विभीषिका के बाद पांचो पांडव मन की शांति हेतु यात्रा के कम में यहां आये थे। कुलशेखर आलवार ने दस पाशुर 688 से 697 तक में इस दिव्य देश की प्रशस्ति गाते हुए जीवात्मा एवं परमात्मा के शाश्वत संबंध को दर्शाया है। भिन्न भिन्न पदों में जीवात्मा को पुत्र, पत्नि, प्रजा, रोगी, पक्षी, फूल, पौधा आदि के रूप में चित्रित कर उसका पेरूमल पर ही आश्रित होने की स्थिति को दिखाया गया है।

‡तरुदुयरम् तडायेल्⋆ उन् शरण् अल्लाल् शरण् इल्लै⋆ विरै कुऴुवु मलर् प्पॊऴिल् शूऴ्⋆ विट्रुवक्कोट्टम्माने⋆ अरिशिनत्ताल् ईन्ऱ ताय्⋆ अगऱ्ऱिडिनुम्⋆ मट्रवळ् तन् अरुळ् निनैन्दे अऴुम् कुऴवि⋆ अदुवे पोन्ऱिरुन्देने॥१॥	सुगंधमय बागों से घिरे वित्तुवक्कोडु के प्रभु ! आपने हमारे रास्ते पर जो रोड़े डाले हैं वे अगर आप नहीं हटायेंगे तो आपको छोड़कर कौन हमारी सहायता करेगा ? जैसे मां गुस्से में बच्चे को पीटती है तो भी बच्चा मां के लिये ही चिल्लाता है। 688
कण्डार् इगऴ्वनवे⋆ कादलन् तान् शॆय्दिडिनुम्⋆ कॊण्डानै अल्लाल्⋆ अऱिया क्कुलमगळ् पोल्⋆ विण् तोय् मदिळ् पुडै शूऴ्⋆ विट्रुवक्कोट्टम्मा⋆ नी कॊण्डाळायागिलुम्⋆ उन् कुरैगऴले कूऱुवने॥२॥	गगनचुंबी महलों से घिरे वित्तुवक्कोडु के प्रभु ! अगर मुझे, अपने भक्त की आप रक्षा नहीं करेंगे तो आपके श्रीचरणों को छोड़कर हमारा कोई है भी नहीं। जैसे पति अपने पत्नि के साथ दुर्व्यवहार भी करता है तो अच्छे कुल की नारी पति के अलावे किसी और प्रेमी को जानती भी नहीं। 689
मीन् नोक्कुम् नीळ् वयल् शूऴ्⋆ विट्रुवक्कोट्टम्मा⋆ एन् पाल् नोक्काय् आगिलुम्⋆ उन् पट्रल्लाल् पट्रिल्लेन्⋆ तान् नोक्कादु⋆ एत्तुयरम् शॆय्दिडिनुम्⋆ तार् वेन्दन् कोल् नोक्कि वाऴुम्⋆ कुडि पोन्ऱिरुन्देने॥३॥	नाचती मछलियों वाले जल से भरे बड़े खेतों से घिरे वित्तुवक्कोडु के प्रभु ! अगर अपनी कृपाा दृष्टि मुझ पर नहीं करेंगे तो आपको छोड़कर हमारा कोई है भी नहीं। जैसे उदंड राजा अपनी प्रजा का ख्याल नहीं करता तब भी वे उसको सम्मान देते हुए उसी राज्य में रहते हैं। 690

वाळाल् अरुत्तु च्चुडिनुम्⋆ मरुत्तुवन्बाल्⋆ माळाद कादल्⋆ नोयाळन् पोल् मायत्ताल्⋆ मीळा त्तुयर् तरिनुम्⋆ विट्रुवक्कोट्टम्मा⋆ नी आळा उनदरुळे⋆ पार्प्पन् अडियेने॥ ४ ॥	अपनी माया से अपार कष्ट देने वाले वित्तुवक्कोडु के प्रभु ! आपके श्रीचरणों की सेवा की कृपाा चाहता हूं। जैसे चिकित्सक मांस को काटता एवं जलाता है फिर भी रोगी उसके प्रति स्नेह ही दिखाता है। **691**
वॆङ्गण् तिण् कळिरडर्त्ताय्⋆ विट्रुवक्कोट्टम्माने⋆ एङ्गु प्पोय् उय्गेन्⋆ उन् इणैयडिये अडैयलल्लाल्⋆ एङ्गुम् पोय् क्करै काणादु⋆ एरि कडल्वाय् मीण्डेयुम्⋆ वङ्गत्तिन् कूम्बेरुम्⋆ मा प्परवै पोन्रेने॥ ५ ॥	उन्मत्त कुवलयापीड़ हाथी को मारने वाले वित्तुवक्कोडु के प्रभु ! आपके श्रीचरणों के आश्रय के अलावा मैं कहां जाउंगा ? मैं र्निजन समुद्र के जहाज के मस्तूल पर के पक्षी की तरह हूं जो उड़कर कहां जायेगा और पुनः घूमफिरकर उसी मस्तूल पर वापस आ जाता है। **692**
शॆन्दळले वन्दु⋆ अळलै च्चॆय्दिडिनुम्⋆ शॆङ्गमलम् अन्दरम् शेर्⋆ वॆङ्गदिरोर्कल्लाल् अलरावाल्⋆ वॆन्दुयर् वीट्टाविडिनुम्⋆ विट्रुवक्कोट्टम्मा⋆ उन् अन्दमिल् शीर्क्कल्लाल्⋆ अगम् कुळैय माट्टेने॥ ६ ॥	वित्तुवक्कोडु के प्रभु ! आप हमें निराशा से नहीं भी बचायेंगे तब भी मेरा हृदय आपकी दया के लिये द्रवित होते रहता है। हाय ! मैं कमल फूल की तरह हूं जो सूर्योदय की किरणों से खिल उठता है परन्तु दिन में उसी सूर्य की गर्मी से कुम्हला जाता है। **693**
एत्तनैयुम् वान् मरन्द⋆ कालत्तुम् पैङ्गूळाळ⋆ मैत्तॆळुन्द मा मुगिले⋆ पार्त्तिरुक्कुम् मट्रवै पोल्⋆ मॆय् त्तुयर् वीट्टाविडिनुम्⋆ विट्रुवक्कोट्टम्मा⋆ एन् शित्तम् मिग उन्बाले⋆ वैप्पन् अडियेने॥ ७ ॥	वित्तुवक्कोडु के प्रभु ! आप हमें निराशा से नहीं भी बचायेंगे तब भी यह भक्त अपना हृदय आप से हीं लगायेगा। जैसे मेघ नहीं भी बरसता तो भी सूखते पौधे उस मेघ की ही ओर देखते हैं। **694**
तॊक्किलङ्गि यारॆल्लाम्⋆ परन्दोडि⋆ तॊडुगडले पुक्कन्रि प्पुरम्निर्क⋆ माट्टाद मट्रवै पोल्⋆ मिक्किलङ्गु मुगिल् निरत्ताय्⋆ विट्रुवक्कोट्टम्मा⋆ उन् पुक्किलङ्गु शीर् अल्लाल्⋆ पुक्किलन् काण् पुण्णियने॥ ८ ॥	मेघ सा तेजोमय श्याम वदन वाले वित्तुवक्कोडु के प्रभु ! पवित्र प्रभु ! देखिये, आपके करूणाभरी कृपा के अलावे मेरा कोई आश्रय नहीं है। जैसे नदियां फैलकर दूर तक बहती हैं लेकिन अंततः समुद्र के अतिरिक्त और कहीं नहीं गिरतीं। **695**
निन्नैये तान् वेण्डि⋆ नीळ् शॆल्वम् वेण्डादान्⋆ तन्नैये तान् वेण्डुम्⋆ शॆल्वम् पोल् मायत्ताल्⋆ मिन्नैये शेर् तिगिरि⋆ विट्रुवक्कोट्टम्माने⋆ निन्नैये तान् वेण्डि⋆ निर्पन् अडियेने॥ ९ ॥	तेजोमय चक्रधारण करने वाले वित्तुवक्कोडु के प्रभु ! जैसे आपकी खोज में छोड़ा हुआ धन पुनः वापस आता है उसी तरह मैं घूमफिरकर आपकी सेवा में ही उपस्थित हो जाता हूं। **696**

‡विट्रुवक्कोट्टम्मा★ नी वेण्डाये आयिडिनुम्★ मट्रारुम् पट्रिल्लेन् एन्रु★ अवनै त्ताळ् नयन्द★ कॊंट्रवेल् तानै★ क्कुलशेगरन् शॊन्न★ नट्रमिळ् पत्तुम् वल्लार्★ नण्णार् नरगमे॥१०॥	तमिल के ये सुन्दर दसक गीत, राजा एवं सेनानायक कुलशेखर ने वित्तुवक्कोडु के प्रभु को संबोधित करते हुए गाये हैं "अगर आप हमें नहीं भी अपनायेंगे तब भी मेरा हृदय आप को छोड़कर किसी और को नहीं अपनायेगा।" जो इसको कण्ठ कर लेगा वह कभी भी नरक में नहीं जायेगा। **697** कुलशेखर पेरूमाळ् तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

6 एर्मलरप्पूङ्गुऴल्   (698 - 707)

आयच्चियर् ऊडि अमलनै एळगल् (कृष्ण को छेड़ती नाराज गोपियां)

<table>
<tr><td>एर् मलर् प्पूङ्गुळल् आयर् मादर्⋆ एनै प्पलर् उळ्ळ इव्वूरिल्⋆ उन्ऱन्
मार्वु तळुवुदर्कु⋆ आशैयिन्मै अरिन्दरिन्दे उन्ऱन् पॉय्यै क्केट्टु⋆
कूर् मळै पोल् पनि क्कूदल् एय्दि⋆ क्कूशि नडुङ्गि यमुनै याट्रिल्⋆
वार् मणल् कुन्ऱिल् पुलर निन्ऱेन्⋆ वाशुदेवा ! उन् वरवु पार्त्ते॥१॥</td><td>वासुदेव ! इस नगर के बहुत सारे जूड़ा वाली गोपियों के साथ साथ मैं भी जानती थी कि आपके वक्षस्थल से आलिंगन की अभिलाषा नहीं रखनी चाहिए। फिर भी मैंने मूर्खतावस आपकी बातों पर विश्वास कर ठंढ से कांपते एवं हड्डी छेदने वाली ठंढी हवा को झेलते रात भर यमुना के बालू पर प्रतीक्षा किया। **698**</td></tr>
<tr><td>कॉण्डै ऑण् कण् मडवाळ् ऑरुत्ति⋆ कीळै अगत्तु त्तयिर् कडैय-
क्कण्डु⋆ ऑल्लै नानुम् कडैवन् एन्ऱु⋆ कळ्ळ विळियै विळित्तु प्पुक्कु⋆
वण्डमर् पूङ्गुळल् ताळ्न्दुलाव⋆ वाण्मुगम् वेर्प्प च्चॅव्वाय् त्तुडिप्प⋆
तण् तयिर् नी कडैन्दिट्ट वण्णम्⋆ तामोदरा ! मॅय् अरिवन् नाने॥२॥</td><td>पूरब तरफ के घर में एक मत्स्य नयना किशोरी दही मह रही थी कि आप चुपके से वहां आये और कहा 'मुझे भी मथने दो'। आप जैसे ही उसके साथ श्वेत दही मथने लगे कि उसका जूड़ा खुल कर गिरा और विखर गया, मुखमंडल पर स्वेद कण चमकने लगे, तथा लाल होठ फड़कने लगा।दामोदर ! मैं जानती हूं कि सच्चाई क्या थी ? **699**</td></tr>
<tr><td>करुमलर् क्कून्दल् ऑरुत्ति तन्नै⋆ क्कडैक्कणित्तु⋆ आङ्गे ऑरुत्ति तन्बाल्
मरुवि मनम् वैत्तु⋆ मट्रॉरुत्तिक्कुरैत्तु⋆ ऑरु पेदैक्कु प्पॉय् कुरित्तु⋆
पुरिगुळल् मङ्गैयॉरुत्ति तन्नैप्पुणर्दि⋆ अवळुक्कुम् मॅय्यन् अल्लै⋆
मरुदिरुत्ताय् उन् वळर्त्तियूडे⋆ वळर्गिन्ऱदाल् उन्ऱन् मायै ताने॥३॥</td><td>आपने एक फूल के जूड़ा वाली किशोरी की ओर तिरछी नजर से देखा तथा उसी समय अपना मन एक दूसरी किशोरी की ओर भी कर दिया। एक और को आपने वचन दिया तथा एक अन्य सरल चित्त वाली को दिगभ्रमित किया।तब अन्यत्र एक और जूड़ा वाली को आलिंगन करते देखे गये। अर्जुन वृक्ष के उखाड़ने वाले प्रभु ! हाय ! आप जैसे जैसे बढ़ रहे हैं आपकी युक्तियां भी बढ़ती जा रही हैं। **700**</td></tr>
<tr><td>ताय् मुलै प्पालिल् अमुदिरुक्क⋆ त्तवळ्न्दु तळर् नडै इट्टु च्चॅन्ऱु⋆
पेय् मुलै वाय्वैत्तु नञ्जै उण्डु⋆ पित्तन् एन्ऱे पिरर् एश निन्ऱाय्⋆
आय्मिगु कादलोडु यान् इरुप्प⋆ यान् विड वन्द एन् तूदियोडे⋆
नी मिगु पोगत्तै नङ्गुगन्दाय्⋆ अदुवुम् उन् कोरम्बुक्केर्कुम् अन्ऱे॥४॥</td><td>जब यशोदा के स्तन में पर्याप्त दूध था तब भी सरकते हुए एक राक्षसी के विषैले स्तन को पिया, जिसका दर्शकों ने भर्त्सना की। मैंने अपनी एक सखी से आपको संदेश भेजा तथा उत्कट ईच्छा से आपकी प्रतीक्षा की। आपने उसे रोक कर उसके साथ आनन्द उठाया। यह सब चतुर खेल आपही के लिये उपयुक्त है। **701**</td></tr>
</table>

मिन्नॊत्त नुण्णिडैयाळै क्कॊण्डु⋆ वीङ्गिरुळ् वाय् एन्रन् वीदियूडे⋆ पॊन्नॊत्त आडै कुक्कूडलिट्टु⋆ प्पोगिन्र् पोदु नान् कण्डु निन्रेन्⋆ कण्णुट्वळै नी कण्णालिट्टु⋆ क्कै विळिक्किन्रदुम् कण्डे निन्रेन्⋆ एन्नुक्कवळै विट्टिङ्गु वन्दाय्⋆ इन्नम् अङ्गे नड नम्बि ! नीये॥५॥	रात के अंधेरे में एक कृशकटि किशोरी के कंधे पर बाहें डाले तथा दोनों के सिर को एक साथ आपके पीत वस्त्र से ढके गली में जाते मैंने देखा। मैंने यह भी देखा कि दूसरी किशोरी को देखकर आपने आंखों से बात की तथा हाथों से संकेत किया। अब आपने उसको भी छोड़कर यहां किस लिये आये हैं ? हे संपूर्ण प्रभु ! आप उसी दिशा में जाइये। **702**
मर् पॊरु तोळ् उडै वाशुदेवा⋆ वल्विनैयेन् तुयिल् कॊण्डवारे⋆ इट्टै इरविडै एमत्तन्नै⋆ इन्नणै मेल् इट्टगन्रु नी पोय्⋆ अट्टै इरवुम् ओर् पिट्टै नाळुम्⋆ अरिवैयरोडुम् अणैन्दु वन्दाय्⋆ एट्टुक्कु नी एन् मरुङ्गिल् वन्दाय्⋆ एम्बॆरुमान् ! नी एळुन्दरुळे॥६॥	मल्लयोद्धाओं के शमन करने वाले भुजाओं वाले वासुदेव! जिस क्षण इस पापात्मा को नींद आई कि मध्य रात्रि में आप हमें अकेले शय्या पर छोड़कर चले गये। उस रात और संपूर्ण दूसरी रात आप अन्य किशोरियों का आलिंगन करते रहे। अब हमें हमारे कमर से पकड़ने क्यों आये हैं ? हमारे प्यारे कुंवर ! क्या आप शीघ्र यहां से बाहर जानें का रास्ता देखेंगे ? **703**
पैयरविन् अणै प्पळ्ळियिनाय्⋆ पण्डैयोम् अल्लोम् नाम्⋆ नी उगक्कुम् मैयरि ऒण् कण्णिनारुम् अल्लोम्⋆ वैगि एम् शेरि वरवॊळि नी⋆ शॆय्य उडैयुम् तिरुमुगमुम्⋆ शॆङ्गनि वायुम् कुळलुम् कण्डु⋆ पॊय् ऒरु नाळ् पट्टदे अमैयुम्⋆ पुळ्ळुवम् पेशादे पोगु नम्बी॥७॥	शेषशय्या को पसंद करने वाले प्रभु ! हमलोग प्राचीन काल की बालाएं नहीं हैं, और न हीं भौंरे से काली आंखवाले के चहेते हैं। कृपया देर बीती रात हमारे पास आना बंद करें। आपके सुन्दर वस्त्रावरण, सलोना मुखमंडल, मूंगा सा होंठ, एवं काली लटों से अतृप्त रहते हुए आपके झूठे आश्वासन से ठगे गये।एक दिन का उदाहरण पर्याप्त है और ज्यादा कहानी बनाने की आवश्यकता नहीं है। कृपया जाइये । **704**
एन्नै वरुग एन क्कुरित्तिट्टु⋆ इनमलर् मुल्लैयिन् पन्दर् नीळल्⋆ मन्नि अवळै प्पुणर प्पुक्कु⋆ मट्टन्नै क्कण्डुळरा नॆगिळन्दाय्⋆ पॊन्निर् आडैयै क्कैयिल् ताङ्गि⋆ प्पॊय् अच्चम् काट्टि नी पोदियेल्लुम्⋆ इन्नम् एन् कैयगत्तीङ्गॊरु नाळ्⋆ वरुदियेल् एन् शिनम् तीर्वन् नाने॥८॥	वहां खिलते मुल्लै पुष्प वाटिका की छांह में आने को कहकर आप किसी और किशोरी के प्रेम में लग गये। हमें देखकर आश्चर्यचकित हो,आप अपना पीतवस्त्र समेटते हुए भय का बहाना बनाते निकल भागे।इतना होते हुए भी अगर कभी आप हमारी बाहों में आगये तो सब दिन का गुस्सा निकालते हुए सब बदला चुका लूंगी। **705**

मङ्गलनल् वनमालै मार्विल् इलङ्ग* मयिल् तळै प्पीलि शूडि* पॉङ्गिळ आडै अरैयिल् शात्ति* प्पूङ्गॉत्तु क्कादिल् पुणर्प्पॅय्दु* कॉङ्गुनरुङ्गुळलार्गळोडु* कुळैन्दु कुळल् इनिदूदि वन्दाय्* एङ्गळुक्के ऑरु नाळ् वन्दूद* उन् कुळलिन् इशै पोदरादे॥९॥	वक्षस्थल पर शोभती मंगलमय फूल की माला, सिर पर मोर की पूंछ का पंख, शरीर पर मुलायम पतला वस्त्र, एवं कानों पर फूल का गुच्छा धारण किये हुए आप फूल की चोटी वाली बालाओं के बीच घुल मिलकर मधुर मुरली बजाते हुए यहां आते हैं। एक दिन, कम से कम, क्या आप आकर हमलोगों के लिये मुरली नहीं बजायेंगे ? **706**
‡अल्लि मलर् त्तिरुमङ्गै केळ्वन् तन्नै नयन्दु* इळ आय्च्चिमार्गळ्* एल्लि प्पॉळुदिनिल् एमत्तूडि* एळ्ळि उरैत्त उरैयदनै* कॉल्लि नगर्क्किरै कूडर्कोमान्* कुलशेगरन् इन्निशैयिल् मेवि* शॉल्लिय इन् तमिळ् मालै पत्तुम्* शॉल्ल वल्लार्क्किल्लै तुन्बन्दाने॥१०॥ ॥ कुलशेगरप्पॅरुमाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥	कोल्ली नगर के स्वामी एवं कुडल मदुरै के राजा कुलशेखर के ये मधुर दसक गीत, मध्यरात्रि में पद्मकिशोरी लक्ष्मी के नाथ के साथ, गोपियों के मिलने की वेदना को दर्शाते हैं । जो इसको कण्ठ कर लेगा वह कभी यातना से ग्रस्त नहीं होगा। **707** कुलशेखर पेरूमाळ् तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

7 आलैनीळ् करूम्बु (708 - 718)

शेय् वलर् काट्चियन् शीरै यशोदै पोल्

ताय् तेवगि पेरा त्ताळ्वेण्णि प्पुलम्बल्

(कृष्ण के बाललीला के आनंद से वंचित रहने के लिये देवकी का विषाद)

‡आलै नीळ् करुम्बन्नवन् तालो⋆ अम्बुय त्तडङ्गण्णिनन् तालो⋆ वेलै नीर् निऱत्तन्नवन् तालो⋆ वेळ प्पोदगम् अन्नवन् तालो⋆ एल वार् कुळल् एन्मगन् तालो⋆ एन्ऱॆन्ऱुन्नै एन् वायिडै निऱैय⋆ ताल् ऒलित्तिडुम् तिरुविनै इल्ला⋆ तायरिल् कडै आयिन तायॆ॥१॥	नन्हें, ईक्षु सा मधुर लाल! सो जाओ। तलेलो! राजीवनयन प्रभु! सो जाओ। तलेलो! सागर सा सलोने प्रभु! सो जाओ। तलेलो! मेरे नन्हें हस्तिलाल! सो जाओ।तलेलो! लंबे सुगंधित बाल वाले मेरे लाल! सो जाओ। तलेलो! हाय! हमारा दुर्भाग्य कि हम इस तरह से लोरी नहीं गा सके। वास्तव में हम नीचों में नीचतम मां हैं। **708**
वडि क्कॊळ् अञ्जनम् एळुदु शॆम् मलरक्कण्⋆ मरुवि मेल् इनिदॊन्ऱिनै नोक्कि⋆ मुडक्कि च्चेवडि मलर् च्चिऱु करुन्दाळ्⋆ पॊलियु नीर् मुगिल् कुळवियॆ पोल⋆ अडक्कियार च्चॆञ्जिऱु विरल् अनैत्तुम्⋆ अङ्गैयोडणैन्दानैयिर् किडन्द⋆ किडक्कै कण्डिड प्पॆट्रिलन् अन्दो⋆ केशवा! कॆडुवेन् कॆडुवेनॆ॥२॥	केशव! समस्त मां के बीच हम अति नीच रहे। हाय! पलना में हाथी के बच्चे की तरह सोते कजरारे तीखी आंखें, छत पर किसी चीज में टिकी नजर, श्यामल पैर का गुलाबी तलवा एवं मुड़ा हुआ घुटना, बंधी हुई मुट्ठी के भीतर छोटी छोटी गुलाबी उंगुलियां, तेजोमय मेघ का लघु समूह जैसा वदन ...... देखने का हमें सौभाग्य नहीं मिला। **709**
मुन्दै नन्मुऱै अन्बुडै मगळिर्⋆ मुऱै मुऱै तम् तम् कुऱङ्गिडै इरुत्ति⋆ एन्दैये! एन्ऱन् कुल प्पॆरुम् शुडरे⋆ एळु मुगिल् कणत्तॆळिल् कवरेऱे⋆ उन्दै यावन् एन्ऱुरैप्प⋆ निन् शॆङ्गळ् विरलिनुम् कडै क्कण्णिनुम् काट्ट⋆ नन्दन् पॆट्रनन् नल्विनै यिल्ला⋆ नङ्गळ् कोन् वशुदेवन् पॆट्रिलनॆ॥३॥	अच्छे कुल की करूणामयी नारियां गोद में लेकर आपके वदन पर हाथ सहलाते हुए वोलतीं 'प्रभु, कुल के दीपक, मेघ से अधिक सुन्दर, मृगेन्द्र, दिखाओ पिता कहां हैं ?' छोटी उंगलियों एवं तिरछी नजर से आप भाग्यशाली नन्द की ओर बताते। हाय! भाग्यहीन वसुदेव को यह आनंद नहीं मिल सका। **710**

<table>
<tr><td>कळिनिला एळिल् मदि पुरै मुगमुम्⋆
कण्णने ! तिण्गै मार्वुम् तिण्दोळुम्⋆
तळिमलर् क्करुङ्गुळल् पिरै अदुवुम्⋆
तडङ्गॊळ् तामरै क्कण्गळुम् पॊलिन्द⋆
इळमै इन्बत्तै इन्ऱॆन्ऱन् कण्णाल्⋆
परुगु वेर्किवळ् तायॆन निनैन्द⋆
अळविल् पिळ्ळैमै इन्बत्तै इळन्द⋆
पावियेन् एनदावि निल्लादे॥ ४ ॥</td><td>कृष्ण! हम अपने मन की आंखों से ही आपके शैशव का आनंद ले सके ः चांद सा आभापूर्ण मुखमंडल, पुष्ट हाथें तथा बाहें एवं वक्षस्थल, फूलके गुच्छों से सजे काले केश, ललाट का चन्द्राकार चिह्न, एवं कमल सी बड़ी आंखें। हाय! यह सब सोंचकर आपकी जननी बनने का आनंद नहीं ले सकी। मेरे कर्म ! लगता है कि मैं नहीं बचूंगी। **711**</td></tr>
<tr><td>मरुवुम्निन् तिरुनॆऱ्ऱियिल् शुट्टि
अशैदर⋆ मणि वायिडै मुत्तम्
तरुदलुम्⋆ उन्ऱन् तादैयै प्पोलुम्⋆
वडिवु कण्डु कॊण्डुळ्ळमुळ् कुळिर⋆
विरलै च्चॆञ्जिऱु वायिडै च्चेर्त्तु⋆
वॆगुळियाय् निन्ऱुरैक्कुम् अव्वुरैयुम्⋆
तिरुविलेन् एन्ऱुम् पॆऱ्ऱिलेन्⋆ एल्लाम्
तॆय्व नङ्गै यशोदै पॆऱ्ऱाळे॥ ५ ॥</td><td>भाग्यहीना मैं ! आपके ललाट के आभूषण को मुखमंडल पर झूलते देखने का आनंद नहीं ले सके, न तो सुन्दर होठ को चूम सके, न तो हमारे हृदय को उद्वेलित करने वाले आपके मुखमंडल में आपके पिता की छायाकृति देख सके, न तो आपको लाल छोटे मुख में उंगुली डालकर गुस्सा में बड़बड़ाते देख सके। देवीतुल्य यशोदा को सबकुछ देखने का सौभाग्य मिला। **712**</td></tr>
<tr><td>तण्णन् तामरै क्कण्णने कण्णा⋆
तवळ्न्दॆळुन्दु तळर्न्ददोर् नडैयाल्⋆
मण्णिल् शॆम् पॊडि आडि वन्दु⋆ एन्ऱन्
मार्विल् मन्निड प्पॆऱ्ऱिलेन् अन्दो⋆
वण्ण च्चॆञ्जिऱु कैविरल् अनैत्तुम्⋆
वारि वाय्क्कॊण्ड अडिशिलिन् मिच्चिल्⋆
उण्ण प्पॆऱ्ऱिलेन् ओ ! कॊडु विनैयेन्⋆
एन्नै एन् शॆय्य प्पॆऱ्ऱदॆम् मोये॥ ६ ॥</td><td>कमल की पंखुड़ियों जैसी आंखों वाले कृष्ण! हाय ! मैंने धूल में आपको खेलते देखने का आनंद नहीं ले सके और तब सरकते एवं लड़खड़ाते आकर लाल धूल से धूसरित हमसे चिपकते, न तो आपकी गुलाबी उंगलियों से खाये मीठे चावल का बचा अंश खाने को मिला। मुझ जैसी घोर अपराधिनी को मेरी मां ने क्यों जन्म दिया ? **713**</td></tr>
<tr><td>कुळगने ! एन्ऱन् कोमळ प्पिळ्ळाय्⋆
गोविन्दा ! एन् कुडङ्गैयिल् मन्नि⋆
ऒळुगुबेर् एळिल् इळम् शिऱु तळिर् पोल्⋆
ऒरु कैयाल् ऒरु मुलै मुगम् नॆरुडा⋆
मळलै मॆन्नगै इडैयिडै अरुळा⋆
वायिले मुलै इरुक्क एन् मुगत्ते⋆
एळिल्गॊळ् निन् तिरु क्कण्णिणै नोक्कम्
तन्नैयुम्⋆ इळन्देन् इळन्देने॥ ७ ॥</td><td>पूज्य सुकुमार मेरे लाल गोविन्दा! सलोने श्याम रंग के हाथ से नूतन निकले लाल पत्ते की तरह की हथेली से हमारे एक स्तन से खेलते तथा दूसरे से दूध पीते और बीच बीच में मृदु मुस्कान के साथ अपनी सुन्दर आंखों से हमारे मुंह देखते जबकि हम आपको अपनी बाहों में समेटे रहते। हाय ! यह सब हम सदा के लिये खो बैठे। **714**</td></tr>
</table>

<table>
<tr>
<td>मुळुदुम् वॆण्णॆय् अळैन्दु तॊट्टुण्णुम्*
मुगिळ् इळम् शिरु त्तामरै क्कैयुम्*
एळिल्गॊळ् ताम्बु कॊण्डडिप्पदर् कॆळुम्
निलैयुम्* वॆण् तयिर् तोयन्द शॆव्वायुम्*
अळुगैयुम् अञ्जि नोक्कुम् अन्नोक्कुम्*
अणिगॊळ् शॆञ्जिरु वाय् नॆळिप्पदुवुम्*
तॊळुगैयुम् इवै कण्ड अशोदै*
तॊल्लै इन्बत्तिरुदि कण्डाळे॥८॥</td>
<td>अपने छोटे सुकुमार कमल जैसे हाथों से सब मक्खन खाकर, नारियल रस्सी को पिटाई के लिये देखने पर, श्वेत दही से लिपटा होंठ एवं मुंह को भय से बिचकाते हुए सिर झुका लेते। आपकी भयाकांत आंखें, चिल्लाता मुखमंडल एवं रक्षा में उठे हाथ ः यशोदा ने अकेले इन सबों का अप्रतिम आनंद उठाया। 715</td>
</tr>
<tr>
<td>कुन्रिनाल् कुडै कवित्तदुम्* कोल–
क्कुरवै कोत्तदुम् कुडमाट्टुम्*
कन्रिनाल् विळवॆरिन्ददुम्* कालाल्
काळियन् तलै मिदित्तदुम् मुदला*
वॆन्रि शेर् पिळ्ळै नल् विळैयाट्टम्
अनैत्तिलुम्* अङ्ङन् उळ्ळम् उळ् कुळिर*
ऒन्रुम् कण्डिड प्पॆट्रिलेन् अडियेन्*
काणुमारिनि उण्डॆनिल् अरुळे॥९॥</td>
<td>पर्वत को छाता की तरह उठाना, किशोरियों के साथ कुरवै नृत्य करना, पात्रों को ऊपर से नीचे उलट कर उस पर नृत्य करना, बछड़ा को फेंककर ताल वृक्ष को गिराना, और कालिय के फनों पर नृत्य करना ः हम एक को भी नहीं देख पाये और न तो आपके दूसरे वचपन के विजयशाली खेलों को देख सके। इन सबों को देखने का अगर कोई उपाय है तो मुझ नीच को बताओ और संतुष्ट करो। 716</td>
</tr>
<tr>
<td>वञ्ज मेविय नॆञ्जुडै प्पेय्च्चि*
वरण्डु नार् नरम्बॆळ क्करिन्दुक्क*
नञ्जमार्तरु शुळिमुलै अन्दो*
शुवैत्तु नी अरुळ् शॆय्दु वळर्न्दाय्*
कञ्जन् नाळ् कवर् करुमुगिल् एन्दाय्*
कडैप्पट्टेन् वॆरिदे मुलै शुमन्दु*
तञ्ज मेल् ऒन्रिलेन् उय्न्दिरुन्देन्*
तक्कदे नल्ल तायै प्पॆट्राये॥१०॥</td>
<td>जब आपने छद्म वेषवाली राक्षसी के विषैले स्तन को पिया तो उसका हृदय विखर गया, नसें एवं हड्डियां बाहर निकल आयीं। घनश्याम वदन प्रभु! आप कंस के सीमित दिनों को गिनते हुए बड़े हुए। हाय ! व्यर्थ के स्तनों को ढ़ोते हुए मुझ अधमातम के उद्धार का कोई उपाय नहीं है, केवल जीवित हूं। आपकी क्या अच्छी मां हूं मैं ! 717</td>
</tr>
<tr>
<td>मल्लै मा नगरक्किरैयवन् तन्नै*
वान् शॆलुत्ति वन्दीङ्ङणै मायत्तु*
एल्लैयिल् पिळ्ळै शॆय्वन काणा*
तॆय्व त्तेवगि पुलम्बिय पुलम्बल्*
कॊल्लि कावलन् माल् अडि मुडिमेल्*
कोलमाम् कुलशेगरन् शॊन्न*
नल्लिशै त्तमिळ् मालै वल्लार्गळ्*
नण्णुवार् ऒल्लै नारणन् उलगे॥११॥</td>
<td>अपने मुकुट पर प्रभु के चरण को धारण करने वाले कोल्ली नगर के राजा कुलशेखरन के ये मधुर दसक गीत, देवी तुल्य देवकी के विषाद को दर्शाते हैं जो दुष्ट कंस को मारने वाले अलौकिक बालक कृष्ण के लीला को नहीं देख सकीं। जो इसको कण्ठ कर लेगा वह शीघ्र ही नारायण के लोक में चला जायेगा। 707
कुलशेखर पेरूमाळ् तिरूवडिगळे शरणं ।</td>
</tr>
</table>

श्रीमते रामानुजाय नमः

8 मन्नु पुगऴ् (719 - 729)

कण्णबुरत्तोऴिर् कागुत्तन् तालाट्टु (भगवान राम के लिये कौसल्या की लोरी)

कन्नापुरम या तिरूकन्नापुरम पर सबसे ज्यादा प्रशस्ति तिरूमंगै आळवार यानी कि परकाल स्वामी का है जो **105** पाशुर में वर्णित है। नम्माळवार के **11**, पेरिया यानी विष्णुचित्त स्वामी के **1**, अंडाल के **1**, एवं कुलशेखर आळवार के **11** पाशुर हैं। यहां के उत्सव पेरूमल सोवरीराजा पेरूमल के नाम से जाने जाते हैं जबकि मूलावर नीलमेघ से वर्णित हैं। सोवरी का तमिल में शाब्दिक अर्थ सुन्दर लंबे केश से सजना है। एक बार अर्चक ने राजा को भूलवश भगवान का लंबे झूलते केश के बारे में बता दिया। जब इस सच्चाई को जांचने गये तो भगवान ने अर्चक की लाज रखते हुए लंबे केश से अपने को सज्जित दिखा दिया। तब से ये सोवरीराजा पेरूमल के नाम से विख्यात हो गये।

कन्नापुरम तमिलनाडु में नागपट्टिनम एवं नन्नीलम के बीच कावेरी के दक्षिण तट पर स्थित है। (Ramesh Vol. 2 , pp 65) भगवान खड़े मुद्रा में पूरब की ओर देख रहे हैं। गर्भगृह में भगवान के बायें गरूड़ हैं तथा दायें दण्डक मुनि हैं। यह भगवान कृष्ण के पांच स्थलों में से एक है। अन्य चार हैं ः तिरूक्कन्नंगुदी, तिरूकन्नामनगै, तिरूकपिस्थलम, एवं तिरूकोविलूर। कहा जाता है अष्टाक्षर मंत्र की यहां सिद्धि मिलती है। भगवान ने परकाल स्वामी को अष्टाक्षर मंत्र 'ॐ नमो नारायणाय' यहीं दिया था। श्रीरंगम, तिरूवेंकटम, श्रीमूषणम, वनमामलै (तोताद्रि), सालग्राम (मुक्तिनारायण), पुष्कर, बद्रिकाश्रम एवं नैमिषारण्य में इस मंत्र का एक हीं अक्षर वर्तमान है जबकि कन्नापुरम में आठों अक्षर प्रगटित हैं। भगवान ने विभीषण को अपना चलने का अलौकिक मुद्रा यहीं दिखाया था इसीलिये प्रत्येक अमावस के दूसरे दिन सवारी पर झांकी निकलती है जिसमें इनके नृत्य के मुद्रा का दर्शन होता है।

‡मन्नु पुगऴ् कौशलै तन्⋆ मणिवयिऱु वायत्तवने⋆ तॆन् इलङ्गै क्कोन् मुडिगळ्⋆ शिन्दुवित्ताय् शॆम्बॊन्शेर्⋆ कन्नि नन् मा मदिळ् पुडैशूळ्⋆ कणबुरत्तॆन् करुमणिये⋆ एन्नुडैय इन्नमुदे⋆ इरागवने ! तालेलो ! ॥१॥	मधुर लाल, राघव! सोइये, तलेलो! सुवर्णजटित ऊंची पत्थर की दीवारों से घिरे कन्नापुरम के मणि सा सलोने वदन वाले प्रभु! आप जगत प्रसिद्ध कौसल्या के गर्भ के अमूल्य रत्न हैं। आपने लंका के राजा रावण के शिर काट गिराये। **719**
पुण्डरिग मलरदन्मेल्⋆ पुवनि एल्लाम् पडैत्तवने⋆ तिण् तिऱलाळ् ताडगै तन्⋆ उरम् उरुव च्चिलै वळैत्ताय्⋆ कण्डवर् तम् मनम् वळङ्गुम्⋆ कणबुरत्तॆन् करुमणिये⋆ एण्डिशैयुम् आळुडैयाय्⋆ इरागवने ! तालेलो ! ॥२॥	आठों दिशाओं के प्रभु ! सोइये, तलेलो! कन्नापुरम के मणि सा सलोने वदन वाले प्रभु! आपके बाण ताड़का के कठोर हृदय में घुस गये। कमल के फूल पर आपने जगत की सृष्टि की। आपको देखने वाले के हृदय को आप चुरा लेते हैं। **720**

कॊङ्गु मलि करुङ्गुळलाळ्⋆ कोशलै तन् कुलमदलाय्⋆ तङ्गु पॆरुम् पुगळ्च्चनगन्⋆ तिरुमरुगा ताशरदी⋆ कङ्गैयिलुम् तीर्त्तमलि⋆ कणबुरत्तॆन् करुमणिये⋆ एङ्गळ् कुलत्तिन्नमुदे⋆ इरागवने ! तालेलो ! ॥३॥	अमृत सा मीठा मेरे कुलदेव राघव! सोइये, तलेलो! गंगा से भी पवित्र नदी वाले कन्नापुरम के मणि सा सलोने वदन वाले प्रभु! आप दशरथ के पुत्र, जनक के जामाता एवं शाश्वत प्रसिद्धि वाले राजा हैं। सुगंधित जूड़ा वाले रानी कौसल्या के कुल के आप उद्धारक हैं। **721**
तामरै मेल् अयनवनै⋆ प्पडैत्तवने⋆ तशरदन् तन् मामदलाय्⋆ मैदिलि तन् मणवाळा !⋆ वण्डिनङ्गळ् कामरङ्गळ् इशैबाडुम्⋆ कणबुरत्तॆन् करुमणिये⋆ एमरुवुम् शिलै वलवा⋆ इरागवने ! तालेलो ! ॥४॥	कठिन धनुषधारी राघव! सोइये, तलेलो! भौंरे के गूंजते गीत वाले कन्नापुरम के मणि सा सलोने वदन वाले प्रभु! आप गौरवशाली दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र हैं तथा आपने कमल पर ब्रह्मा की सृष्टि की। **722**
पार् आळुम् पडर् शॆल्वम्⋆ परद नम्बिक्के अरुळि⋆ आरा अन्बिळैयवनोडु⋆ अरुङ्गानम् अडैन्दवने⋆ शीर् आळुम् वरै मार्बा⋆ तिरु क्कण्ण पुरत्तरशे⋆ तार् आळुम् नीण् मुडि⋆ एन् ताशरदी ! तालेलो ! ॥५॥	तुलसी की माला से सुशोभित लंबे केश वाले दाशरथी! सोइये, तलेलो! पर्वत से मजबूत वक्षस्थल वाले तिरूक्कन्नापुरम के राजा! आपने राजपद भाई भरत को देकर सेवा में समर्पित भाई लक्ष्मण के साथ आप वन को चले गये। **723**
शुट्रम् एल्लाम् पिन् तॊडर⋆ त्तॊल् कानम् अडैन्दवने⋆ अट्रवर्कट्करु मरुन्दे⋆ अयोत्ति नगर्क्कदिबदिये⋆ कट्रवर्गळ् ताम् वाळुम्⋆ कणबुरत्तॆन् करुमणिये⋆ शिट्रवैदन् शॊल् कॊण्ड⋆ शीरामा ! तालेलो ! ॥६॥	श्रीराम! सोइये, तलेलो! विद्वज्जनों की नगरी वाले कन्नापुरम के मणि सा सलोने वदन वाले प्रभु ! सौतेली मां के आदेश पर सुहृदों के साथ आप घोर वन को चले गये। भक्तों की अमूल्य औषधि ! आप अयोध्या नगर वाले सम्राट हैं। **724**
आलिनिलै प्पालगनाय्⋆ अन्रुलगम् उण्डवने⋆ वालियै कॊन्ररशु⋆ इळैय वानरत्तुक्कळित्तवने⋆ कालिन्मणि करै अलैक्कुम्⋆ कणबुरत्तॆन् करुमणिये⋆ आलिनगर्क्कदिबदिये⋆ अयोत्तिमने ! तालेलो ! ॥७॥	अयोध्या के राजा! सोइये, तलेलो! लहरों से रत्न धोये जाने वाले समुद्र तटीय कन्नापुरम के मणि सा सलोने वदन वाले प्रभु ! जगत को निगलकर बट पत्र पर सोने वाले आप शिशु हैं। आपने कपिराज वाली का बध कर उसके छोटे भाई सुग्रीव को राज्य दे दिया। **725**
मलैयदनाल् अणै कट्टि⋆ मदिळ् इलङ्गै अळित्तवने⋆ अलै कडलै क्कडैन्दु⋆ अमरर्क्कमुदरुळि च्चॆय्दवने⋆ कलैवल्लवर् ताम् वाळुम्⋆ कणबुरत्तॆन् करुमणिये⋆ शिलैवल्लवा शेवगने⋆ शीराम ! तालेलो ! ॥८॥	वीर धर्नुधारी श्रीराम ! सोइये, तलेलो! कुशल कलाकारों वाले कन्नापुरम के मणि सा सलोने वदन वाले प्रभु ! समद्र के ऊपर पत्थर का सेतु बनाकर आपने सुरक्षित लंका का नाश कर दिया। क्षीरसमुद्र का मंथन कर आपने अमृत देवताओं को दे दिया। **726**

तळैयविळुम् नऱुङ्गुञ्जि⋆ त्तयरदन् तन् कुल मदलाय्⋆ वळैय ऑरु शिलैयदनाल्⋆ मदिळ् इलङ्गै अळित्तवने⋆ कळैगळुनीर् मरुङ्गलरुम्⋆ कणबुरत्तॆन् करुमणियॆ⋆ इळैयवर्कट्करुळ् उडैयाय्⋆ इरागवने! तालेलो! ॥९॥	अनुजों के प्रति दयालु राघव ! सोइये, तलेलो! लताओं पर प्रस्फुटित लाल कुमुद वाले कन्नापुरम के मणि सा सलोने वदन वाले प्रभु ! आपकी काली लटें लटकी रहती हैं। दशरथ के कुल के आप उद्धारक हैं। आपने सुरक्षित लंका को अद्वितीय बाण से विध्वंस कर दिया। **727**
तेवरैयुम् अशुरैयुम्⋆ तिशैगळैयुम् पडैत्तवने⋆ यावरुम् वन्दडिवणङ्ग⋆ अरङ्ग नगर् तुयिन्ऱवने⋆ काविरि नल्नदि पायुम्⋆ कणबुरत्तॆन् करुमणियॆ⋆ एवरि वॆञ्जिलै वलवा⋆ इरागवने! तालेलो! ॥१०॥	महान धर्नुधारी राघव ! सोइये, तलेलो! करूणामयी कावेरी नदी वाले कन्नापुरम के मणि सा सलोने वदन वाले प्रभु ! आपने ही देवों दानवों एवं भक्तों तथा अन्य सबों की सृष्टि की। अरंगम नगर में लेटे हुए पूजा के लिये आप सबों को सुलभ हैं। **728**
कन्निनन् मा मदिळ् पुडैशूळ्⋆ कणबुरत्तॆन् कागुत्तन् तन् अडिमेल्⋆ तालेलो एन्ऱुरैत्त⋆ तमिळ् मालै⋆ कॊल् नविलुम् वेल् वलवन्⋆ कुडै क्कुलशेगरन् शॊन्न⋆ पन्नियनूल् पत्तुम् वल्लार्⋆ पाङ्गाय पत्तर्गळे॥११॥	तलत्तु साहित्य की पंक्ति में, तेज भाला धारण करने वाले राजा कुलशेखर के ये तमिल दसक गीत, ऊंची पत्थर की दीवार से घिरे कन्नापुरम के निवासी काकुत्स्थ प्रभु राम के लिये गाये गये हैं । जो इसको कण्ठ कर लेगा वह प्रभु का अच्छा भक्त हो जायेगा। **729** कुलशेखर पेरूमाळ् तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

9 वन्दाळिनिनै (730 - 740)

तनयन् कान् पुग त्तशरदन् पुलम्बल्

(राम के जंगल जाने से दशरथ का शोक)

वन्दाळिन् इणै वणङ्गि वळनगरम् तॉळुदेत्त⋆ मन्नन् आवान् निन्रायै⋆ अरियणै मेल् इरुन्दायै⋆ नॅडुङ्गानम् पडर प्पोगु एन्राळ्⋆ एम् इरामावो⋆ उनै प्पयन्द कैगेशि तन् शॉर् केट्टु⋆ नन्राग नानिलत्तै आळ्वित्तेन्⋆ नन्मगने ! उन्नै नाने॥१॥	मैंने सोचा था पूजा करके आपको राजसिंहासनासीन करा आज ही आपको राजतिलक कर नगर के राजा का राजमुकुट पहनाउंगा। हाय ! आपकी मां कैकेयी ने इसके बदले आपको जंगल में भटकने के लिये भेज दिया। मेरे नेक पुत्र ! उसकी इच्छा को स्वीकारते हुए क्या मैं आपको राज्याधिकारी बना सका ? **730**
वॅव्वायेन् वॅव्वुरै केट्टु⋆ इरुनिलत्तै वेण्डादे विरैन्दु वॅन्रि⋆ मैवाय कळिऱॉळिन्दु तेरॉळिन्दु⋆ मावॉळिन्दु वनमे मेवि⋆ नॅय्वाय वेल् नॅडुङ्गण्⋆ नेरिळैयुम् इळङ्गोवुम् पिन्बु पोग⋆ एव्वाऱु नडन्दनैयॅम् इरामावो !⋆ एम्बॅरुमान् ! एन् शॅय्गेने॥२॥	दुष्ट मां के दुष्ट वचनों को सुनकर इस राज्य के लिये बिना किसी चाह के आप तत्काल प्रस्थान कर गये। सुसज्जित हाथी एवं घोड़ों से खींचे हुए रथ को लौटाते हुए सुन्दर आंखों वाली भूषणाभूषित सीता एवं भाई लक्ष्मण को पीछे पीछे लिये आप नंगे पांव जंगल को चले गये। राम ! तुम कैसे पैदल चले ? मेरे प्रभु ! मैं क्या कर सकता हूं ? **731**
कॉल् अणै वेल् वरि नॅडुङ्गण्⋆ कोशलै तन् कुलमदलाय् ! कुनि विल् एन्दुम्⋆ मल् अणैन्द वरै त्तोळा⋆ वल् विनैयेन् मनम् उरुक्कुम् वगैये कढाय्⋆ मॅल् अणैमेल् मुन् तुयिन्राय् इन्रिनि प्पोय्⋆ वियन् कान मरत्तिन् नीळल्⋆ कल् अणैमेल् कण् तुयिल क्कढ़नैयो⋆ कागुत्ता ! करिय कोवे॥३॥	कटारी नयनों वाली कौसल्या के स्वामी प्रभु ! शक्तिशाली भुजावाले एवं धर्नुधारी ! श्याम सलोने प्रभु ! काकुत्स्थ कुल केसरी! इस पापात्मा के द्रवित हृदय को आप जानते हो। कोमल शय्या पर सोने वाले अब कठोर पत्थर पर घने जंगल में वृक्षों की शाया में उनमुक्त सोने के लिये हाय ! अब सीख रहे होगे। **732**
वा पोगु वा इन्नम् वन्दु⋆ ऑरुगाल् कण्डुबो मलराळ् कून्दल्⋆ वेय् पोलुम् एळिल् तोळि तन् पॉरुट्टा⋆ विडैयोन् तन् विल्लै च्चॅढ़ाय्⋆ मा पोगु नॅडुङ्गानम्⋆ वल्विनैयेन् मनम् उरुक्कुम् मगने !⋆ इन्रु नी पोग एन् नॅञ्जम्⋆ इरुबिळवाय्प्पोगादे निर्कु मारे॥४॥	मेरे पुत्र ! आओ, आकर जाओ, एक बार और मेरे पास आओ तव जाओ। मेरा हृदय तुम्हारे लिये पिघल रहा है। तुमने शिव धनुष तोड़कर फूल की जूड़ा वाली पतली बाहों की सीता का पाणिग्रहण किया। जंगली हाथी वाले वन में आज प्रवेश करोगे। क्या मेरा हृदय विदीर्ण ही कर दोगे ? **733**

पॉरुन्दार् कै वेल् नुदिबोल् परल् पाय⋆ मॅल्लडिगळ् कुरुदि शोर⋆ विरुम्बाद कान् विरुम्बि वॅयिल् उरैप्प⋆ वॅम् पशिनोय् कूर⋆ इन्रु पॅरुम् पावियेन् मगने ! पोगिन्राय्⋆ केगयर्कोन् मगळाय् प्पॅट्र⋆ अरुम्बावि शॉर् केट्ट⋆ अरुविनैयेन् एन् शॅय्गेन् ! अन्दो ! याने॥५॥	पुत्र ! घोर पापी हूं मैं। राजा कैकेय की बेटी के पापी वचनों को सुनकर घनघोर जंगल की चाह में प्रस्थान कर गये। तेज नुकीले पत्थर पर चलने से तुम्हारे पैर लहू लुहान हुए तथा तेज धूप में भूख से तड़पे। मेरा दुर्भाग्य ! मैं क्या कर सकता हूं ? **734**
अम्मा ! एन्रुगन्दळैक्कुम्⋆ आर्वच्चॉल् केळादे अणि शेर् मार्वम्⋆ एन् मार्वत्तिडै अळुन्द त्तळुवादे⋆ मुळुशादे मोवादुच्चि⋆ कैम्माविन् नडै अन्न मॅन्नडैयुम्⋆ कमलम् पोल् मुगमुम् काणादु⋆ एम्मानै एन् मगनै इळन्दिट्ट⋆ इळिदगैयेन् इरुक्किन्रेने॥६॥	प्यार से पुकारे गये 'पिता' अब मैं कभी नहीं सुनुंगा। अब तुम्हारे रत्नाभूषित वक्षस्थल कभी नहीं अपनी छाती से कसकर मिलाउंगा। तुम्हारे शिर सूंघ अब कभी नहीं आनन्दित होउंगा। तुम्हारे हस्ति चाल एवं कमलवत मुखमंडल अब कभी नहीं देख पाउंगा। तुमको खोकर मेरे पुत्र ! मेरे प्रभु! मुझे जिन्दा रहने का आश्चर्य है। हाय ! आदमियों में मैं अधमाधम हूं। **735**
पू मरुवु नरुङ्गुज्जि पुन्शडैयायप्पुनैन्दु⋆ पून् तुगिल् शेर् अल्गुल्⋆ कामर् एळिल् विळल् उडुत्तु क्कलन् अणियादु⋆ अङ्गङ्गळ् अळगु मारि⋆ ए मरु तोळ् एन् पुदल्वन्⋆ यान् इन्रु शॅलत्तक्क वनम् तान् शेर्दल्⋆ तू मरैयीर् इदु तगवो⋆ शुमन्दिरने ! वशिट्टने ! शॉल्लीर् नीरे॥७॥	फूल के जूड़ा हटा केश को जटा जूट सा बांधकर, सिल्क वस्त्र उतारकर, घास एवं पेड़ के छाल का परिधान धारन कर, गहनों बिना अंगों को कांतिहीन कर, मेरा पुष्ट वदन पुत्र, जंगल को चला गया, जहां हमें जाना चाहिए था। विद्वान ऋषिगण, सुमंत्र, वशिष्ठ ! बताइये, क्या यह ठीक हुआ ? **736**
पॉन् पॅट्रार् एळिल् वेद प्पुदल्वनैयुम्⋆ तम्बियैयुम् पूवै पोलुम्⋆ मिन् पट्रा नुण्मरुङ्गुल् मॅल्लियल् एन्⋆ मरुगियैयुम् वनत्तिल् पोक्कि⋆ निन् पट्रा निन् मगन्मेल् पळि विळैत्तिट्टु⋆ एन्नैयुम् नीळ् वानिल् पोक्क⋆ एन् पॅट्राय् कैगेशी⋆ इरु निलत्तिल् इनिदाग इरुक्किन्राये॥८॥	कैकेयी ! तूने वेद के सार पुत्र, उसके भाई एवं कृशकाय पुत्रवधू को जंगल भेज दिया। तूने अपने पुत्र के लिये अमिट कलंक तो लिया ही अब मुझे भी अपने आकाश वाले घर में भेज रही हो। क्या मिला तुझे ? हाय ! तू अभी भी मधुर आनंद में जी रही हो। **737**
मुन् ऑरुनाळ् मळुवाळि शिलैवाङ्गि⋆ अवन् तवत्तै मुट्रुम् शॅट्राय्⋆ उन्नैयुम् उन् अरुमैयैयुम् उन्मोयिन् वरुत्तमुम्⋆ ऑन्राग क्कॉळ्ळादु⋆ एन्नैयुम् एन् मॅय्युरैयुम् मॅय्यागक्कॉण्डु⋆ वनम् पुक्क एन्दाय्⋆ निन्नैये मगनाग प्पॅरप्पॅरुवेन्⋆ एळ् पिरप्पुम् नॅडुन् तोळ् वेन्दे॥९॥	हमारे प्रभु ! एक दिन आपने परशुधारी से उनके धनुष लेकर उनको शक्तिहीन कर दिया था। अपना तथा अपनी विलखती मां कौसल्या का विचार छोड़कर आपने मुझे तथा मेरी प्रतिज्ञा को वास्तविक मान कर जंगल चले गये। मेरे नाथ ! सात जन्मों तक मात्र आपको ही मैं एकलौता पुत्र के रूप में चाहूंगा। **738**

तेनगु मा मलर् क्कून्दल्⋆ कौशलैयुम् शुमित्तिरैयुम् शिन्दै नोव⋆ कून् उरुविन् कॉडुन्दॉळुत्तै शॉर्केट्ट⋆ कॉडियवळ् तन् शॉर्कॉण्डु⋆ इन्ऱु कानगमे मिगविरुम्बि⋆ नी तुरन्द वळनगरै त्तुरन्दु⋆ नानुम् वानगमे मिगविरुम्बि प्पोगिन्ऱेन्⋆ मनु कुलत्तार् तङ्गळ् कोवे॥१०॥	समस्त मानवों के सम्राट ! खतरनाक दासी कुब्जा के गलत सलाह वाली कैकेयी के वचनों को सुन, फूल की जूड़ा वाली कौसल्या एवं सुमित्रा को शोकमग्न छोड, आप सहर्ष जंगल चले गये। आज आपके द्वारा त्यागे हुए नगर को छोड़कर मैं भी खुशी से अपने स्वर्ग के घर में जा रहा हूं। **739**
एरारन्द करु नॆडुमाल् इरामनाय्⋆ वनम् पुक्क अदनुक्काट्टा⋆ तारारन्द तडवरै त्तोळ् तयरदन् तान् पुलम्बिय⋆ अप्पुलम्बल् तन्नै⋆ कूरारन्द वेल् वलवन्⋆ कोळियर्कोन् कुडै क्कुलशेगरन् शॉर् चॆय्द⋆ शीरारन्द तमिळ् मालै इवै वल्लार्⋆ ती नॆरिक्कण् शॆल्लार् तामे॥११	तेज भाला धारण करने वाले छत्रधारी उरैयूर के राजा कुलशेखर के ये मधुर तमिल दसक गीत, श्यामल प्रभु राम के वनवास जाने से राजा दशरथ के अपने प्यारे पुत्र का असहनीय अलगाव के विषाद को व्यक्त करता है। जो इसको कण्ठ कर लेगा वह कभी गलत रास्ते पर नहीं चलेगा। **729** कुलशेखर पेरूमाळ् तिरूवडिगळे शरणं ।

<table>
<tr><th colspan="2">श्रीमते रामानुजाय नमः
10 अङ्गण् नेडुमदिळ् (741 – 751)
तिल्लैनगर् त्तिरूच्चित्तिर कूडत्तिल् त्तोल्लिरामनाय् त्तोन्रिय् कदैमुरै
(संक्षेप में रामायण)</th></tr>
<tr><td>‡अङ्गणेंडु मदिळ् पुडै शूळ् अयोत्ति एन्नुम्⋆
अणि नगरत्तुलगनैत्तुम् विळक्कुम् शोदि⋆
वॆङ्गदिरोन् कुलत्तुक्कोर् विळक्काय् त्तोन्रि⋆
विण् मुळुदुम् उय क्कॊण्ड वीरन् तन्नै⋆
शॆङ्गण् नॆडुङ्गरु मुगिलै इरामन् तन्नै⋆
तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ्⋆
एङ्गळ् तनि मुदल्वनै एम्बॆरुमान् तन्नै⋆
एन्रुगॊल्लो कण्गुळिर क्काणुम् नाळे॥१॥</td><td>ऊंचे दीवारों से घिरे हुए अयोध्या नगर में जगत का दीप प्रकाशित हो रहा है। सूर्य वंशी राजाओं के प्रकाश स्तंभ ! समस्त देवों के नेता एवं रक्षक ! राजीवनयन श्याम वदन प्रभु ! हमारे अद्वितीय नाथ ! आप तिल्लैनगर के चित्रकूट में रहते हैं। अहा ! हमारी आंखें आपको देखकर उत्सव कब मनायेंगी ?
741</td></tr>
<tr><td>वन्दॆदिरन्द ताडगै तन् उरत्तै क्कीरि⋆
वरु कुरुदि पॊळिदरवन् कणै ऒन्रेवि⋆
मन्दिरम् कॊळ् मरै मुनिवन् वेळ्वि कात्तु⋆
वल्लरक्कर् उयिर् उण्ड मैन्दन् काण्मिन्⋆
शॆन्दळिर्वाय् मलर् नगै शेर् शॆळुन्दण् शोलै⋆
तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ्⋆
अन्दणर्गळ् ऒरु मूवायिरवर् एत्त⋆
अणिमणि आशनत्तिरुन्द अम्मान् ताने॥२॥</td><td>एक बाण से राक्षसी ताड़का के हृदय को विदीर्ण कर रक्त प्रवाहित करते हुए आपने उसके प्राण हर लिये। बहुत सारे राक्षसों का बध कर आपने विश्वामित्र की यज्ञाग्नि की रक्षा की। देखिये,आप तिल्लैनगर के चित्रकूट में रहते हैं जो ऐसे बागों से घिरा है जिसमें लाल होंठ की तरह पत्ते निकलते हैं एवं मुक्ता मुस्कान की तरह फूलें खिलते हैं। तीन हजार वैदिक ऋषियों के मध्य एवं उनसे प्रशंसित आप रत्न जटित सिंहासन पर विराजमान हैं। 742</td></tr>
<tr><td>शॆल्वरिनर् करुनॆडुङ्गण् शीदै क्कागि⋆
शिनविडैयोन् शिलैयिरुत्तु मळु वाळ् एन्दि⋆
वॆव्वरिनर् चिलैवाङ्गि वॆन्रि कॊण्डु⋆
वेल्वेन्दर् पगै तडिन्द वीरन् तन्नै⋆
तॆव्वर् अञ्जु नॆडुम्बुरिशै उयरन्द पाङ्गर्⋆
तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ्⋆
एव्वरिवॆम् शिलैत्तडक्कै इरामन् तन्नै⋆
इरैञ्जुवार् इणैयडिये इरैञ्जिनेने॥३॥</td><td>सीता की कजरारे नयनों के खातिर आपने शिव धनुष को तोड़कर विजयपूर्वक परशुधारी के धनुष को ले लिया तथा राजाओं के चिरशत्रु उस प्रशुराम को विदा कर दिया।शक्तिशाली भुजाओं वाले वीर राम तिरुतिल्लैनगर के चित्रकूट में रहते हैं जो शत्रुओं में भय उत्पन्न करने वाली ऊंची दीवारों से घिरा है। मैं उनलोगों के चरणों की वन्दना करता हूं जो आपको पूजते हैं।
743</td></tr>
</table>

तॊत्तलर् पून्जुरिगुळल् कैगेशि शॊल्लाल्⋆ तॊन्नगरम् तुरन्दु तुरै क्कङ्गै तन्नै⋆ पत्ति उडै क्कुगन् कडत्त वनम् पोय् प्पुक्कु⋆ परदनुक्कु पादुगमुम् अरशुम् ईन्दु⋆ शित्रगूडत्तिरुन्दान् तन्नै⋆ इन्ऱु तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ्⋆ एत्तनैयुम् कण्गुळिर क्काण प्पॆट्ऱ⋆ इरुनिलत्तार्क्किमैयवर् नेर् ऒव्वार् तामे॥ ४॥	फूल की जूड़ा वाली कैकेयी के वचनों पर आपने राज्य छोड़ दिया। समर्पित नाविक गुह की सहायता से आपने गंगा पार किया। घोर वन में पादुका एवं राज्य भरत को देकर आप चित्रकूट में निवास किये।आज आप तिरुतिल्लैनगर के चित्रकूट में रहते हैं जहां ऐसे भक्तों की भीड़ लगी रहती है जिनकी बराबरी देवतालोग भी नहीं कर सकते। **744**
वलि वणक्कु वरै नॆडुन्दोळ् विरादै क्कॊन्ऱु⋆ वण् तमिळ् मा मुनि कॊडुत्त वरिविल् वाङ्गि⋆ कलै वणक्कु नोक्करक्कि मूक्कै नीक्कि⋆ करनोडु तूडणन् तन् उयिरै वाङ्गि⋆ शिलै वणक्कि मान् मरिय एय्दान् तन्नैद⋆ तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ्⋆ तलै वणक्कि क्कै कूप्पि एत्त वल्लार्⋆ तिरिदलाल् तवमुडैत्तु त्तरणि ताने॥ ५॥	मजबूत धनुष से आपने शक्तिशाली भुजावाले विराध का वध किया तथा तमिल मुनि अगस्त्य के दिये धनुष प्राप्त किये। काम से अभिभूत सूर्पनखा राक्षसी के नाक काटकर आपने खर एवं दूषण तथा सुवर्ण हिरन के बध किये।तिरुतिल्लैनगर के चित्रकूट में आप को करबद्ध हो जो सिर नवाते हैं वे जहां कहीं भी जाते हैं वहां की भूमि को पवित्र करते हैं। **745**
तनमरुवु वैदेगि पिरियल् उट्ऱु⋆ तळर्वॆय्दि च्चडायुवै वैगुन्दत्तेट्रि⋆ वनमरुवु कवियरशन् कादल् कॊण्डु⋆ वालियै क्कॊन्ऱिलङ्गै नगर् अरक्कर् कोमान्⋆ शिनम् अडङ्ग मारुदियाल् शुडुवित्तानै⋆ तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ्⋆ इनिदमरन्द अम्मानै इरामन् तन्नै⋆ एत्तुवार् इणैयडिये एत्तिनेने॥ ६॥	मेरे प्रिय प्रभु राम वैदेही से अलग होकर मूर्च्छित हो गये। आपने जटायु को स्वर्ग भेजकर बन्दरों के राजा सुग्रीव से मैत्री की तथा वाली का वध किया।रावण के कोध का सामना आपने हनुमान से लंका जलाकर किया।आप तिरुतिल्लैनगर के चित्रकूट में रहते हैं। मैं उनलोगों की प्रशस्ति गाता हूं जो आपकी गाथा का गान करते हैं। **746**
कुरै कडलै अडल् अम्बाल् मऱुग वॆय्दु⋆ कुलै कट्टि मऱुगरैयै अदनाल् एरि⋆ एरि नॆडु वेल् अरक्करॊडुम् इलङ्गै वेन्दन्⋆ इन्नुयिर् कॊण्डवन् तम्बिक्करशुम् ईन्दु⋆ तिरुमगळोडिनिदमरन्द शॆल्वन् तन्नै⋆ तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ्⋆ अरशमरन्दान् अडि शूडुम् अरशै अल्लाल्⋆ अरशाग एण्णेन् मट्रशु ताने॥ ७॥	मेरे प्रिय प्रभु राम ने एक बाण मारकर समुद्र को दो भाग में बांट दिया। आप सेतु बनाकर समद्र के उसपार गये तथा भयानक राक्षसों एवं उनके राजा रावण का अंत किया।वहां का राज्य उसके छोटे भाई विभीषण को देकर सीता से पुनर्मिलन किया। आप तिरुतिल्लैनगर के चित्रकूट में रहते हैं। आपके पवित्र चरणों के सार्वभौम सत्ता को छोड़कर मैं अन्य राज्य को मान्यता नहीं देता। **747**

अम्बॊनॆडु मणिमाड अयोत्ति एय्दि⋆ अरशॆय्दि अगत्तियन्वाय् त्तान् मुन् कॊन्ऱान् तन्⋆ पॆरुन्दॊल् कदै क्केट्टु मिदिलै च्चॆल्वि⋆ उलगुय्य त्तिरु वयिऱु वायत्त मक्कळ्⋆ शॆम् पवळ त्तिरळ्वाय् त्तन् शरिदै केट्टान्⋆ तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ्⋆ एम्बॆरुमान् तन् शरिदै शॆवियाल् कण्णाल् परुगुवोम्⋆ इन्नमुदै मदियोम् अन्ऱे॥८॥	मेरे प्रिय प्रभु राम ऊंचे अटारियों वाले अयोध्या लौट आये तथा सिहासनारूढ़ हुए। अगस्त्य ऋषि ने रावण के विनाश की संपूर्ण कथा की रचना की। प्रभु ने अपने चरित्र का गान, मिथिला की बेटी के द्वारा जगत के उद्धार हेतु उत्पन्न किये गये युगल किशोर, लव एवं कुश के मूंगावत होठों से सुना। **748**
शॆऱि तव च्चम्बुगन् तन्नै च्चॆन्ऱु कॊन्ऱु⋆ शॆळु मऱैयोन् उयिर् मीट्टु त्तवत्तोन् ईन्द⋆ निऱै मणि प्पूण् अणियुम् कॊण्डिलवणन् तन्नै⋆ तम्बियाल् वान् एऱ्ऱि मुनिवन् वेण्ड⋆ तिऱल् विळङ्गुम् इलक्कुमनै प्पिरिन्दान् तन्नै⋆ तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ् उऱैवानै⋆ मऱवाद उळ्ळन् तन्नै उडैयोम्⋆ मट्रुऱुदुयरम् अडैयोम् अन्ऱे॥९॥	मेरे प्रिय प्रभु राम ने घोर तपस्वी जंबुक की हत्या की तथा वैदिक ऋषियों को जीवित कर अगस्त्य के दिये गये माला को धारण किया। लवणासुर के बध के लिये आपने भाई शत्रुघ्न को भेजा। दुर्वासा के शाप के कारण आप वीर भाई लक्षमण से अलग हो गये। आप तिरूतिल्लैनगर के चित्रकूट में रहते हैं।हमलोग आपको अपने हृदय में धारण करते हैं। क्या हमलोग सभी क्षतियों से रक्षित नहीं हैं ? **749**
अन्ऱु शराशरङ्गळै वैगुन्दत्तेट्रि⋆ अडल् अरव प्पगैयेऱि अशुरर् तम्मै वॆन्ऱु⋆ इलङ्गु मणि नॆडुन्दोळ् नान्गुम् तोन्ऱ⋆ विण् मुळुदुम् एदिर्वर त्तन् तामम् मेवि⋆ शॆन्ऱिनिदु वीट्रिरुन्द अम्मान् तन्नैद⋆ तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ्⋆ एन्ऱुम् निन्ऱान् अवन् इवनॆन्ऱेत्ति⋆ नाळुम् इऱैञ्जुमिनो एप्पॊळुदुम् तॊण्डीर् नीरे॥१०॥	मेरे प्रिय प्रभु राम ने सभी स्थिर एवं जंगम जीवों का उत्थान करते हुए वैकुंठ भेज दिया ।गरूड़ पर सवार होकर असुरों का नाश किया। अपने यशस्वी चतुर्भुज रूप धारण किया और अपने दिव्य निवास में देवताओं की महान भीड़ भरे तुमुल ध्वनि एवं स्वागत के साथ प्रवेश किया तथा अपने शाश्वत सिंहासन पर आरूढ़ हुए। आप तिरूतिल्लैनगर के चित्रकूट में रहते हैं।भक्तगण प्रशस्ति गान करने एवं पूजा करने आते हैं तथा कहते हैं "तत्वम्ऽसि"। **750**
तिल्लैनगर् त्तिरुच्चित्रगूडम् तन्नुळ्⋆ तिऱल् विळङ्गु मारुदियोडमर्न्दान् तन्नै⋆ एल्लै इल् शीर् त्तयरदन् तन् मगनाय् त्तोन्ऱि– ट्रदु मुदला⋆ त्तन् उलगम् पुक्कदीऱा⋆ कॊल् इयलुम् पडै त्तानै क्कॊट्र वॊळ्वाळ्⋆ कोळियर्गोन् कुडै क्कुलशेगरन् शॊर् चॆय्द⋆ नल् इयल् इन् तमिळ्मालै पत्तुम् वल्लार्⋆ नलम् तिगळ् नारणन् अडिक्कीळ् नण्णुवारे॥११॥	भरपूर सेना एवं शस्त्रों से सुरक्षित उरैयूर के राजा एवं सेनानायक कुलशेखर सीढ़ियों में सुस्थापित हैं ।उनके ये मधुर तमिल दसक गीत, शक्तिशाली सेवक मारूति से सेवित तिरूतिल्लैनगर के चित्रकूट में रहने वाले प्रभु का दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार से लेकर गौरवशाली निवास तक के प्रत्यावर्त्तन का यशोगान करते हैं। जो इसको कण्ठ कर लेगा वह नारायण के मंगलमय चरणों को प्राप्त करेगा। **751** कुलशेखर पेरूमाळ् तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ तिरुच्चन्द विरुत्तम् ॥

तिरुक्कच्चि नम्बिगळ् अरुळिच्चॅय्द
तिरुच्चन्द विरुत त्तनियन्गाळ्

तरुच्चन्द प्पॉळिल् तळुवु तारणियिन् तुयर्तीर*
तिरुच्चन्द विरुत्तम् शॅय् तिरुमळिशै प्परन्वरुमूर्*
करुच्चन्दुम् कारगिल्लुम् कमळ्क्कोङ्गुम् मणनारुम्*
तिरुच्चन्द त्तुडन्मरुवु तिरुमळिशै वळम् पदिये

उलगुम् मळिशैयुम् उळ्ळुणर्न्दु* तम्मिल्
पुलवर् पुगळ्क्कोलाल् तूक्क* उलगु तन्नै
वैत्तॅडुत्त पक्कत्तुम्* मानीर् मळिशैये
वैत्तॅडुत्त पक्कम् वलिदु

तिरूच्वन्द विरूत्तम् (752 - 871)

पू निलाय ऐन्दुमाय्* प्पुनर्गण् निन्र् नान्गुमाय्* ती निलाय मून्रुमाय्* च्चिरन्द काल् इरण्डुमाय्* मी निलायदॊन्रुम् आगि* वेरु वेरु तन्मैयाय्* नी निलाय वण्ण निन्नै* यार् निनैक्क वल्लरे॥१॥	मिट्टी के पांच गुण, जल के चार गुण, अग्नि के तीन गुण, हवा के दो गुण, एवं आकाश के एक गुण सब आपके स्वरूप हैं। हे प्रभु ! आप सबों से पृथक जैसे रहते हैं उसे कौन समझ सकेगा ? **752**
आरुम् आरुम् आरुमाय्* ओर् ऐन्दुम् ऐन्दुम् ऐन्दुम् आय्* एरु शीर् इरण्डु मून्रुम्* एळुम् आरुम् एट्टुमाय्* वेरु वेरु ञानम् आगि* मॅय्यिनॊडु पॊय्युमाय्* ऊरॊडोशैयाय ऐन्दुम्* आय आय मायने ! ॥२॥	आप छः हैं, छः एवं छः ; एवं पांच, पांच, एवं पांच। आप दो, तीन, सात, छः एवं आठ आनंद हैं।आप ही सत् एवं असत् होते हुए सब एक ही में हैं।आश्चर्यमय प्रभु ! आप ही स्वाद, शब्द, एवं स्पर्श हैं। **753**
ऐन्दुम् ऐन्दुम् ऐन्दुम् आगि* अल्लवट्रुळायुमाय्* ऐन्दु मून्रुम् ऑन्रुम् आगि* निन्र् आदि देवने* ऐन्दुम् ऐन्दुम् ऐन्दुम् आगि* अन्दरत्तणैन्दु निन्रु* ऐन्दुम् ऐन्दुम् आय निन्नै* यावर् काण वल्लरे॥३॥	आप पाच हैं, पांच, सभी के भीतर के पांच। आश्चर्यमय प्रभु ! पांच, तीन, सभी का मूल है। तब पांच, पांच, एवं पांच, आप स्वर्ग में ऊपर रहते हैं। पांच, पांच जो आप हैं, इस गुत्थी को कौन समझ सकता है ? **754**

मून्ऱु मुप्पदारिनोडु⋆ ओर् ऐन्दुम् ऐन्दुम् ऐन्दुम् आय्⋆ मून्ऱु मूर्त्ति आगि मून्ऱु⋆ मून्ऱु मून्ऱु मून्ऱुम् आय्⋆ तोन्ऱु शोदि मून्ऱुम् आय्⋆ त्तुळक्कम् इल् विळक्कमाय्⋆ एन्ऱेन् आवियुळ् पुगुन्ददु⋆ एन्गोलो एम् ईशने ! ॥ ४ ॥	तीन एवं तीस वर्ण। पांच एवं पाच तथा छः स्वर। पांच सूक्त, एवं ऋक, यर्जु, एवं साम के बारह अक्षर। ॐ के तीन अक्षर, तेजोमय, निष्कलंक एवं सभी प्रकाश के स्त्रोत हैं। प्रभु ! यह जैसे हमारे भीतर मिलकर एक होता है, यही हमसे आपकी यश गाथा का गान कराता है। **755**
निन्ऱियङ्गुम् ऑन्ऱला⋆ उरुक्कळ् तोऱुम् आवियाय्⋆ ऑन्ऱि उळ्ळालन्दु निन्ऱ⋆ निन्न तन्मै इन्नदेन्ऱु⋆ एन्ऱुम् यार्क्कुम् एण् इरन्द⋆ आदियाय् ! निन् उन्दिवाय्⋆ अन्ऱु नान्मुगन् पयन्द⋆ आदि देवन् अल्लैये॥ ५ ॥	चेतन जीवात्मा सर्वत्र इस जगत में क्षणभंगुर शरीर धारण किये हुए हैं। आप तो शाश्वत रूप से ऋषियों एवं साधकों से छिपे रहते हैं। आपने चर्तुमुख स्त्रष्टा को पूर्व में अपने नाभि कमल पर धारण किया। **756**
नागम् एन्दु मेरु वॅर्पै⋆ नागम् एन्दु मण्णिनै⋆ नागम् एन्दुम् आग माग⋆ मागम् एन्दु वार्पुनल्⋆ मागम् एन्दु मङ्गुल् ती ओर्⋆ वायुवैन्दमैन्दु कात्तु⋆ एगम् एन्दि निन्ऱ नीमैं⋆ निन्नाणे इयन्ऱदे॥ ६ ॥	मेरू पर्वत नाग पर, एवं पृथ्वी हस्ति सिर के ऊपर, मेरे प्रभु शेषशय्या पर। अहा ऊंचे आकाश से पानी। जगत के ऊपर बादल, अग्नि, प्राणदाता वायु ः आप अकेले सबके आधार हैं एवं मात्र आप ही यह सब अलौकिक कृत्य कर सकते हैं। **757**
ऑन्ऱिरण्डु मूर्त्तियाय्⋆ उरक्कमोडुणर्च्चियाय्⋆ ऑन्ऱिरण्डु कालम् आगि⋆ वेलै ञालम् आयिनाय्⋆ ऑन्ऱिरण्डु तीयुम् आगि⋆ आयन् आय मायने⋆ ऑन्ऱिरण्डु कण्णिनानुम्⋆ उन्नै एत्त वल्लने॥ ७ ॥	आप एक तथा दो हुए, तब निद्रा एवं इन्द्रियां बन गये। सागर एवं भूमंडल में आप भूत वर्तमान एवं भविष्य हुए। आप तीन अग्नि हुए एवं गोकुल में जन्म लिये। तीन आंख वाले शिव भी आपकी प्रशंसा करने में सक्षम नहीं होते हैं। **758**
आदि आन वानवर्क्कुम्⋆ अण्डम् आय अप्पुरत्तु⋆ आदि आन वानवर्क्कुम्⋆ आदि आन आदि नी⋆ आदि आन वान वाणर्⋆ अन्द कालम् नी उरैत्ति⋆ आदि आन कालम् निन्नै⋆ यावर् काण वल्लरे॥ ८ ॥	सभी देवों,जगत एवं इसके बाहर भी सबों में प्रथम। मेरे प्रभु आप ही देवों एवं सभी कारण के कारण हैं। सभी देवों के प्रभु ! आपने ही समय के अनुशासन में सबको बांधा। कालातीत के काल प्रभु ! आपको कौन समझ सकेगा। **759**
तादुलावु कॉन्ऱैमालै⋆ तुन्नु शॅञ्जडै च्चिवन्⋆ नीदियाल् वणङ्गु पाद !⋆ निन्मला ! निलाय शीर्⋆ वेदवाणर् कीद वेळ्वि⋆ नीदियान वेळ्वियार्⋆ नीदियाल् वणङ्गुगिन्ऱ⋆ नीमैं निन्नाण् निन्ऱदे॥ ९ ॥	कोनरै फूल की रज के साथ माला पहने जटाधारी शिव आपके चरणों में अर्चना करते हैं। निष्कलंक एवं शाश्वत यश वाले प्रभु ! वेदमंत्रों से यज्ञाहुति, तथा विद्वानों का गीत, सब एक मात्र आपको ही मिलता है। पूजनीय चरणकमल वाले प्रभु ! **760**

तन्नुळे तिरैत्तॆळुम्⋆ तरङ्ग वॆण् तडङ्गडल्⋆ तन्नुळे तिरैत्तॆळुन्दु⋆ अडङ्गुगिन्ऱ तन्मै पोल्⋆ निन्नुळे पिऱन्दिऱन्दु⋆ निर्पवुम् तिरिपवुम्⋆ निन्नुळे अडङ्गुगिन्ऱ⋆ नीमै निन्गण् निन्ऱदे॥१०॥	गहरे एवं फेनयुक्त सागर से प्रचंड ज्वार उठते हैं एवं वहीं गिर भी जाते हैं। स्थावर एवं जंगम उत्पन्न होकर जीवित रहते हैं एवं आप में ही लीन हो जाते हैं। एक मात्र सार्वभौम प्रभु ! आप ही सबको अपने में धारण करते हैं। **761**
शॊल्लिनाल् तॊडरच्चि नी⋆ शॊलप्पडुम् पॊरुळुम् नी⋆ शॊल्लिनाल् शॊलप्पडादु⋆ तोन्ऱुगिन्ऱ शोदि नी⋆ शॊल्लिनाल् पडैक्क⋆ नी पडैक्क वन्दु तोन्ऱिनार्⋆ शॊल्लिनाल् शुरुङ्ग⋆ निन् गुणङ्गळ् शॊल्ल वल्लरे॥११॥	वैदिक मंत्रों के अन्तर्निहित आनंद ! वेदों के सार प्रभु ! जगत के बाहर की सारी प्रभा आप ही के स्वरूप हैं। कमल से उत्पन्न महान स्त्रष्टा चतुर्मुख ब्रह्मा शायद ही आपकी लीला के एक या दो शब्द जानते हों। **762**
उलगु तन्नै नी पडैत्ति⋆ उळ्ळॊडुक्कि वैत्ति⋆ मीण्डु उलगु तन्नुळे पिऱत्ति⋆ ओरिडत्तै अल्लैयाल्⋆ उलगु निन्नॊडॊन्ऱि निर्क⋆ वेऱु निऱ्‌कि आदलाल्⋆ उलगिल् निन्नै उळ्ळ शूळल्⋆ यावर् उळ्ळ वल्लरे॥१२॥	समस्त जगत की रचना कर आप सबों को निगल भी गये। आप बिना किसी अपवाद के सब में व्याप्त हैं। समस्त जगत को आप धारण करते हुए उससे पृथक हैं। जिस तरह से आप जगत को धारण करते हैं, कौन इसकी कल्पना कर सकता है ? **763**
इन्नै एन्ऱु शॊल्लल् आवदु⋆ इल्लै यादुम् इट्टिडै⋆ पिन्नै कॆळ्वन् एन्बर् उन्⋆ पिणक्कुणर्न्द पॆट्टियोर्⋆ पिन्नै आय कोलमोडु⋆ पेरुम् ऊरुम् आदियुम्⋆ निन्नैयार् निनैक्क वल्लर्⋆ नीमैयाल् निनैक्किलें ! ॥१३॥	'आप यही हैं' कोई नहीं कह सकता। फिर भी, ऐसा सब जानकार लोग कहते हैं कि आप कृशकटि पिन्नै के जीवन संगी हैं। अहा ! नाम एवं स्थान से सभी सुन्दर मंदिर आपकी भू लीला का सरल शब्दों में बखान करते हैं। **764**
तूय्मै योगम् आयिनाय्⋆ तुळाय् अलङ्गल् मालैयाय्⋆ आमै आगि आळ् कडल् तुयिन्ऱ⋆ आदि देव⋆ निन् नामदेयम् इन्नदॆन्न⋆ वल्लम् अल्लम् आगिलुम्⋆ शाम वेद गीतनाय⋆ चक्रपाणि अल्लैये॥१४॥	पवित्र तुलसी की माला वाले प्रभु ! योग के सत्वगुण वाले प्रभु ! गहरे सागर में शयन करनेवाले प्रभु ! कच्छप का रूप धारण करने वाले प्रभु ! इस नश्वर जगत के जितने भी प्राणी हैं उनमें से किसी एक से आप को संबोधित नहीं किया जा सकता। जैसा सामवेद में कहा गया है आपको हमलोग चक्रधारी के रूप में जानते हैं। **765**
अङ्गम् आऱुम् वेद नान्गुम्⋆ आगि निन्ऱवट्रुळे⋆ तङ्गुगिन्ऱ तन्मैयाय् !⋆ तडङ्गडल् पणत्तलै⋆ शॆङ्गण् नागणै क्किडन्द⋆ शॆल्व मल्गु शीरिनाय्⋆ शङ्ग वण्णम् अन्न मेनि⋆ शारङ्गपाणि अल्लैये॥१५॥	चारों वेद एवं उसके छ अंगों के सत्य ! अज्ञात सत्य ! आप गहरे समुद्र में योग निद्रा में रहते हैं।मणियारी आंख के फनियारे सर्प आपकी शय्या हैं। धन के नाथ ! जब आप सारंग धारण करते हैं तो प्रथम आपका शरीर शंख की तरह श्वेत है। **766**

तलैक्कणत्तुगळ् कुळम्बु⋆ शादि शोदि तोट्रमाय्⋆ निलैक्कणङ्गळ् काण वन्दु⋆ निट्रियेलुम् नीडिरुम्⋆ कलै क्कणङ्गळ् शौर्पौरुळ्⋆ करुत्तिनाल् निनैक्कौणा⋆ मलैक्कणङ्गळ् पोल् उणर्त्तुम्⋆ माट्चिनिन्रन् माट्चिये॥१६॥	देवगन, जगत के चेतन एवं नश्वर सभी प्राणियों में आप तेजोमय शक्ति की तरह निवास करते हैं। शाश्वत सार वेद भी आपके चरणों का पर्वत के समान आयाम वाली गाथा का बखान नहीं कर सकते। **767**
एगमूर्त्ति मून्रु मूर्त्ति⋆ नालु मूर्त्ति नन्मै शेर्⋆ बोग मूर्त्ति पुण्णियत्तिन् मूर्त्ति⋆ एण्णिल् मूर्त्तियाय्⋆ नाग मूर्त्ति शयनमाय्⋆ नलङ्गडल् किडन्दु मेल्⋆ आग मूर्त्ति आयवण्णम्⋆ एङ्गौल् आदि देवने ! ॥१७॥	अकेला स्वरूप, तीन प्रकार के स्वरूप, चार प्रकार के स्वरूप, दयालु स्वरूप, आनस्न्दकन्द स्वरूप, पवित्र स्वरूप, अनगिनत स्वरूप, प्रथम कारण, फेनयुक्त सागर के शेषनाग का शय्या स्वरूप, जितने स्वरूपों में आप मंदिरों में दिखते हैं, प्रभु सब का मंगल हो ! **768**
विडत्त वाय् ओर् आयिरम्⋆ ईरायिरम् कण् वैन्दळल्⋆ विडत्तु वीळिवलाद पोगम्⋆ मिक्क शोदि तौक्क शीर्⋆ तौडुत्तुमेल् विदानमाय⋆ पौवनीर् अरावणै⋆ पडुत्तबायल् पळ्ळिगौळ्वदु⋆ एङ्गौल्वेलै वण्णणे ! ॥१८॥	विषवमन करते सहस्त्र फन और अग्नि वर्षाते प्रत्येक फन की आंखें। तेजोमय दर्शन का शाश्वत आनन्द। शरीर का उपयोग शय्या के लिये है तो फन छायाछत्र का काम कर रहे हैं। सागर सा सलोने सुन्दर शरीर वाले प्रभु ! बताइये न कि आप समुद्र में क्यों रहते हैं ? **769**
पुळ्ळदागि वेद नान्गुम्⋆ ओदिनाय् अदन्रियुम्⋆ पुळ्ळिन् वाय् पिळन्दु⋆ पु ळ्ळौडि प्पिडित्त पिन्नरुम्⋆ पुळ्ळै ऊर्दि आदलाल्⋆ अदॆन् कौल् मिन् कौळ् नेमियाय् !⋆ पुळ्ळिन् मैय् प्पगै क्कडल् किडत्तल्⋆ कादलित्तदे॥१९॥	हंस पक्षी बन करके आपने जगत को चारों वेद उपलब्ध कराया। असुर पक्षी का नाश किया और पक्षी का ही ध्वज धारण किया। गरूड़ पक्षी की सवारी की तथा पक्षी के शत्रु को शय्या बनाया। चक्रधारी प्रभु ! समुद्र में अकेले सोने का यह कौन सा शौक है ? **770**
कूशम् ऑन्रुम् इन्रि⋆ माशुणम् पडुत्तु वेलैनीर्⋆ पेशनिन्र देवर् वन्दु⋆ पाड मुन् किडन्ददुम्⋆ पाशम् निन्र नीरिल् वाळुम्⋆ आमैयान केशवा⋆ एश अन्रु नी किडन्दवारु⋆ कूरु तेरवे॥२०॥	निश्चिंत होकर आप अकेले शेषशय्या पर गहरे समुद्र में रहते हैं जहां देवगन समूह में आकर आपके शाश्वत गौरव की प्रशस्ति गाते हैं। केशव ! गहरे समुद्र में आपने कच्छप का रूप धारण किया। विनती है प्रभु ! बताइये कि आप कैसे निष्कलंक ऊपर आये ? **771**
अरङ्गने ! तरङ्गनीर्⋆ कलङ्ग अन्रु कुन्रु शूळ्⋆ मरङ्गळ् तेय मानिलम् कुलुङ्ग⋆ माशुणम् शुलाय्⋆ नॆरुङ्गनी कडैन्द पोदु⋆ निन्र शूरर् एन् शैय्दार्⋆ कुरङ्गै आळ् उगन्द एन्दै !⋆ कूरु तेर वेरिदे॥२१॥	रंगा प्रभु ! यह बताइये कि वासुकी नाग को मेरू मन्दारम पर लपेट कर कैसे समुद्र मंथन हुआ ? समुद्र उबल गया, भूचाल से पेड़ टूटने लगे। बानरों के नाथ ! वे लोग वीर थे जो बिना कोई सहयोग दिये आपको दर्शक बन देख रहे थे। **772**

पण्डुम् इन्ऱुम् मेलुमाय्⋆ ओर् बालनागि ञालम् एऴ्⋆ उण्डु मण्डि आलिलै त्तुयिन्ऱ⋆ आदि देवने !⋆ वण्डुगिण्डु तण् तुऴाय्⋆ अलङ्गलाय् ! कलन्द शीर्⋆ पुण्डरीक प्पावै शेरुम्⋆ मार्ब ! बूमि नादने ! ॥२२॥	भूत वर्तमान एवं भविष्य के प्रभु ! बालक रूप में सातों लोकों को लिया निगल गये एवं बट पत्र पर सो गये। आदि प्रभु ! भौंरों से रसपान किये जाते तुलसी की माला धारण करने वाले प्रभु ! वक्षस्थल पर पद्म लक्ष्मी धारण करने वाले प्रभु ! भूदेवी को वरण करने वाले प्रभु ! **773**
वान् निरत्तोर् शीयमाय्⋆ वळैन्द वाळ् एयिट्रवन्⋆ ऊन् निरत्तु किरत्तलम्⋆ अऴुत्तिनाय् ! उलाय शीर्⋆ नाल् निरत्त वेदनावर्⋆ नल्ल योगिनाल् वणङ्गु⋆ पाल् निर क्कडल्किडन्द⋆ पर्पनाबन् अल्लैये॥२३॥	श्वेत केशरी का स्वरूप धारण कर असुर की छाती को अपने पंजे से विदीर्ण करने वाले प्रभु जिसकी चर्चा सारे जगत ने की। सबों से प्रशंसित एवं वैदिक ऋषियों से अर्चित प्रभु ! नाभिकमल वाले गहरे समुद्र में सोने वाले प्रभु ! **774**
गङ्गै नीर् पयन्द पाद⋆ पङ्कयत्तेम् अण्णले⋆ अङ्गै आऴि शङ्गु दण्डु⋆ विल्लुम् वाळुम् एन्दिनाय्⋆ शिङ्गमाय देव देव !⋆ तेन् उलावु मेन् मलर्⋆ मङ्गै मन्नि वाऴु मार्ब !⋆ आऴि मेनि मायने ! ॥२४॥	कमल सा चरण वाले गंगा के स्त्रोत प्रभु ! पंचायुध ः गदा, शंख, खड्ग, धनुष एवं चक वाले प्रभु ! देवों के नाथ ! दुष्ट के पुत्र की रक्षा हेतु शक्तिशाली केशरी के रूप में आपने अवतार लिया । भौरों से लिपटे कमल लक्ष्मी सदा के लिये आपके वक्षस्थल पर निवास करती है। **775**
वरत्तिनिल् शिरत्तै मिक्क⋆ वाळ् एयिट्रु मट्रवन्⋆ उरत्तिनिल् करत्तै वैत्तु⋆ उगिरत्तलत्तै ऊन्रिनाय्⋆ इरत्ति नी इदेन्न पोय्⋆ इरन्द मण् वयिट्रुळे करत्ति⋆ उन् करुत्तै⋆ यावर् काण वल्लर् कण्णने ! ॥२५॥	दुर्दांत असुर हिरण्य अपने वरदान के अभिमान से चूर रहता था। उसके पेट पर हाथ रखके आपने नाखून को उसके भीतर गहरे घुसा दिया। आपने तीन कदमों की भिक्षा मांगाी परन्तु छल से दो ही कदम में संपूर्ण लोक माप लिया। संपूर्ण जगत को निगलकर अपने में छिपा लिया। कौन अपनी बुद्धि से आपको पार पा सकता है ? **776**
आणिनोडु पेण्णुम् आगि⋆ अल्लवोडु नल्लवाय्⋆ ऊणोडोशै ऊरुम् आगि⋆ ओन्रलाद मायैयाय्⋆ पूणि पेणुम् आयन् आगि⋆ प्पोय्यिनोडु मेय्युमाय्⋆ काणि पेणुम् माणियाय्⋆ क्करन्दु शेन्र कळ्वने ! ॥२६॥	पुरूष, स्त्री एवं नपुंसक सबों में वर्तमान। स्वाद, शब्द एवं सभी पांच संवेदन के साथ चेतन समूह। सच एवं झूठ के मिश्रण के साथ आप गाय चराने वाले के रूप में आये। कमल जगत की रक्षा हेतु आपने मणिकिन यानी वामन का रूप लिया। **777**
विण्कडन्द शोदियाय्⋆ विळङ्गु ञान मूर्त्तियाय्⋆ पण् कडन्द तेश मेवु⋆ पावनाश नादने⋆ एण् कडन्द योगिनोडु⋆ इरन्दु शेन्ऱ माणियाय्⋆ मण् कडन्द वण्णम् निन्नै⋆ यार् मदिक्क वल्लरे॥२७॥	आकाश से भी ऊपर तेजोमय स्वरूप ! चेतनमय स्वरूप ! सभी प्रशस्ति से परे तेजोमय स्वरूप ! नरक (असुर) विनाशक प्रभु ! अनगिनत गुणों से भरपूर वामन प्रभु ! जिस तरह से आपने पृथ्वी को धारण किया, कौन आपका पार पा सकता है ? **778**

पडैत्त पार् इडन्दळन्दु⋆ अदुण्डुमिळन्दु पौवनीर्⋆ पडैत्तडैत्तदिर् किडन्दु⋆ मुन् कडैन्द पॆद्दियोय्⋆ मिडैत्त माल्ि मालिमान्⋆ विलङ्गु कालन् ऊर् पुग⋆ पडैक्कलम् विडुत्त⋆ पल् पडै त्तडक्कै मायने ! ॥२८॥	आपने पृथ्वी को बनाया, उसे ऊपर उठा लिया, निगल गये एवं पुनः बाहर निकाल दिया। आपने समुद्र बनाया, इसका मंथन किया, इसमें सोये, तथा इस पर सेतु बनाया। आपने गुस्सा से भरे माली एवं सुमाली को नीचे नरक में भेज दिया। पंचायुधों को धारण करने वाले शक्तिशाली सुन्दर भुजाओं वाले प्रभु ! **779**
परत्तिलुम् परत्तै आदि⋆ पौवनीर् अणै क्किडन्दु⋆ उरत्तिलुम् ऑरुत्ति तन्नै⋆ वैत्तुगन्ददन्रियुम्⋆ नरत्तिलुम् पिरत्ति⋆ नाद ञान मूर्त्ति आयिनाय्⋆ ऑरुत्तरुम् निनादु तन्मै⋆ इन्नदॆन्न वल्लरे॥२९॥	आप चेतन स्वरूप से जलशय्या पर सोये। सदा अपने विशाल वक्षस्थल पर आप कमल लक्ष्मी को धारण करते हैं। नश्वर शरीर से प्रगट होकर आपने जगत को प्रेम का मार्ग दिखाया। कोई नहीं है जो बताये 'आप यही हैं'। **780**
वानगमुम् मण्णगमुम्⋆ वॆर्पुम् एळ् कडल्गळुम्⋆ पोनगम् शॆय्दालिलै⋆ त्तुयिन्र पुण्डरीकने⋆ तेन् अगञ्जॆय् तण् नरुम्⋆ मलर्त्तुळाय् नन् माल्ैयाय्⋆ कून् अगम् पुगत्तॆरित्त⋆ कॊट्ट् विल्लि अल्लैये॥३०॥	कमल प्रभु ! पृथ्वी, आकाश, एवं सातो लोक ः समुद्र एवं ऊंचे पर्वत आप सब को निगल कर बट पत्र पर सो गये। आप अमृत से भरे पवित्र तुलसी की माला पहनते हैं। खेल में बाण चलाकर आपने कुनी की रीढ़ को टेढ़ा कर दिया। **781**
काल्नेमि काल्ने !⋆ कणक्किल्लाद कीर्त्तियाय्⋆ ञाल्म् एळुम् उण्डु पण्डोर्⋆ बाल्नाय पण्बने⋆ वेल्ैवेव विल् वळैत्त⋆ वॆल्शिनत्त वीर⋆ निन् बाल्राय पत्तर् शित्तम्⋆ मुत्ति शॆय्युम् मूर्त्तिये ! ॥३१॥	अनगिनत गुणों वाले प्रभु ! कालनेमी का नाश करने वाले प्रभु समस्त जगत को निगलजाने वाले प्रभु बटपत्र पर सोने वाले शिशु गुस्से में वाण चलाकर गहरे समुद्र को सुखा दिया। आप भक्तों को प्रेम से अपने पास बुलाते हैं जो आनन्द से आपकी गाथा गाते हैं। **782**
कुरक्किन प्पडैगॊंडु⋆ कुरै कडलिन् मीदु पोय्⋆ अरक्कर् अङ्गरङ्ग⋆ वॆञ्जरम् तुरन्द आदि नी⋆ इरक्क मण् कॊंडुत्तवर्कु⋆ इरुक्कम् ऑन्रुम् इन्रिये⋆ परक्क वैत्तळन्दु कॊण्ड⋆ पर्प पादन् अल्लैये॥३२॥	बानरों की सेना को फेनयुक्त सागर के ऊपर से युद्ध क्षेत्र में ले गये तथा अपने बाणों से राक्षसों का पलायन करा दिया। आपने एक भूखंड की याचना करके निष्ठुर होकर सारे पृथ्वी का स्वामीत्व ले लिया। कमल से चरण वाले प्रभु ! अपना विस्तार कर आपने जगत को लांघ दिया। **783**
मिन् निरत्त एयिट्ररक्कन्⋆ वीळ वॆञ्जरम् तुरन्दु⋆ पिन्नवर्करुळ् पुरिन्दु⋆ अरशळित्त पॆद्दियोय्⋆ नन्निरत्तॊर् इन्शॊल् एळै⋆ पिन्नै केळ्व ! मन्नु शीर्⋆ पॊन् निरत्त वण्णान् आय⋆ पुण्डरीकन् अल्लैये॥३३॥	चमकीले दांत वाले राक्षस को धनुष बाण से धराशायी कर आपने उदारता से राज्य उसके छोटे भाई को दे दिया। मृदु भाषी, सुन्दर एवं आकर्षक पिन्नै आपकी दुलहीन हैं। शाश्वत तेज एवं वर्ण वाले प्रभु आप सर्वव्याप्त हैं। **784**
आदि आदि आदि नी⋆ ऑर् अण्डम् आदि आदलाल्⋆ शोदियाद शोदि नी⋆ अदुण्मैयिल् विळङ्गिनाय्⋆ वेदम् आगि वेळ्वि आगि⋆ विण्णिनोडु मण्णुमाय्⋆ आदि आगि आयन् आय⋆ मायम् एन्न मायमे॥३४॥	सभी कारणों के कारण, ऊपर वाले प्रभु ! आप पृथ्वी एवं सब पदार्थो के रूप में आये। ज्योति की ज्योति एवं सभी वेदों के सच्चे शब्द ! आप ऊपर में वैदिक भूमि एवं यज्ञ हुए। तब आप गाय चराने वाले गोकुलम के किशोर हुए। **785**

अम्बुलावु मीनुम् आगि⋆ आमै आगि आळियार्⋆ तम् पिरानुम् आगि मिक्क अन्बु⋆ मिक्कदन्ऱियुम्⋆ कॉम्बरावु नुण्मरुङ्गुल्⋆ आयर् मादर् पिळ्ळैयाय्⋆ एम्बिरानुम् आय वण्णम्⋆ एन्गॊलो एम् ईशने ! ॥३५॥	पहले आप मछली हुए और तब पानी में कछुआ हुए। आप प्रिय शंख एवं चक्र के धारक हुए। गोपवंश की नाग सी पतली कमर वाली नारी के आप पुत्र हुए। आप हमारे प्रभु तथा समस्त जगत के नाथ हैं। **786**
आडगत्त पूण् मुलै⋆ यशोदै आय्च्चि पिळ्ळैयाय्⋆ शाडुदैत्तोर् पुळ्ळदावि⋆ कळ्ळ ताय पेय्मगळ्⋆ वीड वैत्त वॆय्य कॊङ्गै⋆ ऐय पाल् अमुदु शॆय्दु⋆ आडग क्कै मादर् वाय्⋆ अमुदम् उण्डदॆन्गॊलो॥३६॥	आप सुन्दर सुनहले उरोज वाली गोप नारी के बालक हुए। गाड़ी को ध्वंस किया, हवा में उड़ने वाली राक्षसी शत्रु पूतना के दोनों स्तनों पर अपना होंठ लगा आपने दूध पीते हुए उसके प्राण भी हर लिये। प्रभु ! कंगनवाली सुन्दरियों को आपने चूमा। **787**
काय्त्त नीळ् विळङ्गनि⋆ उदिर्त्तॆदिर्न्द पूङ्गुरुन्दम् शाय्त्तु⋆ मा पिळन्द कैत्तलत्त⋆ कण्णन् एन्बराल्⋆ आय्च्चि पालै उण्डु मण्णै उण्डु⋆ वॆण्णॆय् उण्डु⋆ पिन् पेय्च्चि पालै उण्डु⋆ पण्डोर् एनम् आय वामना ! ॥३७॥	आपने फलों को पेड़पर झकझोरा, युगल अर्जुन के पास गये। आपने केशी घोड़ा का जबड़ा फाड़ा और आपको सबका नाथ कृष्ण कहते हैं। गोप नारियों का दूध पिया, मिट्टी खाये तथा मक्खन खाये। वामन, वराह प्रभु ! आपने पूतना का स्तन पान किया। **788**
कडम् कलन्द वन्गरि⋆ मरुप्पॊशित्तोर् पॊय्गैवाय्⋆ विडम् कलन्द पाम्बिन् मेल्⋆ नडम् पयिन्ऱ नादने⋆ कुडम् कलन्द कूत्तन् आय⋆ कॊण्डल् वण्ण ! तण् तुळाय्⋆ वडम् कलन्द मालै मार्ब !⋆ कालनेमि कालने ! ॥३८॥	आपने गुस्सैल मदमत्त नरहाथी के सूंढ़ उखाड़े। गहरे पानी में पांचफन वाले सांप को कुचलते हुए आपने उसके फनों पर नृत्य किया। घन श्याम प्रभु ! सिर पर घड़ा रखकर आप नृत्य करते हैं। तुलसी की माला धारण करने वाले आप कालनेमी राजा के मृत्यु हैं। **789**
वॆऱ्पॆडुत्तु वेलै नीर्⋆ कलक्किनाय् अदन्ऱियुम्⋆ वॆऱ्पॆडुत्तु वेलै नीर्⋆ वरम्बु कट्टि वेलै शूळ्⋆ वॆऱ्पॆडुत्त इञ्जि शूळ्⋆ इलङ्गै कट्टळित्त नी⋆ वॆऱ्पॆडुत्तु मारि कात्त⋆ मेग वण्णन् अल्लैये ! ॥३९॥	गहरे क्षीर समुद्र के मंथन के लिये पथरीले ऊंचे पर्वत को आपने खींचा। लंका के सामने गहरे समुद्र में आपने सेतु का निर्माण किया। गहरे समुद्र से घिरे पथरीले पर्वतों को आप लांघ गये। आपने पथरीले पर्वत को ऊपर उठाया। प्रभु ! आप समुद्र सा सलोने वर्ण के हैं। **790**
आनै कात्तोर् आनै कॊन्ऱु⋆ अदन्ऱि आयर् पिळ्ळैयाय्⋆ आनै मेय्त्ति आनै उण्डि⋆ अन्ऱु कुन्ऱम् ऒन्ऱिनाल्⋆ आनै कात्तु मै अरि क्कण्⋆ मादरार् तिऱत्तु मुन्⋆ आनै अन्ऱु शॆन्ऱडर्त्त⋆ मायम् एन्न मायमे॥४०॥	आपने विपत्ति में पड़े हाथी की रक्षा की तथा मदमत्त हाथी की हत्या की। गाय चराने वाले किशोर के रूप में आपने श्वेत मक्खन चुराकर खाया। पर्वत को ऊंचा उठाकर आपने तेज वर्षा को रोका। काली आंखों वाली नप्पिनाय का वरण करने के लिये आपने वृषभों की हत्या की। **791**

आयन् आगि आयर् मङ्गै* वेय तोळ् विरुम्बिनाय्* आय ! निन्नै यावर् वल्लर्* अम्बरत्तॊडिम्बराय्* माय ! माय मायै कॊल्* अदन्रि नी वगुत्तलुम्* माय मायम् आक्किनाय्* उन् माय मुट्रुम् मायमे॥ ४१॥	गोपवंश के छोकरा के रूप में आपने बांस के समान कंधे वाली नप्पीनाय का वरण किया। प्रभु ! पृथ्वी तथा ऊपर आकाश में कौन आपको पार पा सकता है ? माया पति, अलौकिक नाथ, आश्चर्यों में आश्चर्य ! जो संसार आपने बनाया वह माया से बना है एवं उसमें माया भरा हुआ है। **792**
वेरिशैन्द शॆक्कर् मेनि* नीरणिन्द पुन्शडै* कीरु तिङ्गळ् वैत्तवन्* कै वैत्त वन्गपाल् मिशै* ऊरु शॆङ्गुरुदियाल्* निरैत्त कारणन्दनै* एरु शॆन्रडर्त्त ईश !* पेशु कूशम् इन्रिये॥ ४२॥	शिव का मुखमंडल लाल वर्ण का है, शरीर पर राख लिपटा है, एवं सिर में जटा है। चांद धारण किये हुए हैं, एवं हाथ में नर खोपड़ी भिक्षा के पात्र के रूप में है।आपने नरखोपड़ी को कमल के रक्त से भर दिया और उनकी लंबी उदासी को दूर किया। सात वृषभों से युद्ध करने वाले प्रभु ! कृपया बतायें कि आपने ऐसा क्यों किया ? **793**
वॆञ्जिनत्त वेळ्वॆण्* मरुप्पॊशित्तु उरुत्तमा* कञ्जनै क्कडिन्दु* मण् अळन्दु कॊण्ड कालने* वञ्जनत्तु वन्द पेय्च्चि* आवि पालुळ् वाङ्गिनाय्* अञ्जनत्त वण्णनाय्* आदि देवन् अल्लैये॥ ४३॥	प्रभु ! आपके चरण जिसने पृथ्वी को मापा । प्रभु ! आपने हाथी के पैर तोड़ दिये। प्रभु ! गुस्से वाला राजा कंस का बध किया जिसने आपको नुकसान का सोंचा था। प्रभु ! आपने पूतना का स्तन पिया एवं उसका प्राण ले लिया।आप गोपवंश के छोकरा के रूप में आये। आप अति श्यामल वर्णवाले हैं तथा देवताओं के नाथ हैं। **794**
पालिन् नीर्मै शॆम्बॊन् नीर्मै* पाशियिन् पशुम् पुरम्* पोलुम् नीर्मै पॊर्बुडैत्तडत्तु* वण्डु विण्डुलाम्* नील नीर्मै एन्रिवै* निरैन्द कालम् नान्गुमाय्* मालिन् नीर्मै वैयगम्* मरैत्तदॆन्न नीर्मैये॥ ४४॥	पहले दूध सा श्वेत रंग, तपते सुवर्ण का लाल रंग, चमकते काई का पीला रंग, काया फूल का श्यामल रंग, चारो युग इन्हीं चार रंगों के हैं। प्रभु ! शाश्वत जगत में आपका स्वरूप एवं गुण छिपा हुआ है। **795**
मण्णुळाय् कॊल् विण्णुळाय् कॊल्* मण्णुळे मयङ्गि निन्रु* एण्णुम् एण् अगप्पडाय् कॊल्* एन्न मायै निन् तमर्* कण्णुळाय् कॊल् शेयै कॊल्* अनन्दन् मेल् किडन्द एम् पुण्णिया* पुनन्दुळाय्* अलङ्गल् अम् पुनिदने ! ॥ ४५॥	प्रभु ! आप यहां धरती पर हैं या आकाश में हैं ? आप क्या अनगिनत सांसारिक विचित्रताओं में से एक हैं ? आप क्या प्रिय भक्तों की आंखों में बसे हैं ? आप क्या इन सबों से बहुत दूर हैं ? हे सागर सायी प्रभु ! **796**
तोडुपॆय्द तण् तुळाय्* अलङ्गलाडु शॆन्नियाय्* कोडुपट्रि आळि एन्दि* अञ्जिरै प्पुळ् ऊर्दियाल्* नाडुपॆट्र नन्मै एण्णम्* इल्लैयेनुम् नायिनेन्* वीडु पॆट्रिरप्पॊडुम्* पिरप्परुक्कुमा शॊल्ले॥ ४६॥	प्रभु ! आप अमृत सा मंजर के साथ तुलसी की माला पहने हुए हैं।शंख एवं चकधारी प्रभु ! पक्षीराज की सवारी करने वाले प्रभु ! इस नीचात्मा ने सांसारिक धन अर्जित नहीं किया तो क्या हुआ, कैसे यह आपके चरणों तक पहुंच सके तथा जीवन एवं मरण के बंधन से निकल सके ? **797**

कारॅाडॅात्त मेनि नङ्गळ्⋆ कण्ण ! विण्णिण् नादने⋆ नीर् इडत्त अरावणै⋆ क्किडत्ति एन्बर् अन्रियुम्⋆ ओरिडत्तै अल्लै⋆ एल्लै इल्लै एन्बर् आदलाल्⋆ शेर्विडत्तै नायिनेन्⋆ तॆरिन्दिरैञ्जुमा शॊल्ले ॥ ८७ ॥	श्याम घन सा वर्ण वाले प्रभु ! देवों के नाथ एवं हमलोगों के प्यारे ! हालांकि ऐसा कहा जाता है कि आप अकेले गहरे सागर में शेष शय्या पर सोये रहते हैं, परन्तु आप कल्पनातीत हैं, एवं समय तथा स्थान की सीमा से परे हैं। आंखों से भी प्यारे प्रभु, बताइये कहां आपसे मिलूं ? **798**
कुन्रिल् निन्रु वान् इरुन्दु⋆ नीळ् कडल् किडन्दु⋆ मण् ऑन्रु शॆन्र तॊन्रै उण्डु⋆ अदॊन्रिडन्दु पन्रियाय्⋆ नन्रु शॆन्र नाळवट्रळ्⋆ नल्लुयिर् पडैत्तवर्क्कु⋆ अन्रु देव मैत्तळित्त⋆ आदि देवन् अल्लैये ॥ ८८ ॥	आप पर्वत पर खड़े हैं, आकाश में बैठे हैं, समुद्र में सोये हैं, एवं पृथ्वी पर घूमते हैं। प्रभु ! आप समय पर सूकर बनकर आये एवं पृथ्वी को मिट्टी के ढ़ेले की तरह उठा लिये। प्रभु ! आपने संपूर्ण पृथ्वी को निगल लिया तथा उसे पुनः बाहर निकाल दिया। प्रभु ! आप ने स्त्रष्टा की भी सृष्टि की तथा सभी देवताओं पर निगरानी रखे हुए हैं। **799**
कॊण्डै कॊण्ड कोदै मीदु⋆ तेन् उलावु कूनि कून्⋆ उण्डै कॊण्डरङ्ग ओट्टि⋆ उळ् मगिळ्न्द नादन् ऊर्⋆ नण्डै उण्डु नारै पेर⋆ वाळै पाय नीलमे⋆ अण्डै कॊण्डु कॆण्डै मेयुम्⋆ अन्दणीर् अरङ्गमे ॥ ८९ ॥	प्रभु ! आप मधुमक्खी से भरे फूलके जूड़े वाली से आनन्दित हुए, उसने आपको चंदन दिया और आपने उसकी टेढ़ी रीढ़ को सीधा कर दिया। आप अरंगम ऊर यानी श्रीरंगम में रहते हैं जहां पोनै का जल बहता है, जिसमें केंकड़ा एवं बगुला, कया एवं केन्दै मछली, तथा नीले कमल वर्तमान हैं। **800**
वॆण् तिरै क्करुङ्गडल्⋆ शिवन्दुवेव मुन् ओर् नाळ्⋆ तिण् तिरल् शिलैक्कै वाळि⋆ विट्टवीरर् शेरुम् ऊर्⋆ एण् तिशै क्कणङ्गळुम्⋆ इरैञ्जि आडु तीर्त्त नीर्⋆ वण्डिरैत्त शोलैवेलि⋆ मन्नुशीर् अरङ्गमे ॥ ५० ॥	फेन का श्वेत रंग एवं सागर का काला रंग तप्त बाणों का लाल रंग हो गया। आप महान धनुष धारण कर जगत के नेता हो गये। आप अरंगम ऊर यानी श्रीरंगम में रहते हैं जहां यात्री बागों एवं उपजाउ क्षेत्र से बहने वाली कावेरी के जल में डुबकी लगाते हैं। **801**
शरङ्गळै तुरन्दु⋆ विल् वळैत्तिलङ्गै मन्नवन्⋆ शिरङ्गळ् पत्तरुत्तुदिर्त्त⋆ शॆल्वर् मन्नु पॊन्निडम्⋆ परन्दुपॊन् निरन्दु नुन्दि⋆ वन्दलैक्कुम् वार् पुनल्⋆ अरङ्गम् एन्बर् नान् मुगत्तयन् पणिन्द⋆ कोयिले ॥ ५१ ॥	हमलोग के लाड़ले एवं श्रीसंपन्न प्रभु ने धनुष से बाण की वर्षा कर राक्षसों का गढ़ लंका के राजा रावण के मस्तक काट डाले। आप ऐसे जल स्त्रोत में रहते हैं जिसकी लहरें सुवर्ण का ढ़ेर जमा करती हैं और यह है बह्मा से पूजित अरंगम ऊर यानी श्रीरंगम का प्रसिद्ध मंदिर। **802**
पॊट्रै उद्र मुट्रल् यानै⋆ पोर् एदिरन्दु वन्ददै⋆ पट्रि उट्र मट्रदन्⋆ मरुप्पॊशित्त पागन् ऊर्⋆ शिट्रॆयिट्रु मुट्रल् मूङ्गिल्⋆ मून्रु तण्डर् ऑन्रिनर्⋆ अट्र पट्रर् शुट्रि वाळुम्⋆ अन्दणीर् अरङ्गमे ॥ ५२ ॥	युद्ध की ललकार के साथ जब हाथी आपके सामने आया तो उस पर अपनी दृढ़ पकड़ के साथ आपने उसके दांत निकाल लिये। सात्विक, समर्पित, एवं कामनाहीन त्रिदंड धारी महात्मागन कावेरी के टापू अरंगम ऊर यानी श्रीरंगम में निवास करते हैं। **803**

मोडि योडिलच्चैयाय॰ शापम् एय्दि मुक्कणान्॰ कूडुशेनै मक्कळोडु॰ कॉण्डु मण्डि वॅञ्जमत्तु ओड॰ वाणन् आयिरम्॰ करङ्गळित्त आदि माल्॰ पीडु कोयिल् कूडु नीर्॰ अरङ्गम् एन्ऱ पेरदे॥५३॥	शिवजी के शाप से पर्वती देवी अपने पुत्रों एवं अन्य देवताओं के साथ विपत्ति से निपटने के लिये भाग चलीं जबकि बाना अपने हजारों हाथों से चारो ओर से आक्रमण किये हुए था।चक्रधारी प्रभु शांत अरंगम ऊर यानी श्रीरंगम में आज निवास करते हैं। **804**
इलैत्तलै च्चरम् तुरन्दु॰ इलङ्गै कट्टळित्तवन्॰ मलैत्तलै प्पिऱन्दिळिन्दु॰ वन्दु नुन्दु शन्दनम्॰ कुलैत्तलैत्तिऱुत्तॆऱिन्द॰ कुङ्गुम क्कुळम्बिनोडु॰ अलैत्तॊळुगु काविरि॰ अरङ्गमेय अण्णले॥५४॥	प्रभु ने लंका पर बाणों की वर्षा कर उसे ध्वंस कर दिया। आप तेज ज्वारों वाली कावेरी के मध्य अरंगम ऊर यानी श्रीरंगम में निवास करते हैं। कावेरी ऊपर के पहाड़ों से निकलकर तीव्रगति से ढ़लानों पर बहती हुई रास्ते से चन्दन वृक्ष, लाल एवं नारंगी बालू को लाती है। **805**
मन्नु मा मलर् क्किळत्ति॰ वैय मङ्गै मैन्दनाय्॰ पिन्नुम् आयर् पिन्नै तोळ्॰ मणम् पुणर्न्ददन्ऱियुम्॰ उन्न पादम् एन्न शिन्दै॰ मन्न वैत्तु नल्गिनाय्॰ पॊन्नि शूळ् अरङ्गमेय॰ पुण्डरीकन् अल्लैये॥५५॥	आप श्री एवं भू देवी के नाथ हुए। आप गोप वंश के पिन्नै के भी दुलहा हुए। आपने अपने चरण कमल को हमारे मन में बैठा दिया है। कमल जैसे प्रभु ! आप अरंगम ऊर यानी श्रीरंगम में निवास करते हैं। **806**
इलङ्गै मन्नन् ऐन्दॊडैन्दु॰ पैन्दलै निलत्तुग॰ कलङ्ग अन्ऱु शॆन्ऱु कॊन्ऱु॰ वॆन्ऱि कॊण्ड वीरने॰ विलङ्गु नूलर् वेद नावर्॰ नीदियान केळ्वियार्॰ वलङ्गॊळ क्कुडन्दैयुळ्॰ किडन्द मालुम् अल्लैये॥५६॥	लंका के राजा के पांच और पांच मस्तक जमीन पर लोटे, और आपने युद्ध कर उसपर विजय पायी। वैदिक मंत्र वक्ता विद्वानगन एवं वैदिक अर्चकगन करबद्ध होकर कुदन्दै मंदिर में आते हैं। **807**
शङ्गुदङ्गु मुन्गै नङ्गै॰ कॊङ्गै तङ्गल् उट्रवन्॰ अङ्गमङ्ग अन्ऱु शॆन्ऱु॰ अडर्त्तॆऱिन्द आळियान्॰ कॊङ्गुदङ्गु वार् कुळल्॰ मडन्दैमार् कुडैन्द नीर्॰ पॊङ्गुदण् कुडन्दैयुळ्॰ किडन्द पुण्डरीकने !॥५७॥	सीता की उरोज की कामना रखने वाला राक्षस राज रावण को आपने बाण से माार दिया।आप कुदन्दै के जल में शयन करते हैं जहां सुगंधित फूल के लंबे जूड़े वाली नारियां स्नान एवं जल विहार करने आती हैं। **808**
मरम् कॆड नडन्दडर्त्तु॰ मत्त यानै मत्तगत्तु॰ उरम् कॆड प्पुडैत्तु॰ ओर् कॊम्बॊशित्तुगन्द उत्तमा॰ तुरङ्गम् वाय् पिळन्दु॰ मण् अळन्द पाद॰ वेदियर् वरम् कॊळ क्कुडन्दैयुळ्॰ किडन्द मालुम् अल्लैये॥५८॥	युगल अर्जुन वृक्ष के बीच सरकते हुए आप ने उसे घास के दो पत्तों की तरह गिरा दिया। आपने मदमत्त हाथी के सिर पर प्रहार कर उसके दांत आसानी से उखाड़ लिए। केशी घोड़ा के जबड़ों को फाड़ा एवं एक ही पग में पृथ्वी को माप दिया। कुदन्दै के शांत स्थल में आप वैदिक ऋषियों के वरदान होकर रहते हैं। **809**

शालि वेलि तण् वयल्⋆ तडङ्गिडङ्गु पूम्बॊऴिल्⋆ कोल माडनीडु⋆ तण् कुडन्दै मेय कोवला⋆ कालनेमि वक्करन्⋆ करन् मुरन् शिरम् अवै⋆ कालनोडु कूड⋆ विल् कुनित्त विऱ् कै वीरने ! ॥५९॥	गोपवंश के प्रभु ! खेतों एवं बागों से घिरे अच्छे अटारियों से युक्त कुदन्दै के जल में आप शयन करते हैं। कालनेमि के मस्तक को जमीन पर लुघड़ाते हुए आपने उसे नरक भेज दिया। आपने बक्रदन्त एवं भयानक मुरा के सिर काट डाले। **810**
शॆऴुङ्गॊऴुम् पॆरुम्बनि पॊऴिन्दिड⋆ उयरन्द वेय् विऴुन्दुलरन्दॆऴुन्दु⋆ विण् पुडैक्कुम् वेङ्गडत्तुळ् निन्ऱु⋆ एऴुन्दिरुन्दु तेन् पॊरुन्दु⋆ पूम्बॊऴिल् तऴै क्कॊऴुम्⋆ शॆऴुन् तडङ्गुडन्दैयुळ्⋆ किडन्द मालुम् अल्लैये॥६०॥	आप उस वेंकटम पर्वत पर खड़े हैं जहां बांस भी प्रार्थना करना जानते हैं। रात की ओस यानी शीत के साथ वे जमीन पर झुक जाते हैं और दिन के सूर्य की गर्मी के साथ वे उठ खड़े होते हैं। आप कुदन्दै में लेटे हैं जहां मधुमक्खियां फूलों में भरी रहती हैं। वे ऊपर उड़ कर फिर प्रभु का अमृत पीने के लिये नीचे आ जाते हैं। **811**
नडन्द काल्गळ् नॊन्दवो⋆ नडुङ्गु ञालम् एनमाय्⋆ इडन्द मॆय् कुलुङ्गवो⋆ विलङ्गु माल् वरै च्चुरम्⋆ कडन्द काल् परन्द⋆ काविरि क्करै क्कुडन्दैयुळ्⋆ किडन्दवाऱॆऴुन्दिरुन्दु पेशु⋆ वाऴि केशने ! ॥६१॥	क्या आपके पैर में चोट के कारण या पैर थक जाने के कारण ः भूदेवी के उठाने से, या पृथ्वी के मापने से आप उस कावेरी के मध्य सोये हैं, जो कुदन्दै के समतल में विभिन्न स्त्रोतों में वंट जाती है। विनती है कि उठिये और एक शब्द बोलिये। हे केशव ! हे अलौकिक वराह ! **812**
करण्डम् आडु पॊय्गैयुळ्⋆ करुम् पनै प्पॆरुम् पऴम्⋆ पुरण्डु वीऴ वाळै पाय्⋆ कुरुङ्गुडि नॆडुन्दगाय्⋆ तिरण्ड तोळ् इरणियन्⋆ शिनङ्गॊळ् आगम् ऒन्ऱैयुम्⋆ इरण्डु कूऱु शॆय्दुगन्द⋆ शिङ्गम् एन्बदुन्नैये॥६२॥	वालै मछली वाले ताल के किनारे पुराने कुरूंगुदी के प्रभु ! जल पक्षी एक पैर पर खड़े हैं एवं ताड़ के फल जमीन पर गिरे हैं। मजबूत अंगों वाला हिरण्य नरसिंह के द्वारा दो टुकड़ों में चीर दिया गया। प्रभु ! कृपया बताइये कि क्या वह आप नहीं थे ? **813**
नन्ऱिरुन्दु योग नीदि⋆ नण्णुवार्कळ् शिन्दैयुळ्⋆ शॆन्ऱिरुन्दु तीविनैगळ्⋆ तीर्त्त देव देवने⋆ कुन्ऱिरुन्द माड नीडु⋆ पाडगत्तुम् ऊरगत्तुम्⋆ निन्ऱिरुन्दु वॆग्कणै⋆ क्किडन्ददॆन्न नीर्मैये॥६३॥	योग मार्ग का अवलंब लेने वाले सबों के मन में आप बसते हैं।देवों के प्रभु ! आप उनके पास जाकर उनके मार्ग को सरल बनाते हैं जिससे कि वे आप तक आ सकें। प्रभु ! आप पडगम (कांचीपुरम पांडवदूत भगवान) में बैठते हैं, प्राचीन उरूगम (कांचीपुरम उलगलंदा पेरूमल यानी त्रिविकम भगवान) में खड़े हैं, और महलों से घिरे वेग्का (कांचीपुरम यथोक्तकारी भगवान) में शयन करते हैं। **814**
निन्ऱदॆन्दै ऊरगत्तु⋆ इरुन्ददॆन्दै पाडगत्तु⋆ अन्ऱु वॆग्कणै क्किडन्ददु⋆ एन् इलाद मुन्नॆलाम्⋆ अन्ऱु नान् पिऱन्दिलेन्⋆ पिऱन्द पिन् मऱन्दिलेन्⋆ निन्ऱदुम् इरुन्ददुम्⋆ किडन्ददुम् एन् नॆञ्जुळे॥६४॥	पुराकाल में जब मैं शून्य था प्रभु वेग्का में सोये थे, पडगम में बैठे थे, एवं उरूगम में खड़े थे। उस समय तक आत्मा की रचना हुई नहीं थी। लेकिन एक बार सृजन हो जाने के बाद फिर आपका सोना, खड़ा होना, एवं बैठना भूला नहीं हूं, सब मेरे हृदय में है।**815**

निर्पदुम् ओर् वैर्पगत्तु⋆ इरुप्पुम् विण् किडप्पदुम्⋆ नर् पैरुन् तिरै क्कडलुळ्⋆ नान् इलाद मुन्नेलाम्⋆ अर्पुदन् अनन्त शयनन्⋆ आदिबूदन् मादवन्⋆ निर्पदुम् इरुप्पदुम्⋆ किडप्पदुम् एन्नेञ्जुळे॥ ६५ ॥	आप का ऊंचे पर्वत पर खड़ा होना, आकाश में बैठना, गहरे समुद्र में सोना, सब आत्मा के सृजन के पहले था। अलौकिक प्रभु! प्रथम कारण प्रभु ! शाश्वत शयनावस्था वाले प्रभु ! आपका खड़ा होना, बैठना, एवं सोना सब मेरे हृदय में है।**816**
इन्रु शादल् निन्रु शादल्⋆ अन्रि यारुम् वैयगत्तु⋆ ऑन्रि निन्रु वाळ्तल् इन्मै⋆ कण्डुम् नीशर् एन्गोलो⋆ अन्रु पार् अळन्द पाद⋆ पोदै उन्नि वानिन्मेल्⋆ शेन्रु शेन्रु देवराय्⋆ इरुक्किलाद वण्णमे॥ ६६ ॥	शायद आज या आज नहीं तो किसी एक दिन हम सभी मृत्यु को प्राप्त होंगे। यह निश्चित है कि इस धरा धाम पर कोई अमर नहीं है। पूर्व में प्रभु आपने पृथ्वी को मापा था, वही आपके चरण उनके सहयोगी हैं जो देवों एवं अन्य पारलौकिक जीवों के साथ आपकी पूजा के लिये जाते हैं।**817**
शण्ड मण्डलत्तिन् ऊडु⋆ शेन्रु वीडु पेट्रु मेल्⋆ कण्डु वीडिलाद कादल्⋆ इन्बम् नाळुम् एय्दुवीर्⋆ पुण्डरीक पाद⋆ पुण्य कीर्त्ति नुम् शेवि मडुत्तु⋆ उण्डु नुम् उरुविनै⋆ त्तुयरुळ् नीङ्गि उय्म्मिनो॥ ६७।	सूर्य के साथ चलकर ऊच्च स्थिति में रहना ः जो प्रेम करना चाहते हैं तथा आनन्द में सतत जीना चाहते हैं उन्हें चरण कमल की प्रशस्ति का कर्णामृत पान करना चाहिये। पुराने कर्म के बोझ दूर होकर चैतन्य अवस्था की प्राप्ति होगी। **818**
मुत्तिरत्तु वाणियत्तु⋆ इरण्डिल् ऑन्रु नीशर्गळ्⋆ मत्तराय् मयङ्गुगिन्रदु⋆ इट्टदिल् इरन्दु पोन्दु⋆ एत्तिरत्तुम् उय्वदोर्⋆ उपायम् इल्लै उय्गुरिल्⋆ तॉत्तिरुत्त तण् तुळाय्⋆ नन्मालै वाळ्त्ति वाळ्मिनो॥ ६८ ॥	तीन गुण ः दो में से एक है कि नीच लोग कष्ट के जीवन से तब तक प्यार करते हैं जब तक मृत्यु उनकी सहायता में नहीं आता। कर्म के समुद्र को पार करना आसान नहीं है और अगर अवश्य पार ही करना चाहते हो तो तेजोमय वक्षस्थल पर तुलसी की माला धारण करने वाले प्रभु का गुणानुवाद करो। **819**
काणिलुम् उरु प्पॉलार्⋆ शेविक्किनाद कीर्त्तियार्⋆ पेणिलुम् वरन्दर⋆ मिडुक्किलाद देवरै⋆ आणम् एन्रडैन्दु वाळुम्⋆ आदर्गाळ् ! एम् आदिपाल्⋆ पेणि नुम् पिरप्पैनुम्⋆ पिणक्करुक्क किऱ्िरे॥ ६९ ॥	संसारी जीव छोटे देवों के शरण जाते हैं जिनके स्वरूप एवं यश प्रशस्त नहीं हुए हैं, जिनको फल देने का कोई अधिकार नहीं है। अगर आप जन्म मरण के बन्धन को काटना चाहते हैं, तो आदि नाथ की पूजा कीजिये जो इसलोक तथा परलोक में जीवन प्रदान करते हैं। **820**
कुन्दमोडु शूलम् वेल्गळ्⋆ तोमरङ्गळ् तण्डु वाळ्⋆ पन्दमान देवर्गळ्⋆ परन्दु वानगम् उर⋆ वन्द वाणन् ईरैञ्ञूरु⋆ तोळ्गळै त्तुणित्त नाळ्⋆ अन्द अन्द आगुलम्⋆ अमररे अरिवरे॥ ७० ॥	भाला, फरसा, त्रिशूल, छूरा, लाठी आदि धारण करने वाले देवगन युद्ध से भाग कर आकाश में शरण लिये। तब सहस्त्र हाथ वाले बाणा ने अपनी भुजायें तथा कंधे खो दिये। चक्र ने जो विनाश किया उसके साक्षी आकाश के देवगण हैं। **821**

वण्डुलावु कोदै मादर्★ कारणत्तिनाल् वॆंगुण्डु★ इण्ड वाणन् ईरैञ्ञूऱु★ तोळ्गळै त्तुणित्तनाळ्★ मुण्डण् नीऱन् मक्कळ् वॆप्पु★ मोडियङ्गि ओडिड कण्डु★ नाणि वाणनुक्किरङ्गिनान्★ ऎम् मायने॥७१॥	मधुमक्खी लिपटे माला वाली बेटी की सुरक्षा के लिये सहस्त्रों हाथ वाला बाणा युद्ध में आया जहां उसके सारी भुजायें नष्ट हो गयीं। भस्म लपेटे जटाधारी शिव अपने बच्चों एवं पत्नि के साथ चक्र की ज्वाला से चरवाहे प्रभु की दया से बच सके। **822**
पोदिल् मङ्गै पूदल क्किळत्ति★ देवि अन्ऱियुम्★ पोदुदङ्गु नान्मुगन् मगन्★ अवन् मगन् शॊल्लिल्★ मादुदङ्गु कूऱन् एऱ★ अदूर्ति ऎन्ऱु वेद नूल्★ ओदुगिन्ऱदूण्मै★ अल्लदिल्लै मट्रैक्किल्ले॥७२॥	कमल वाली श्री वक्षस्थल पर एवं भू देवी चरणों पर आपकी सहधर्मिनी हैं एवं आपके नाभि कमल पर स्त्रष्टा देव बैठे हैं। ऐसा वेद कहता है कि अर्द्धनारीश्वर वृषारोही शिव ब्रह्मा के पुत्र हैं बाकी सब झूठ है। **823**
मरम् पॊद च्चरम् तुरन्दु★ वालि वीळ मुन् ओर् नाळ्★ उरम् पॊद च्चरम् तुरन्द★ उम्बर् आळि ऎम्बिरान्★ वरम् कुऱिप्पिल् वैत्तवर्क्कु★ अलादु वानम् आळिलुम्★ निरम्बु नीडु पोगम् ऎत्तिऱत्तुम्★ यार्क्कुम् इल्लैये॥७३॥	पूर्व में देवों के नाथ हमारे प्रभु ने एक बाण से वृक्षों को बेध दिया एवं एक बाण से बानर जाति के राजा वाली की छाती को बेध दिया। जो आकाश के नाथ हैं उनको प्राप्त करने का जो लक्ष्य नहीं रखता उसको यहां पूर्णानन्द किसी अन्य से तथा अन्य साधन से मिलने को रहा। **824**
अऱिन्दऱिन्दु वामनन्★ अडियणै वणङ्गिनाल्★ शॆऱिन्दॆळुन्द ञानमोडु★ शॆल्वमुम् शिऱन्दिडुम्★ मऱिन्दॆळुन्द तॆण् तिरैयुळ्★ मन्नु माले वाळ्त्तिनाल्★ पऱिन्दॆळुन्दु तीविनैगळ्★ पट्रऱुदल् पान्मैये॥७४॥	ज्ञान एवं शिक्षा से जो वामन भगवान की पूजा करते हैं उनके लिये जागृति एवं संपन्नता आप हीं हैं। सागर में सोने वाले ऊपर के प्रभु की जो यशगाथा गाते हैं उनका हृदय पूर्व कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाता है। **825**
ऒन्ऱि निन्ऱु नट्रवम् शॆय्दु★ ऊळि ऊळिदोऱॆल्लाम्★ निन्ऱु निन्ऱवन् गुणङ्गळ्★ उळ्ळि उळ्ळम् तूयराय्★ शॆन्ऱु शॆन्ऱु देव देवर्★ उम्बर् उम्बर् उम्बराय्★ अन्ऱि ऎङ्गळ् शॆङ्गण्माले★ यावर् काण वल्लरे॥७५॥	बार बार मन उन पर लगाकर हृदय को स्थिर करो।उनके गुणों को समझो जो अनादि काल से उनके साथ है। उनके नाम को बार बार स्मरण कर देवों के देव को प्राप्त करो। इसके सिवा शेंगानमालै के प्रभु से मिलने का अन्य कोई उपाय नहीं है। **826**
पुन्बुल वळि अडैत्तु★ अरक्किलच्चिनै शॆय्दु★ नन्बुल वळिदिऱन्दु★ ञान नर् चुडर्गॊळी इ★ ऎन्बिल् ऎळ्गिनॆञ्जुरुगि★ उळ्गनिन्दॆळुन्ददोर्★ अन्बिलन्ऱि आळियानै★ यावर् काण वल्लरे॥७६॥	इन्द्रियों को काबू में रखो एवं निश्चित मार्ग तय करो। अपने हृदय के कपाट को खोलकर उसमें दीपक जलाओ। झूमते शरीर, पिघलते हृदय, एवं ज्ञान के परिपक्व मृदु ध्वनि से जो प्रेम का लहर उठेगा उसी से प्रभु का दर्शन होगा। **827**

एट्टुम् एट्टुम् एट्टुमाय्* ओर् एळुम् एळुम् एळुमाय्* एट्टु मून्रुम् ऑन्रुम् आगि* निन्र् आदि देवनै* एट्टिन् आय पेदमोडु* इरैञ्जि निन्रवन् पैयर्* एट्टेळुत्तुम् ओदुवार्गळ्* वल्लर् वानम् आळवे॥७७॥	प्रथम कारण प्रभु चौबीस एवं इक्कीस हैं तथा बारह आदित्य हैं। प्यारे समर्पित भक्तगण जो आपके चरण कमल पर नतमस्तक होते हैं एवं अष्टाक्षर से आपके नाम को जानते हैं वे ऊपर गगन के स्वामी होते हैं। **828**
शोर्विलाद कादलाल्* तौंडक्करा मनत्तराय्* नीर् अरावणै क्किडन्द* निन्मलन् नलङ्गळल्* आर्वमोडिरैञ्जि निन्रु* अवन् पैयर् एट्टेळुत्तुम्* वारम् आग ओदुवार्गळ्* वल्लर् वानम् आळवे॥७८॥	स्थिर प्रेम हृदय को भरता है एवं सागर में शेषशायी के चरणकमल के प्रेम से हृदय सदा भरा रहता है। जो खड़ा होकर अष्टाक्षर से आपके नाम का उच्चारण करते हैं उन्हें आप सुरक्षा एवं गगन का स्वामित्व प्रदान करते हैं। **829**
पत्तिनोडु पत्तुमाय्* ओर् एळिनोडौरैन्बदाय् पत्तिनाल् दिशैक्कण् निन्र्* नाडु पैढ् नन्मैयाय्* पत्तिन् आय तोढ्मोडु* ओर् आढ्ल् मिक्क आदिपाल्* पत्तराम् अवर्क्कलादु* मुत्ति मुढ्ल् आगुमे॥७९॥	प्रभु आठों दिशाओं, ऊपर, नीचे एवं सोलहों पर शासन करते हैं। आप ही संपूर्ण ब्रह्मांड एवं चारों दिशाओं पर शासन करते हैं। आपके दस अवतार हमलोगों के प्रति आपका प्रेम प्रदर्शित करता है। आपके चरणकमल की सेवा से हमारा निश्चित उद्धार होगा। **830**
वाशि आगि नेशम् इन्रि* वन्दॆदिरन्द देनुकन्* नाशम् आगि नाळ् उलप्प* नन्मै शेर् पनङ्गनिक्कु* वीशि मेल् निमिरन्द तोळिल्* इल्लै आक्किनाय् कळर्कु* आशै आम् अवर्क्कलाल्* अमरर् आगल् आगुमे॥८०॥	प्यार विहीन घृणित धेनुकन गदहा पहाड़ की भांति था। आपने उसे नचाकर ताड़ वृक्ष पर दे मारा। दिव्य चरण कमल वाले प्रभु ! आपने असुरों के समूह का नाश किया। आप पर हृदय से प्रेम करने से नश्वर जीव भी देवता हो जाता है। **831**
कडैन्दु पार्कडल् किडन्दु* कालनेमियै क्कडिन्दु* उडैन्द वालि तन् पिनुक्कु* उदव वन्दिरामनाय्* मिडैन्द एळ् मरङ्गळुम्* अडङ्ग एय्दु वेङ्गडम्* अडैन्द माल पादमे* अडैन्दु नाळुम् उय्म्मिनो॥८१॥	श्वेत क्षीरसागर के प्रभु ! कालनेमी के विजेता ! आप पृथ्वी पर कोदंड राम बनकर आये। आपने सुग्रीव को वचन दिया एवं वृक्षों को बेधते हुए एक वाण छोड़ा। वेंकटम में रहने वाले प्रभु ! सुन्दर पृथ्वी के लोगों, आओ प्रभु से प्रेम करो, एवं पुनर्जीवन प्राप्त करो। **832**
एत्तिरत्तुम् ऑत्तु निन्रु* उयरन्दुयरन्द पैढ्रियोय्* मुत्तिरत्तु मूरि नीर्* अरावणै त्तुयिन्र्* निन् पत्तुरुत्त शिन्दैयोडु* निन्रु पाशम् विट्टवर्क्कु* एत्तिरत्तुम् इन्बम् इङ्गुम्* अङ्गुम् एङ्गुम् आगुमे॥८२॥	सभी रूपों में मिलने वाले प्रभु ! सभी रूपों से पृथक रहने वाले प्रभु ! गहरे सागर में योग निद्रा में शेषशायी प्रभु ! आप पर जो निर्भर हैं और सबकुछ न्योछावर कर दिया है उनके लिये यहां वहां सभी जगह आनंद का जीवन प्रतीक्षा करता है। **833**

मट्टुलावु तण् तुळाय्⋆ अलङ्गलाय् ! पॉलन् कळल्⋆ विट्टु वीळ्विलाद पोगम्⋆ विण्णिल् नण्णि एरिनुम्⋆ एट्टिनोडिरण्डॅनुम्⋆ कयिट्रिनाल् मनन्दनै कट्टि⋆ वीडिलादु वैत्त कादल्⋆ इन्बम् आगुमे॥८३॥	अमृतमयी तुलसी के माला वाले प्रभु ! दिव्य चरणकमल वाले प्रभु ! शाश्वत स्वर्ग का आनंद मिला तो क्या हुआ ? हृदय को स्नेह के धागे से बांधकर आप को सतत याद करने से जो आनंद मिलता है वह कहीं ज्यादा प्यारा है। **834**
पिन् पिरक्क वैत्तनन् कॉल्⋆ अन्रि निन्रु तन् कळर्कु⋆ अन्बुरैक्क वैत्त नाळ्⋆ अरिन्दनन् कॉल् आळियान्⋆ तन् तिरत्तॉर् अन्बिला⋆ अरिविलाद नायिनेन्⋆ एन् तिरत्तिल् एङ्गॉल्⋆ एम्बिरान् कुरिप्पिल् वैत्तदे॥८४॥	प्रभु आप ही समय के चक्र को नियंत्रित करते हैं। क्या आप हमें दूसरा जन्म देकर इस पृथ्वी पर नीच तिरस्कृत कुत्ते की भांति रखेंगे या दिव्य तेजोमय वैकुण्ठ में अपने चरणकमलों की सेवा में लगायेंगे ? पता नहीं हमारे भाग्य में क्या है ? **835**
नच्चरा अणैक्किडन्द⋆ नाद ! पाद पोदिनिल्⋆ वैत्त शिन्दै वाङ्गुवित्तु⋆ नीङ्गुविक्क नी इनम्⋆ मॅय्त्तन् वल्लै आदलाल्⋆ अरिन्दनन् निन् मायमे⋆ उय्त्तु निन् मयक्किनिल्⋆ मयक्कल् एन्नै मायने ! ॥८५॥	शेषशायी प्रभु ! कमल के फूल जैसे चरण वाले प्रभु ! आप ही हमारे विचारों को बनाने एवं नष्ट करने में समर्थ हैं। हम अब यह जान गये कि आप हमारे चेतन से परे हैं । हमारे प्रभु! प्रार्थना करते हैं कि हमें पुनः इन्द्रियों के जाल में नहीं फंसाइये। **836**
शाडु शाडु पादने !⋆ शलङ्गलन्द पॉय्गैवाय्⋆ आडराविन् वन्पिडर्⋆ नडम् पयिन्र नादने⋆ कोडु नीडु कैय ! शॅय्य⋆ पाद नाळुम् उन्निनाल्⋆ वीडनाग मॅय्शॅयाद⋆ वण्णम् एन्गॉल् कण्णने ! ॥८६॥	प्रभु ! आपने गाड़ी को ध्वंस किया। आप ही ताल में प्रवेशकर कमल रूपी चरणों से सांप के फनों पर नृत्य किया। प्रभु ! आप हाथ में शंख धारण करने वाले हैं।आप पर हमेशा ध्यान लगाये रहते हैं फिर भी आप मुक्त नहीं करते। यह सब क्या है कन्ना प्रभु ? **837**
नॅट्रि पॅट्र कण्णन् विण्णिन्⋆ नादनोडु पोदिन् मेल्⋆ नट्रवत्तु नादनोडु⋆ मट्रुम् उळ्ळ वानवर्⋆ कट्र पॅट्रियाल् वणङ्गु⋆ पाद ! नाद ! वेद⋆ निन् पट्रलाल्लॉर् पट्रु मट्रदुट्रिलेन् उरैक्किले॥८७॥	वेद के प्रभु ! आपके चरण शिव पूजते हैं देवताओं के राजा इन्द्र पूजते हैं तथा कमलासीन ब्रह्मा पूजते हैं। ऊंचे स्वर्ग के सभी देव नतमस्तक होकर आपका प्रशस्ति गान करते हैं। सच्चाई यह है कि आपसे पृथक हमारे पास कोई प्रेम नहीं है जो हम अपने हृदय में रख सकें। **838**
वॅळ्ळैवेलै वॅर्पुनाट्टि⋆ वॅळ्ळॅयिट्रावळाय्⋆ अळ्ळला क्कडैन्द⋆ अन्ररुवरैक्कॉर् आमैयाय्⋆ उळ्ळ नोय्गाळ् तीर् मरुन्दु⋆ वानवर्क्कळित्त⋆ एम् वळ्ळलारै अन्रि⋆ मट्रॉर् दॅय्वम नान मदिप्पने॥८८॥	उदार प्रभु की हम प्रशस्ति गाते हैं। पुराकाल में दूध से भरे सागर के मंथन के लिये आपने कच्छप रूप में पर्वत का भार वहन किया। मेरू पर्वत के चारों ओर वासुकी नाग की मंथन रस्सी का उपयोग कर आपने अमृत मथ कर निकाला तथा उसे देवताओं को दिया। अब हम दूसरे देवता के पास कैसे जायेंगे ? **839**

पार् मिगुत्त पारम् मुन्⋆ ऑळिच्चुवान् अरुच्चनन्⋆ तेर् मिगुत्तु मायम् आक्कि⋆ निन्रु कॉन्रु वॅन्रिशेर्⋆ मारदर्क्कु वान् कॉडुत्तु⋆ वैयम् ऐवर् पालदाम्⋆ शीर् मिगुत्त निन् अलाल्⋆ ओर् दॅय्वम् नान् मदिप्पने॥८१॥	जगत को दुष्ट राजाओं से मुक्त कराने के लिये आप वीर अर्जुन के सारथी बने तथा आश्चर्य से भरे युद्ध का संचालन किया। आकाश आपने सौ पुत्रों (कौरवों) को दिया तथा पृथ्वी का राज्य पांच (पांडवों) को दिया। गौरवशाली नाथ ! आपको छोड़कर किस देवता की प्रशंसा करें ? **840**
कुलङ्गळाय ईरिरण्डिल्⋆ ऑन्रिलुम् पिरन्दिलेन्⋆ नलङ्गळाय नर्कलैगळ्⋆ नाविलुम् नविन्रिलेन्⋆ पुलन्गाळ् ऐन्दुम् वॅन्रिलेन्⋆ पॉरियिलेन् पुनिद⋆ निन् इलङ्गु पादम् अन्रि⋆ मट्रॉर् पट्रिलेन् एम् ईशने ! ॥९०॥	हाय ! न तो मैं अच्छे कुल का जन्मा हूं और न चारों वेदों की संस्कृति से परिचित हूं। पांचों इन्द्रियों के सुख को मैं जीत नहीं सका हूं। हे पावन प्रभु ! हमारे जीवन का एक मात्र आधार आपके चरण कमल की सेवा है। **841**
पण् उलावु मॅन् मॉळि⋆ प्पडै त्तडङ्गणाळ् पॉरुट्टु⋆ एण् इला अरक्करै⋆ नॅरुप्पिनाल् नॅरुक्किनाय्⋆ कण् अलाल् ओर् कण् इलेन्⋆ कलन्द शुट्रम् मट्रिलेन्⋆ एण् इलाद माय ! निन्नै⋆ एन्नुळ् नीक्कल् एन्रुमे॥९१॥	मृदु भाषिणी सीता के कटाक्ष नयनों के प्रेम के खातिर आपने अग्नि बाणों से राक्षस समूह का नाश किया। आप अकेले हमारे ध्यान में रहते हैं, हमारा कोई निकट संबंधी नहीं है। अनगिनत चमत्कारों वाले प्रभु ! हमें नहीं छोड़ने का अब वचन दीजिये। **842**
विडै क्कुलङ्गळ् एळ् अडर्त्तु⋆ वॅन्रि वेर्कण् मादरार्⋆ कडि क्कलन्द तोळ् पुणर्न्द⋆ कालि आय ! वेलै नीर्⋆ पडैत्तडैत्तदिल् किडन्दु⋆ मुन् कडैन्द निन् तनक्कु⋆ अडैक्कलम् पुगुन्द एन्नै⋆ अञ्जल् एन्न वेण्डुमे॥९२॥	गोपवंश के नाथ ! आपने पिन्नै देवी के लिये वृषभों से प्रतियोगिता में युद्ध किया तथा विजेता होकर उस किशोरी को अपने बाहों में समेट लिया। आपने सागर बनाया, इसका मंथन किया, यहां सोये, तथा इस पर सेतु का निर्माण किया। मैं केवल आप में शरणागति लेता हूं। हमें आश्वासन देते हुए कहिए 'डरो मत'। **843**
शुरुम्परङ्गु तण् तुळाय्⋆ तुदैन्दलर्न्द पादमे⋆ विरुम्बि निन्रिरैञ्जु वेर्कु⋆ इरङ्गरङ्ग वाणने⋆ करुम्बिरुन्द कट्टिये !⋆ कडल् किडन्द कण्णने⋆ इरुम्बरङ्ग वॅञ्जरम् तुरन्द⋆ विल् इरामने ! ॥९३॥	सुन्दर चरणकमल एवं अमृतमय सुगंधित तुलसी माला वाले प्रभु ! ईख के माधुर्य एवं गहरे सागर वाले आंखों के तारा ! महान धनुर्धारी ! आपने तेज बाणों की वर्षा कर दी। अरंगम ऊर यानी श्रीरंगम के नाथ ! प्रार्थना है कि आप भक्तों की पुकार को सुनें। **844**
ऊनिल् मेय आवि नी⋆ उरक्कमोडुणर्च्चि नी⋆ आनिल्मेय ऐन्दुम् नी⋆ अवट्रुळ् निन्र तूय्मै नी⋆ वानिनोडु मण्णुम् नी⋆ वळङ्गडल् पयनुम् नी यानुम् नी अदन्रि⋆ एम्बिरानुम् नी इरामने ! ॥९४॥	आप सुषुप्ता एवं जाग्रत अवस्था हैं, शरीर के भीतर प्राण हैं, गाय के पांच आनन्द हैं, एवं उसकी शुद्धता हैं। पृथ्वी एवं गहरे सागर तथा समस्त संपन्नता आप ही हैं। सीता राम ! आप हमारी आत्मा हैं एवं मेरे नाथ हैं। **845**
अडक्करुम् पुलन्गाळ्⋆ ऐन्दडक्कि आशैयाम् अवै⋆ तॉडक्करुत्तु वन्दु निन्⋆ तॉळिर्गण् निन्र एन्नै नी⋆ विड क्करुदि मॅय् शॅयादु⋆ मिक्कोर् आशै आक्किलुम्⋆ कडर् किडन्द निन् अलाल्⋆ ओर् कण्णिलेन् एम् अण्णले ! ॥९५॥	हमने पांचो इन्द्रियों का शमन किया, हमारा हृदय नीच विचारों से ग्रस्त था। उनको जड़ से उखाड़ कर आप के चरण सेवा में आ गया। आप निर्णय कीजिये कि हम जायें एवं हमारे हृदय को ज्यादा इच्छाओं से भर दीजिये। गहरे सागर में सोने वाले ! आपके अतिरिक्त खोजने वाला हमारा कोई नहीं है। **846**

वरम्बिलाद मायै ! माय !⋆ वैयम् एळुम् मैय्म्मैये⋆ वरम्बिल् ऊळि एत्तिलुम्⋆ वरम्बिलाद कीर्त्तियाय्⋆ वरम्बिलाद पल् पिरप्पु⋆ अरुत्तु वन्दु निन् कळल्⋆ पॊरुन्दुमा तिरुन्द नी⋆ वरम्शॆय् पुण्डरीकने ! ॥९६॥	अनन्त लीला वाले प्रभु ! सबके भीतर ऊपर नीचे के प्रभु ! अनन्त गाथा, अनन्त काल से प्रशंसित, अनन्त जन्म के चक्र को काटने वाले ! हमें ले चलें, एवं अपने पावन चरण से बांध दें। मेरी केवल यही एक प्रार्थना है। **847**
वॆय्य आळि शङ्गु दण्डु⋆ विल्लुम् वाळुम् एन्दु शीर्⋆ कैय शॆय्य पोदिल् मादु⋆ शेरुम् मार्ब नादने⋆ ऐयिल् आय आक्कै नोय्⋆ अरुत्तु वन्दु निन् अडैन्दु⋆ उय्वदोर् उपायम् नी⋆ एनक्कु नल्ग वेण्डुमे॥९७॥	प्रभु ! आपके हाथ धनुष, चक्र, खड्ग, शंख, एवं गदा धारण करते हैं। कमल के आसन पर बैठने वाली लक्ष्मी आपके विशाल वक्षस्थल के लिये उपयुक्त हैं। आपसे यह बताने के लिये प्रार्थना है कि कैसें मांस रक्त के शरीर को छोड़कर जन्म मरण के व्यूह से बाहर निकलें तथा करबद्ध आपकी सेवा में आ जायें। **848**
मरम् तुरन्दु वञ्जम् आढ़्⋆ ऐम् पुलन्गाळ् आशैयुम् तुरन्दु⋆ निन्कण् आशैये तॊडरन्दु⋆ निन्र नायिनेन्⋆ पिरन्दिरन्दु पेरिडर्⋆ च्चुळिक्कणिन्रु नीङ्गुमा⋆ मरन्दिडादु मर्ह्रॆनक्कु⋆ माय ! नल्ग वेण्डुमे॥९८॥	क्रोध एवं छल छोड़कर, पांचों इन्द्रियों से अलग होकर, मैं आपके श्रीचरणों के दर्शन की अनुमति मांगता हूं। हमारी कोई रंगीन ईच्छा नहीं है। अनंत लीला के प्रभु ! जन्म मरण के फंदा से निकालकर आप मुझे अपने चरणकमल में आश्रय दें। **849**
काट्टिनान् शॆय् वल्विनै⋆ पयन् तनाल् मनन्दनै⋆ नाट्टि वैत्तु नल्ल अल्ल⋆ शॆय्य एण्णिनार् एन⋆ केट्टदन्रि एन्नदावि⋆ पिन्नै केळ्व ! निन्नॊडुम्⋆ पूट्टि वैत्त एन्नै⋆ निन्नुळ् नीक्कल् पूवै वण्णने ! ॥९९॥	खिले हुए कया फूल के श्यामल रंग वाले एवं नप्पिनाय के दुलहा ! आपने कृपा करके मुझे आशीष दिया और हमारे हृदय को अपने पास तक बुलाया। जो मैंने सुना कि मृत्यु के देवता हमारा नुकसान करेंगे यह गलत है। आप अपने हृदय में हमें स्थान दें। मेरी प्रार्थना है कि मुझे अब नहीं छोड़ें। **850**
पिरप्पिनोडु पेरिडर्⋆ च्चुळिक्कण् निन्रुम् नीङ्गुम् अग्दु⋆ इरप्प वैत्त ज्ञान नीशरै⋆ क्करै क्कॊडेट्टुमा⋆ पॆर्करिय निन्न पाद⋆ पत्ति आन पाशनम्⋆ पॆर्करिय मायने !⋆ एनक्कु नल्ग वेण्डुमे॥१००॥	दुखद जन्म एवं मरण के चक्र में पड़े हुए बुद्धिहीन जन पावन चरण को पकड़कर दृढ़ विश्वास के धागा से बंधे किनारा पहुंचने का सोंच सकते हैं। कठिनता से मिलने वाले प्रभु ! आप मेरी सहायता प्रारंभ कर दें। **851**
इरन्दुरैप्पदुण्डु वाळि⋆ एम नीर् निरत्तमा⋆ वरम् तरुम् तिरुक्कुरिप्पिल्⋆ वैत्तदागिल् मन्नु शीर्⋆ परन्द शिन्दै ऑन्रि निन्रु⋆ निन्न पाद पङ्गयम्⋆ निरन्दरम् निनैप्पदाग⋆ नी निनैक्क वेण्डुमे॥१०१॥	आपकी जय हो ! गहरे समुद्र के समान वर्ण वाले प्रभु ! प्रार्थना है, कृपया हमारी सुनें । अगर आप वर देना चाहते हैं तो हमारी विनती है कि हमारे विखरे भटकते मन को एकीकृत करके शाश्वत पूज्य अपने चरणकमल में लगा दें। **852**
विळिवलाद कादलाल्⋆ विळङ्गु पाद पोदिल् वैत्तु⋆ उळ्ळु वेनदून नोय्⋆ ऑळिक्कुमा तॆळिक्कु नीर्⋆ पळ्ळि माय पन्रि आय⋆ वॆन्रि वीर कुन्रिनाल्⋆ तुळ्ळुनीर् वरम्बु शॆय्द⋆ तोन्रल् ऑन्रु शॊल्लिडे॥१०२॥	सदा आपकी अर्चना करते हुए हमारा मन आपके चरण कमल पर है। ज्वार भाटा वाले समुद्र के नाथ ! हे वराह स्वरूप ! आपने पृथ्वी को ऊपर उठाया। गहरे महान समुद्र पर सेतु बनाने वाले प्रभु ! विनती है कि कुछ शब्दों में हमें बता दें कि कैसे हमारे रक्त मांस के शरीर को आप रक्षा प्रदान करने जारहे हैं ? **853**

तिरु क्कलन्दु शेरु मार्ब !⋆ देव देव देवने⋆ इरु क्कलन्द वेद नीदि⋆ आगि निन्ऱ निन्मला⋆ करु क्कलन्द काळमेग⋆ मेनि आय निन् पेयर्⋆ उरु क्कलन्दॊळिविलादु⋆ उरैक्कुमाऱुरै शॆये॥१०३॥	वक्षस्थल पर श्रीदेवी वाले प्रभु ! देवों के नाथ! देवों के देव ! चारों वेद में वर्णित निष्कलंक वर्ण वाले ! घने मेघ के वर्ण वाले एवं सुनहले आकाश के तेज वाले! विनती है कि हमें आपके नाम एवं रूप के बारे में बिना कोई व्यवधान के सारा जीवन बड़बड़ाते रहने दें। **854**
कडुङ्गवन्दन् वक्करन्⋆ करन् मुरन् शिरम् अवै इडन्दु कूऱु शॆय्द⋆ पल् पडै त्तडक्कै मायने⋆ किडन्दिरुन्दु निन्ऱियङ्गु⋆ पोदुम् निन्न पॊर्कळल्⋆ तॊडर्न्दु विळ्विलाददोर्⋆ तॊडर्च्चि नल्ग वेण्डुमे॥१०४॥	महान भुजाओं में भिन्न तरह के आयुध धारण करने वाले आश्चर्यमय देव ! आपने कबंध, बकदंत, एवं मुर का बध कर उनके सिरों को जमीन पर लुघड़ा दिया। खड़े, बैठे, एवं सोये सभी अवस्थाओं में हम आपके दिव्य चरण का दर्शन करते हैं। विनती है कि हमारे विचारों को निर्बाध रूप से केवल आप के बारे में प्रवाहित होते रहने दें। **855**
मण्णै उण्डुमिळ्न्दु⋆ पिन् इरन्दु कॊण्डळन्दु⋆ मण् कण्णुळ् अल्लदिल्लै ऎन्ऱु⋆ वॆन्ऱ कालम् आयिनाय्⋆ पण्णै वॆन्ऱ इन्शॊल् मङ्गै⋆ कॊङ्गै तङ्गु पङ्गय कण्ण⋆ निन्नवण्णम् अल्लदिल्लै⋆ ऎण्णुम् वण्णमे॥१०५॥	आप पृथ्वी को बनाये और फिर उसे खा गये। आपने पृथ्वी का दान मांगा और उसे पग से माप दिया। तब यह देखते हुए कि पृथ्वी आपके बिना नहीं रह सकती आप 'समय यानी काल' बनकर आये। कमल के समान वदन एवं सौंदर्यमयी उरोजपूर्ण मृदु भाषिणी लक्ष्मी के साथ प्रभु ! आपके बारे में सोचने का एकमात्र उपाय है आपके स्वरूप को मन के चित्रपट में देखना। **856**
करुत्तॆदिर्न्द कालनेमि⋆ कालनोडु कूड⋆ अन्ऱु अरुत्त आळि शङ्गु दण्डु⋆ विल्लुम् वाळुम् ऎन्दिनाय्⋆ तॊरु क्कलन्द ऊनम् अग्दु⋆ ऒळिक्क अन्ऱु कुन्ऱम् मुन्⋆ पॊरुत्त निन् पुगळ्क्कलाल् ओर्⋆ नेशम् इल्लै नॆञ्जमे ! ॥१०६॥	कालनेमी के बध के लिये आपने तीक्ष्ण चक का प्रयोग किया। आप अच्छे आयुधों शंख चक खड्ग गदा एवं धनुष धारण करते हैं।आपतकाल में गायों की रक्षा हेतु आपने पर्वत को ऊंचा उठा लिया। आपके लीला पथ के चमत्कारों को सुनने के लिये हमारा हृदय लालायित रहता है। **857**
काय् शिनत्त काशि मन्नन्⋆ वक्करन् पवुण्डिरन्⋆ माशिनत्त मालि मान्⋆ शुमालि केशि देनुकन्⋆ नाशम् उट्रु वीळ नाळ्⋆ कवर्न्द निन् कळर्कलाल्⋆ नेश पाशम् ऎत्तिरत्तुम्⋆ वैत्तिडेन् ऎम् ईशने ! ॥१०७॥	भयानक कोध से भरे काशिराज, बकदंत, पौंड्रक, एवं गुस्सावाले सुमाली, माली, केशिन, और धेनुका का बध करके संसार को उनके अत्याचारों से त्राण दिलाया। मेरा हृदय आप से लगा हुआ है,एवं केवल आपके चरण के प्रेम को ही मैं जानता हूं। **858**
केडिल् शीर् वरत्तनाय्⋆ क्कॆडुम् वरत्तयन् अरन् नाडिनोडु नाट्टम् आयिरत्तन्⋆ नाडु नण्णिलुम्⋆ वीडदान पोगम् ऎय्दि⋆ वीट्रिरुन्द पोदिलुम्⋆ कूडुम् आशै अल्लदॊन्ऱु⋆ कॊळ्वनो कुरिप्पिल्ले॥१०८॥	ब्रह्मा का श्रीसंपन्न संसार, शिव का मटियामेट किया हुआ संसार, सहस्त्र आंखों वाले इन्द्र का ऊंचे आकाश का राज्य, अगर ये सभी देते हुए मुझे स्वर्ग में उन्मुक्त रहने के लिये आप कहें तब भी हम केवल आप के लिये तथा आपके साथ के लिये लालायित हैं। **859**

शुरुक्कु वारै इन्रियॆ⋆ शुरुङ्गिनाय् शुरुङ्गियुम्⋆ पॆरुक्कु वारै इन्रियॆ⋆ पॆरुक्क मॆय्दु पॆट्रियाय्⋆ शॆरुक्कुवार्गळ् तीक्कुणङ्गळ्⋆ तीरत्त देव देवन् ऎन्रु⋆ इरुक्कु वाय् मुनि क्कणङ्गळ् एत्त यानुम् एत्तिनेन्॥१०९॥	छोटा होने के बिना किसी तरीका को अपनाये आप वामन होकर आये। लंबा होने के बिना किसी तरीका को अपनाये आप जगत से ऊंचे हो गये। देवताओं के नाथ आपने आततताईयों के दुष्कर्म से संसार को मुक्त कराया। वैदिक ऋषिगण आपकी भरपूर प्रशस्ति गाते हैं और हम भी आपकी ही लीला गाथा गाते हैं। **860**
तुयनायुम् अन्रियुम्⋆ शुरुम्पुलावु तण् तुळाय्⋆ माय! निन्नै नायिनेन्⋆ वणङ्गि वाळ्त्तुम् ईदॆलाम्⋆ नीयुम् निन् कुरिप्पिनिल्⋆ पॊरुत्तु नल्गु वेलै नीर्⋆ पायलोडु पत्तर् शित्तम्⋆ मेय वेलै वण्णने!॥११०॥	प्रभु ! आप तुलसी की माला धारण करते हैं, गहरे सागर सा आपका वर्ण है, आप सागर में शयन करते हैं, तथा विनीतों का सुनते हैं। यह श्वान सा नीच, भला या बुरा जो भी सेवा करता है, एक प्रार्थना करता है कि जो भी आपके चरण का आश्रय लेता हो उसे आप स्नेह भरी चितवन से अवश्य देखें। **861**
वैदु निन्नै वल्लवा⋆ पळित्तवरक्कुम् मारिल् पोर्⋆ शॆय्दु निन्नै शॆट्र तीयिल्⋆ वॆन्दवरक्कुम् वन्दुन्नै⋆ एय्दल् आगुम् एन्बर् आदलाल्⋆ एम् माय! नायिनेन्⋆ शॆय्द कुट्रम् नट्रमागवे⋆ कॊळ् ञाल नादने!॥१११॥	जिसने भी आपका नाम लिया या आपसे झगड़ा किया वे आपके दया एवं क्षमा के प्रसाद से अनुगृहित हुए हैं। यह श्वान सा नीच ने जो गलतियां की हो आप उसको गुण मानें क्योंकि यह शुद्धता से किया हुआ गुणानुवाद है। **862**
वाळ्नाळ् आगि नाळ्गळ् शॆल्ल⋆ नोय्मै कुन्रि मूप्पॆय्दि⋆ माळ्नाळ् अदादलाल्⋆ वणङ्गि वाळ्त्तॆन् नॆञ्जमे⋆ आळदागुम् नन्मै एन्रु⋆ नन्गुणरन्ददन्रियुम्⋆ मीळ्विलाद पोगम्⋆ नल्ग वेण्डुम् माल पादमे॥११२॥	आधि व्याधि से हमारे दिन बीतते जा रहे हैं। हे मन मृत्यु निकट नीचे झूल रही है अतः नतमस्तक हो गाथा गाओ। ज्ञात हो कि भलाई केवल आपके पावन चरण की सेवा है। प्रभु पृथ्वी पर से कभी नहीं लौट कर जाने वाला जीवन प्रदान करेंगे। **863**
शलम् कलन्द शॆञ्जडै⋆ क्करुत्त कण्डन् वॆण् तलै⋆ पुलङ्गलङ्ग उण्ड पादगत्तन् वन् तुयर् कॆड⋆ अलङ्गल् मार्विल् वाश नीर्⋆ कॊडुत्तवन् अडुत्त शीर्⋆ नलङ्गॊळ् मालै नण्णुम् वण्णम्⋆ एण्णुम् वाळि नॆञ्जमे!॥११३॥	जटाओं में गंगा को धारण कर, नियंत्रित इन्द्रियों वाले भिक्षु के रूप में नरखोपड़ी का पात्र लिये नील कंठ शिव आपके पास अपनी यातना शमन के लिये आये। सुगंधित तुलसी से सुशोभित वक्षस्थल वाले प्रभु ने उनकी नरखोपड़ी को हृदय के उद्गार से भर दिया। मन ! अब सोंचो कि जो वास्तविक रूप में भगवान हैं उनके पावन चरण को कैसे प्राप्त किया जाय। **864**
ईनमाय एट्टुम् नीक्कि⋆ एदम् इन्रि मीदुपोय्⋆ वानम् आळ वल्लैयेल्⋆ वणङ्गि वाळ्त्तॆन् नॆञ्जमे⋆ ञानम् आगि ञायिरागि⋆ ञाल मुट्रुम् ओर् एयिट्रु⋆ एनमाय् इडन्द मूर्त्ति⋆ एन्दै पादम् एण्णिये॥११४॥	अगर बंधन को काटना चाहते हो और आकाश में जाकर पृथ्वी पर साम्राज्य चाहते हो तो इनकी पूजा करो एवं पावन चरणों की प्रशस्ति गाओ। प्रभु ज्ञान के सूर्य की भांति आये और वराह रूप में अपने दांतों पर पृथ्वी को उठा लिये। सबों ने यह देखा, और हृदय की गहराई से चिंतन किया। **865**

अत्तन् आगि अन्नै आगि⋆ आळुम् एम् पिरानुमाय्⋆ ऑत्तॊव्वाद पल् पिऱप्पॊऴित्तु⋆ नम्मै आट्कॊळ्वान्⋆ मुत्तनार् मुगुन्दनार्⋆ पुगुन्दु नम्मुळ् मेविनार्⋆ एत्तिनाल् इडर्क्कडल् किडत्ति⋆ एऴै नॆञ्जमे॥११५॥	हमलोगों के हृदय में रहने वाले प्रभु मां एवं एवं पिता की भांति अनगिनत जन्म के बंधन को काट देते हैं और अपने संरक्षण में स्वीकार कर लेते हैं। आप मुक्त हैं एवं हमलोगों को भी मुक्त कर देते हैं। हमारे भीतर प्रवेश कर हमारे हृदय को भर देते हैं। नीच मन ! आप से ही यातना के समुद्र को पार किया जा सकता है। **866**
माऱु शॆय्द वाळ् अरक्कन्⋆ नाळ् उलप्प अन्ऱिलङ्गै⋆ नीऱु शॆय्दु शॆन्ऱु कॊन्ऱु⋆ वॆन्ऱि कॊण्ड वीरनार्⋆ वेऱु शॆय्दु तम्मुळ् एन्नै⋆ वैत्तिडामैयाल्⋆ नमन् कूऱु शॆय्दु कॊण्डिरन्द⋆ कुट्रम् एण्ण वल्लने॥११६॥	सीता को प्रभु से अलग करने की गलती कर रावण वीर राम का कोप भाजन हुआ।वह राज्य एवं जीवन से हाथ धो बैठा। अब मृत्यु के देवता यम को यह सोंच लेना चाहिए कि अगर वे हमारा जीवन हरने का प्रयास किये तो उनपर क्या वीतेगा । **867**
अच्चम् नोयॊडल्लल्⋆ पल् पिऱप्पवाय मूप्पिवै⋆ वैत्त शिन्दै वैत्त आक्कै⋆ माट्रि वानिल् एट्रुवान्⋆ अच्चुतन् अनन्द कीर्त्ति⋆ आदि अन्दम् इल्लवन्⋆ नच्चु नागणै क्किडन्द⋆ नादन् वेद कीदने॥११७॥	भय, रोग, निराशा, जन्म एवं मरण, क्षीण आयु, शरीर एवं हृदय के बंधन, सबों को काटकर आप आकाश में ले जाते हैं। निर्दोष, अनन्त यशवाले, बिना आदि एवं अन्त के, विषैले शेषशय्या पर शयन करने वाले प्रभु की प्रशस्ति चारों वेद गाते हैं। **868**
शॊल्लिनुम् तॊऴिर्कणुम्⋆ तॊडक्कराद अन्बिनुम्⋆ अल्लुम् नन् पगलिनोडुम्⋆ आन मालै कालैयुम्⋆ अल्लिनाण् मलर् क्किऴत्ति⋆ नाद ! पाद पोदिनै⋆ पुल्लि उळ्ळम् विळ्विलादु⋆ पूण्डु मीण्डदिल्लैये॥११८॥	कमल से चरण, एवं कमलवत वक्षस्थल पर लक्ष्मी को धारण करने वाले प्रभु की, हर रात्रि के बाद के प्रभात में, एवं हर दिन के अंत की संध्या में, अपने प्रत्येक कर्म, शब्द, एवं प्रेमपूर्ण चित्त से पूजा करो। जब हृदय केवल इनपर टिक जायेगा तब पृथ्वी पर लौट कर नहीं आना होगा। **869**
पॊन्नि शूऴ् अरङ्गमेय⋆ पूवै वण्ण ! माय ! केळ्⋆ एन्नदावि एन्नुम्⋆ वल्विनैयिनुळ् कॊऴुन्दॆऴुन्दु⋆ उन्न पादम् एन्न निन्ऱ⋆ ऑण्शुडर् क्कॊऴुमलर्⋆ मन्न वन्दु पूण्डु⋆ वाट्टम् इन्ऱि एङ्गुम् निन्ऱदे॥११९॥	काया फूल के वर्ण वाले श्रीरंगम नगर के प्रभु ! विनती है कि एक कहानी सुन लीजिये। हमारी श्रद्धा के कीचड़ से भक्ति की एक लता निकली जो वलय की तरह घूमते हुए तेजोमय पावन श्रीचरण रूपी शक्तिशाली वृक्ष पर चढ गयी है। इसको अब फैलने की जगह मिल गयी है और अब यह आपके सिर के ऊपर छत्रवत छा गयी है। **870**
इयक्कराद पल् पिऱप्पिल्⋆ एन्नै माट्रि इन्ऱु वन्दु⋆ उयक्कॊळ् मेग वण्णन् नण्णि⋆ एन्निलाय तन्नुळे⋆ मयक्किनान् तन् मन्नु शोदि⋆ आदलाल्⋆ एन् आवि तान् इयक्कॆलाम् अऱुत्तु⋆ अऱाद इन्ब वीडु पॆट्रदे॥१२०॥	अनगिनत जन्मों के प्रयास से प्रभु अब पकड़ में आये हैं। कमल वत प्रभु ! मेघ के वर्ण वाले प्रभु ! अब हमारे हृदय मे बस गये हैं। प्रभु ने अपना गौरवशाली स्वरूप को प्रकट कर दिया है। अब हमारी आत्मा सच्चे रूप में इनकी कृपापात्र बन गयी है। कर्म के बन्धनों का विच्छेद हो चुका है एवं आत्मा को आनंदमय स्थान मिल गया है। **871** तिरूमऴिशैयाळवार तिरूवडिगळे शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ तिरुमालै ॥

तिरुवरङ्गप्पॆरुमाल् अरैयर् अरुळिच्चॆय्द तनियन्

मट्रॊन्रुम् वेण्डा मनमे ! मदिळरङ्गर्⋆
कट्रिनम् मेय्त्त कळल्िणैक्कीळ्⋆ उट्
तिरुमालै पाडुम् शीर् तॊण्डरडि प्पॊडि एम्
पॆरुमानै⋆ एप्पॊळुदुम् पेशु

तिरूमालै (872 - 916)

कावलिल् पुलनै वैत्तु⋆ क्कलिदन्नै क्कडक्क प्पायन्दु⋆ नावलिट्टुळि तरुगिन्रोम्⋆ नमन् तमर् तलैगळ् मीदे⋆ मूवुलगुण्डुमिळन्द⋆ मुदल्व ! निन् नामम् कट्⋆ आवलि प्पुडैमै कण्डाय्⋆ अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥१॥	आदि प्रभु ! आपने तीनों लोकों का सृजन किया एवं उसे निगल गये। आपके नामों के प्रभाव से इन्द्रियों से मुक्त हो निराशा से ऊपर उठकर हम यमदूतों के सिर पर पैर रख विजय की खुशी में हैं। **872**
पच्चै मा मलै पोल् मेनि⋆ पवळवाय् कमल च्चॆङ्गण्⋆ अच्चुता ! अमरर् एरे !⋆ आयर् तम् कॊळुन्दे ! एन्नुम्⋆ इच्चुवै तविर यान् पोय्⋆ इन्दिर लोकम् आळुम्⋆ अच्चुवै पॆरिनुम् वेण्डेन्⋆ अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥२॥	अरंगम नगर यानी श्रीरंगम के प्रभु ! आप विशाल हरे पर्वत के वर्ण वाले हैं। आप के होंठ मूंगा की तरह हैं।आप अरूणाभ राजीव नयन हैं। अच्युत ! शाश्वतों के नाथ ! गोपवंश नाथ ! इन्द्र के राज्य का शासन देकर अपने प्रशस्ति गान का अवसर से अगर हमें वंचित किया गया तो हमें यह राज्य नहीं चाहिए। **873**
वेद नूल् पिरायम् नूरु⋆ मनिशर् ताम् पुगुवरेलुम्⋆ पादियुम् उरङ्गि प्पोगुम्⋆ निन्रदिल् पदिनैयाण्डु⋆ पेदै पालकन् अदागुम्⋆ पिणि पशि मूप्पु त्तुन्बम्⋆ आदलाल् पिरवि वेण्डेन्⋆ अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥३॥	अरंगम नगर यानी श्रीरंगम के प्रभु ! जैसा कि वेदों से स्वीकृत है, अगर एक सौ साल की लंबी आयु मिलती है तो इसका आधा तो नींद में गुजर जाता है। शेष पचास वर्ष वचपन, रोग, भूख, एवं बुढ़ापे में गुजर जाता है। अतः हमें दूसरा जन्म नहीं चाहिए। **874**
मॊय्त्त वल्विनैयुळ् निन्रु⋆ मून्ॆळुत्तुडैय पेराल्⋆ कत्तिर बन्दुम् अन्रे⋆ पराङ्गति कण्डु कॊण्डान्⋆ इत्तनै अडियर् आनार्क्कु⋆ इरङ्गुम् नम् अरङ्गनाय⋆ पित्तनै प्पॆट्रुम् अन्दो !⋆ पिरवियुळ् पिणङ्गुमारे ! ॥४॥	घोर पाप में डूबे रहने पर भी प्रसिद्ध खात्तिरबंदु तीन अक्षरों वाला ‘गोविन्दा’ का नाम लेकर परम पद को प्राप्त हो गये।अपने भक्तों के लिये द्रवित होने वाले तथा रंगा के नाम से पुकारे जानेवाले मदमत्त प्रभु की सुलभता से मिलने पर लोगों का पुनर्जन्म क्यों होगा ? **875**

पॆण्डिराल् शुकङ्गळ् उय्प्पान्⋆ पॆरियदोर् इडुम्बै पूण्डु⋆ उण्डिरा क्किडक्कुम् पोदु⋆ उडलुक्के करैन्दु नैन्दु⋆ तण् तुळाय् मालै मार्बन्⋆ तमर्गळाय् प्पाडि आडि⋆ तॊण्डु पूण्डमुदम् उण्णा⋆ तॊळुम्बर् शोऱुगक्कुमारे ! ॥५॥	नीच लोग कष्ट में जन्म लेकर नारी का सुख भोगने की चाह रखते हैं। खाने के बाद अपने शरीर की चिंता करते हुए सोते हैं। तुलसी से सुशोभित वक्षस्थल वाले प्रभु का भक्तबनकर गाइये, आनन्दातिरेक में नाचिये,एवं सेवा का आनन्द लीजिये। आश्चर्य है कि अन्य जन भोजन में कैसे आनन्द लेते हैं ? **876**
मऱम्शुवर् मदिळॆडुत्तु⋆ मऱुमैक्के वॆऱुमै पूण्डु⋆ पुऱम्शुवर् ओट्टै माडम्⋆ पुरळुम् पोदऱिय माट्टीर्⋆ अऱम्शुवर् आगि निन्ऱ⋆ अरङ्गनार्क्काट् शॆय्यादे⋆ पुऱम्शुवर् क्कोलञ्जॆय्दु⋆ पुळ् कव्व क्किडक्किन्ऱीरे ! ॥६॥	आपने माया का आवरण बनाया।हमेशा आनेवाले की चिंता रहती है। शरीर के क्षीण अस्थि पंजर में रहते हुए यह नहीं सोंचते कि यह नश्वर है। श्रीरंग प्रभु की सेवा न कर हमेशा बाह्याडंवर की चिंता लगी रहती है। इस तरह से गिद्ध के भोजन हो जाते हैं। **877**
पुलै अऱम् आगि निन्ऱ⋆ पुत्तॊडु शमणम् एल्लाम्⋆ कलै अऱक्कट्र मान्दर्⋆ काण्बरो केट्परो ताम्⋆ तलै अऱुप्पुण्डुम् शावेन्⋆ शत्तियम् काण्मिन् ऐया⋆ शिलैयिनाल् इलङ्गै शॆट्र⋆ देवने देवन् आवान्॥७॥	अधम मार्ग की विशेषतायें , शास्त्रज्ञ एवं विद्वान लोग सुनते या समझते हैं क्या? महोदय, देखिये अगर आप मेरा सिर भी काट देंगे तो मैं नहीं मरूंगा, मेरा विश्वास है। लंका को धनुष से नष्ट कर देने वाले ही एक मात्र सबों के प्रभु हैं। **878**
वॆऱुप्पॊडु शमणर् मुण्डर्⋆ विदि इल् शाक्कियर्गळ् निन्पाल्⋆ पॊऱुप्परियन कळ् पेशिल्⋆ पोवदे नोयदागि⋆ कुऱिप्पॆनक्कडैयुम् आगिल्⋆ कूडुमेल् तलैयै आङ्ग⋆ अऱुप्पदे करुमम् कण्डाय्⋆ अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥८॥	अरंगम नगर यानी श्रीरंगम के प्रभु ! घृणा फैलानेवाले मुण्डा एवं नास्तिक शाक्कया आपके बारे में उत्तरदायी विहीन बातें बोलते हैं और यही इनके लिये घातक होगा।अगर उचित समय देखा तो उनके सिर उड़ा देना ही मेरे लिये सार्थक कर्म होगा। **879**
मट्रुम् ओर् दॆय्वम् उण्डे⋆ मदियिला मानिडङ्गाळ्⋆ उट्रपोदन्ऱि नीङ्गळ्⋆ ऒरुवन् एन्ऱुणर माट्टीर्⋆ अट्रमेल् ऒन्ऱरीयीर्⋆ अवन् अल्लाल् दॆय्वम् इल्लै⋆ कट्रिनम् मेय्त्त एन्दै⋆ कळलिणै पणिमिनीरे॥९॥	क्या दूसरा भगवान भी हो सकता है? भूमंडल के मूर्खो ! जब तक आपदा नहीं आती सच्चाई का ज्ञान नहीं होता।न तो शास्त्र जानते हो जिसमें इनके अलावा कोई दूसरा प्रभु है। हमारे प्रभु के चरणों की पूजा करो जो पृथ्वी पर गाय चराते घूमे। **880**
नाट्टिनान् दॆय्वम् एङ्गुम्⋆ नल्लदोर् अरुळ् तन्नाले⋆ काट्टिनान् तिरुवरङ्गम्⋆ उय्बवर्क्कुय्युम् वण्णम्⋆ केट्टिरे नम्बिमीर्गाळ् !⋆ कॆरुडवा कननुम् निर्क⋆ शेट्टैदन् मडियगत्तु⋆ च्चॆल्वम् पार्त्तिरुक्किन्ऱीरे॥१०॥	आपने सर्वत्र भगवान को दिखाया, तब नेक विचार से एवं करूणा से आप तिरू अरंगम में उनके लिये प्रकट हुए जो आपके भक्त हैं। महाशय ध्यान दीजिये ! जब गरूड़ पर सवार प्रभु यहां हों तब आप जाकर निम्नतर देवताओं से भाग्य एवं वरदान मांगिये। **881**

ऑरु विल्लाल् ओङ्गु मुन्नीर्⋆ अनैत्तुलगङ्गळ् उय्य⋆ शॅरुविले अरक्कर् कोनै⋆ च्चॅट्र् नम् शेवकनार्⋆ मरुविय पॅरिय कोयिल्⋆ मदिल् तिरुवरङ्गम् एन्ना⋆ करुविले तिरुविलादीर् !⋆ कालत्तै क्कळिक्किन्रीरे ॥११॥	महान धनुष से आपने समुद्र को चीर दिया। जगत के कल्याण हेतु आपने राक्षस राज को युद्ध में मार गिराया। आप ही हमारे रक्षक हैं। तिरू अरंगम के किला मंदिर में आप का निवास है। भाग्यहीन जन आपके नाम का उच्चारण न कर अपना समय व्यर्थ गंवाते हो। **882**
नमनुम् मुर्कलनुम् पेश⋆ नरकिल् निन्रार्गळ् केट्क⋆ नरकमे शुवरक्कम् आगुम्⋆ नामङ्गळ् उडैय नम्बि⋆ अवनदूर् अरङ्गम् एन्नादु⋆ अयर्त्तु वीळ्न्दळिय मान्दर्⋆ कवलैयुळ् पडुगिन्रार्⋆ एन्रदनुक्के कवल्गिन्रेने ! ॥१२॥	नरक के निवासियों ने यम एवं मुद्गल के संवाद को सुना और तुरत नरक स्वर्ग में बदल गया। आपके नाम का इतना माहात्म्य है प्रभु ! विद्वान लोग विफल होकर भटकते रहते हैं। यह भूल जाते हैं कि आप तिरू अरंगम में हैं और अनावश्यक चिंतित रहते हैं। हमारे लिये यही बहुत चिंता का कारण है। **883**
एरियुम् नीर् वॅरिगॉळ् वेलै⋆ मानिलत्तुयिर्गळ् एल्लाम्⋆ वॅरिकॉळ् पून्दुळव मालै⋆ विण्णवर्गोनै एत्त⋆ अरिविला मनिशर् एल्लाम्⋆ अरङ्गम् एन्रळैप्परागिल्⋆ पॉरियिल् वाळ् नरकम् एल्लाम्⋆ पुल् एळुन्दॉळियुम् अन्रे ॥१३॥	सुगंधित समुद्र से घिरे भूमंडल के समस्त प्राणी, सुगंधित तुलसी की माला धारण करने वाले 'देवों के नाथ' की पूजा करते हैं। अगर मूर्ख 'अरंगम' पुकारें तो जीवित शरीर का नरक घास उत्पन्न कर लुप्त हो जायेगा। **884**
वण्डिनमुरलुम् शोलै⋆ मयिलिनम् आलुम् शोलै⋆ कॉण्डल् मीदणवुम् शोलै⋆ कुयिलिनम् कूवुम् शोलै⋆ अण्डर्कोन् अमरुम् शोलै⋆ अणि तिरुवरङ्गम् एन्ना⋆ मिण्डर्पायन्दुण्णुम् शोट्रै⋆ विलक्कि नाय्क्किडुमिनीरे ॥१४॥	सुन्दर तिरू अरंगम भौरों से गुंजायमान बागों के मध्य अवस्थित है। बागों में मोर नृत्य करते हैं, बादल आलिंगन मुद्रा में एकत्र होते हैं, एवं कोयल की कूक प्रेम से भरा होता है। मोटे होते कृतघ्नों के भोजन लेकर कुत्तों को दे दो। **885**
मॅय्यर्क्के मॅय्यन् आगुम्⋆ विदि इला एन्नै प्पोल⋆ पॉय्यर्क्के पॉय्यन् आगुम्⋆ पुट्कॉडि उडैय कोमान्⋆ उय्यप्पोम् उणर्विनार्गट्कु⋆ ऑरुवन् एन्रुणर्न्द पिन्नै⋆ ऐयप्पाडरुत्तु तोन्रुम्⋆ अळगन् ऊर् अरङ्गम् अन्रे ॥१५॥	सत्यवादियों के लिये आप सत्य हैं एवं मिथ्यावादियों के लिये मिथ्या हैं। हमारे जैसे नीच के लिये आप गरूड़ चिह्न धारण करने वाले सम्राट हैं। चेतन के माध्यम से जो उन्नति चाहते हैं उनकी शंकाओं को दूर कर आप प्रकट हो जाते हैं। आप तिरू अरंगम के सुन्दर प्रभु हैं। **886**
शूदनाय् क्कळ्वनागि⋆ त्तूर्त्तरोडिशैन्द कालम्⋆ मादरार् कयर्कण् एन्नुम्⋆ वलैयुळ् पट्टळुन्दु वेनै⋆ पोदरे एन्रु शॉल्लि⋆ प्पुन्दियिल् पुगुन्दु तन्पाल्⋆ आदरम् पॅरुग वैत्त⋆ अळगन् ऊर् अरङ्गम् अन्रे ॥१६॥	जब मैं चोर एवं बेइमान था तथा दुष्टों की संगति करता था मत्स्य नयना नारियों के फंदा में पड़ गया। तिरू अरंगम के सुन्दर प्रभु हमारे हृदय में प्रवेश कर बोले 'मेरे पास आओ' और हमारे हृदय में आपके प्रेम की तरंगें उठने लगीं। **887**

विरुम्बि निन्ऱेत्त माट्टेन्⋆ विदियिलेन् मदि ऑन्ऱिल्लै⋆ इरुम्बु पोल् वलिय नॆञ्जम्⋆ इऱैयिऱै उरुगुम् वण्णम् शुरुम्बमर् शोलै शूऴ्न्द⋆ अरङ्ग मा कोयिल् कॊण्ड⋆ करुम्बिनै क्कण्डु कॊण्डेन्⋆ कण्णिणै कळिक्कुमाऱे ! ॥१७॥	हमने कभी पूजा में सिर नहीं नवाया, न तो कभी ध्यान किया और न सेवा की। मधुमक्खियों से गुंजायमान बागों के मध्य अरंगम के मंदिर में प्रभु का निवास है। हमारा हृदय लौहवत कठोर था लेकिन शनैः शनैः आपने इसे पिघला दिया। ईख के समान मीठा प्रभु को देखकर अहा ! कैसे हमारी आंखें आनंद मनाती हैं ! **888**
इनि तिरै त्तिवलै मोद⋆ एऱियुम् तण् परवै मीदे⋆ तनि किडन्दरशु शॆय्युम्⋆ तामरै क्कण्णन् एम्मान्⋆ कनि इरुन्दनैय शॆव्वाय्⋆ क्कण्णनै क्कण्ड कण्गळ्⋆ पनियरुम्बुदिरु मालो⋆ एन् शॆय्गेन् पावि येने ! ॥१८॥	राजीव नयन एवं पके बैर के समान मूंगावत होंठ वाले हमारे कृष्ण, जिनकी कोई समानता नहीं कर सकता, अपने थपेड़ों से मृदु फुहारों को बिखेरती ठंढ़ी कावेरी की तरंगों पर सोये हुए हैं। हाय ! मैं क्या कर सकता हूं ? आपको इस तरह देखकर हमारी आंखें अश्रु वर्षाती हैं। **889**
कुडदिशै मुडियै वैत्तु⋆ क्कुणदिशै पादम् नीट्टि⋆ वडदिशै पिन्बु काट्टि⋆ त्तॆन् दिशै इलङ्गै नोक्कि⋆ कडल् निऱक्कडवुळ् एन्दै⋆ अरवणै त्तुयिलुमा कण्डु⋆ उडल् एनक्कुरुगुमालो⋆ एन् शॆय्गेन् उलगत्तीरे ! ॥१९॥	समुद्र के समान रंग वाले हमारे प्रभु शेषशायी होकर अरंगम में हैं।आपका मुकुट पूर्व दिशा में है, आपके पैर पश्चिम की ओर फैले हैं, आपकी पीठ उत्तर की तरफ है, एवं आपकी आंखें दक्षिण दिशा में लंका की ओर देख रहीं हैं। हाय ! मैं क्या कर सकता हूं ? हमारा शरीर उनको देखकर द्रवित हो रहा है। **890**
पायुम् नीर् अरङ्गन् तन्नुळ्⋆ पाम्बणै प्पळ्ळि कॊण्ड⋆ मायनार् तिरु नन् मार्बुम्⋆ मरगद उरुवुम् तोळुम्⋆ तूय तामरै क्कण्गळुम्⋆ तुवर् इदळ् प्पवळ वायुम्⋆ आय शीर् मुडियुम् तेशुम्⋆ अडियरोर्क्कगल्लामे॥२०॥	अरंगम के प्रवाहित जल में गाय को चराने वाले प्रभु नाग पर सोये हैं। वक्षस्थल पर श्री, रत्न सा तेजोमय वदन एवं बाहें, शुद्ध कमल नयन, अरूणाभ पत्रवत होंठें, प्रभापूर्ण आभा, एवं प्राचीन मुकुट, क्या भक्तगण यह दृश्य भूल सकते हैं ? **891**
पणिविनाल् मनमदॊन्ऱि⋆ प्पवळ वाय् अरङ्गनार्क्कु⋆ तुणिविनाल् वाळ माट्टा⋆ त्तॊल्लै नॆञ्जे ! नी शॊल्लाय्⋆ अणियन् आर् शॆम्बॊन् आय⋆ अरुवरै अनैय कोयिल्⋆ मणियनार् किडन्द वाट्रै⋆ मनत्तिनाल् निनैक्कलामे॥२१॥	विनती है, बताइये। हमारे विश्वासी हृदय ! क्या यह संभव है कि बिना सेवा किये, एवं बिना भक्तिवाले हृदय के, मूंगावत होंठों वाले अरंगम के प्रभु पर ध्यान केंद्रित किया जा सके ? सुवर्ण से मढ़ा मंदिर पर्वत की तरह उठा हुआ है एवं रत्न के वर्ण वाले प्रभु इसके भीतर सोये हुए हैं। **892**
पेशिट्रे पेशल् अल्लाल्⋆ पॆरुमै ऑन्ऱुणरल् आगादु⋆ आशट्रार् तङ्गट्कल्लाल्⋆ अऱियल् आवानुम् अल्लन्⋆ माशट्रार् मनत्तुळानै⋆ वणङ्गि नाम् इरुप्पदल्लाल्⋆ पेशत्तान् आवदुण्डो⋆ पेदै नॆञ्जे ! नी शॊल्लाय्॥२२॥	एक ही चीज को बार बार गप करते रहने कोई भी सच्चे महत्व को नहीं महसूस करता। प्रभु उसी के सामने प्रकट होते हैं जो ईच्छा से मुक्त हृदय वाला है। बताइये, जो शुद्धात्माओं के हृदय में रहते हैं, उनकी पूजा को छोड़कर बातें करते रहने से क्या लाभ ? **893**

<table>
<tr><td>गङ्गैयिल् पुनिदम् आय* काविरि नडुवु पाट्टु*
पॉङ्गुनीर् परन्दु पायुम्* पूम्बॉळिल् अरङ्गन् तन्नुळ्*
एङ्गळ् माल् इऱैवन् ईशन्* किडन्ददोर् किडक्कै कण्डुम्*
एङ्ङनम् मऱन्दु वाळ्गेन्* एळैयेन् एळैयेने ! ॥२३॥</td><td>अरंगम के सुगंधित फूलों के सायों से प्रवाहित होने वाली, गंगा से भी पवित्र, कावेरी के मध्य में हमारे नाथ एवं प्रभु शयन करते हैं। शक्तिहीन एवं असहाय मैं ! आपके सुन्दर स्वरूप को देखकर कैसे हम आपको भूलकर जीवित रह सकते हैं ? 894</td></tr>
<tr><td>वॅळ्ळ नीर् परन्दु पायुम्* विरि पॉळिल् अरङ्गन् तन्नुळ्*
कळ्वनार् किडन्द वाऱुम्* कमल नन् मुगमुम् कण्डु*
उळ्ळमे ! वलियै पोलुम्* ऑरुवन् एन्ऱुणर माट्टाय्*
कळ्ळमे कादल् शॅय्दुन्* कळ्ळत्ते कळिक्किन्ऱाये ! ॥२४॥</td><td>हृदय को चुराने वाले राजीव नयन अरंगम में सोये हैं जहां कावेरी का जल विस्तृत फूल के साये वाले क्षेत्रों से गुजरता है। हे सचमुच कठोर हृदय ! प्रभु की सत्ता को न समझकर, व्यर्थ की बातों में झूठे प्रेम दिखाकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हो। 895</td></tr>
<tr><td>कुळित्तु मून्ऱनलै ओम्बुम्* कुऱिगॉळ् अन्दण मैतन्नै*
ऑळित्तिट्टेन् एन् कण् इल्लै* निन् कणुम् पत्तन् अल्लेन्*
कळिप्पदॅन् कॉण्डु नम्बी !* कडल्वण्णा ! कदऱुगिन्ऱेन्*
अळित्तॅनक्करुळ् शॅय् कण्डाय्* अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥२५॥</td><td>हमने पुजारी के अधिकार को खो दिया है एवं तीन अग्नि में अब मेरा आहुति देने का काम भी नहीं रहा।न तो मैं आपका समर्पित भक्त हूं। हाय ! अब हम क्या बड़बड़ायेंगे ? अरंगम नगर के समुद्र सा रंग वाले प्रभु ! मैं केवल चीख सकता हूं। विनती है, दया करें प्रभु ! 896</td></tr>
<tr><td>पोदॅल्लाम् पोदु कॉण्डुन्* पॉन्नडि पुनैय माट्टेन्*
तीदिला मॉळिगळ् कॉण्डुन्* तिरुक्कुणम् शॅप्प माट्टेन्*
कादलाल् नॅञ्जम् अन्बु* कलन्दिलेन् अदु तन्नाले*
एदिलेन् अरङ्गर्क्कॅल्ले !* एन् शॅय्वान् तोन्ऱिनेने ! ॥२६॥</td><td>आपके दिव्य चरणों की तीन बार फूलों से पूजा भी नहीं करता हूं। न तो उपयुक्त प्रशस्ति के शब्दों के साथ आपकी गाथा ही गाता हूं। आपके प्रेम से उत्प्लावित होकर मेरा हृदय द्रवित भी नहीं होता है।रंगा ! आपके लिये मेरे पास कुछ है भी नही। हाय ! मुझे आश्चर्य होता है कि क्यों मेरा जन्म हुआ ? 897</td></tr>
<tr><td>कुरङ्गुगळ् मलैयै नूक्क* क्कुळित्तु त्ताम् पुरण्डिट्टोडि*
तरङ्ग नीर् अडैक्कल् उट्* शलम् इला अणिलम् पोलेन्*
मरङ्गळ् पोल् वलिय नॅञ्जम्* वञ्जनेन् नॅञ्जु तन्नाल्*
अरङ्गनार्क्काट् शॅय्यादे* अळियत्तेन् अयर्क्किन्ऱेने ! ॥२७॥</td><td>न तो मैं उस विनम्र गिलहरी के जैसा हूं जिसने बालू में लेटकर बंदरों को सेतु निर्माण के लिये बड़े पत्थर ठेलने में सहायता प्रदान की। मेरा काठ सा कठोर हृदय दुर्गुणों से भरा हुआ है। अरंगम के प्रभु की मैनें एक बार भी सेवा नहीं की। मेरा श्रम कुकर्मो में लगा रहा है। 898</td></tr>
<tr><td>उम्बराल् अऱियल् आगा* ऑळियुळार् आनैक्कागि*
शॅम् पुलाल् उण्डु वाळुम्* मुदलै मेल् शीऱि वन्दार्*
नम् परम् आयतुण्डे* नाय्गाळोम् शिऱुमै ओरा*
एम्पिरार्काट् शॅय्यादे* एन् शॅय्वान् तोन्ऱिनेने ! ॥२८॥</td><td>देवगन भी तेजोमय प्रभु को नहीं समझ सकते। हाथी की पुकार पर दौड़े हुए आकर आप मांसाहारी घड़ियाल पर टूट पड़े। हमें अपना बोझ ढ़ोना है।कुत्ते से भी नीच होकर हम प्रभु का संरक्षण प्राप्त किये हुए हैं।अगर मुझे सेवा नहीं करनी थी तो मेरा जन्म क्यों हुआ ? 899</td></tr>
</table>

ऊरिलेन् काणि इल्लै⋆ उरवु मट्रोरुवर् इल्लै⋆ पारिल् निन् पाद मूलम्⋆ पट्रिलेन् परम मूर्त्ति⋆ कारोळि वण्णने ! एन्⋆ कण्णने ! कदरुगिन्रेन्⋆ आर् उळर् कळैकण् अम्मा !⋆ अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥२९॥	महान प्रभु ! कोई भी नगर ऐसा नहीं है जिसे मैं अपना कहूं। किसी भी चीज पर कोई अधिकार नहीं है और न तो इस संसार में अपना कोई संबंधी या मित्र है। श्याम तेजोमय ! मैं अभी तक आपका चरण प्राप्त नहीं कर सका हूं। मेरे कृष्ण ! मैं चीख कर आपको पुकारता हूं। अरंगम नगर के नाथ ! कौन मेरी रक्षा करेगा ? **900**
मनत्तिल् ओर् तूय्मै इल्लै⋆ वायिल् ओर् इन्शोल् इल्लै⋆ शिनत्तिनाल् शेट्रम् नोक्कि⋆ त्तीविळि विळिवन् वाळा⋆ पुनत्तुळाय् मालैयाने !⋆ पोन्नि शूळ् तिरुवरङ्गा⋆ एनक्किनि क्कति एन् शोल्लाय्⋆ एन्नै आळुडैय कोवे ! ॥३०॥	नवीन तुलसी वाले प्रभु ! पोन्नि से घिरे तिरूअरंगम के प्रभु ! राजा जिसकी हम सेवा करते हैं ! मेरा हृदय शुद्ध नहीं है और न तो वचन मीठा है। अनियंत्रित गुस्सा एवं चिंताग्रस्त दृष्टि के साथ हमने कटु शब्द बोले हैं। क्या भाग्य है हमारा ? **901**
तवत्तुळार् तम्मिल् अल्लेन्⋆ तनम् पडैत्तारिल् अल्लेन्⋆ उवर्त्त नीर् पोल एन्तन्⋆ उट्रवर्क्कोन्रुम् अल्लेन्⋆ तुवर्त्त शेव्वायिनार्क्के⋆ तुवक्कर त्तुरिशन् आनेन्⋆ अवत्तमे पिरवि तन्दाय्⋆ अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥३१॥	तिरूअरंगम के प्रभु ! मैं नियम से रहने वालों में नहीं हूं। मैं धनवानों में भी नहीं हूं। अपने मित्रों एवं सुहृदों के बीच मैं समुद्र के जल की तरह अनोपयोगी हूं। अरूणाभ होठों वाली नारियों के लिये मैं दुष्ट एवं अविश्वसनीय हूं। हाय ! आपने मुझे व्यर्थ का जीवन दिया है। **902**
आर्त्तु वण्डलम्बुम् शोलै⋆ अणि तिरुवरङ्गन् तन्नुळ्⋆ कार् त्तिरळ् अनैय मेनि⋆ क्कण्णने ! उन्नै क्काणुम्⋆ मार्क्कम् ओन्रुमरियमाट्टा⋆ मनिशरिल् तुरिशनाय⋆ मूर्क्कनेन् वन्दुनिन्रेन्⋆ मूर्क्कनेन् मूर्क्कनेने॥३२॥	घने मेघ के रंगवाले प्रभु मेरे कृष्ण ! मुझे नहीं पता कि मधुमक्खियों से गुंजायमान बागों से घिरे अरंगम के मंदिर में आपको कैसे प्राप्त किया जाय। पुरूषों में सबसे नीच, मैं मूर्ख की तरह आकर आपके समक्ष खड़ा हो जाता हूं। मूर्ख एवं केवल मूर्ख मैं ! **903**
मैय् एल्लाम् पोग विट्टु⋆ विरिगुळलारिल् पट्टु⋆ पोय् एल्लाम् पोदिन्दु कोण्ड⋆ पोइनेन् वन्दु निन्रेन्⋆ ऐयने ! अरङ्गने ! उन्⋆ अरुळ् एन्नुम् आशै तन्नाल्⋆ पोय्यनेन् वन्दु निन्रेन्⋆ पोय्यनेन् पोय्यनेने॥३३॥	अरंगा प्रभु ! मैं बिना किसी ठौर के हूं एवं दुर्गुणों से भरा हूं। मैं सिद्धान्तहीन हूं। मैं जूड़ों वाली नारियों के जाल में फंस गया था। आपकी दया की चाह से आपके पास आया हूं। झूठा एवं झूठा मैं ! आपके सामने निर्लज्ज की तरह खड़ा हूं। **904**
उळ्ळत्ते उरैयुम् मालै⋆ उळ्ळुवान् उणर्वोन्रिल्ला⋆ कळ्ळत्तेन् नानुम् तोण्डाय्⋆ तोण्डुक्के कोलम् पूण्डेन्⋆ उळ्ळुवार् उळ्ळिट्रेल्लाम्⋆ उडन् इरुन्दरिदि एन्रु⋆ वेळ्ळिप्पोय् एन्नुळ्ळे नान्⋆ विलवर च्चिरित्तिट्टेने ! ॥३४॥	प्रभु आप सबों के हृदय में रहते हैं। सभी के मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं आप सभी के साक्षी हैं। आपको पाने का मेरे पास कोई साधन नहीं है। मैं झूठा हूं एवं आपकी सेवा करने का स्वांग भरता हूं। मैं लज्जा छोड़कर खड़ा हूं एवं ठहाके की हंसी हंसते रहता हूं। **905**

तावि अन्रुलगम् एल्लाम्⁎ तलैविळाक्कोंण्ड एन्दाय्⁎ शेवियेन् उन्नै अल्लाल्⁎ शिक्केन च्चेंङ्गण् माले⁎ आवियेे! अमुदे एन् तन्⁎ आरुयिर् अनैय एन्दाय्⁎ पावियेन् उन्नै अल्लाल्⁎ पावियेन् पावियेने॥३५॥	मेरे शेंकनमल प्रभु! मैं आपके अलावे किसी और की पूजा नहीं करता। आप ने समस्त जगत के सिर के ऊपर से छलांग लगायी। मेरी आत्मा ! मेरे अमृत ! अपनी प्राणवायु की भांति प्यारे प्रभु ! आपके अलावा हमारा कोई भी नहीं है। दुःखी एवं दुःखी मैं ! **906**
मळैक्कन्रु वरै मुन् एन्दुम्⁎ मैन्दने ! मदुर आरे⁎ उळैक्कन्रे पोल नोक्कम्⁎ उडैयवर् वलैयुळ पट्टु⁎ उळैक्किन्रेनैन्नै नोक्कादु⁎ ऑळिवदे उन्नै अन्रे⁎ अळैक्किन्रेन् आदि मूर्त्ति !⁎ अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥३६॥	तूफान से रक्षा हेतु पर्वत उठाने वाले राजकुमार ! अमृतमय नदी ! मैं मृगनयनी की जाल में पड़कर संघर्ष करते रहा। क्या यह उचित है कि आप इसपर ध्यान न दें ? आपके सिवा और किसी को मैं नहीं पुकार सकता। आदि प्रभु ! अरंगम नगर के प्रभु ! **907**
तेंळिविला क्कलङ्गल् नीर् शूळ्⁎ तिरुवरङ्गत्तुळ ओङ्गुम्⁎ ऑळियुळार् तामे यन्रे⁎ तन्दैयुम् तायुम् आवार्⁎ एळियदोर् अरुळुम् अन्रे⁎ एन् तिरत्तेंम्बिरानार्⁎ अळियन् नम् पैयल् एन्नार्⁎ अम्मवो ! कोंडियवारे ! ॥३७॥	तेज पानी की धार के बीच तिरूअरंगम के प्रभु तेजोमय हैं। सरलता एवं दयावश आप सबके माता एवं पिता हैं। हाय ! आप हम पर देखते नहीं परन्तु कहते हैं "यह हमारी ही संतान है तथा हमें इसकी रक्षा अवश्य करनी है"। कितने दुर्गम रास्ते हैं आपके ! **908**
मेम्पोरुळ पोग विट्टु⁎ मेय्म्मैयै मिग उणर्न्दु⁎ आम्बरिशरिन्दु कोंण्डु⁎ ऐम्बुलन् अगत्तडक्कि⁎ काम्बुरत्तलै शिरैत्तुन्⁎ कडैत्तलै इरुन्दु वाळुम्⁎ शोम्बरै उगत्ति पोलुम्⁎ शूळ् पुनल् अरङ्गत्ताने ! ॥३८॥	जल से घिरे प्रभु ! ऐसे लोग हैं जो इन्द्रियों का शमन कर, संबंधों को तोड़कर, ईश्वरीय शक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं, एवं सत्य की प्राप्ति करते हैं। दूसरे लोग हैं जो शिर मुड़ा कर आपके द्वार पर आलसी की तरह बैठे रहते हैं। क्या आप दोनों से प्रसन्न नहीं रहते ? **909**
अडिमैयिल् कुडिमै इल्ला⁎ अयल् शदुप्पेदि मारिल्⁎ कुडिमैयिल् कडैमै पट्ट⁎ कुक्करिल् पिरप्परेलुम्⁎ मुडियिनिल् तुळबम् वैत्ताय् !⁎ मॅय् कळर्कन्दु शेय्युम्⁎ अडियरै उगत्ति पोलुम्⁎ अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥३९॥	तुलसी की माला पहने एवं कमल वत चरण के प्रभु ! ऊंचे कुल के जन्म, वेदों में पारगंत, परन्तु सेवा भाव से हीन, को छोड़कर भक्तिपूर्ण जीवन वाले को जो समाज के निम्न कुल मे भी जन्म लिया हो तो भी, आप उससे प्रसन्न रहते हैं। अरंगम नगर के प्रभु ! **910**
तिरुमरुमार्व ! निन्नै⁎ च्चिन्दैयुळ तिगळ वैत्तु⁎ मरुविय मनत्तर् आगिल्⁎ मा निलत्तुयिर्गळ् एल्लाम्⁎ वेरुवुरक्कोन्रु शुट्टिट्टु⁎ ईट्टिय विनैयरेलुम्⁎ अरुविनै प्पयन तुय्यार्⁎ अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥४०॥	श्रीवत्स से सुशोभित वक्षस्थल वाले प्रभु ! जो अपना हृदय आपकी तरफ लगाकर आपको अपने विचार में रखते हैं वे अगर सभी प्राणियों की हत्या एवं जगत को अग्नि में जलाने का भी अपराध करें तो आपकी कृपा से इन कर्मों के भार से मुक्त हो जाते हैं। तिरू अरंगम के प्रभु ! **911**

वानुळार् अरियल् आगा⋆ वानवा ! एन्बर् आगिल्⋆ तेनुलाम् तुळब मालै⋆ च्चेंन्नियाय् ! एन्बर् आगिल्⋆ ऊनम् आयिनगळ् शेंय्युम्⋆ ऊनकारकर्गळेल्लुम्⋆ पोनगम् शेंय्द शेडम्⋆ तरुवरेल् पुनिदम् अन्रे॥ ४१॥	जो दुष्कर्म वाले हैं एवं दूसरों से भी दुष्कर्म कराते हैं अगर वे भी पुकारें "देवों से अगम्य प्रभु एवं मधुमक्खी से लिपटे तुलसी की माला का हार वाले प्रभु !" और ये अपना जूठन भी मुझे दे दें तो यह हमारे लिये पवित्र भोजन होगा। **912**
पळुदिला वॊळुगल् आट्ट⋆ प्पल शदुप्पेदि मार्गळ्⋆ इळिकुलत्तवर्कळेल्लुम्⋆ एम् अडियार्गळ् आगिल्⋆ तॊळुमिनीर् कॊडुमिन् कॊळ्मिन् !⋆ एन्रु निन्नोडुम् ऒक्क⋆ वळिपड अरुळिनाय् पोल्⋆ मदिळ् तिरुवरङ्गत्ताने ! ॥ ४२॥	निष्कलंक, ऊत्तम कुल वाले, चारों वेदों में निष्णात, गरीब घर में भी अगर जन्म लिया हो, परन्तु आपके भक्त हों, तो आप उनको अपनी बराबर पूजा के योग्य स्थान देकर कहते हैं "सम्मान करो, वस्तुयें दो, इनके पास वस्तुयें ले जाओ"। हे दीवार से घिरे अरंगम नगर के प्रभु ! **913**
अमर ओर् अङ्गम् आरुम्⋆ वेदम् ओर् नान्गुम् ओदि⋆ तमर्गळिल् तलैवराय⋆ शादि अन्दणर्कळेल्लुम्⋆ नुमर्गळै प्पळिप्पर् आगिल्⋆ नॊडिप्पदोर् अळविल् आङ्गे अवर्कळ् ताम् पुलैयर् पोलुम्⋆ अरङ्ग मा नगरुळाने ! ॥ ४३॥	छ आगम एवं चार वेद पढ़ने वाले अपने को अगली श्रृंखला में रखकर अन्दणर कुल में होने का अभिमान करते हैं। अगर ये लोग आपके भक्तों के बारे में कुविचार प्रकट करें तो उसी क्षण और वहीं पर वे पुलैयर से भी नीच हो जायेंगे। अरंगम नगर के प्रभु ! **914**
पॆण् उल्लाम् शडैयिनानुम्⋆ पिरमनुम् उन्नै क्काण्बान्⋆ एण् इला ऊळि ऊळि⋆ तवम् शेंय्दार् वॆळ्गि निर्प⋆ विण् उळार् वियप्प वन्दु⋆ आनैक्कन्ररुळै ईन्द⋆ कण्णरा ! उन्नै एन्नो⋆ कळैगणा क्करुदुमारे ! ॥ ४४ ॥	गंगा, जटाधारी शिव, एवं ब्रह्मा आपसे मिलने के लिये प्रतियोगी बने रहते हैं। युग युगान्तर से ये तपस्या कर निराश रहते हैं। ऊपर के देवों को आश्चर्य में रखते हुए, चिन्ताग्रस्त पधार कर, आपने हाथी पर कृपा वृष्टि की। **915**
वळवॆळुम् तवळ माड⋆ मदुरै मा नगरन् तन्नुळ्⋆ कवळमाल् यानै कॊन्र⋆ कण्णनै अरङ्ग मालै⋆ तुळव त्तॊण्डाय तॊल् शीर्⋆ त्तॊण्डरडिप्पॊडि शॊल्⋆ इळैयबुन् कविदैयेल्लुम्⋆ एम्बिरार्किनिय वारे ! ॥ ४५ ॥	मथुरा में मदमत्त हाथी का बध करने वाले कृष्ण, ऊचे महलों वाले अरंगम के प्रभु हैं। तुलसी की माला बनाने वाले, विश्वासी तोण्डरापोडि के ये शब्द, कविता के दृष्टिकोण से अरूचिकर लगें, परन्तु प्रभु के लिये मधुवत प्यारे हैं। **916** तोण्डराडिपोडियालवार तिरूवडीगळे शरणम्

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ तिरुप्पळ्ळियॆळुच्चि ॥

तिरुमलै आण्डान् अरुळिच्चॆय्द तनियन्

तमेवमत्वा परवासुदेवं रङ्गेशयं राजवदर्हणीयं।
प्राबोधकीं योऽकृत सूक्तिमालां भक्ताङ्घ्रि रेणुं भगवन्तमीडे॥

तिरुवरङ्गप्पॆरुमाळ् अरैयर् अरुळिच्चॆय्द तनियन्

मण्डङ्गुडियॆन्बर् मामरैयोर्⋆ मन्नियशीर्
तॊण्डरडिप्पॊडि तॊन्नगरम्⋆ –वण्डु
तिणर्त्तवयल् तॆन्नरङ्गत्तम्मानै⋆ प्पळ्ळि
उणर्त्तुम् पिरानुदित्त वूर्

1 तिरूप्पळिळयळुच्चि (917 – 926)

(श्रीरंगनाथ को जगाना)

एण्शीर्क्कळिनॆडिलडियाशिरिय विरुत्तम् कदिरवन् कुणदिशै च्चिगरम् वन्दणैन्दान्⋆ कनैयिरुळ् अगन्रदु कालैयम् पॊळुदाय्⋆ मदु विरिन्दॊळुगिन मामलर् एल्लाम्⋆ वानवर् अरशर्गळ् वन्दु वन्दीण्डि⋆ एदिर्दिशै निरैन्दनर् इवरॊडुम् पुगुन्द⋆ इरुङ्गळिर्रीट्टमुम् पिडियॊडु मुरशुम्⋆ अदिर्दलिल् अलै कडल् पोन्रुळदॆङ्गुम्⋆ अरङ्गत्तम्मा ! पळ्ळि एळुन्दरुळाये॥१॥	उषाकाल के आगमन से अंधकार दूर हो गया है एवं पूरब के शिखर पर सूर्य का उदय हो चुका है। सर्वत्र ढ़ेर सारे फूल खिल चुके हैं। अपने मार्ग पर तेजी से बढ़ते हुए राजा एवं देवगण आपके द्वार पर आचुके हैं। उनके हाथी एवं नगाड़ा से बिजली कड़कने तथा समुद्र के लहरों सा गर्जन की आवाज सुनायी दे रही है। अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये ।**917**

कॊळुङ्गॊडि मुल्लैयिन् कॊळु मलरणवि⋆ कूर्न्ददु कुण तिशै मारुदम् इदुवो⋆ एळुन्दन मलर् अणै प्पळ्ळिकॊळ् अन्नम्⋆ ईन्बनि ननैन्द तम् इरुञ्जिरगुदरि⋆ विळुङ्गिय मुदलैयिन् पिलम् पुरै पेळ्वाय्⋆ वॆळ्ळॆयिरुर् अदन् विडत्तिनुक्कनुङ्गि⋆ अळुङ्गिय आनैयिन् अरुन्दुयर् कॆडुत्त⋆ अरङ्गत्तम्मा ! पळ्ळि एळुन्दरुळाये॥ २॥	पूरब की हवा मंद गति से मुल्लै के सुगंध को सर्वत्र विखेर रही है। प्रस्फुटित कमल में वास करने वाली हंस की जोड़ी ओस से भींगे अपने पंखों को झाड़ते हुए जाग चुकी है। ग्राह के मृत्यु दायी जबड़े से गजेन्द्र की रक्षा वाले अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये ।**918**
शुडर् ऑळि परन्दन शूळ् तिशै एल्लाम्⋆ तुन्निय तारकै मिन्नॊळि शुरुङ्गि⋆ पडर् ऑळि पशुत्तनन् पनि मदि इवनो⋆ पायिरुळ् अगन्र्दु पैम् पॊळिल् कमुगिन्⋆ मडलिडै क्कीरि वण् पाळैगळ् नार⋆ वैकरै कूर्न्ददु मारुदम् इदुवो⋆ अडल् ऑळि तिगळ् तरु तिगिरियन् तडक्कै⋆ अरङ्गत्तम्मा ! पळ्ळि एळुन्दरुळाये॥ ३॥	प्रभात कालीन ज्योति क्षितिज पर फैल रही है। तारे छिप रहे हैं। शीतप्रदायी चंद्रमा फीका पड़ रहा है। ताड़ के सुनहले एवं कोमल कोपल हवा से उड़ रहे हैं। अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये ।**919**
मेट्टिळ मेदिगळ् तळैविडुम् आयर्गळ्⋆ वेयङ्गुळल् ओशैयुम् विडै मणि क्कुरलुम्⋆ ईट्टिय इशै तिशै परन्दन वयलुळ्⋆ इरिन्दन शुरुम्बिनम् इलङ्गैयर् कुलत्तै⋆ वाट्टिय वरिशिलै वानवरेरे !⋆ मा मुनि वेळ्वियै क्कात्तु⋆ अवबिरदम् आट्टिय अडु तिरल् अयोत्ति एम् अरशे !⋆ अरङ्गत्तम्मा ! पळ्ळि एळुन्दरुळाये॥ ४॥	चरवाहे की बांसुरी एवं गायों के गले की घंटी की आवाज एक दूसरे से मिलकर सब जगह फैल रही है। खेतों में भौंरे गुंजायमान होने लगे। देवों के नाथ ! कुल समेत लंका का नाश करने वाले, ऋषियों के यज्ञ रक्षक, अयोध्या के राज्याभिषक्त नाथ ! अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! मेरे स्वामी ! प्रार्थना है, जागिये ।**920**
पुलम्बिन पुट्कळुम् पूम् पॊळिल्गळिन् वाय्⋆ पोयिट्रु क्कङ्गुल् पुगुन्ददु पुलरि⋆ कलन्ददु कुणदिशै क्कनैकडल् अरवम्⋆ कळि वण्डु मिळट्रिय कलम्बगम् पुनैन्द⋆ अलङ्गलन् तॊडैयल् कॊण्डडियिणै पणिवान्⋆ अमरर्गळ् पुगुन्दनर् आदलिल् अम्मा⋆ इलङ्गैयर् कोन् वळिपाडु शॆय् कोयिल्⋆ एम्बॆरुमान् ! पळ्ळि एळुन्दरुळाये॥ ५॥	बागों में पक्षिगन चहचहा रहे हैं। रात बीत चुकी है। दिन निकलने वाला है। समुद्र की लहरें गरजने लगी हैं। भौंरे गुंजायमान होने लगे। देवगन कदंब की माला से सेवा करने के लिये आ चुके हैं। लंकानरेश विभीषण से पूजित अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये ।**921**

इरवियर् मणि नॆंडुम् तेरॊडुम् इवरो★ इरैयवर् पदिनॊरु विडैयरुम् इवरो★ मरुविय मयिलिनन् अरुमुगन् इवनो★ मरुदरुम् वशुक्कळुम् वन्दु वन्दीण्डि★ पुरवियोडाडलुम् पाडलुम् तेरुम्★ कुमर दण्डम् पुगुन्दीण्डिय वॆळ्ळम्★ अरुवरै अनैयनिन् कोयिल् मुन् इवरो★ अरङ्गत्तम्मा ! पळ्ळि एळुन्दरुळाये॥ ६ ॥	ग्यारह आदित्यों के स्वामी रत्नों से आभूषित रथ वाले यह सूर्य देव हैं। मोर की सवारी करने वाले यह छःमुख वाले सुब्रमन्यम हैं। प्रसन्नचित्त मरूत एवं वसुगन नाचते गाते आपके द्वार के समक्ष बड़े कक्ष में भीड़ किये हुए हैं। अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये ।**922**
अन्दरत्तमरर्गळ् कूट्टङ्गळ् इवैयो★ अरुन्तव मुनिवरुम् मरुदरुम् इवरो★ इन्दिरन् आनैयुम् तानुम् वन्दिवनो★ एम्बॆरुमान् उन् कोयिलिन् वाशल्★ शुन्दरर् नॆरुक्क विच्चादरर् नूक्क★ इयक्करुम् मयङ्गिनर् तिरुवडि तॊळुवान्★ अन्दरम् पारिडम् इल्लै मट्रिदुवो★ अरङ्गत्तम्मा ! पळ्ळि एळुन्दरुळाये॥ ७ ॥	यह भारी जमाव देवों का है। यह मुनियों एवं मरूतों का समूह है। इन्द्र अपने हाथी पर चढ़कर आपके मन्दिर के समक्ष आ चुके हैं। यह सुन्दरजन की भीड़ है तथा यह विद्याधर का समूह है। यक्षगन आपके चरणों के ध्यान में खोये हैं। कहीं खड़े होने की भी जगह नहीं है। अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये ।**923**
वम्बविळ् वानवर् वायुरै वळङ्ग★ मानिदि कपिलै ऑण् कण्णाडि मुदला★ एम्बॆरुमान् पडिमक्कलम् काण्डर्कु★ एर्पन वायिन कॊण्डु नन् मुनिवर्★ तुम्बुरु नारदर् पुगुन्दनर् इवरो★ तोन्रिनन् इरवियुम् तुलङ्गॊळि परप्पि★ अम्बर तलत्तिल् निन्रगल्गिन्रदिरुळ् पोय्★ अरङ्गत्तम्मा ! पळ्ळि एळुन्दरुळाये॥ ८ ॥	देवों के मधुर पाठ, सामने खड़ी महान गाय कपिला, आपके सुन्दर स्वरूप के दर्शन के लिये पैरों के अगूंठे पर खड़े तथा ऊंचे उठाये सुन्दर दर्पण के साथ मुनिगन। देवलोक के गायक तुम्बुरू एवं नारद प्रवेश कर चुके हैं। कक्ष के अंधकार को दूर करते प्रभापूर्ण सूर्य उपस्थित हो चुके हैं। अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये । **924**

एदमिल् तण्णुमै एक्कम् मत्तळि* याळ् कुळल् मुळवमोडिशै तिशै कॅळुमि* कीदङ्गळ् पाडिनर् किन्नरर् कॅरुडर्गळ्* कन्दरुवर् अवर् कङ्गुल्लुळ् एल्लाम्* मादवर् वानवर् शारणर् इयक्कर्* शित्तरुम् मयङ्गिनर् तिरुवडि तॉळुवान्* आदलिल् अवरक्कु नाळ् ओलक्कम् अरुळ* अरङ्गत्तम्मा ! पळ्ळि एळुन्दरुळाये॥९॥	एकतार वाले वाद्ययंत्र, ढ़ोल, मजीरा, बांसुरी, एवं झाल के ध्वनि सर्वत्र सुनायी दे रहे हैं। सारी रात किन्नरगन, गरूड़ , एवं गंधर्वगन यशगान करते रहे हैं। महान ऋषिगन, देवजन, यक्षगन, चारण एवं सिद्ध समूह आपके चरण की पूजा के लिये लालायित हैं। इनलोगों पर कृपा करने के लिये,अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! प्रार्थना है, जागिये । **925**
कडि मलर् क्कमलङ्गळ् मलर्न्दन इवैयो* कदिरवन् कनै कडल् मुळैत्तनन् इवनो* तुडियिडैयार् शुरि कुळल् पिळिन्दुदरि* तुगिल् उडुत्तेरिनर् शूळ् पुनल् अरङ्गा* तॊडै ऑत्त तुळवमुम् कूडैयुम् पॊलिन्दु* तोन्रिय तोळ् तॉण्डर् अडिप्पॊडि एन्नुम् अडियनै* अळियन् एन्ररुळि उन् अडियार्-क्काट्पडुत्ताय् !* पळ्ळि एळुन्दरुळाये ! ॥१०॥	कमल बहुतायत में खिल चुके हैं। सूर्य समुद्र से उदय ले चुके हैं। कृश कटि एवं सुन्दर केश की लट वाली किशोरियां अपने बाल एवं कपड़े सुखाती नदी से बाहर आ चुकी हैं।कावेरी से घिरे अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ ! फूल की टोकरी ढ़ोने वाले इस निम्न सेवक तोण्डर अडिप्पाडि पर आपने कृपा करके भक्तों की सेवा का अवसर दिया है। प्रार्थना है प्रभु, जागिये । **926** तोण्डर अडिप्पाडियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।

श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ अमलनादिपिरान् ॥

पॆरिय नम्बिगळ् अरुळि च्चॆय्द तनियन्

आपादचूडमनुभूय हरिं शयानं
मध्ये कवेरदुहितुर्मुदितान्तरात्मा।
अद्रष्ट्टतां नयनयोर्विषयान्तराणां
यो निश्चिकाय मनवै मुनिवाहनं तम्॥

तिरुमलै नम्बिगळ् अरुळि च्चॆय्द तनियन्

काट्टवे कण्ड पाद कमलम् नल्लाडैयुन्दि⋆
तेट्टरुम् उदरबन्दम् तिरुमार्बु कण्डम् शॆव्वाय्⋆
वाट्टमिल् कण्गळ् मेनि मुनियेरि त्तनि पुगुन्दु⋆
पाट्टिनाल् कण्डु वाळुम् पाणर्दाळ् परविनोमे

1 अमलनादिपिरान् (927 – 936)

(श्रीरंगनाथ के पादकेशादि सौन्दर्य में निमग्न)

अमलन् आदिपिरान्⋆ अडियार्क्कॆन्नै आट्पडुत्त विमलन्⋆ विण्णवर कोन्⋆ विरैयार पॊळिल वेङ्गडवन्⋆ निमलन् निन्मलन् नीदि वानवन्⋆ नीळ् मदिळ् अरङ्गत्तम्मान्⋆ तिरु- क्कमल पादम् वन्दु⋆ ऎन् कण्णिन् उळ्ळन ऒक्किन्ऱदे॥१॥	प्रथम पूर्ण प्रभु देवताओं के प्रकाशमय स्वामी सुगंधित बागों से घिरे वेंकटम में रहते हैं। आपके दिव्य नियम न्यायसंगत एवं दोषहीन हैं।आपने हमें अपने भक्तों का सेवक बना लिया। आप ऊंचे दीवारों से घिरे अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ हैं। आपके मंगलमय चरणारविन्द हमारी आंखों में बस गये हैं। **927**
उवन्द उळ्ळत्तनाय्⋆ उलगम् अळन्दण्डम् उऱ⋆ निवन्द नीळ् मुडियन्⋆ अन्ऱु नेर्न्द निशाशररै⋆ कवर्न्द वॆङ्गणै क्कागुत्तन्⋆ कडियार् पॊळिल् अरङ्गत्तम्मान्⋆ अरै- च्चिवन्द आडैयिन् मेल्⋆ शॆन्ऱदाम् ऎन शिन्दनैये॥२॥	जब आप उत्साहपूर्वक पृथ्वी को माप रहे थे तब आपका मुकुट ब्रह्मांड की छत को छू रहा था।बाणों की वर्षा करके राक्षस कुल का विनाश करने वाले आप काकुत्सथ प्रभु राम हैं।आप सुगंधित बागों से घिरे अरंगम (श्रीरंगम) के नाथ हैं। आपके श्याम वदन के लाल वस्त्रों पर ही हमारी आंखें टिकी रहती हैं। **928**
मन्दि पाय्⋆ वड वेङ्गड मा मलै⋆ वानवर्गळ् शन्दि शॆय्य निन्ऱान्⋆ अरङ्गत्तरविन् अणैयान्⋆ अन्दि पोल् निऱत्ताडैयुम्⋆ अदन् मेल् अयनै प्पडैत्तदोर् ऎळिल्⋆ उन्दि मेलदन्ऱो⋆ अडियेन् उळ्ळत्तिन् उयिरे॥३॥	उत्तरदिशा के बन्दरों वाले वेंकटम के पर्वतों में देवताओं से पूजित होकर आप खड़े हैं। अरंगम (श्रीरंगम) में आप शेषशायी अवस्था में हैं। संध्याकालीन आकाश के रंग जैसे वस्त्रों के बीच से निकले नाभि पर के कमल पर ब्रह्मा का बैठने का सुन्दर स्थान है। हमारा हृदय रूचि पूर्वक इस दृश्य में अंटका रहता है।**929**

शदुर मा मदिळ् शूळ् इलङ्गैक्किरैवन्⋆ तलैप-
    त्तुदिर ओट्टि⋆ ओर् वॆङ्गणै उय्त्तवन्⋆ ओद वण्णन्⋆
मदुर मा वण्डु पाड⋆ मा मयिल् आडरङ्गत्तम्मान्⋆ तिरु वयि-
    ट्रुदर बन्दम्⋆ एन् उळ्ळत्तुळ् निन्ऱुलागिन्ऱदे॥४॥
	आपने बाण मारकर सुरक्षित लंका के रावण के दस मस्तकों को काट गिराया। आप सागर सा सलोने रंगवाले अरंगम (श्रीरंगम) के प्रभु हैं जहां मोर भौरों के धुन पर नृत्य करते हैं। अहा ! आपके कमरबन्द पर ही हमारा हृदय एवं मन लगा रहता है। **930**

पारम् आय⋆ पळविनै पट्ररुत्तु⋆ एन्नै त्तन्
    वारम् आक्कि वैत्तान्⋆ वैत्तदन्ऱि एन्नुळ् पुगुन्दान्⋆
कोर मादवम् शॆय्तनन् कॊल् अऱियेन्⋆ अरङ्गत्तम्मान्⋆ तिरु
    आर मार्वदन्ऱो⋆ अडियेनै आट्कॊण्डदे॥५॥
	दुष्कर्मो से मुक्त कर हमें अरंगम (श्रीरंगम) के प्रभु ने अपना भक्त बना लिया। इतना ही नहीं आप हममें बस गये हैं। मुझे नहीं पता कि मैंने कितनी तपस्या की है। अहा ! आपकी मंगलमय माला ने हमें आकृष्ट कर रखा है। **931**

तुण्ड वॆण्पिऱैयन्⋆ तुयर् तीर्त्तवन्⋆ अञ्जिऱैय
    वण्डुवाळ् पॊऴिल् शूळ्⋆ अरङ्ग नगर् मेय अप्पन्⋆
अण्डर् अण्ड पगिरण्डत्तु⋆ ऒरु मानिलम् एळुमाल् वरै⋆ मुट्रुम्
    उण्ड कण्डम् कण्डीर्⋆ अडियेनै उय्यक्कॊण्डदे॥६॥
	मेरे प्रभु ने चंद्रभूषण शिव को पाप से मुक्त किया। आपने जगत, समस्त प्राणी, आकाश, पृथ्वी, सात पर्वतों एवं अन्य सबों को उदरस्थ कर लिया है। आप मधुमक्खी से भरे फूल के बागों से घिरे अरंगम (श्रीरंगम) में रहते हैं। अहा ! आपकी सुन्दर ग्रीवा को देखकर हमारा मन आह्लादित हो उठता है। **932**

कैयिन् आर्⋆ शुरि शङ्गनल् आऴियर्⋆ नीळ्वरै पोल्
    मॆय्यनार्⋆ तुळब विरैयार् कमळ् नीळ् मुडि एम्
ऐयनार्⋆ अणि अरङ्गनार्⋆ अरविन् अणैमिशै मेय मायनार्⋆
    शॆय्य वाय् ऐयो !⋆ एन्नै च्चिन्दै कवर्न्ददुवे ! ॥७॥
	आप अपने हाथों में चक्र शंख धारण करते हैं। आपका वदन मानों काला पर्वत है। ऊंचे मुकुट पर तुलसी का सुगंध विखेरते आप हमारे नाथ हैं। शेषशय्या पर शयन किये हुए आप अरंगम (श्रीरंगम) के प्रभु हैं। अहा ! आपके सुन्दर लाल होंठों ने हमारा मन हर लिया है। **933**

परियन् आगि वन्द⋆ अवुणन् उडल् कीण्ड⋆ अमरर्-
    क्करिय आदि प्पिरान्⋆ अरङ्गत्तमलन् मुगत्तु⋆
करिय आगि प्पुडै परन्दु⋆ मिळिर्न्दु शॆव्वरि ओडि⋆ नीण्ड अ-
    प्पॆरिय वाय कण्गळ्⋆ एन्नै प्पेदैमै शॆय्दनवे ! ॥८॥
	प्रथम कारण रूप पूर्ण प्रभु जो देवताओं के लिए अगम हैं अरंगम (श्रीरंगम) में रहते हैं। आपने हिरण्यकशिपु का पेट फाड़ डाला। आपका मुखमंडल बड़ी बड़ी लाल आंखों से सुशोभित है। अहा ! आपकी सलोनी आंखों ने हमें बावरा बना रखा है। **934**

आलमा मरत्तिन् इलैमेल्⋆ ऑरु बालकनाय्⋆ ञालम् एळुम् उण्डान्⋆ अरङ्गत्तरविन् अणैयान्⋆ कोलमा मणि आरमुम्⋆ मुत्तु त्താममुम् मुडिविल्लदोर् एळिल्⋆ नील मेनि ऐयो !⋆ निरै कॉण्डदेन् नेञ्जिनैये ! ॥९॥	आप सातों लोकों को निगलकर एक बालक के रूप में बट पत्र पर सो जाते हैं। आप अरंगम (श्रीरंगम) में शेषशायी हैं। आपने रत्नों से जड़ा हुआ माला धारण कर रखा है तथा आपके गले का मोती का हार आपके श्याम वदन पर निखर रहा है। अहा ! आपके अद्वितीय सौंदर्य ने हमारे हृदय को चुरा लिया है। **935**
कॉण्डल् वण्णनै⋆ क्कोवलनाय् वेंण्णेय् उण्ड वायन्⋆ एन् उळ्ळम् कवरन्दानै⋆ अण्डर् कोन् अणि अरङ्गन्⋆ एन् अमुदिनै कण्ड कण्गळ्⋆ मट्रॊन्रिनै क्काणावे॥१०॥ ॥ तिरुप्पाणाळ्वार् तिरुवडिगळे शरणम् ॥	श्याम वदन वाले प्रभु एक किशोर चरवाहे के रूप में आये और आपने ही मक्खन चुराया। आप देवताओं के नाथ हैं तथा अरंगम (श्रीरंगम) के भी नाथ हैं। आपने हमारा हृदय चुरा लिया है। अमृतमयी आनन्दकन्द प्रभु को देखने के बाद हमारी आंखें अब अन्य कुछ नहीं देखेंगी। **936** योगीवाहान आळवार् तिरूवडिगळे शरणं ।

॥ कण्णिनुण् शिरुत्ताम्बु ॥

अविदितविषयान्तरश्शठारेः उपनिषदामुपगानमात्रभोगः।
अपि च गुणवशात् तदेकशेषी मधुरकविर्हृदये ममाविरस्तु॥

वेरॊन्ऱुम् नानऱियेन् वेदम् तमिळ्शॆय्द*
मारन् शडगोपन् वण्कुरुगूर्* -एरॆङ्गळ्
वाळ्वाम् एन्ऱेत्तुम्* मदुरकवियार् एम्मै
आळ्वार् अवरे अरण्

1 कण्णिनुण् शिरूत्ताम्बु (937 – 947)

(स्वामी नम्मालवार की भक्ति)

कण्णि नुण्शिरु त्ताम्बिनाल्* कट्टुण्ण प्पण्णिय पॆरुमायन्* एन्नप्पनिल्* नण्णि तॆन्कुरुगूर्* नम्बि एन्ऱक्काल्* अण्णिक्कुम् अमुदूरुम्* एन्नावुक्के॥१॥	चमत्कारिक बालक हमारे प्रभु गुंथी हुई रस्सी के सहारे स्थित थे।जब कुरूगुर (आळवार तिरू नगरी) नांबी का नाम उच्चारण करता हूं तो मुंह से अमृत प्रवाहित होने लगता है। **937**
नाविनाल् नविट्रु* इन्बम् एय्दिनेन्* मेविनेन्* अवन् पॊन्नडि मॆय्म्मैये* तेवु मट्रियेन्* कुरुगूर् नम्बि* पाविन् इन्निशै* पाडि त्तिरिवने॥२॥	आपका नाम लेकर हमने आन्नद पाया तथा आपके चरण की सेवा कर सत्य को प्राप्त किया। किसी और देवता को हम जानते नहीं और केवल आपका ही नाम लेते हुए गलियों में घूमते हैं। **938**
तिरितन्दागिलुम्* देवपिरान् उडै* करिय कोल* त्तिरुवुरु क्काण्बन् नान्* पॆरिय वण्कुरुगूर्* नगर् नम्बिक्काळ् उरियनाय्* अडियेन्* पॆट्र नन्मैये॥३॥	जहां कहीं भी जाता हूं अपने देवापिरन एवं उनके आकर्षक मुखमंडल को ही देखता हूं। कुरूगूर के स्वामी की सेवा से हम नीचात्मा भी उनके कृपापात्र हो गये। **939**
नन्मैयाल् मिक्क* नान्मरै आळर्गळ्* पुन्मै आग* क्करुदुवर् आदलिल्* अन्नैयाय् अत्तनाय्* एन्नै आण्डिडुम् तन्मैयान्* शडगोपन्* एन् नम्बिये॥४॥	सम्मानित विद्वत्जनों ने मुझे नाकाम पाया था।परन्तु हमारे माता एवं पिता दोनों ही शठकोपन हीं है और हमारी दैनिक कार्यकलाप अब इनके नियंत्रण में है। **940**

नम्बिनेन्★ पिऱर् नन्पॊरुळ् तन्नैयुम्★ नम्बिनेन्★ मड वारैयुम् मुन्नॆलाम्★ शॆम्पॊन् माड★ त्तिरुक्कुरुगूर् नम्बि– क्कन्बनाय्★ अडियेन्★ शदिर्त्तेन् इन्ऱे॥ ५ ॥	पहले हमारे दिन संपत्ति एवं किशोरियों की कामना में बीतते थे। अब तो हम प्रसिद्ध कुरूगूर के स्वामी को पा गये हैं। **941**
इन्ऱु तॊट्टुम्★ एऴुमैयुम् एम्बिरान्★ निन्ऱु तन्पुगऴ्★ एत्त अरुळिनान्★ कुन्ऱ माड★ त्तिरु क्कुरुगूर् नम्बि★ एन्ऱुम् एन्नै★ इगऴ्विलन् काण्मिने॥ ६ ॥	अटारियों वाले कुरूगूर के स्वामी का यश गान हमें कण्ठाग्र हो गया है। ध्यान दीजिये ! अब से सात जन्म तक वे हमें कभी असफल न होने देंगे। **942**
कण्डु कॊण्डॆन्नै★ क्कारि माऱ्प्पिरान्★ पण्डै वल्विनै★ पाट्रि अरुळिनान्★ एण्डिशैयुम्★ अऱिय इयम्बुगेन्★ ऑण्डमिऴ्★ शडगोपन् अरुळैये॥ ७ ॥	हमारे पूर्व के कर्मो को कारी मारन ने पूरी तरह देख लिया है। तमिल के शठकोपन की कृपा का मैं चतुर्दिक प्रचार करूंगा। **943**
अरुळ् कॊण्डाडुम्★ अडियवर् इन्बुऱ★ अरुळिनान्★ अव्वरुमऱैयिन् पॊरुळ्★ अरुळ् कॊण्डु★ आयिरम् इन्तमिऴ् पाडिनान्★ अरुळ् कण्डीर्★ इव्वुलगिनिल् मिक्कदे॥ ८ ॥	जो केवल कृपा की पूजा करते हैं वे आपकी कृपा को आपके सहस्त्रगीतों में देखें। इससे बड़ी कृपा और क्या हो सकती है कि आपने चारों बेदों को हस्तगत करा दिया। **944**
मिक्क वेदियर्★ वेदत्तिन् उट्पॊरुळ्★ निर्क प्पाडि★ एन् नॆञ्जुळ् निऱुत्तिनान्★ तक्क शीर्★ च्चडगोपन् एन् नम्बिक्कु★ आट्– पुक्क कादल्★ अडिमै प्पयनन्ऱे॥ ९ ॥	वेद के सार को आपने अपने गीत में रख दिया तथा मेरे हृदय को ज्ञान प्रदान किया। प्रेममय स्वरूप का दर्शन ही शठकोपन की सेवा का लाभ है। **945**
पयन् अन्ऱागिलुम्★ पाङ्गलर् आगिलुम्★ शॆयल् नन्ऱाग★ त्तिरुत्ति प्पणिकॊळ्वान्★ कुयिल् निन्ऱार् पॊऴिल् शूऴ्★ कुरुगूर् नम्बि★ मुयल्गिन्ऱेन्★ उन्तन् मॊय् कऴर्कन्बैये॥ १० ॥	नाकाम एवं व्यर्थ जीवों को आपने एक साथ मिला दिया। हे कोयल की कूक वाले कुरूगूर के स्वामी ! मैं आपके ही चरणों से प्रेम चाहता हूं। **946**

‡अन्बन् तन्नै⋆ अडैन्दवर्गट्केल्लाम् अन्बन्⋆ तॅन् कुरुगूर्⋆ नगर् नम्बिक्कु⋆ अन्बनाय्⋆ मदुरकवि शॉन्न शॉल् नम्बुवार् पदि⋆ वैगुन्दम् काण्मिने॥११॥	जो प्रभु में आश्रय की खोज करते हैं, उनलोगों को मधुर कवि के दसक पद कुरूगूर नांवी के चरणों को "यही वैकुण्ठ है" बताते हैं। **947** मधुरकवियाळ्वार तिरूवडिगळे शरणं ।